सेवा में,

प्राचार्य
चमनलाल महाविद्यालय
लंढौरा, हरिद्वार

दिनांक
18/10/2022

विषय - विभाग में प्रदर्शनी करवाने हेतु।

महोदय,

विनम्र निवेदन इस प्रकार है कि गृहविज्ञान विभाग हर वर्ष की भाँति इस बार भी दीपावली के उपलक्ष्य में दिनांक 20/10/22 से 21/10/22 को विशाल प्रदर्शनी का आयोजन करना चाहता है। अतः उपरोक्त हेतु आज्ञा प्रदान करने की कृपा करें।

साभार

भवदीया
डॉ० नीतू गुप्ता
प्रभारी, गृहविज्ञान विभाग
कला संकाय

डॉ अनामिका चौहान
प्रभारी, गृहविज्ञान विभाग
विज्ञान संकाय

I.Q.A.C.
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura (Haridwar)
18/10/22

18/10/22
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

सूचना

चमनलाल महाविद्यालय के गृहविज्ञान विभाग द्वारा दिनांक 20/10/2022 तथा 21/10/2022 को विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। प्रदर्शनी में 20/10/2022 को छात्राओं द्वारा बनाये गये विभिन्न उपयोगी सामान कम दामों पर बेचा भी जायेगा तथा 21/10/2022 को 'फूड फेस्ट' लगाया जायेगा। जिसमें छात्राओं द्वारा बनाये गये विभिन्न व्यंजन भी बेचे जायेंगे। प्रदर्शनी का समय प्रातः 10:00 बजे से 3:00 बजे तक रहेगा। आप सभी प्रदर्शनी में आमंत्रित हैं।

डॉ. नीतू गुप्ता
प्रभारी, गृहविज्ञान विभाग
कमला सेकाय

□प्रेस विज्ञप्ति□

प्रदर्शनी (2022-23)

लंढौरा। चमन लाल महाविद्यालय में गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी गृह विज्ञान विभाग द्वारा दो दिवसीय विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के प्रथम दिन छात्राओं द्वारा बनाए गए विभिन्न प्रकार के उपयोगी सामान को प्रदर्शनी में रखा गया। जिसमें छात्राओं द्वारा बनाई गई टाई एंड डाई और प्रिंटिंग की बेडशीट, दुपट्टे ,मेजपोश और जैकेट्स, हैंड मेड पर्स, डॉल, सजावटी दिए, कुशन, सजावटी वॉल हैंगिंग और आसन आदि रखे गए थे। टाई एंड डाई के बेडशीट और दुपट्टे विशेष आकर्षण का केंद्र रहे और छात्राओं ने इनसे इनको सेल करके बहुत लाभ प्राप्त किया। बीएससी की छात्रा कुमारी प्राची के हाथ से बने पर्स के ऑर्डर भी बहुत से शिक्षिकाओं और छात्राओं द्वारा दिए गए। छात्राओं के द्वारा बनाए गए मफलर और मौजे भी विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। प्रदर्शनी का उद्घाटन महाविद्यालय की सचिव श्री अरुण हरित जी, विश्वविद्यालय से आई भूत पूर्व परीक्षा नियंत्रक डॉ एमएस रावत जी और महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुशील उपाध्याय जी के द्वारा किया गया। महाविद्यालय के सचिव श्री अरुण हरित जी ने सभी छात्र छात्राओं को बधाई दी और उनके कार्य की प्रशंसा की। डॉ. एम एस रावत ने कहा कि गृह विज्ञान विभाग में इस प्रकार के उत्कृष्ट कार्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। यह देखकर कि किस प्रकार छात्राएं इस प्रदर्शनी के माध्यम से अपने स्वरोजगार को स्थापित करने का प्रशिक्षण ले रही हैं उन्होंने गृह विज्ञान विभाग के समस्त स्टाफ के कार्य की सराहना की और उन्हें प्रोत्साहित किया। प्रदर्शनी के दूसरे दिन छात्र-छात्राओं द्वारा फूड स्टॉल का आयोजन किया गया जिसमें छात्र-छात्राओं ने विभिन्न प्रकार के व्यंजन तैयार किए जिसमें भेलपुरी , चने की चाट, मुरमुरे के लड्डू एवं पोहा आदि व्यंजन रहे। महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुशील उपाध्याय जी ने कहा कि इस बार छात्राओं ने कुछ हटकर प्रयास किया है और उन्होंने कहा छात्राओं ने बहुत कम समय मे भी बहुत अच्छी तैयारी की है और आने वाले समय मे और भी अच्छा प्रयास करने के लिए छात्राओं को प्रोत्साहित किया। बीएससी तृतीय वर्ष की छात्राओं पूजा, प्राची एवं अंशिका द्वारा बनाए गए व्यंजन काफी चर्चा में रहे प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री राम कुमार शर्मा जी ने कहा कि छात्राओं का कार्य बहुत सराहनीय है।उन्होंने विभाग को बहुत बधाई दी। प्रदर्शनी की समन्वयक डॉ.नीतू गुप्ता ने बताया कि हमारे इस प्रदर्शनी का उद्देश्य प्रतिवर्ष छात्राओं को यह बताना है कि किस प्रकार वे अपनी अंदर छुपी प्रतिभा को प्रदर्शनी के माध्यम से निखार सकते हैं और इस प्रदर्शनी के माध्यम से छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जाता है ।कई छात्राएं जोकि बहुत अच्छे रचनात्मक कार्य जानती हैं परंतु अपनी योग्यता को ग्रामीण क्षेत्र में रहते हुए निखार नहीं पा रही हैं इस प्रदर्शनी के माध्यम से उनकी योग्यता को निखारा जाता है और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास भी किया जाता है इस प्रदर्शनी के माध्यम से छात्राओं को उनके द्वारा बनाए गए उपयोगी सामान के आर्डर भी दिए जाते हैं और उसके द्वारा उन्हें जो अर्निंग होती है उससे वे अपने

परिवार की मदद भी कर सकती हैं। और अपनी पढ़ाई का खर्चा भी उठा सकती हैं ।यही प्रयास प्रतिवर्ष किया जाता है ।प्रदर्शनी में डॉ अनामिका चौहान सहायक आचार्य गृह विज्ञान विभाग ने भी छात्राओं को प्रोत्साहित किया श्रीमती शबनम और श्रीमती रीना ने भी इस प्रदर्शनी में अपना बहुत ज्यादा सहयोग दिया और छात्राओं को उपयोगी सामान बनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

आज्ञा से

प्राचार्य

(Dr. Neelu Gupta)

उत्तराखण्ड

चमन लाल महाविद्यालय में विशाल प्रदर्शनी का आयोजन, प्रदर्शनी के माध्यम से छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जाता है-नीतू

चमन लाल महाविद्यालय के गृह विज्ञान विभाग द्वारा प्रति वर्ष की भांति इस बार भी एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के प्रथम दिन छात्राओं द्वारा बनाए गए विभिन्न प्रकार के उपयोगी सामान को प्रदर्शनी में रखा गया। जिसमें छात्राओं द्वारा बनाई गई टाई एंड डाई और प्रिंटिंग की बेडशीट, दुपट्टे ,मेजपोश और जैकेट्स, हैंड मेड पर्स, डॉल, सजावटी दिए, कुशन, सजावटी वॉल हैंगिंग और आसन आदि रखे गए थे। टाई एंड डाई के बेडशीट और दुपट्टे विशेष आकर्षण का केंद्र रहे और छात्राओं ने इनसे इनको सेल करके बहुत लाभ प्राप्त किया। बीएससी की छात्रा कुमारी प्राची के हाथ से बने पर्स के ऑर्डर भी बहुत से शिक्षिकाओं और छात्राओं द्वारा दिए गए। छात्राओं के द्वारा बनाए गए मफलर और मौजे भी विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। प्रदर्शनी का उद्घाटन महाविद्यालय की सचिव अरुण हरित , विश्वविद्यालय से आई भूत पूर्व परीक्षा नियंत्रक डॉ एमएस रावत और महाविद्यालय के प्राचार्य सुशील उपाध्याय के द्वारा किया गया। महाविद्यालय के सचिव अरुण हरीश ने सभी छात्राओं को बधाई

डॉक्टर एम एस रावत ने कहा कि गृह विज्ञान विभाग में इस प्रकार के उत्कृष्ट कार्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए और वे बहुत प्रसन्न हुए यह देखकर कि किस प्रकार छात्राएं इस प्रदर्शनी के माध्यम से अपने स्वरोजगार को स्थापित करने का प्रशिक्षण ले रही हैं उन्होंने गृह विज्ञान विभाग के समस्त स्टाफ के कार्य की सराहना की और उन्हें प्रोत्साहित किया। महाविद्यालय के प्राचार्य सुशील उपाध्याय ने कहा कि इस बार छात्राओं ने कुछ हटकर प्रयास किया है और उन्होंने कहा छात्राओं ने बहुत कम समय मे भी बहुत अच्छी तैयारी की है और आने वाले समय मे और भी अच्छा प्रयास करने के लिए छात्राओं को प्रोत्साहित किया। प्रबंध समिति के अध्यक्ष राम कुमार शर्मा ने कहा कि छात्राओं का कार्य बहुत सराहनीय है ।उन्होंने विभाग को बहुत बधाई दी।

आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जाता है ।कई छात्राएं जोकि बहुत अच्छे रचनात्मक कार्य जानती हैं परंतु अपनी योग्यता को ग्रामीण क्षेत्र में रहते हुए निखार नहीं पा रही हैं इस प्रदर्शनी के माध्यम से उनकी योग्यता को निखारा जाता है और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास भी किया जाता है इस प्रदर्शनी के माध्यम से छात्राओं को उनके द्वारा बनाए गए उपयोगी सामान के आर्डर भी दिए जाते हैं और उसके द्वारा उन्हें जो अर्निंग होती है उससे वे अपने परिवार की मदद भी कर सकती हैं। और अपनी पढ़ाई का खर्चा भी उठा सकती हैं ।यही प्रयास प्रतिवर्ष किया जाता है ।प्रदर्शनी में डॉ अनामिका चौहान सहायक आचार्य विज्ञान विभाग ने भी छात्राओं को प्रोत्साहित किया श्रीमती शबनम और श्रीमती रीना ने भी इस प्रदर्शनी में अपना बहुत ज्यादा सहयोग दिया और छात्राओं को उपयोगी सामान बनाने के लिए प्रेरित किया।प्रदर्शनी में महाविद्यालय के सभी छात्र छात्राएं सभी शिक्षक शिक्षिकाएं और कार्मिक उपस्थित रहे।

A प्रदर्शनी का आयोजन, प्रदर्शनी के दूसरे दिन छात्र-छात्राओं ने किया फूड स्टॉल का आयोजन

timesnewsuttarakhand · October 23, 2022 · 1 min read

Share

किया गया। प्रदर्शनी के प्रथम दिन छात्राओं द्वारा बनाए गए विभिन्न प्रकार के उपयोगी सामान को प्रदर्शनी में रखा गया। जिसमें छात्राओं द्वारा बनाई गई टाई एंड डाई और प्रिंटिंग की बेडशीट, दुपट्टे ,मेजपोश और जैकेट्स, हैंड मेड पर्स, डॉल, सजावटी दिए, कुशन, सजावटी वॉल हैंगिंग और आसन आदि रखे गए थे। टाई एंड डाई के बेडशीट और दुपट्टे विशेष आकर्षण का केंद्र रहे और छात्राओं ने इनसे इनको सेल करके बहुत लाभ प्राप्त किया। बीएससी की छात्रा कुमारी प्राची के हाथ से बने पर्स के ऑर्डर भी बहुत से शिक्षिकाओं और छात्राओं द्वारा दिए गए। छात्राओं के द्वारा बनाए गए मफलर और मौजे भी विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। प्रदर्शनी का उद्घाटन महाविद्यालय की सचिव श्री अरुण हरित जी, विश्वविद्यालय से आई भूत पूर्व परीक्षा नियंत्रक डॉ एमएस रावत जी और महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुशील उपाध्याय जी के द्वारा किया गया। महाविद्यालय के सचिव श्री अरुण हरित जी ने सभी छात्र छात्राओं को बधाई दी और उनके कार्य की प्रशंसा की। डॉ. एम एस रावत ने कहा कि गृह विज्ञान विभाग में इस प्रकार के उत्कृष्ट कार्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। यह देखकर कि किस प्रकार छात्राएं इस प्रदर्शनी के माध्यम से अपने स्वरोजगार को स्थापित करने का प्रशिक्षण ले रही हैं उन्होंने गृह विज्ञान विभाग के समस्त स्टाफ के कार्य की सराहना की और उन्हें प्रोत्साहित किया। प्रदर्शनी के दूसरे दिन छात्र-छात्राओं द्वारा फूड स्टॉल का आयोजन किया गया जि[redacted]

महोत्सव के उपलक्ष्य में स्लोगन एवं रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।जिसमें छात्राओं ने देश भक्ति से संबंधित स्लोगन तथा रंगोली प्रतियोगिता में अपने विभिन्न प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया । स्लोगन एवं रंगोली प्रतियोगिता का उद्घाटन महाविद्यालय के प्रबंध समिति के अध्यक्ष राम कुमार शर्मा तथा प्राचार्य सुशील उपाध्याय के द्वारा किया गया। प्राचार्य ने छात्र-छात्राओं की प्रतिभाओं की सराहना की और उन्हें इसी प्रकार विभिन्न क्रियाकलापों में प्रतिभाग कर के आगे बढ़ने की सलाह दी। प्रतियोगिता की आयोजन कर्ता डॉक्टर नीतू गुप्ता तथा मिस मनीषा रही। गृहविज्ञान की प्रयोगशाला सहायक श्रीमती रीना गुप्ता ने भी अपना सहयोग प्रदान कियास्लोगन प्रतियोगिता की निर्णायक डॉक्टर विधि त्यागी और डॉक्टर अनिता शर्मा रही और रंगोली प्रतियोगिता की निर्णायक मंडल मे डॉक्टर किरण शर्मा तथा डॉक्टर श्वेता शामिल रही। प्रतियोगिता में सभी छात्र छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

समन्वयक डॉ.नीतू गुप्ता ने बताया कि हमारे इस प्रदर्शनी का उद्देश्य प्रतिवर्ष छात्राओं को यह बताना है कि किस प्रकार वे अपनी अंदर छुपी प्रतिभा को प्रदर्शनी के माध्यम से निखार सकते हैं और इस प्रदर्शनी के माध्यम से छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जाता है ।कई छात्राएं जोकि बहुत अच्छे रचनात्मक कार्य जानती हैं परंतु अपनी योग्यता को ग्रामीण क्षेत्र में रहते हुए निखार नहीं पा रही हैं इस प्रदर्शनी के माध्यम से उनकी योग्यता को निखारा जाता है और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास भी किया जाता है इस प्रदर्शनी के माध्यम से छात्राओं को उनके द्वारा बनाए गए उपयोगी सामान के आर्डर भी दिए जाते हैं और उसके द्वारा उन्हें जो अर्निंग होती है उससे वे अपने परिवार की मदद भी कर सकती हैं। और अपनी पढ़ाई का खर्चा भी उठा सकती हैं ।यही प्रयास प्रतिवर्ष किया जाता है ।प्रदर्शनी में डॉ अनामिका चौहान सहायक आचार्य गृह विज्ञान विभाग ने भी छात्राओं को प्रोत्साहित किया श्रीमती शबनम और श्रीमती रीना ने

सेवा में,

प्राचार्या महोदया,
चमन लाल महाविद्यालय,
लंढौरा

विषय : छात्र-छात्राओं में कौशल -विकास जाग्रत करने हेतु **'कंप्यूटराइज्ड एकाउंटिंग Tally-ERP कार्यशाला'** आयोजित कराने के सम्बन्ध में।

महोदय,

उक्त विषय के सम्बन्ध में निवेदन है कि वाणिज्य संकाय के छात्र -छात्राओं में कौशल -विकास जाग्रत करने हेतु **'कंप्यूटराइज्ड एकाउंटिंग Tally-ERP कार्यशाला'** दिनांक 10/05/20223 से 16/05/2023 तक आयोजित कराना चहाता हैं। उक्त कार्यशाला को सम्पादित करने में सत्यम कम्प्यूटर्स, लंढौरा का सहयोग लिया जायेगा।

महोदया छात्र हित में उपरोक्त विषय में अपनी स्वीकृति प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

दिनांक 01/05/2023

डॉ. देवपाल
प्रभारी, वाणिज्य संकाय

निशुल्क हेतु स्वीकृत
01.05.2023

चमनलाल महाविद्यालय,लंढौरा, हरिद्वार

दिनांक 01/05/2023

आवश्यक सूचना

सभी बी.कॉम एवं एम.कॉम के छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि छात्र-छात्राओं में कौशल-विकास जाग्रत करने हेतु **'कंप्यूटराइज्ड एकाउंटिंग Tally-ERP कार्यशाला'** दिनांक 10/05/2023 से 16/05/2023 तक आयोजन कराया जा रहा है। इच्छुक छात्र-छात्राएं अपने नाम 'कार्यक्रम प्रभारी- **डॉ. श्वेता**' के पास दिनांक 08/05/2023 तक अपना रजिस्ट्रेशन करवा दें।

डॉ. देवपाल
प्रभारी, वाणिज्य संकाय

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar

Scanned with OKEN Scanner

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA LANDHAURA

Department of Commerce

Computerized Accounting Tally ERP 9 Workshop

Session 2022-23 (Attendance Sheet) Date: 10/05/2023 to 16/05/2023

S.No.	Student Name	Father's Name	Class	(Attendance)							Marks Grade
				10/05/2023	11/05/2023	12/05/2023	13/05/2023	14/05/2023	15/05/2023	16/05/2023	
01	ADITI	SUMIT SHARMA	B.Com II Semester	Aditi	Aditi	Ab	Aditi		Aditi	Aditi	B+
02	BUSHRA	MOHD NAWAISH	B.Com II Semester					S			A+
03	FARAHA	YAMEEN	B.Com II Semester								A
04	BHAWNA	NARESH KUMAR	B.Com II Semester	Bhawna	Ab.	Bhawana	Bhawana	U	Bhawna	Bhawna	B+
05	MANIK GARG	VIKAS GARG	B.Com II Semester								A
06	MUKUL MITTAL	MANISH MITTAL	B.Com II Semester					N			A
07	SHAHINA	SHAHZAD ALI	B.Com II Semester								A+
08	SHIVAM PARMAR	PARATH SINGH	B.Com I Semester	Shivam	Shivam	Shivam	Shivam	D	Ab.	Shivam	B+
09	SANDHAYA	MAHENDRA KUMAR	B.Com II Semester								A
10	PREETI	VEERPAL	B.Com II Semester					A			A+
11	AASIB KHAN	RAO HARUN	B.Com II Semester	Ab.	Aashi	Aashi	Aashi		Aashi	Aashi	B+
12	KM NEHA	SHYAM KUMAR	B.Com II Year	Neha	Neha	Neha	Neha	Y	Neha	Neha	A+
13	KM SAHIBA	SHOUKAT ALI	B.Com II Year								A
14	MANSI	JASBEER SINGH PAL	B.Com II Year								A

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Scanned with OKEN Scanner

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA LANDHAURA

Department of Commerce

Computerized Accounting Tally ERP 9 Workshop

Session 2022-23 (**Attendance Sheet**) **Date: 10/05/2023 to 16/05/2023**

S.No.	Student Name	Father's Name	Class	(Attendance)							Marks Grade
				10/05/2023	11/05/2023	12/05/2023	13/05/2023	14/05/2023	15/05/2023	16/05/2023	
15	MUSKAN	MOHD AHSAN	B.Com II Year		AB						B+
16	NEHA	KUBER DUTT SHARMA	B.Com II Year								A
17	PREETI	VEERPAL	B.Com II Year								A+
18	SALONI	AMAR SINGH	B.Com II Year								A
19	SHILPA	BRIJPENDRA SINGH	B.Com II Year	Ab	Ab	Ab	Ab		Ab	Ab	—
20	SONAM	IRFAN AHMAD	B.Com II Year	SONAM	SONAM	SONAM	SONAM		SONAM	SONAM	A
21	TANYA MEHRA	MANJEET SINGH	B.Com II Year								A
22	TANU PAL	SHYAM KUMAR	B.Com II Year								A
23	VISHAKHA	SHESHPAL	B.Com II Year								A+
24	KM JANVI	VIKRAM SINGH	B.Com III Year								A
25	KM MUSKAN	SHUQUAT	B.Com III Year								A
26	KM PARUL	SUSHEEL PAL	B.Com III Year	Ab	Ab	Ab	Ab		Ab	Ab	—
27	KM POONAM SHARMA	RAMPRASAD SHARMA	B.Com III Year								A

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura Dist. Haridwar Uttarakhand

Scanned with OKEN Scanner

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA LANDHAURA

Department of Commerce

Computerized Accounting Tally ERP 9 Workshop

Session 2022-23 (Attendance Sheet) Date: 10/05/2023 to 16/05/2023

S.No.	Student Name	Father's Name	Class	(Attendance)							Marks Grade
				10/05/2023	11/05/2023	12/05/2023	13/05/2023	14/05/2023	15/05/2023	16/05/2023	
28	KM RITU RANI	JAGPAL SINGH	B.Com III Year	Ritu	Ritu	Ritu	Ritu		Ritu	Ritu	A+
29	KM RONISHA	SURENDRA	B.Com III Year	Ab	Ab	Ab	Ab	S	Ab	Ab	—
30	KM SALONI SHARMA	MANOJ KUMAR SHARMA	B.Com III Year	Saloni	Saloni	Saloni	Saloni		Saloni	Saloni	A
31	PRACHI CHOUDHARY	SHIV KUMAR	B.Com III Year	Prachi	Prachi	Prachi	Prachi	U	Prachi	Prachi	A
32	RASHI SINGHAL	RAHUL SINGHAL	B.Com III Year	Rashi	Rashi	Rashi	Rashi		Rashi	Rashi	A
33	SAKSHI KORI	RAM KUMAR	B.Com III Year	Sakshi	Sakshi	Sakshi	Sakshi	N	Sakshi	Sakshi	A
34	SHRUTI	ROBY KUMAR GARG	B.Com III Year	Shruti	Shruti	Shruti	Shruti		Shruti	Shruti	A
35	ABHISHEK CHOUDHARY	PRADEEP KUMAR	B.Com III Year	Abhishek	Abhishek	Abhishek	Abhishek	D	Abhishek	Abhishek	A+
36.	Yash Bhardwaj	Lalit Sharma	B.Com II Year	YB	YB	YB	YB		YB	YB	A+
37.	Daivik Kaushik		B.Com II Year	Daivik	Daivik	Daivik	Daivik	A	Daivik	Daivik	A+
								Y			

IQAC Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with OKEN Scanner

फीड-बैक फॉर्म

'कंप्यूटराइज्ड एकाउंटिंग Tally-ERP कार्यशाला' दिनांक 10/05/20223 से 16/05/2023 तक

क्र. सं	छात्र छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	कार्यशाला का स्तर				हस्ताक्षर
				बहुत अच्छा	अच्छा	संतोषजनक	निम्न	
01	ADITI	SUMIT SHARMA	B.Com II Semester	✓				Aditi
02	BUSHRA	MOHD NAWAJISH	B.Com II Semester	✓				[signature]
03	FARAHA	YAMEEN	B.Com II Semester		✓			[signature]
04	BHAWNA	NARESH KUMAR	B.Com II Semester		✓			Bhawna
05	MANIK GARG	VIKAS GARG	B.Com II Semester		✓			[signature]
06	MUKUL MITTAL	MANISH MITTAL	B.Com II Semester		✓	~~✓~~		[signature]
07	SHAHINA	SHAHZAD ALI	B.Com II Semester			✓		[signature]
08	SHIVAM PARMAR	PARATH SINGH	B.Com II Semester		✓			Shivam
09	SANDHAYA	MAHENDRA KUMAR	B.Com II Semester	✓				[signature]
10	PREETI	VEERPAL	B.Com II Semester	✓				[signature]
11	AASHI KHAN	RAO HARUN	B.Com II Semester		✓			[signature]
12	KM NEHA	SHYAM KUMAR	B.Com II Year		✓			[signature]
13	KM SAHIBA	SHOUKAT ALI	B.Com II Year	✓				[signature]
14	MANSI	JASBEER SINGH PAL	B.Com II Year		✓			[signature]

[signature] [stamp] [signature]

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar Uttarakhand

फीड-बैक फॉर्म

'कंप्यूटराइज्ड एकाउंटिंग Tally-ERP कार्यशाला' दिनाक 10/05/20223 से 16/05/2023 तक

क्र. सं	छात्र छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	कार्यशाला का स्तर				हस्ताक्षर
				बहुत अच्छा	अच्छा	संतोषजनक	निम्न	
15	MUSKAN	MOHD AHSAN	B.Com II Year			✓		
16	NEHA	KUBER DUTT SHARMA	B.Com II Year	✓				
17	PREETI	VEERPAL	B.Com II Year	✓				
18	SALONI	AMAR SINGH	B.Com II Year	✓				
19	SHILPA	BHUPENDRA SINGH	B.Com II Year					
20	SONAM	IRFAN AHMAD	B.Com II Year		✓			
21	TANIYA MEHRA	MANJEET SINGH	B.Com II Year		✓			
22	TANU PAL	SHYAM KUMAR	B.Com II Year		✓			
23	VISHAKHA	SHISHPAL	B.Com II Year		✓			
24	KM JANVI	VIKRAM SINGH			✓			
25	KM MUSKAN	SHUQUAT		✓				
26	KM PARUL	SUSHEEL PAL						
27	KM POONAM SHARMA	RAMPRASAD SHARMA			✓			

Scanned with OKEN Scanner

फीड-बैक फॉर्म

'कंप्यूटराइज्ड एकाउंटिंग Tally-ERP कार्यशाला' दिनांक 10/05/20223 से 16/05/2023 तक

क्र. सं	छात्र छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	कार्यशाला का स्तर				हस्ताक्षर
				बहुत अच्छा	अच्छा	संतोषजनक	निम्न	
28	KM RITU RANI	JAGPAL SINGH				✓		Ritu
29	KM RONISHA	SURENDRA						
30	KM SALONI SHARMA	MANOJ KUMAR SHARMA				✓		Saloni
31	PRACHI CHOUDHARY	SHIV KUMAR		✓				Prachi
32	RASHI SINGHAL	RAHUL SINGHAL		✓				Ku
33	SAKSHI KORI	RAM KUMAR			✓			Sakshi
34	SHRUTI	ROBY KUMAR GARG			✓			Shruti
35	ABHISHEK CHOUDHARY	PRADEEP KUMAR			✓			Abhi
36.	Yash Bhardwaj	Lalit Sharma		✓				Y.B
37.	Daivik Kaushik				✓			Daivik

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhand

Scanned with OKEN Scanner

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya

Scanned with OKEN Scanner

वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता

A Proposal Submitted for 30 days Certificate Course on

06-03-2023 To 05-04-2023

Organized by

Department of Yogic Science

Chaman Lal Mahavidhyalaya

Landhora, Roorkee Haridwar (Uttarakhand)

Affiliated to

Uttarakhand Sanskrit University

Bahadarabd,Haridwar, Uttarakhand

Principal

Scanned with OKEN Scanner

सेवा में

श्रीमान प्रधानाचार्य

चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा, हरिद्वार ,उत्तराखंड

विषय- वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता

महोदय

उपरोक्त विषय के संबंध में अवगत कराना है कि योग विज्ञान विभाग छात्रों के लिए " वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता" विषय पर06/03/2023 से 05/04/2023 प्रमाण पत्र करना चाहता है

अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया अनुमति प्रदान करने का कष्ट करें।

सादर

Ankit Kumar

डॉ. अंकित कुमार

योग विज्ञान विभाग

चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा उत्तराखंड

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landaura Dist -Haridwar Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya IQAC Landaura

Scanned with OKEN Scanner

सूचना

सभी योग संकाय के छात्रों को सूचित किया जाता है कि योग विज्ञान विभाग द्वारा तीस दिवसीय प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम का आयोजन 06/03/2023 से 05/04/2023 तक किया जा रहा है जिसका विषय है -वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता "

अतः सभी छात्र-छात्राओं को तीस दिवसीय प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम में प्रतिभा करना अनिवार्य है

धन्यवाद

संयोजक

डॉ. अंकित कुमार

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhand

IQAC
Coordinator

Scanned with OKEN Scanner

30 DAYS CERTIFICATE COURSE

ON

वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता

Organixed By

DEPARMENT OF YOGIC SCIENCE

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA,LANDHAURA,HARIDWAR (UTTARAKHAND)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura (Distt. Haridwar)

ATTENDANCE SHEET

S.No	Name	Father Name	Class	SIGNATURE OF STUDENTS							
				DAY 1	DAY 2	DAY 3	DAY 4	DAY 5	DAY 6	DAY 7	DAY 8
1	चन्द्रशेखर	राम बहादुर	M.A Yoga	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर
2	अनु रानी	कृष्ण पाल	"	A	A	A	A	A	A	A	A
3	डोली	किरपाल सिंह	"	Dholi	Dholi	Dholi	Dholi	Dholi	Dholy	Dholy	Dholy
4	रूबी	महिपाल सिंह कश्यप	"	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi
5	सन्ध्या गोयल	कृष्ण गोयल	"	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]
6	गायत्री सहरावत	राजेन्द्र सिंह सहरावत	M.A Yoga	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]
7	नम्रता चौधरी	सुशील कुमार चौधरी	M.A Yoga	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता
8	नीतू सिंह	लल्लन प्रसाद	"	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu
9	रजनी द्विवेदी	कन्हैया लाल द्विवेदी	"	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]
10	रेखा	राजबीर सिंह	M.A Yoga	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha
11	विकुल	बाबू राम	" "	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]
12	आरती	राजकुमार	" "	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]
13	जायका	भवानी कुमार	" "	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]
14	भावना पोपली	दिनेश पोपली	M.A Yoga	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]
15	चाँद मो०	मुबारक अली	M.A Yoga	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]
16	दुष्यन्त कुमार	विजेन्द्र सिंह	M.A Yoga	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]
17	गरिमा मदान	सुरेन्द्र मदान	M.A Yoga	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]
18	ओमेश कुमार शर्मा	दिलीप कुमार शर्मा	M.A Yoga	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]	[signature]

Scanned with OKEN Scanner

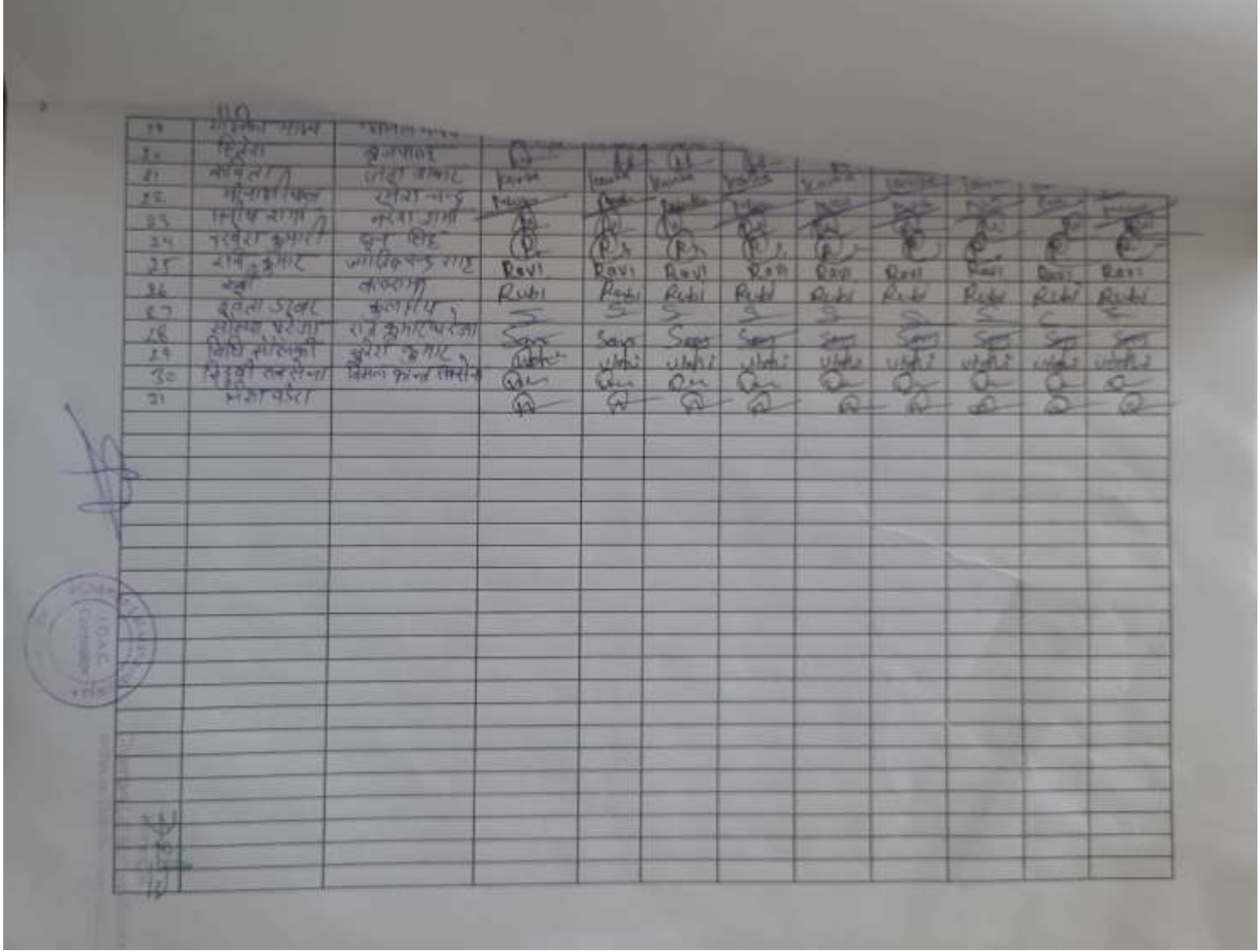

ON

वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता

Organixed By

DEPARMENT OF YOGIC SCIENCE
CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA,LANDHAURA,HARIDWAR (UTTARAKHAND)

ATTENDANCE SHEET

S.No	Name	Father Name	Class	SIGNATURE OF STUDENTS							
				DAY 9	DAY 10	DAY 11	DAY 12	DAY 13	DAY 14	DAY 15	DAY 16
1	चन्द्रशेखर	राम बहादुर	m.A Yoga	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर
2	अंजू रानी	कृष्णपाल	" "	A	A	A	A	A	A	A	A
3	डोली	किरपाल सिंह	" "	Dhaly	Dhaly	Dhaly	Dhaly	Dhaly	Dhaly	Dhaly	Dhaly
4	रूबी	महिपाल सिंह	" "	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi
5	रश्मि गोयल	मुकुल गोयल	m.A Yoga	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
6	लवली सहरावत	राजेन्द्र सिंह सहरावत	" "	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
7	नम्रता चौधरी	सुशील कुमार चौधरी	m.A Yoga	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता
8	नीतू सिंह	लाखन प्र सिंह	m.A Yoga	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu
9	रजत त्रिवेदी	कन्हैया लाल त्रिवेदी	" "	B	B	B	B	B	B	B	B
10	रेखा	रामवीर सिंह	m.A Yoga	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha
11	निशा [illegible]	बब्बू राम	" "	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
12	पार्वती	[illegible] कुमार	m.A Yoga	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
13	आयुष	अवनी कुमार	m.A Yoga	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
14	भावना पायली	पुष्कर पायली	m.A Yoga	B	B	B	B	B	B	B	B
15	चाँद मोहम्मद	[illegible] अली	" "	Ch	Ch	Ch	Ch	Ch	Ch	Ch	Ch
16	दुष्यन्त कुमार	नरेन्द्र सिंह	" "	Du	Du	Du	Du	Du	Dus	Du	Du
17	गरिमा महान	सुरेन्द्र महान	m.A Yoga	Ga	Ga	Ga	Ga	Ga	Ga	Ga	Ga
18	गौरव कुमार शर्मा	दिलीप कुमार शर्मा	m.A Yoga	Go	Go	Go	Go	Go	Go	Go	Go

Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura Distt. Haridwar Uttarakhand

Scanned with OKEN Scanner

on

वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता

Organixed By

DEPARMENT OF YOGIC SCIENCE

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA,LANDHAURA,HARIDWAR (UTTARAKHAND)

ATTENDANCE SHEET

S.No	Name	Father Name	Class	SIGNATURE OF STUDENTS							
				DAY. 17	DAY 18	DAY 19	DAY. 20	DAY 21	DAY 22	DAY 23	DAY 24
1	चन्द्रशेखर	राम बहादुर	M.A Yoga	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2	मधु रानी	कृष्ण पाल	M.A Yoga	A	A	A	A	A	A	A	A
3	डोली	निरपाल सिंह	M.A Yoga	Dhy	Dhy	Dhy	Dhy	Dhy	Dhy	Dhy	Dhy
4	रानी	महिपाल सिंह कश्यप	" "	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi
5	सन्ध्या गोयल	अरुण गोयल	" "	S	S	S	S	S	S	S	S
6	लवली सहरावत	राजेन्द्र सिंह सहरावत	" "	L	L	L	L	L	L	L	L
7	ममता चौधरी	सुशील कुमार चौधरी	" "	ममता	ममता	ममता	ममता	ममता	ममता	ममता	ममता
8	नीतू सिंह	लक्ष्मण प्रसाद	" "	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu	Nitu
9	रतन त्रिपाठी	कन्हैया लाल त्रिपाठी	M.A Yoga	R	R	R	R	R	R	R	R
10	रेखा	रामवीर सिंह	M.A Yoga	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha
11	शिवकान्त	बाबू राम	M.A Yoga	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
12	भारती	राम कुमार	M.A Yoga	A	A	A	A	A	A	A	A
13	आर्यन	भवानी कुमार	M.A Yoga	A	A	A	A	A	A	A	A
14	भावना पायल	प्रकाश पायल	M.A Yoga	B	B	B	B	B	B	B	B
15	नाहिद मोहम्मद	मुबारक अली	M.A Yoga	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
16	दुष्यन्त कुमार	वीरेन्द्र सिंह	M.A Yoga	Dus	Dus	Dus	Dus	Dus	Dus	Dus	Dus
17	गरिमा मदान	सुरेन्द्र मदान	M.A Yoga	Ga	Ga	Ga	Ga	Ga	Ga	Ga	Ga
18	गौरव कुमार शर्मा	दिलीप कुमार शर्मा	M.A Yoga	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

ON

वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता

Organixed By

DEPARMENT OF YOGIC SCIENCE

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA,LANDHAURA,HARIDWAR (UTTARAKHAND)

ATTENDANCE SHEET

S.No	Name	Father Name	Class	SIGNATURE OF STUDENTS							
				DAY 25	DAY 26	DAY 27	DAY 28	DAY 29	DAY 30		
1	चन्द्रशेखर	राम बहादुर	M.A Yoga	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर	चन्द्रशेखर		
2	अंजू रानी	कृष्ण पाल	" "	A	A	A	A	A	A		
3	[illegible]	किरपाल सिंह	" "	Dhruv	Dhruv	Dhruv	Dhruv	Dhruv	Dhruv		
4	रूबी	महिपाल सिंह कश्यप	" "	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi	Rubi		
5	सत्यम् गोयल	अतुल गोयल	M.A Yoga								
6	लवली [illegible]	[illegible] सिंह [illegible]	M.A Yoga								
7	नम्रता चौधरी	सुशील कुमार [illegible]	M.A Yoga	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता	नम्रता		
8	नीतू सिंह	[illegible] प्रसाद	M.A Yoga	नीतू	नीतू	नीतू	नीतू	नीतू	नीतू		
9	रजनी [illegible]	कन्हैया लाल	M.A Yoga	R	R	R	R	R	R		
10	रेखा	रामबीर सिंह	M.A Yoga	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha		
11	[illegible]	बाबू राम	M.A Yoga								
12	भारती	राज कुमार	M.A Yoga								
13	[illegible]	[illegible] कुमार	M.A Yoga								
14	[illegible]	[illegible]	" "								
15	[illegible]	[illegible]	" "								
16	दुष्यन्त कुमार	विजेन्द्र सिंह	" "								
17	[illegible]	सुरेन्द्र [illegible]	" "								
18	गौरव कुमार शर्मा	दिलीप कुमार शर्मा	" "								

Principal

Chaman Lal Mahavidyalaya

Landhaura Distt. Haridwar (Uttarakhand)

Scanned with OKEN Scanner

30 DAYS CERTIFICATE COURSE

ON

वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता

Organized By

DEPARMENT OF YOGIC SCIENCE

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA,LANDHAURA,HARIDWAR (UTTARAKHAND)

GRADE SHEET

S.No	NAME	FATHER NAME	CLASS	GRADE
1	चन्द्रशेखर	राम बहादुर	M.A Yoga II Year	A
2	अनु रानी	कृष्ण पाल	M.A Yoga	A
3	[illegible]	किरपाल सिंह	M.A Yoga	A
4	रूबी	महिपाल सिंह	"	B
5	सौम्या गोयल	अरुण गोयल	"	A
6	लवली सहरावत	राजेन्द्र सिंह सहरावत	"	B
7	ममता चौहान	सुशील कुमार चौहान	"	B
8	नीतू सिंह	[illegible]	M.A Yoga II Year	B
9	रजनी द्विवेदी	कन्हैया लाल द्विवेदी	"	A
10	रेखा	रामवीर सिंह	"	A
11	[illegible]	[illegible] राम	"	A
12	[illegible]	राम कुमार	M.A Yoga I Year	B
13	[illegible]	[illegible] कुमार	M.A Yoga I Year	B
14	भावना पोखरियाल	दुर्गेश पोखरियाल	M.A Yoga I Year	A
15	चांद मोहम्मद	मेहरबान अली	" "	A
16	कुलदीप कुमार	विरेन्द्र सिंह	M.A Yoga	A
17	शालिनी मदान	सुरेन्द्र मदान	" "	A
18	पारुल शर्मा	दिनेश कुमार शर्मा	M.A Yoga	B
19	मुस्कान यादव	अखिल यादव	M.A Yoga	B
20	निशा	बृजपाल	M.A Yoga	A
21	कविता	उमा शंकर	M.A Yoga	A
22	मीनाक्षी पाल	रमेश चन्द्र	M.A Yoga	A
23	मनीष राणा	नरेश चन्द्र	" "	A
24	पुष्पा कुमारी	धूम सिंह	" "	B
25	रवि कुमार	ज्योतिष चन्द्र शाह	M.A Yoga	B
26	रूबी	बलराम	" "	B
27	[illegible] ठाकुर	कुलदीप	" "	B
28	सौम्या अरोड़ा	राजू कुमार अरोड़ा	" "	A
29	[illegible]	सुरेश कुमार	M.A Yoga I Year	A
30	[illegible] सक्सेना	[illegible] कान्त सक्सेना	" "	B
31	[illegible] वडेरा			B

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura Distt-Haridwar Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Coordinator

Scanned with OKEN Scanner

लंढौरा। चमन लाल महाविद्यालय के योग विज्ञान विभाग द्वारा वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता विषय पर तीस दिवसीय प्रमाण पत्र कोर्स का आयोजन किया गया।प्रतिभागियों को योग एवं आध्यात्मिकता के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय प्रबंध समिति सचिव अरुण हरित कोषाध्यक्ष अतुल हरित द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि अरुण हरित ने कहा कि योग अनादिकाल से भारतीय संस्कृति का हिस्सा रहा है। लेकिन भौतिकवाद में फंसकर हम योग के महत्व को भूलते चले गए। भौतिकवाद के दुष्परिणाम सामने आने के बाद हम एक बार फिर योग की ओर वापस लौट रहे हैं। आज सारा विश्व योग के महत्व को स्वीकार कर रहा है। ऐसे में हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी इस प्राचीन धरोहर को पुनः उसका वास्तविक स्थान प्राप्त करने में योगदान दें। विशिष्ट अतिथि अतुल हरित ने कहा कि आज योग की धूम सारे विश्व में मची हुई है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की घोषणा इस बात का जीता जागता सबूत है। भारतीय होने के नाते हमें बढ़-चढ़कर योग का प्रचार प्रसार करना चाहिए और योग को वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में स्वीकार करना चाहिए। मुख्य वक्ता डॉ तरुण कुमार गुप्ता ने ओंकार मुद्रा, ज्ञान मुद्रा, तथा पीनियल ग्रंथि आदि धारणाओं के विषय में महत्वपूर्ण जानकारियां साझा की। उन्होंने योग एवं अध्यात्म के क्षेत्र में गणित के महत्व को उदाहरणों के द्वारा समझाया। डॉ गुप्ता ने प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान भी किया। प्राचार्य डॉ. दीपा अग्रवाल ने प्रतिभागियों को विपश्यना और ध्यान योग की विभिन्न मुद्राओं से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि आधुनिक काल में मानव अनेक व्याधियों से ग्रसित है जिनका इलाज योग में निहित है। हाइपरटेंशन कोलेस्ट्रॉल उदर रोग जैसी बीमारियों के साथ ही बहुत सी मानसिक बीमारियों का इलाज योग द्वारा सहज रूप से किया जा सकता है। उन्होंने आह्वान किया कि योग हमारे ऋषि मनीषियों द्वारा खोजी गई एक महत्वपूर्ण पद्धति है जिसका संरक्षण एवं प्रचार प्रसार करना हम सबकी जिम्मेदारी है। कार्यशाला का आयोजन योग विज्ञान विभाग के डॉ अंकित द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉक्टर अंकित ने विभिन्न योग मुद्राओं सूर्य नमस्कार तथा ध्यान के महत्व को स्पष्ट किया। उन्होंने प्रयोगात्मक रूप से विभिन्न आसन एवं योग मुद्राएं प्रतिभा के द्वारा कराईं। इस अवसर पर डॉ. रिचा चौहान, डॉ किरण शर्मा डॉक्टर मीरा चौरसिया आदि उपस्थित रहे।

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

IQAC Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt Haridwar Uttarakhand

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura Distt. Haridwar Uttarakhand

Scanned with OKEN Scanner

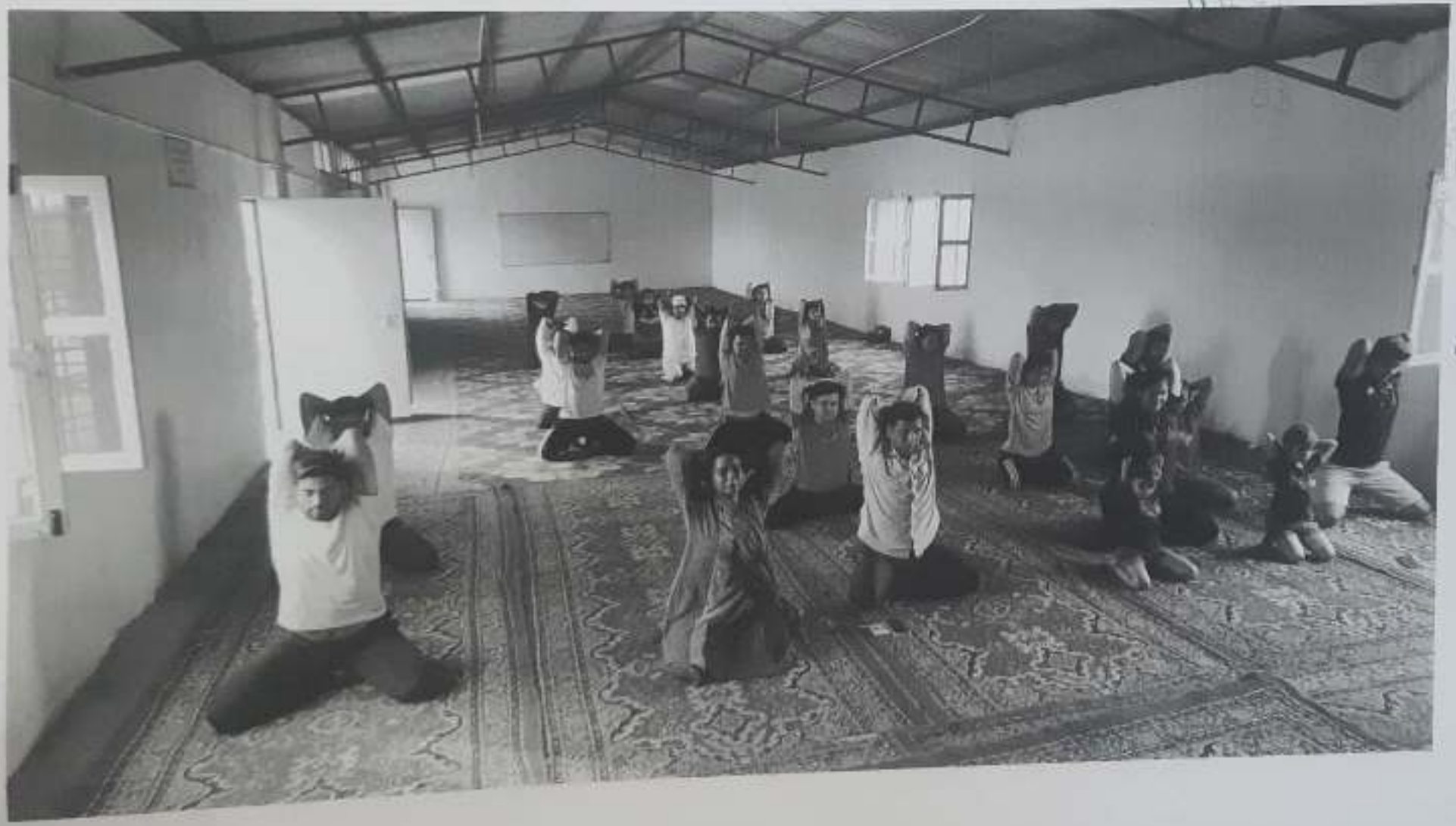

Scanned with OKEN Scanner

प्रेस विज्ञप्ति

"संस्कृत सम्भाषण शिविर का शुभारम्भ"

छछरौली, चमनलाल महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा संस्कृत सम्भाषण शिविर का (दिनांक 10-19/04/2023 दस दिवसीय) आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री राम कुमार शर्मा ने माता सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलित करके किया। उन्होंने सर्वप्रथम हमारे मुख्य अतिथि श्री दीनबन्धु (संस्कृत प्रचार प्रसार समिति कार्यकर्ता) का हार्दिक अभिनन्दन किया और साथ ही छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज का युवा कल का भविष्य है। भारतीयता हमारे मन मस्तिष्क में संस्कृति के माध्यम से बसी हुई है। हमारी संस्कृति ही विदेशों में हमारी पहचान है। अतः हमें अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ना चाहिए। संस्कृति और संस्कृत दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि संस्कृत को हम जानते हैं तभी संस्कृति की पहचान हो सकती है। महाविद्यालय के प्राचार्या डॉ० दीपा अग्रवाल ने कहा कि आप सभी संस्कृत को एक विषय के रूप में नहीं अपितु संस्कारों के रूप में जानिये। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि संस्कृत संस्कारों की भाषा है। जब हम कोई पूजा पद्धति को करते हैं तो सर्वप्रथम मन्त्रों के उच्चारण से आरम्भ करते हैं देवी-देवताओं की स्तुति मन्त्रों द्वारा की जाती है जो संस्कृत में ही होते हैं। इसलिए इसे देवभाषा के रूप में भी जाना जाता है। आप सभी के संवर्द्धन के लिए प्रत्येक वर्ष संस्कृत प्रचार-प्रसार भारती द्वारा यह शिविर संस्कृत-विभाग की ओर से महाविद्यालय में निःशुल्क लगाया जाता है। इस अवसर पर डॉ० मीरा चौटालिया, डॉ० विधि त्यागी, डॉ० सूर्यकान्त शर्मा, डॉ० नवीन त्यागी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ० अनिता रानी (शर्मा) ने किया।

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya

Chaman Lal Mahavidyalaya IQAC Coordinator

डॉ० अनिता रानी (शर्मा)

रिपोर्ट

चमन लाल महाविद्यालय के संस्कृत-विभाग द्वारा दिनांक 10 अप्रैल 2023 से 19 अप्रैल 2023 तक (दस दिवसीय) संस्कृत-सम्भाषण शिविर का आयोजन किया गया। जिसका समय प्रातः 10:00 बजे से 1:00 बजे तक था। संस्कृत सम्भाषण शिविर में व्याख्यान के लिए श्री दीनबन्धु (संस्कृत प्रचार प्रसार कार्यकर्ता) को आमन्त्रित किया गया। उन्हें फोन के माध्यम से अवगत कराया गया। महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री राम कुमार शर्मा ने कार्य का शुभारम्भ माता सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित करके तथा मुख्य अतिथि श्री दीनबन्धु का स्वागत करके किया। श्री रामकुमार शर्मा ने कहा कि यह संस्कृत-सम्भाषण शिविर प्रत्येक वर्ष महाविद्यालय में संस्कृत प्रचार प्रसार समिति द्वारा निःशुल्क लगाया जाता है जिससे संस्कृत का प्रचार हो और छात्रों को कुछ शिक्षा प्रदान की जा सके। श्री रामकुमार शर्मा ने कहा कि संस्कृत को हमें अपने जीवन में महत्व देना चाहिये इसी से ही संस्कार और संस्कृति जीवित है जिससे समाज में देश में मानवता विकसित होती है। प्राचार्य डॉ० सुशील उपाध्याय ने कहा कि आज संस्कृत को विषय के रूप में नहीं अपितु अपनी आवश्यकता के अनुरूप अपनाना चाहिए। संस्कृत का ज्ञान पाकर हम किसी भी क्षेत्र में (अनुवादक, शिक्षक, प्रवक्ता, चिकित्सक, अनुसंधानकर्ता, वास्तुशास्त्रीय, ज्योतिष आदि) अपनी पहचान बना सकते हैं। उन्होंने छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं भी दी और उन्हें प्रकार आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा साथ ही साथ श्री दीनबन्धु का हार्दिक अभिनन्दन किया। श्री दीनबन्धु ने कार्यक्रम की शुरुआत संस्कृत गीत (वदतु संस्कृतम् पठतु संस्कृतम्) से की। उन्होंने छात्रों से सर्वप्रथम अपना परिचय संस्कृत में देने के लिए कहा। कुछ छात्रों ने थोड़ा बहुत बताया और कुछ संकोचवश (गलत बोलने के डर से) नहीं बोले तो उन्होंने कहा कि आप बोलिए चाहे गलत ही क्यों न हो यदि गलत नहीं होगा तो उसमें सुधार कैसे होगा और हम आगे नहीं बढ़ पायेंगे। इसके पश्चात उन्होंने कहा कि अपना नाम बताने के लिए मम नाम का प्रयोग होगा। स्त्रीलिङ्ग के लिए कल्पना और पुल्लिंग के लिए अमनः का प्रयोग होगा। तो वाक्य बनेगा "मम नाम कल्पना" तथा "मम नाम अमनः"। फिर बताया कि संस्कृत में तीन वचन होते हैं। एकवचन, द्विवचन और बहुवचन तथा तीन ही

एक दो बहुतसे

पुरुष होते हैं प्रथमपुरुष (सः, वह) मध्यमपुरुष (त्वम्, तुम) और उत्तमपुरुष (अहम्, मैं) जैसे मैं पढ़ता हूँ अहम् पठामि, हम दोनों पढ़ते हैं आवाम् पठावः, हम सब पढ़ते हैं वयम् पठामः। डॉ० आपने पास और दूर के लिए अलग २ शब्दों को बताया सः (दूर) एषः (पास)। स्त्रीलिङ्ग के लिए सा और एषा का प्रयोग होता है। वहीं नपुंसकलिंग के लिए एतत् और तत् का प्रयोग होता है। जैसे वह गाती है "सा गायति", वह जाता है "सः गच्छति" वह फल है "तत् फलम्"। उन्होंने छात्रों को दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं को भी संस्कृत में बताया जैसे छुरिका, व्यजनम्, फलकम्, द्विचक्रिका, कर्तरी, लेखनी, पुस्तकालय, पुस्तकम्, लेखनी, अंकनी, घटिका, औषधि, आदि। प्रश्न पूछने के लिए ६ ककारों का प्रयोग किया जाता है जैसे कः, किम्, कुत्र, कदा, कस्य, कस्मिन्। उन्होंने समय का ज्ञान बताने वाली घड़ी के बारे में बताया यदि पौने ६: बजे हैं तो हम कहेंगे पादोन षट्, साढ़े पाँच, सार्धपंच अगर ५ बजने में ५ मिनट शेष हैं तो पंच निमेषः चतुर्वादनम् इसी से सभी समय की सुइयों के विषय में जानकारी दी गई। उन्होंने छात्रों को लकारों के विषय में अवगत कराया वर्तमानकाल (लट्-लकार), भूतकाल (लङ्लकार), लृट् लकार (भविष्यकाल) लोट्लकार (आज्ञावाचक), विधिलिङ् लकार (प्रेरणा देना और चाहिए के अर्थ में), इन सभी गतिविधियों को कराते कराते उन्होंने छात्रों को बीच-बीच में संस्कृत कहानी भी सुनाई और छात्रों ने बड़े ही ध्यान से सुनी कार्यक्रम के आखिर में छात्रों ने अपना परिचय संस्कृत में दिया और अन्य गतिविधियाँ वाक्य व्यवहार, कहावतें, मुहावरे, आदि भी किये। इसप्रकार सात दिवसीय शिविर अपने समापन की ओर अग्रसर हो गया। इस कार्यक्रम के आन्तरिक कार्यक्रम संयोजिका डॉ० अनिता शर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रधानाचार्य
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura Distt.-Haridwar Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidyalaya IQAC Coordinator

Scanned with OKEN Scanner

चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा, हरिद्वार।

संस्कृत सम्भाषण शिविर

उपस्थिति प्रपत्र (प्रतिक्रिया)

दिनांक 17/04/2023

क्रम संख्या	नाम	पिता का नाम	कक्षा	प्रतिक्रिया उत्तम	अतिउत्तम
1	अंजली	श्री विनोद कुमार	बी०ए० III वर्ष	✓	
2	मेघा	" नरेश कुमार	" "		✓
3	रिया	" ओमकार कुमार	" "		✓
4	साहिबा	मो० फुरकान	बी०ए० II वर्ष		✓
5	साहिबा	मो० मोहब्बत अली	बी०ए० III वर्ष	✓	
6	सुमन	श्री महेन्द्र सिंह	बी०ए० II वर्ष	✓	
7	सरीता	श्री कमल सिंह	" "		✓
8	अन्नु	श्री धीर सिंह	बी०ए० "		✓
9	नीटू	श्री ओमवीर	बी०ए० II वर्ष	✓	
10	कुमारी	" नरेश	बी०ए० III वर्ष		✓
11	तन्नु	" संजय	" "		✓
12	मोहिनी	" संजीव	बी०एस०सी० III वर्ष		✓
13	फाइमा	ताहिर	" "		✓
14	मनीषा	" ओमप्रकाश	" "	✓	
15	रूपा	" सतीश सिंह	बी०कॉम II वर्ष		✓
16	अनुराधा	" रणधीर	बी०ए० द्वितीय वर्ष	✓	
17	रचना	" राजकुमार	बी०कॉम III वर्ष		✓
18	शहनाज	मो० जुबैर	बी०कॉम II वर्ष		✓
19	विकास	श्री महेन्द्र सिंह	बी०ए० III वर्ष		✓
20	तरु	" महिपाल	बी०एस०सी० III वर्ष		✓
21	शिवानी	" चन्द्रप्रकाश	बी०ए० III वर्ष		✓
22	अनुराधा	" प्रीतम सिंह	" "		✓
23	कोमल	" अमर कुमार	" "		✓
24	प्रतिभा	" मुकेश	बी०ए० II वर्ष		✓
25	गुनेश्वर	" सुरेन्द्र सिंह	बी०ए० II वर्ष	✓	
26	—	—	—	—	—
27	—	—	—	—	—
28	—	—	—	—	—
29	—	—	—	—	—
30	—	—	—	—	—
31	—	—	—	—	—

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar

चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा, हरिद्वार।

संस्कृत सम्भाषण शिविर

उपस्थिति प्रपत्र

दिनांक - 10/04/2023 से 19/04/2023

क्रम संख्या	नाम	पिता का नाम	कक्षा	हस्ताक्षर
1.	अंजली	श्री विजेन्द्र कुमार	बी० ए० III year	अंजली
2.	मेघा पंवार	श्री नरेश कुमार	बी० ए० III year	मेघा पंवार
3.	रिया	श्री ओमकार कुमार	बी० ए० III year	Riya
4.	साहिबा	श्री मो० फुरकान	बी० ए० II year	साहिबा
5.	साहिबा	श्री० मोहब्बत अली	बी० ए० III year	साहिबा
6.	सुमन	श्री महेन्द्र सिंह	बी० ए० II year	सुमन
7.	सरिता	श्री कमल सिंह	बी० ए० II year	सरिता
8.	अन्नु	श्री धीर सिंह	बी० ए० II year	अन्नु
9.	[illegible]	श्री सोमबीर	बी० ए० II year	[illegible]
10.	शिवांक	श्री निजपाल	बी० ए० II year	शिवांक
11.	दिपक कुमार	श्री उमर सिंह	बी० ए० II year	[illegible]
12.	कार्तिक	श्री अमित कुमार	बी० ए० III year	कार्तिक
13.	खुशी	श्री नरेश कुमार	बी० ए० III year	खुशी
14.	तन्नु	श्री संजय कुमार	बी० ए० III year	तन्नु
15.	[illegible]	मो० [illegible]	Bcom II year	[illegible]
16.	मोहिनी	श्री संजीव	B.Sc III year	Mohini
17.	कहकशा	इरशाद	B.Sc III year	Khakeshn
18.	फरहीन	तनवीर	B.Sc II year	farheen
19.	मनीषा	श्री ओमप्रकाश कुमार	B.Sc III year	Manisha
20.	उमा	श्री आलोक सिंह	B.Com II year	उमा
21.	अनुराधा	श्री रणधीर	B.A. II	अनुराधा
22.	राधिका	श्री राजकुमार	B.com. III	राधिका
23.	शहनाज	मो० हुसैन	B.com III	शहनाज
24.	प्रियंका	श्री महेन्द्र सिंह	B.A. III year	प्रियंका
25.	शिवानी	श्री महिपाल	B.Sc III year	शिवानी
26.	तनु	" चन्द्रभान	B.A III year	तनु
27.	अनुराधा	" प्रीतम सिंह	B.A. III y.	अनुराधा
28.	Anshul	" Amar Kumar	B.A. III year	Anshul
29.	Pavitibha	Sh. Mukush	B.A. II year	[illegible]
30.	मुनेश	श्री सुरेन्द्र सिंह	B.A III year	मुनेश
31.				
32.				
33.				

प्राचार्य
Chaman Lal Mahavidyalaya

दिनांक- 7/04/2023

सूचना

महाविद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि संस्कृत-विभाग द्वारा दिनांक 10 अप्रैल से 19 अप्रैल 2023 (दस दिवसीय) तक संस्कृत-सम्भाषण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसका समय प्रातः 10:00 बजे से 1:00 बजे तक रहेगा। अतः समस्त छात्र-छात्राएं समय पर अनिवार्य रूप से महाविद्यालय में उपस्थित हों।

डॉ० अनिता शर्मा
संस्कृत-विभाग

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar Uttarakhand

Scanned with OKEN Scanner

दिनांक 7/4/2023

सेवा में

प्राचार्य
चमन लाल महाविद्यालय
लण्ढौरा, हरिद्वार।

विषय - संस्कृत-सम्भाषण शिविर हेतु ।

महोदया

निवेदन करना है कि संस्कृत विभाग महाविद्यालय में संस्कृत-सम्भाषण शिविर का आयोजन करना चाहता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्र छात्राओं को संस्कृत भाषा बोलना सीखाने को आसान तरीके से सिखाया जाएगा। जिससे यह शिविर छात्रों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। यह शिविर महाविद्यालय में निःशुल्क लगाया जायेगा। जिसमे कोई भी विद्यार्थी उसका लाभ उठा सकेंगे। जिसका समय प्रातः 10:00 से 1:00 बजे तक रहेगा और यह दिनांक 10/4/2023 से 19/4/2023 तक चलेगा।

अतः आप अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

डॉ० अनिता रानी शर्मा।
सहायक आचार्य (संस्कृत विभाग)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura Distt-Haridwar Uttarakhand

संयोजिका

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura Distt-Haridwar Uttarakhand

(14)

चमन लाल महाविद्यालयः लण्ढौरा, हरिद्वार

तमसो मा ज्योतिर्गमय

संस्कृत - विभागः

प्रमाणपत्रम्

प्रमाणीक्रियते यत्......रुबिना......कक्षा/पदनाम......बी०ए० द्वितीय वर्ष......इत्यनेन/अनया

लण्ढौरास्थ चमनलालमहाविद्यालयस्य संस्कृत-विभागेन समायोजितायां......संस्कृत-सम्भाषणम्......

प्रतियोगितायां/शिविरे प्रतिभागं गृहीतवान/गृहीतवती......——......स्थानं च प्राप्तवान/प्राप्तवती।

एतदर्थं प्रमाणपत्रं प्रदीयते।

प्राचार्यः

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt-Haridwar, Uttarakhand.

अनिता शर्मा
संयोजिका

Scanned with OKEN Scanner

Principal
Lal Mahavidhyalaya

Scanned with OKEN Scanner

सेवा में,

श्रीमान प्राचार्य
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा
हरिद्वार

विषय : विज्ञान संकाय के छात्र छात्राओं में वैदिक गणित के प्रति जागरूकता लाने हेतु "Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics" आयोजित कराने के सम्बन्ध में।

महोदय,

उक्त विषय के सम्बन्ध में निवेदन है कि विज्ञान संकाय के छात्र छात्राओं में वैदिक गणित के प्रति जागरूकता लाने हेतु **"Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics"** दिनांक 01/05/2023 से 15/05/2023 तक आयोजित कराना चाहता है। उक्त पाठ्यक्रम को सम्पादित करने में Vedic Mathematics expert का सहयोग लिया जायेगा।

महोदय छात्र हित मे उपरोक्त विषय में अपनी स्वीकृति प्रदान करने की कृपा करे।

धन्यवाद सहित।

संलग्न प्रपत्र :
Brochure

कार्यक्रम संयोजक

डॉ. तरुण कुमार गुप्ता
विभाग प्रभारी , सहायक प्रोफेसर
गणित विभाग

मि. विनीत कुमार
सहायक प्रोफेसर
गणित विभाग

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Dist-Haridwar (Uttarakhand)

चमनलाल महाविद्यालय,लंढौरा, हरिद्वार

दिनांक: 20/04/2023

आवश्यक सूचना

विज्ञान संकाय के समस्त छात्र छात्राओं को सूचित किया जाता है कि छात्र छात्राओं में वैदिक गणित के प्रति जागरूकता लाने हेतु गणित विभाग द्वारा निःशुल्क **"Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics"** दिनांक 01/05/2023 से 15/05/2023 तक आयोजित कराने जा रहा है। इच्छुक छात्र-छात्राएं अपना रजिस्ट्रेशन 'श्री विनीत कुमार, सहायक प्रोफेसर गणित विभाग के पास दिनांक 28/04/2023 तक करवा दें।

कार्यक्रम संयोजक

डॉ तरुण कुमार गुप्ता
सहायक प्रोफेसर
गणित विभाग

प्राचार्य

मि. विनीत कुमार
सहायक प्रोफेसर
गणित विभाग

Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura
Haridwar

Syllabus for

Two Week (15 days)

Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics

To be introduced with effect from the

Academic year

(2022-23)

Programme Convenor

Dr. Tarun Kumar Gupta
HOD, Asistant Professor,

Department of Mathematics

Mr. Vineet Kumar
Asistant Professor,
Department of Mathematics

Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura Haridwar

Syllabus for Approval

Sr. No.	Heading	Particulars
1	Title of the Course	Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics
2	Eligibility for Admission	Candidate who passed std 10+2 Examination from any stream
3	Intake Capacity	15 students per batch
4	Passing Marks	The candidate must obtain 40% marks at End Examination
5	Selection	First Come First Served Basis
6	Credits	02 credits
7	Duration	**15 Days (1 May, 2023 to 15 May,2023)**
8	Number of Lectures	At least 30 hours (Not more than 40). **Two hour per day**
9	Fee Structure	Free of cost
10	Teaching Faculty Qualification	He / She must possess skill sets in Vedic Mathematics
12	Teaching mode	Offline
13	Level	Certificate
14	Status	To be implemented from academic year 2022-23
15	Evaluation Exam pattern	60 (Theortical + time afficiency) 40 marks based on Calculation Total marks = 100 Separate heads of passing. Minimum 24 / 60 needed for passing at End Examination Minimum 16/40 needed for passing at End Examination.

Dr. Tarun Kumar Gupta

Date

Signature of Principal

Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics:

Preamble:

Vedic Mathematics is a super-fast way of calculation whereby you can do supposedly complex calculations like 996 x 998 in less than five seconds flat. It is highly beneficial for school and college students and students who are appearing for their
Entrance examinations.

Vedic Mathematics is far more systematic, simplified and unified than the conventional system. It is a mental tool for calculation that encourages the development and use of intuition and innovation, while giving the student a lot of flexibility, fun and satisfaction. It means giving them a competitive edge, a way to optimize their performance and gives them an edge in mathematics and logic that will help them to shine in
the classroom and beyond.

Therefore it's direct and easy to implement in schools – a reason behind its enormous popularity among academicians and students. It complements the Mathematics curriculum conventionally taught in schools by acting as a powerful checking tool and goes to save precious time in examinations. The methods & techniques are based on the pioneering work of late Swami Shri. Bharati Krishna Tirthaji, Shankracharya of Puri, who established the system from the study of ancient Vedic texts coupled with a profound insight into the natural process of mathematical reasoning.

There are just 16 Sutras or Word Formulae which solve all known mathematical problems in the branches of Arithmetic, Algebra, Geometry and Calculus. They are easy to understand, easy to apply and easy to remember.

Benefits of Vedic Maths:

- Eliminates math-phobia.
- Increases speed and accuracy.
- More systematic, simplified, unified & faster than the conventional system.

1. Dr Tarun Kumar Gupta

2.

- Gives the student flexibility, fun and immense satisfaction
- Provides powerful checking tool
- Saves precious time in examinations.
- Gives the student a competitive edge.
- Develops Left & Right Sides of the brains by increasing visualization and concentration abilities.
- Knowledge of Vedic Mathematics will be helpful to crack Numerical Aptitudepart for students appearing for Competitive Examinations

Objectives:

- To enable the learners to explore the power of Vedic Maths.
- To make learners strong in Numerical Maths.
- To enable learners to recognize and understand simple techniques of Arithmetic Calculations.
- To train learners to use the ideas of Vedic Maths in daily calculations and make those calculations with accuracy and speed.

Learning Outcomes:

By successfully completing this course, the learner will be able to:

- Perform simple arithmetic calculations with speed and accuracy
- Will be able to generate tables of any number
- To perform products of large numbers quickly
- Develop confidence in calculating square roots and cube roots of integers
- Perform difficult calculations speedily .
- Face Numerical Aptitude part of any Competitive Examination confidently.

1. Dr. Tarun Kumar Gupta

2.

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar (Uttarakhand)

Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura
Haridwar

Draft Ordinance, Regulations and Syllabus related to the

CERTIFICATE COURSE IN ANCIENT INDIAN VEDIC MATHEMATICS

Total Hours: 30 hours

Module	Detailed Syllabus	Lectures
1	History and Evolution of Vedic Mathematics, Introduction of Basic Vedic Mathematics Techniques in Multiplication (Special Case, Seriesof 9, Series of 1 etc), Tables etc., Comparison of Standard Methods with Vedic Methods.	5
2	Various techniques to carry out basic operationscovering Addition, Subtraction, Multiplication, Division, Complements and Bases, Vinculum number, General multiplication (Vertically Cross-wise).	5
3	Multiplications by numbers near base, Verifying answers by use of digital roots, Divisibility tests,Division of numbers near base, Comparison of fractions.	5
4	Applications of Vinculum, Different methods of Squares (General method, Base method, Duplexmethod etc.)	5
5	Cubes, Cube roots, Square roots, General division	5
6	Quadratic Equations, Simultaneous Equations, Useof various Vedic Techniques for answering numerical aptitude questions from Competitive Examinations	5

1. Dr. Tarun Kr Gupta

2.

Suggested Readings:

1) Vasudev sharan Agarwal, Vedic Mathematics , Motilal Banarsidas Publishing House new Delhi
2) Thakur Rajesh Kumar, Vedic Mathematics for students taking Competitive Examinations. Unicorn Books 2015 or Later Edition
3) Gupta Atul, Power of Vedic Mathematics withTrigonometry , Jaico Books
4) V. G. Unkalkar, Magical World of Mathematics (VedicMathematics), Vandana Publishers, Bangalore

Dr. Tarun Kumar Gupta

Chaman Lal Mahavidyalaya, Landaura Haridwar

Two Week (15 days)

Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics
(Session 2022-23)

(Attendance Sheet)

S.N	Name	Class	Signature														
			01 May 2023	02 May 2023	03 May 2023	04 May 2023	05 May 2023	06 May 2023	07 May 2023	08 May 2023	09 May 2023	10 May 2023	11 May 2023	12 May 2023	13 May 2023	14 May 2023	15 May 2023
1	VISHAK KUMAR	B.sc-II	Vishkas	Vishkas	Vishkas	Absent	Vishkas	Vishkas	Vishkas	Vishkas	Vishkas	Vishkas	Vishkas	Vishkas	Vishkas	Vishkas	Vishkas
2	KM KAJAL SAINI	B.sc-II	काजल	काजल	काजल	काजल	काजल	Absent	काजल	काजल	काजल	काजल	काजल	काजल	काजल	काजल	काजल
3	KM ISHIKA SHARMA	B.sc-II	Ishik	Ishik	Ishik	Ishik	Absent	Ishik	Ishik	Ishik	Ishik	Ishik	Ishik	Ishik	Ishik	Ishik	Ishik
4	ARUN KUMAR	B.sc-II	अरुण	अरुण	अरुण	अरुण	अरुण	अरुण	Absent	अरुण	अरुण	अरुण	अरुण	अरुण	अरुण	अरुण	अरुण
5	HARSH KUMAR	B.sc-II	हर्ष	हर्ष	हर्ष	हर्ष	हर्ष	हर्ष	हर्ष	Absent	हर्ष	हर्ष	हर्ष	हर्ष	हर्ष	हर्ष	हर्ष
6	ANNU PAL	B.sc-I	अन्नु	अन्नु	अन्नु	अन्नु	अन्नु	अन्नु	अन्नु	अन्नु	अन्नु	अन्नु	Absent	अन्नु	अन्नु	अन्नु	अन्नु
7	ASHISH KUMAR	B.sc-I	आशीष	आशीष	आशीष	Absent	आशीष	आशीष	Absent	आशीष	आशीष	आशीष	आशीष	Absent	आशीष	आशीष	आशीष
8	BHARAT	B.sc-I	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat	Bharat
9	CHHAVI	B.sc-I	छवी	छवी	छवी	Absent	छवी	छवी	छवी	छवी	छवी	छवी	छवी	छवी	छवी	छवी	छवी
10	CHHAVI SHARMA	B.sc-I	Chhavi	Chhavi	Chhavi	Chhavi	Chhavi	Chhavi	Chhavi	Chhavi	Absent	Chhavi	Chhavi	Chhavi	Chhavi	Chhavi	Chhavi
11	DEEPAK	B.sc-I	दीपक	दीपक	दीपक	दीपक	दीपक	Absent	दीपक	दीपक	दीपक	दीपक	दीपक	दीपक	दीपक	दीपक	दीपक
12	DHARMENDER KUMAR	B.sc-I	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	Absent	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र	धर्मेन्द्र
13	DIMPAL	B.sc-I	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल	दिम्पल
14	DIVYANSH GUPTA	B.sc-I	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश	दिव्यांश
15	FARHANA	B.sc-I	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना	फरहाना

1. डॉ. तरुण कुमार गुप्ता

2. मि. विनीत कुमार

Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura Haridwar

Two Week (15 days)

Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics (Session 2022-23)

(Students Feedback Form)

S.No	Name	Class	Excellent	Very Good	Good	Average	Satisfactory
1	VISHAK KUMAR	B.sc-II	✓				
2	KM KAJAL SAINI	B.sc-II			✓		
3	KM ISHIKA SHARMA	B.sc-II		✓			
4	ARUN KUMAR	B.sc-II					✓
5	HARSH KUMAR	B.sc-II		✓			
6	ANNU PAL	B.sc-I			✓		
7	ASHISH KUMAR	B.sc-I	✓				
8	BHARAT	B.sc-I					Yes
9	CHHAVI	B.sc-I		✓			
10	CHHAVI SHARMA	B.sc-I	✓				
11	DEEPAK	B.sc-I					✓
12	DHARMENDER KUMAR	B.sc-I		✓			
13	DIMPAL	B.sc-I	✓				
14	DIVYANSH GUPTA	B.sc-I		✓			
15	FARHANA	B.sc-I	✓				

Programme Convenor

Dr. Tarun Kumar Gupta
HOD, Asistant Professor,
Department of Mathematics

Mr. Vineet Kumar
Asistant Professor,
Department of Mathematics

Chaman Lal Mahavidyalaya, I.Q.A.C. Co-ordinator, Landhaura (Haridwar)

Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura Haridwar

Two Week (15 days)

Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics

(Session 2022-23)

(Results)

S.N	Name	Class	Grade	Certificate Sl. No	Signature
1	VISHAK KUMAR	B.sc-II	A+	Vm/2023/01	[signature]
2	KM KAJAL SAINI	B.sc-II	A	Vm/2023/02	[signature]
3	KM ISHIKA SHARMA	B.sc-II	B+	Vm/2023/03	[signature]
4	ARUN KUMAR	B.sc-II	A+	Vm/2023/04	[signature]
5	HARSH KUMAR	B.sc-II	A	Vm/2023/05	[signature]
6	ANNU PAL	B.sc-I	A	Vm/2023/06	[signature]
7	ASHISH KUMAR	B.sc-I	A	Vm/2023/07	[signature]
8	BHARAT	B.sc-I	B+	Vm/2023/08	[signature]
9	CHHAVI	B.sc-I	A	Vm/2023/09	[signature]
10	CHHAVI SHARMA	B.sc-I	B+	Vm/2023/10	[signature]
11	DEEPAK	B.sc-I	A+	Vm/2023/11	[signature]
12	DHARMENDER KUMAR	B.sc-I	A	Vm/2023/12	[signature]
13	DIMPAL	B.sc-I	A	Vm/2023/13	[signature]
14	DIVYANSH GUPTA	B.sc-I	A	Vm/2023/14	[signature]
15	FARHANA	B.sc-I	A	Vm/2023/15	[signature]

कार्यक्रम संयोजक

1. डॉ. तरुण कुमार गुप्ता [signature]
2. मि. विनीत कुमार

[signature]
Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidyalaya • Landhaura, Haridwar • IQAC Coordinator [stamp]

Ref No.....

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura, Haridwar

Two Week (15 days)
Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics
Organized by
Department of Mathematics

CERTIFICATE of PARTICIPATION

This is to certify that Mr. / Ms. _____ *Class* _____ *has participated in the* **Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics** *held during* ***01 May, 2023 to 15 May, 2023*** *& obtain Grade*_____*organized by Department of Mathematics, Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura Haridwar .*

We wish him/her for a bright future.

Dr. Tarun Kumar Gupta
Convenor
Department of Mathematics

Mr. Vineet Kumar
Co-convenor
Department of Mathematics

Dr. Deepa Agarwal
Principal

Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura Haridwar

Two Week (15 days)
Certificate Course in Ancient Indian Vedic Mathematics
(Session : 2022-23)

(Report)

सत्र 2022-23 में चमन लाल महाविद्यालय ,लंढौरा के गणित विभाग द्वारा सर्टिफिकेट कोर्स ऑन वैदिक मैथमेटिक्स के अंतर्गत विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी 15 दिन का पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया | यह पाठ्यक्रम नई शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है | क्योंकि भारत सरकार नई शिक्षा नीति लागू करने जा रही है जिसमें वैदिक गणित एवं वैदिक विज्ञान को भी सम्मिलित किया गया है | जिसमें विज्ञान संकाय के 15 छात्र छात्राओं को प्रतिभाग कराया गया | प्रतिदिन छात्र-छात्राओं को वैदिक गणित की अवधारणाओं से अवगत कराया गया | जिसमें छात्र छात्राओं को वैदिक गणित की उपयोगिता के विषय में बताया गया कि किस प्रकार वैदिक गणित प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए वरदान स्वरुप है तथा प्रतिदिन निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार कक्षाएं संचालित की गई | जिसमें वैदिक गणित के अनुप्रयोग एवं अन्य लघु विधियां भी सम्मिलित थी | प्राचीन भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजम के गणित में उनके द्वारा दिए गए **लगभग 3884 सूत्रों एवं उप सूत्रों के बारे में बताया गया** तथा गणित में किए गए उनके कार्यों की विस्तृत जानकारी से भी छात्र छात्राओं को अवगत कराया गया | पीपीटी प्रेजेंटेशन के माध्यम से हार्डी एवं रामानुजम से जुड़ी कुछ रोचक जानकारियां जोकि वह अपने अध्ययन काल में किया करते थे उन से अवगत कराया तथा रामानुजम के अंतिम समय की वह घटना जिसमें हार्डी द्वारा बताए गए टैक्सी नंबर को उन्होंने गणित की एक अवधारणा में परिवर्तित किया उससे भी अवगत कराया गया ताकि भविष्य में छात्र-छात्राएं उनसे प्रेरणा लेकर गणित में अपना अभूतपूर्व योगदान दे सकें | वैदिक गणित पर आधारित प्रश्न पुस्तिका भी वितरित की गई ताकि इसका अभ्यास निरंतर किया जा सके | पाठ्यक्रम के अंत में सभी छात्र छात्राओं का फीडबैक भी लिया गया जिसमें सभी का उत्तर संतोषजनक था |

कार्यक्रम संयोजक

डॉ. तरुण कुमार गुप्ता
सहायक प्रोफेसर
गणित विभाग

मि. विनीत कुमार
सहायक प्रोफेसर
गणित विभाग

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar Uttarakhand

Date - 06 03 2023

To,

The Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura Roorkee Haridwar

Subject: Permission to organize 'Two Weeks English Communication Programme'.

Respected Sir,

This is to request you that department of English want to organize two weeks english communication programme for B.A students of college dated on **20.03.2023 to 05.04.2023** at (12.00 a.m to 1.30 p.m) Please grant the permission to organize the programme. Syllabus is enclosed here. I hope your kind consideration.

Thanks with regards

Dr. Aprana Sharma (Assistant Professor) Department of English

Permitted

06.03.2023

Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura (Haridwar) IQAC Coordinator

Scanned with OKEN Scanner

URGENT NOTICE

Department of English is organizing two weeks English communication programme for all B.A's English students in Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhora from 20.03.2023 to 05.04.2023 at 12:00 P.M to 01:30 P.M.

Intrested students can contact to Department of English.

With Regards

Dr. Aprana Sharma
Deptt. of English
C.L.M Haridwar

Scanned with OKEN Scanner

Mob. : 9997998050
9927027669

चमन लाल महाविद्यालय

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA

सम्बद्ध : श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाही थौल, टिहरी (गढ़वाल)
लण्ढौरा (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

पत्रांक सं. ..... दिनांक 6:03:2023

To,

Dr. Subhash Agarwal
Film Director

Dear Sir,

On behalf of Department of English, Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhora Roorkee, I am very pleased to have the hooor to inviting you to deliver lectures on English Communication for Two weeks programme at our institution. We have arranged the programme from 20.03.2023 to 05.04.2023 at 12.00To 1.30 P.M. Please let me know you required any educational equipments or additional technological support.

For any quires, feel free to contact on: 8860355780

Thank You

Dr. Deepa Agarwal

(Principal)

Scanned with OKEN Scanner

ENGLISH COMMUNICATION PROGRAMME

CHAMAN LAL MAHAVIDYALAYA LANDHAURA ROORKEE HARIDWAR

TWO WEEKS ENGLISH COMMUNICATION PROGRAMME .

20.03.2023 to 05.04.2023

SESSION TIME: 12 00 To 1:30 Pm

SR. NO	STUDENT'S NAME	FATHER'S NAME	ATENDENCE OF STUDENTS																
			1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.	17.
1.	LAXMI		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
2.	KUSHI DEVI		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
3.	GAURAV		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
4.	DEEPANSHU		✓	✓		✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	
5.	NAVEEN		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
6.	ASMA		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
7.	ARMAN		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
8.	GURMEET		✓	✓		✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
9.	ISHAN		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
10.	MUKUL PAL		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
11.	MUKESH		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
12.	RAIS AH.		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
13.	SALMAN		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
14.	SOFIA		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
15.	VAIBHAV		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
16.	AACHAL		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
17.	ROHIT		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
18.	ANSHIKA		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
19.	KUSHI		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
20.	DIVYA		✓	✓		✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
21.	Arshiah		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	
22.	Aamit		✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓

Dr. Aparna Sharma
Asst. Prof.

Scanned with OKEN Scanner

23.	Ashu		✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓	✓	✓	✓	SUNDAY	✓	✓	✓
24.	ALIA		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓
25.	ARMAN		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓
26.	ABDUL		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓
27.	ZEHAIBB		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓
28.	ANSHIKA		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓
29.	Aashib		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓
30.	MOHIT		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓
31.	AZFAR		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓
32.	FAIZAL		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓
33.	TAGESHWAR		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓
34.			✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓

DR. Apoorva Sharma
Assistant Professor

Chaman Lal Mahavidyalaya
I.Q.A.C.
Coordinator
Landhaura (Haridwar)

ENGLISH COMMUNICATION PROGRAMME
CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA LANDHORA ROORKEE
HARIDWAR
20.03.2023 to 05.04.2023

SESSION TIME: 12.00 TO 1.30PM

Session

SR. NO	STUDENT'S NAME	SIGNATURE	OVER ALL FEEDBACK			
			EXCELLENT	VERY GOOD	GOOD	AVERAGE
1.	LAXMI	Laxmi	✓			
2.	KHUSHI DEVI	KHUSHI DEVI		✓		
3.	GAURAV	GAURAV	✓			
4.	DEEPANSHU	DEEPANSHU		✓		
5.	NAVEEN	NAVEEN	✓			
6.	ASMA	ASMA		✓		
7.	ARMAN MALIK	Arman malik	✓			
8.	GURMEET MALIK	Gurmeet malik	✓			
9.	ISHAN AH.	ISHAN AH	✓			
10.	MUKUL PAL	MUKUL PAL		✓		
11.	MUKESH	MUKESH	✓			
12.	RAIS AH.	RAISAH.	✓			
13.	SALMAN	SALMAN	✓			
14.	SOFIA	SOFIA	✓			
15.	VAIBHAV	VAIBHAV			✓	
16.	AACHAL	AAchal	✓			
17.	ROHIT	ROHIT		✓		
18.	ANSHIKA	ANSHIKA	✓			
19.	KHUSHI DEVI	KHUSHI DEVI			✓	
20.	DIVYA	DIVYA	✓			
21.	AASHISH	AASHISH		✓		
22.	Aamir	Aamir	✓			
23.	ASHU	ASHU		✓		
24.	ALIA	ALIA	✓			
25.	ARMAN	ARMAN			✓	
26.	ABDUL	ABDUL			✓	
27.	ZEHAIBB	ZEHAIBB	✓			
28.	ANSHIKA	ANSHIKA	✓			
29.	AASHIF	AASHIF		✓		
30.	MOHIT	mohit	✓			
31.	AZFAR	AZFAR		✓		
32.	FAIZAL	Faizal	✓			
33.	JAGESHWAR	JAGESHWAR	✓			
34.						

Dr Aparna Sharma
Assist Prof.
Deptt. of English

Chaman Lal Mahavidhyalaya (Haridwar)

Scanned with OKEN Scanner

cldegree21@gmail.com
www.cldcollege.com

Mob. : 9997998050
9927027669

चमन लाल महाविद्यालय
CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA

(अशासकीय सहायता प्राप्त)
(सम्बद्ध : श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाही थौल, टिहरी-गढ़वाल)
लण्ढौरा (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

पत्रांक सं. ....

दिनांक 05.04.2023

To,
Dr. Subhash Agarwal
Film Director

Subject: Letter for Appreciation

Respected Sir,

Thank you very much for delivering an informative and thought provoking lectures throughout the Two weeks English Programme as an expert held on 20.03.2023 to 05.04.2023at Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhora Roorkee.

All were really splendid presentations. All the students got benefit from your views on the topic.

Dr. Deepa Agarwal

Principal

To.

The Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhora Roorkee Haridwar

Subject: Completion of two weeks English communication programme

Respected Madam

I would like to inform you that the department of English has been completed Successfully two weeks English communication programme dated on 20.03.2023 to 05.04.2023. Complete file of documents is enclosed with it.

Regards

Dr. Aprana Sharma
Assistant Professor
C.L.M Haridwar

Scanned with OKEN Scanner

To,

The Principal / IQAC
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhora Roorkee Haridwar

Subject: Regarding for issuing certificates

Respected Sir,

With due respect, it is requested to you that this year (2022-2023) department of English wishes to conduct two weeks English Communication programme for which it requires certificates. Therefore, you are requested to provide us certificates as soon as possible.

Thanking you!

Regards

Dr. Aparna Sharma
C.L.M Haridwar

Report

Two-weeks programme on English Communication

20-03-2023 to 05-04-2023

Scanned with OKEN Scanner

Report

Name of Programme:	**Two-week programme on English Communication**
Hosting Institution:	**Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura**
Location:	**Roorkee, Haridwar Distt.**
Dates:	**20-03-2023 to 05-04-2023**
Timing:	**12:00pm-01:30pm**
Prepared by:	**Dr Aprana Sharma**

Here I am glad to submit the report of the two-week programme on English Communication organized by the Department of English from 20th March to 05th April 2023. It was an open programme to B.A students of Chaman Lal Mahavidyalaya.

Dr Subhash Agarwal, Film Director was invited by Chaman Lal Mahavidyalaya for conducting the programme on English Communication for all students belonging to different streams of Under - Graduate and Post – Graduate.

Dr. Aprana Sharma, Asst. Prof. Department of English, CLM conducted the programme as a convenor.

The Programme was inaugurated by the Principal of CLM, Dr. Deppa Agarwal in the presence of Shri Ram Kumar Sharma, Chairman (Management), Chaman Lal Mahavidyalaya. In his inaugural speech, Dr Deppa Agarwal urged the participants to make use of the Programme to the maximum extent possible to enhance their communication skills – both oral and written.

The main emphasis of this programme was on the importance of oral and written communication in a professional world. Dr Deppa Agarwal explained the importance of basic communication in our lives and the fact that English has its standards varying from country to country. She discussed the syllabus and content of the curriculum designed by the department of English with the help of expert Dr Subhash Agarwal.

Dr. Aprana Sharma
C.L.M Haridwar

Scanned with OKEN Scanner

Curriculum

The Programme adhered to the curriculum which is elaborated below-

Two –week Programme on English Communication

UNIT-I

INTRODUCTION OF COMMUNICATION

- Importance and Process on Communication
- Verbal Communication
- Importance of Language

UNIT- II

PHONETICS

- Classification of Vowels
- Classification of Consonants
- Speech Sounds

UNIT-III

COMMUNICATION SKILLS AND LANGUAGE DEVELOPMENT

- Tense
- Sentence Formation

UNIT-IV

READING SKILLS

- Importance of Reading Skills
- Previewing Techniques in Reading Skills
- Methods for Improving Reading Skills

UNIT-V

WRITING SKILLS

- Importance of Writing Skills
- Technical Writing in the Context of Business Letter
- Methods for Improving Writing Skills

UNIT-VI

LISTENING SKILLS

Scanned with OKEN Scanner

- Importance of Listening Skills
- An Overview of Listening Skills
- Methods for Improving Listening Skills

UNIT-VI

SPEAKING SKILLS

- Importance of Speaking Skills
- Importance of Paralanguage in Communication
- Methods for Improving Speaking Skills

UNIT-VII

PRESENTATION SKILLS

- Group Discussion
- Role Play
- PowerPoint Presentation

During the first day of the Programme, Dr Subhash Agarwal delivered lectures on Introduction of Communication which covered areas like importance as well as the process of communication, Verbal Communication and the role of language in our life. He described all the topics through a presentation. After that, he discussed with participants related to the topic and tried to evaluate their learning skill.

The second day he discussed on Communication Skills and Language Development which cover the area with basic grammar like the formation of sentence, punctuation, commas and common error etc. to improve their writing skill. After the presentation, he gives some sentences to correct formation and find out the common mistakes. With the help of this exercise, he judged the performance of the participants and succeeds to clear their doubts.

The third day of the programme was an interactive session on Phonetics. The Expert, Dr Aprana Sharma was surprised to know that 50 % of participants were familiar with phonetics. He started the session with vowel sounds which cover the classification of vowels like diphthong, pure vowels and how its work. It was a wonderful interactive session for all.

The fourth day continued the previous session with phonetics. This session was also interactive which focused on the classification of consonants sounds with symbols. After that Dr Aprana Sharma wrote some words in phonetics transcription and called the participants to read out the word. It was such a wonderful session which dragged the participants in previous time and they again learning the alphabets in a new form.

Scanned with OKEN Scanner

... fifth day of the programme focused on Reading skill which covered the importance of reading as well as previewing techniques of reading. With the help of the expert, the participants applied the phonetics symbols to correct pronunciation. Here participants faced some common problems like identified the symbol with the correct pronunciation. At that time the expert tried to boost their confidence and said that "practice makes a man perfect" with this phrase he continued the session for the next day.

The sixth and seventh day Dr Aprana Sharma joined the class along with energizer to boost the confidence of all. They showed the short clip on a motivational lecture. After that, he comes back on his topic "Method for improving reading skill." Dr Aprana Sharma motivated the participants to read aloud with confidence. He tried to give a comfortable atmosphere for the slow learner in this heterogeneous class.

The eighth and ninth day he torched upon on the next topic entitled Writing Kill covered with importance, techniques as well as methods. Following the rules, he discussed on Business Email Writing, which gave necessary tips and guidelines on drafting formal emails, was followed by the participants' drafting emails in groups on their own on some given topics. They were made to read out the drafts and necessary corrections and clarifications were suggested by the expert.

The next day Dr Aprana Sharma joined the class along with audio clips. Before playing the clips, he gave some instructions. This exercise was based on Listening Skills. The participants were listening very carefully as well as noting in their notebook. After this exercise, Dr Aprana Sharma asked one by one to check their listening skill and cleared their doubts. He repeated the same process three times and the result was progressive. He ended this session with some useful tips.

For the next two-day Dr Aprana Sharma mainly focused on the motive of this programme "Speaking Skill" which covered the importance of paralanguage in communication and its methods. This class was fully interactive with the English language. He continuously interacted with the participants and pressurized to speak in English but most of the students felt uncomfortable, Dr Aprana Sharma decided to interact with the students in the group of only two students. To provide the students with the much needed individual attention, to solve their queries and to clear their doubts. The main motive of this interaction was to enlighten the students with the use of correct English and its importance. The students were encouraged to ask questions and were answered by Dr Subhash with clarity and patience.

During the next two-day of the programme, the participants were given some useful information on telephone etiquettes. Then they were given some exercises and role-play sessions where they were asked to use appropriate language – both formal and informal – while making telephonic conversations.

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Coordinator

Scanned with OKEN Scanner

In the last day of the programme, the expert Dr Subhash gave some useful information and tips on drafting business/official letters and the participants were asked to work in groups and write out formal letters making use of the tips and following the guidelines given. After the groups finished writing, some of them were asked to read out the letter drafted by their group and they were given suggestions as to how the letters could have been made more appropriate and effective.

In the valedictory program held at the end, a few participants presented a PowerPoint Presentation to show what they learn in this two-week programme and gave their feedback. The programme was organized successfully. Now the convener of this two-week programme on English Communication Dr Aprana Sharma congratulated both the participants and the expert for organizing the programme successfully and requested the participants to constantly improve upon their skills and competencies for their personal and professional growth. The program ended with a vote of thanks by Dr. Aprana Sharma.

Dr. Aprana Sharma
C.L.M Haridwar

Scanned with OKEN Scanner

To
The Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhora, Haridwar Distt.

Date: 03/04/2023

Sub. Permission to organize 15 days certificate Course

Respected Sir,

With due respect, we would like to inform you that the Department of Botany and Zoology will jointly organize a 15 days (10th-22nd April, 2023) certificate course on "Application of Biological tools and techniques" for students of Chaman Lal Mahavidhyalaya , Landhora, Haridwar Distt. Kindly grant us permission for the same.

Warm Regards

Yours' Sincerely

Dr. Richa Chauhan

Dr. Vidhi Tyagi

Dr. Deepika Saini

Dr. Md. Irfan

IQAC

Permitted for free Certificate Course

03.04.23

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya

Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura

Two Week Add-on Certificate course

On

"Application of Biological tools and Techniques"

Organized By Deptt. of Botany & Zoology

Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhora

Session: 2022-23

Certificate Receiving and Feedback Form

Course Duration: 30 Hrs (2Hrs/Day)

Date: 10th – 22nd April 2023

S. No.	Name	Class	Contact number	Feedback	Certificate Receiving (Sign)
1.	Shama	B.Sc IInd	7302241082	I am really appreciate to this.	
2.	Shabnoor	B.Sc IInd	6395302620	I got to learn a lot.	
3.	Payal	B.Sc IInd	9548277054	I am inspired this course	
4.	Suhana Ansari	B.Sc IInd	7017781721	Excellent	
5.	Rubal	M.Sc Ist	9557454412	full satisfaction	
6.	Mahin Fatima	M.Sc Ist	9027642938	I am satisfied to this course	
7.	Shakira Naaz	M.Sc Ist	9917825263	very happy to join this	
8.	Sayra Bano	M.Sc Ist	9917825263	big thanks to all teachers	
9.	Aanchal	M.Sc Ist	8006744934	Nice course	
10.	Heena	M.Sc Ist	9368122630	thankfull to all teachers	
11.	Shivani Dhiman	M.Sc Ist	7456077355	amazing	
12.	Farha Baby	M.Sc Ist	8012043465	very Nice	

13.	ABHISHEK	B.Sc IInd	2379265653	Satisfied to this course
14.	Sonakshi Goyal	M.Sc IIIrd	2126228233	very good
15.	Rupal Dhiman	B.Sc IIIrd	9756473316	Nice experience
16.	Riya chaudhary	B.Sc IIIrd	7505513473	Satisfied to this course
17.	Nishu	B.Sc IIIrd	3690041570	happy to this course
18.	Uzma	B.Sc IInd	6395316657	Appreciated course
19.	Amit Kumar	B.Sc IInd	2963825990	learned to this course
20.	Faiza	B.Sc IInd	8445471453	learnalot to this course.
21.	Aayesha	B.Sc IInd	7830231432	I learn new
22.	Princi	B.Sc IInd	7663322977	Satisfied
23.	Manisha	B.Sc IInd	7451222384	good experience
24.	Tannu	B.Sc IInd	3258444548	amazing
[redacted]25.	Swati	B.Sc [redacted]nd	2579573652	Nice [redacted] experience
26.	Srishti	B.[redacted] IInd	9105572131	[redacted] very good.
27.	Tanvi sharma	B.Sc IInd	7505636265	fantastic
28.	Salma	M.Sc Ist	2445453264	Satisfied course.
29.	Ayush sharma	M.Sc Ist	2192013741	Nice experience
30.	Ahnaf	M.Sc Ist	7466230947	Veygodd

Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura

Two Week Add-on Certificate course

On

"Application of Biological tools and Techniques"

Organized By Deptt. of Botany & Zoology

Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhora

Session: 2022-23

Registration Form

Date: 10th - 22nd April 2023

Course Duration: 30 Hrs (2Hrs/Day)

S. No.	Name	F. Name	Class	Address	Contact number	Signature
01	Shama	Moh. Ispak	B.Sc II^nd Year	Nagla Imarti Post Devendra Roorkee	7302141082	Shama
02	Shabnoor	Sarfraj Ali	B.Sc II year	Landhaura	6395302820	Shabnoor
03	Payal	Johny Kumar	B.Sc II year	Vill+Post Mundlana	9548879094	Payal
04	Suhana Ansari	Shafaqqat Ali	B.Sc II year	Moh. Malanpura (Manglour)	9017781721	Suhana Ansari
05	Rubal	Sanjay kumar	M.Sc Ist year	Shyam nagar Roorkee	9557494418	Rubal
06	Mahin Fatma	Mohd Shafiuzzaman	M.Sc I^st year	Manglour	9027642988	Mahin Fatma
07	Shakira Naaz	Salim Ahmad	M.Sc Ist year	Manglour	9917829263	Shakira Naaz
08	Sayra bano	Salim Ahmad	M.Sc 1^st year	Manglour	9917079263	Sayra bano
09	Aanchal	Omprakash	M.Sc 1^st year	Landhaura	8006799934	Aanchal
10	Heena	Mohd. Khaleel	"	"	9362162630	Heena
11	Shivani Dhiman	Kumod Kumar Dhiman	MSc Ist year	Shyam nagar (Roorkee)	7456077955	Shivani
12	Aasha baby	Moh Iqbal	M.Sc I^st year	Mohanpur (Roorkee)	9015043425	[signature]
13	ABHISHEK	NARENDRA KUMAR	B.Sc II YEAR	SAIDPURA	8979865653	Abhishek

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura Distt. Haridwar Uttarakhand

14	Sonakshi goyal	Praveen goyal	M.S.C II sem	254 Adarsh Nagar	8126228899	Sonakshi goyal
15.	Rupal Dhiman	M. parveen kumar	B.Sc 3rd year	Bosari Laksar	9756473316	Rupal Dhiman
16.	Riya chaudhary	Anoop Singh	B.Sc 3rd year	Daushi	7505513479	Riya
17.	Nisha	M. Umesh kumar	B.S. 3rd year	Daushi	9690041570	Nisha
18.	Uzma	Abdul Jabbar	BSC II year	Landhaura	8395336652	Uzma
19.	Amit Kumar	Madan	B.SC II YEAR	Ghazipur	8923823390	Amitkumar
~~Heena~~		~~Mohd. Khalid~~	~~M.Sc I sem~~	~~Manglour~~	~~9368182630~~	~~Heena~~
20	Faiza	Mohd. Irshad	B.Sc IInd year	Manglour	8445471451	Faiza
21	Aaysha	Mohd. Aakil	BSC-II year	Manglour	7830831232	Aaysha
22	Priya	Arvind	B.Sc. II year	Muhdlang	7668322977	Priya
23	Manisha	Ravinder Singh	B.Sc II Year	Bhagwanpur	7451822384	Manisha
24	Tanny	Rajendra kumar	B.S.C II year	mohammadpur bujurg	9258424948	Tanny
25	Swati	Ompal	B.Sc II year	Landhaura	8979573652	Swati
26	Srishti [redacted]	Pritam singh	B.Sc [redacted] year	Landhaura	9105[redacted]31	Srishti
27	Tanvi [redacted] sharma	Narendra sharma	B.[redacted] II year	Landhaura	75[redacted]36269	Tanvi
28	Falma	Mohd Mustafa	M.Sc Ist sem	Haridwar	8445455164	Falma
29	Ayush sharma	Yogesh sharma	M.Sc Ist sem	Gadharona	8192018741	Ayush sharma
30	Ahnaf	Samsuzzama	M.Sc Ist sem	Manglour	7466830947	Ahnaf

[illegible]

Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura

Two Week Add-on Certificate course

On

"Application of Biological tools and Techniques"

Organized By Deptt. of Botany & Zoology

Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhora

Session: 2022-23

Attendance Sheet

Course Duration: 30 Hrs (2Hrs/Day)

Date: 10th – 22nd April 2023

S. No.	Name	F. Name	Class	Attendance (1-15 days) 1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	Sign.
1.	Shama	Moh. Ispak	B.Sc IInd Year	P	P	P	P	A	P	S	P	P	P	P	E	P	S	P	Shama
2.	Shabnoor	Sarfraj Ali	B.Sc II y	P	P	P	P	M B	P	U N	P	P	P	P	I D	P	U N	P	Shabnoor
3.	Payal	Johny Kumar	B.Sc II y	P	P	P	P	E D	P	D A	P	P	P	P	U	P	D A	P	Payal
4.	Suhana Ansari	Shafaqqat Ali	B.Sc II y	P	P	P	P	K	P	Y	P	P	P	P	L	P	Y	P	Suhana Ansari
5.	Rubal	Sanjay Kumar	M.Sc Ist year	P	P	P	P	A R	P	—	P	P	P	P	M I	P	—	P	Rubal
6.	Mahin Fatima	Mohd Shafiq [illegible]	M.Sc Ist year	P	P	P	P	—	P	—	P	P	P	P	L	P	—	P	Mahin Fatima
7.	Shakira Naaz	Salim Ahmad	M.Sc Ist year	P	P	P	P	J	P	S	P	P	P	P	A	P	S	P	Shakira Naaz
8.	Sayra bano	Salim Ahmad	M.Sc Ist year	P	P	P	P	A	P	U	P	P	P	P	D	P	U	P	[illegible]
9.	Aanchal	Omprakash	M.Sc Ist year	P	P	P	P	Y A	P	N D	P	P	P	P	—	P	N D	P	Aanchal
10.	Heena	Mohd. Khaled	"	P	P	P	P	N	P	A	P	P	P	P	—	P	A	P	[signature]
11.	Shivani Bhiman	[illegible]	M.Sc Ist	P	P	P	P	T I	P	Y	P	P	P	P	—	P	Y	P	[illegible]
12.	Farha baby	Moh. [illegible]	M.Sc I	P	P	P	P	—	P	—	P	P	P	P	—	P	—	P	[signature]

13.	ABHISHEK	Narendra Kumar	B.Sc II	P	P	P	P	AMBEDKAR JAYANTI	P	SUNDAY	P	P	P	P	EID UL MILAD	P	SUNDAY	P	Abhishek
14.	sonakshi goyal	Parveen goyal	M.Sc III Sem	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	sonakshi goyal
15.	Rupal dhiman	Mr Parveen kumar	B.Sc 4th year	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Rdhi
16.	Riya Wadhwa	Mr. Anoop Singh	B.Sc 3rd year	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Riya
17.	Nisha	Mr Umesh kumar	B.Sc 2nd year	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Nisha
18.	Uzma	Abdul Jabbar	B.Sc II year	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Uzma
19.	Amit Kumar	Madan	B.Sc II	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Amit Kumar
20.	Faiza	Mohd. Irshad	B.Sc II	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Faiza
21.	Aaysha	Mohd Aabid	B.Sc II year	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Aaysha
22.	Prinsi	Arvind	B.Sc II yr	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Prinsi
23.	Manisha	Ravindra	B.Sc III Yr	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Manisha
24.	Tanny	Rajendra Kumar	B.Sc I yr	P	P	P	P		P	SUNDAY	P	P	P	P		P	SUNDAY	P	Tanny
25.	Swati	Ompal	B.Sc II y	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Swati
26.	Srishti	Pritam singh	B.Sc II y	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Srishti
27.	Tanvi sharma	Narendra Sharma	B.Sc II y	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Tanvi
28.	Salma	Mohd. Mustafa	M.Sc III sem	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Salma
29.	Ayush sharma	Yogesh sharma	M.Sc I st sem	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Ayush sharma
30.	Ahnaf	Kamruzzaman	M.Sc I st sem	P	P	P	P		P		P	P	P	P		P		P	Ahnaf

Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhora

Program Module for the certificate Course

On the topic

APPLICATIONS OF BIOLOGICAL TOOLS AND TECHNIQUES

Date: -10.04.2023 to 22.04.2023

MODULE 1- Application of plant tissue culture
Lecture by: Dr. Richa Chauhan, Deptt. of Botany, CLM

MODULE 2- Washing and sterilization of glassware
Lecture by: Dr. Mohd. Irfan ,Deptt Of Botany, CLM

MODULE 3- Stock preparation for MS media
Lecture by: Dr. Richa Chauhan, Deptt. of Botany, CLM

MODULE 4- Preparation and pouring of MS media
Lecture by: Dr. Richa Chauhan, Deptt. of Botany, CLM

MODULE 5- Inoculation
Lecture by: Dr. Richa Chauhan, Deptt. of Botany, CLM

MODULE 6- Grafting
Lecture by: Dr.Richa Chauhan Deptt. of Botany, CLM

MODULE 7-Haemoglobin estimation test (practical)
Lecture by: Dr. Vidhi Tyagi Deptt. Of Zoology, CLM

MODULE 8- Blood group check test (Practical)
Lecture by:Dr. Vidhi Tyagi Deptt. Of Zoology, CLM

MODULE 9- Blood clotting rate estimation
Lecture by: Dr. Vidhi Tyagi Deptt. Of Zoology, CLM

MODULE 10- Bleeding time estimation

Lecture by: Dr. Vidhi Tyagi Deptt. Of Zoology, CLM

MODULE 11- Estimation of Blood pressure
Lecture by: Dr. Vidhi Tyagi Deptt. Of Zoology, CLM

MODULE 12- General description of compound and phase contrast microscope
Lecture by: Dr. Deepika Saini, Deptt. Of Zoology, CLM

MODULE 13-Biochemistry Test-1
Lecture by: Dr. Deepika Saini, Deptt. Of Zoology,CLM

MODULE 14- Biochemistry Test-2
Lecture by: Dr. Deepika Saini, Deptt. Of Zoology, CLM

MODULE 15: Quiz based on the course topic (for grading)

REPORT OF THE ONLINE CERTIFICATE COURSE

Date-10.04.2023-22.04.2023

Department of Botany and Zoology

APPLICATION OF BIOLOGICAL TOOLS AND TECHNIQUES

Biological techniques are methods or procedures that are used to study living things. They include experimental and computational methods, approaches, protocols and tools for biological research.

To promote awareness among students about proper use and maintenance of biological tools 15 Days Certificate course was jointly organized by the Department of Botany and Zoology.

COURSE LAYOUT

S.No.	About Course	Expected outcome
1	Topic of the course	Application of biological tools and techniques
2	Duration	15 Days (10 th April-22nd April,2023)
3	Students Enrolled	30
4	Faculties of the college enrolled	4 Dr. Richa Chauhan Dr. Vidhi Tyagi Dr. Deepika saini Dr. Mohd.Irfan
5	Fee	Nil (Free of cost)
6	Attendance	100 %required by the student
7	Grading	As per performance of the student in the quiz

15 days' module based on the course topic was prepared and followed strictly Lectures based on the topic was delivered by the internalexperts. Quiz based on the topic was organized on the last date for grading.

Course was successfully closed with certification of the students by respected Chairman Shri Ram Kumar Sharma and Hon'ble Principal Dr. Sushil Upadhyay.

Expected outcome from the course:

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

After completion of the course students will be able to handle microscope properly. They will be very much able to perform all blood tests and biochemical tests , plant tissue culture process and grafting by themselves.

CERTIFICATE

OF PARTICIPATION

THIS IS TO CERTIFY THAT

.....

has participated in the Two Week Add-on Certificate Course on the Topic

.....organized by the

Department of..... from..... and obtain grade .....

SIGNATURE
CO-ORDINATOR

Principal

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

(भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय)

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

(Government of India, Ministry of Human Resource Development)

Dated 30.12.2021

F. No. 3-12/2021-2022/P&R/ICPR

Sanction Order

The Indian Council of Philosophical Research hereby conveys the sanction of the grant of Rs. 2,00,000/- (Rupees Two Lakhs rupees only) to **Chamanlal Mahavidyalya, Landhura, District – Haridwar, Uttarakhand - 247664** to meet the expenditure related to the organizing National Seminar on ***"आचार्य विनोबा भावे के दर्शन की आधुनिक भारतीय समाज में प्रासंगिकता"*** proposed by the applicant Dr. Nishu Kumar, Assistant Professor, Department of Political Science, Chaman Lal (P.G.) College, Landhaura, Roorkee, Uttarakhand, Haridwar – 247664 to be organized from 5th – 6th, February 2022 at ***Chamanlal Mahavidyalya, Landhura, District – Haridwar, Uttarakhand.*** Out of the total grant, an amount of Rs. 1,60,000/- (Rupees One Lakhs Sixty Thousand only) is being released as 80% of the grant in advance as per following detail:

To be Released to	Chamanlal Mahavidyalaya, Landhura, District – Haridwar, Uttarakhand – 247664
To be disbursed to	Dr. Nishu Kumar Assistant Professor, Department of Political Science, Chamanlal (P.G.) College, Landhaura, Roorkee, Uttarakhand, Haridwar - 247664
Account Number	27209471051
Name of Bank	State Bank of India
IFSC code	SBIN0012850
Address	Landhaura, Roorkee, Haridwar

The amount sanctioned herein may be debited to the head of Group K, L-V (A-1) Advanced Seminar/Conference etc.

(Authority:- Approved by Sub-Committee-Meeting, Approval of Member-Secretary dated : 14.12.2021, note p- 2/Ns)

(Dr. S. K. Kar)
Program Officer/ Director (P&R, i/c)

Director (A&F), ICPR, New Delhi

Copy to:

1. Chamanlal Mahavidyalya, Landhura, District – Haridwar, Uttarakhand – 247664
2. Dr. Nishu Kumar, Assistant Professor, Department of Political Science, Chaman Lal (P.G.) College, Landhaura, Roorkee, Uttarakhand, Haridwar – 247664

ANNEXURE -I

(All page to be stamped and initial and last page to be signed in FULL with stamp)

Payment Advice No.: C022221342730

Sr.No.	Name of Beneficiary	PFMS Txn ID	Account Number:	IFSC/IIN/MICR	Aadhaar	Amount(In Rs.)
1	CHAMAN LAL DEGREE COLLEGE LANDHURA	C022221342711	xxxxxxxxxxxx1051	SBIN0012850		160000.00
					Total Amount(Rs)	160000.00

Please acknowledge and do the needful as prescribed by bank to complete transactions.

Two Days National Seminar
RELEVANCE OF ACHARYA VINOBHA BHAVE'S PHILOSOPHY
IN MODERN INDIAN SOCIETY
Two Days National Seminar
IN MODERN INDIAN SOCIETY
10-11th March 2023

Two Days National Seminar
RELEVANCE OF ACHARYA VINOBHA BHAVE'S PHILOSOPHY
IN MODERN INDIAN SOCIETY

IN MODERN INDIAN SOCIETY

Two Days National Seminar
RELEVANCE OF ACHARYA VINOBHA BHAVE'S PHILOSOPHY
Two Days National Seminar
NCE OF ACHARYA VINOBHA BHAVE'S PHILOSOPHY
IN MODERN INDIAN SOCIETY

Two Days Natio

Two Days National Semi
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठ
Two D

Two Days National Seminar
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
Two Days N
दो दिवसीय

Two Days National
दो दिवसीय राष्ट्रीय
विनोबा भावे

Two Days National
ICPR
विनोबा भावे के
Seminar
संगोष्ठी

Two Days National Seminar

Two Days National Seminar
Two Days National Seminar

Two Days National Seminar
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
Two Days National Seminar
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
E OF ACHARYA VINOBHA BHAVE
IN MODERN

Two Days National Seminar
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
Days National Se
दिवसीय राष्ट्रीय सं

Two Days National Seminar
Two Days National Seminar
E OF ACHARYA VINOBHA BHAVE'S PHILO
IN MODERN INDIAN SOCIETY
10-11th March 2023

Two Days National Seminar

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
"आचार्य विनोबा भावे के दर्शन की आधुनिक भारतीय समाज में प्रासंगिकता"

प्रतिवेदन

डॉ0 नीशू कुमार
सहायक आचार्य
राजनीति विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

आज दिनांक 10 मार्च 2023 को उत्तराखंड की शैक्षिक नगरी हरिद्वार के ग्रामीण अंचल में अवस्थित शिक्षा के केन्द्र के रूप में आधारित चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा के प्रांगण में 2 दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के प्रथम दिन महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में ज्ञान दायिनी मां सरस्वती के चरणों में प्रज्जवलित करके एवं पुण्य अर्पित करके संगोष्ठी की विधिवत शुरुआत की गयी। राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक के राज०विज्ञान विभाग के डा० निशु कुमार ने मंच से संगोष्ठी की विधिवत रूप रेखा प्रस्तुत की। इस संगोष्ठी के प्रथम सत्र के रूप में मुख्य अतिथि के रूप में डा० विजय शुक्ला, गांधीवादी विचारक, विशिष्ट अतिथि के रूप में डा० भवारत वेदालकार असि० प्रो० दर्शन शास्त्र विभाग गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० हरिद्वार, विशिष्ट वक्ता के रूप में डा० प्रकाश लखेड़ा विभागाध्यक्ष रा०वि० विभाग राजकीय पी०जी० कालेज चम्पावत लोहाघाट, डा० प्रवेश त्रिपाठी असि०प्रो० हिन्दी रा०महा० मंगलौर, पंडित अतुल हरित कोषाध्यक्ष प्रबंध समिति, पं० अरुण हरित सचिव प्रबंध समिति एवं महाविद्यालय की कार्यवाहक प्राचार्य डा० किरण शर्मा ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। कार्यक्रम में मंच संचालन करते हुए डा० नवीन त्यागी ने अपनी भूमिका का निर्वहन किया। सेमिनार के विषय ष्आचार्य विनोबा भावे के दर्शन की आधुनिक भारतीय समाज में प्रासंगिकल का सार्थक एवं वर्तमान में आवश्यक पर बल देते हुए सभी विज्ञापनों ने अपने विचारों से संगोष्ठी की सार्थकता सिंह की। संगोष्ठी के संयोजक डा० निशु कुमार ने बताया कि संगोष्ठी में विस्तार से चर्चा हेतु समय का निर्धारण किया गया है। सेमिनार के इस अवसर पर सेमिनार विषय पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रों का संकलन करके एक पुस्तक का निर्माण कराया गया है जिसका विमोचन भी आज सेमिनार के माध्यम से प्राचीन धर्म, संस्कृति एवं भारत के स्वामि इतिहास को आचार बनाकर वर्तमान परिदृश्य में उसकी सार्थकता क्या होगी इसी विषय को आधार बना कर इस महाविद्यालय में दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया। महाविद्यालय की कार्यवाहक प्राचार्य डॉ किरण शर्मा ने सभी आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए दो दिवसीय सेमिनार के सफलता पूर्ण रूप से सम्पन्न होने की कामना की ओर राजनीति वि० विभाग एवं डा० निशु कुमार को इस शानदार आयोजन हेतु बधाई दी। प्रबंध समिति के सचिव प० अरुण हरित एवं

कोषाध्यक्ष प० अतुल हरित के द्वारा सभी आमंत्रित अतिथियों को पुण्य गुच्छा, पौधा एवं शाल भेंट करके स्वागत किया एवं धन्यवाद श्रापित किया गया।इस सेमिनार को सफल बनाने में महाविद्यालय के प्रबंध समिति के सम्मानित सभी पदाधिकारियों, महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कमचारियों के साथ साथ छात्रध्छात्रों ने अपनी प्रत्यय एवं परोक्षरूप से भूमिका अदा की एवं छात्र छात्रों ने अत्यधिक संख्या में प्रतिभाग किया।

डॉ० प्रकाश लखेड़ा जी का उद्‌बोधन–

सर्वप्रथम सम्मानित मंच का स्वागत एवं अभिवादन करने के पश्चात् डॉ० लखेड़ा जी ने अपने उद्‌बोधन की शुरूआत की। सेमिनार के विषय को स्पष्ट करते हुए डॉ० लखेड़ा जी ने आचार्य विनोबा भावे जी एक फकीर, साधु एवं संत की संज्ञा देते हुए उन्हें देश का प्रथम सत्याग्रही के रूप में स्थापित किया। महाविद्यालय की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए प्रबंध समिति एवं विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य हेतु बधाई दी। लोहाघाट के मायावती के पूर्व नाम से परिचित कराते हुए स्पष्ट किया कि विश्व में एकमात्र अद्वैतवाद का केंद्र केवल लोहाघाट में स्थित है। गाँधी और स्वामी जी के मध्य संबंधों के दर्शन एवं विचार के रूप में स्थापित करते हुए विस्तार से चर्चा की।

अपने मार्मिक उद्‌बोधन में डॉ० लखेड़ा जी विनोबा एवं गाँधी जी के दर्शन को आवश्यक मानते हुए बताया कि विनोबा जी के प्रमुख दर्शनों में अध्यात्म, शिक्षा, अद्वैत, अहिंसा, त्याग, ब्रह्मचर्य आदि विचारों को वर्तमान में परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक बताया। विनोबा जी के जन्मतिथ 11 सितम्बर को दो महापुरूषों से स्वामी विवेकानन्द एवं विनोबा जी व्यक्तिगत सम्बन्धित बताया। सनातन धर्म को सभी धर्मों के आधार के रूप में प्रमाणित करते हुए बताया कि हमारा संविधान भी वर्तमान में सर्वधर्म सम्भाव की भाषा को प्रबल करता है। गाँधी जी के विचारों एवं दर्शन से प्रभावित होने के कारण विनोबा जी के भारत या विश्व का प्रथम सत्याग्राही बताते हुए गाँधी जी को उत्तराधिकारी घोषित किया गया।

भूदान आंदोलन के जनक के रूप में विनोबा जी को बताते हुए डॉ० लखेड़ा ने विनोबा की स्वराज, सर्वधर्म एवं व्यावहारिक एवं सर्वोदय के जनक के रूप में प्रमाणित किया। भूदान या ग्रामदान आंदोलन को डॉ० लखेड़ा जी ने सर्वोदय का आधार बताया।

डॉ० विजय शंकर शुक्ला (गाँधीवादी विधान)–

डॉ० विजय शंकर शुक्ला ने गाँधी एवं विनोबा के विचारों पर सारगर्भित व्याख्यानों की विधिवत् शुरूआत करने से पहले उन्होंने बताया कि विनोबा जी ने बताया कि किस प्रकार जीवन जीना चाहिए और कैसा आचरण करना चाहिए। उस मनुष्य को कैसे रहना चाहिए, इसके उत्तर में निष्पक्ष रहना चाहिए। उन्होंने बताया कि निर्भय रहना चाहिए और निर्भय करना चाहिए। लोगों से कैसे मिलें? तो इसके प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा कि मित्रभाव एवं सेवाभाव से मिलना चाहिए।

विनोबा जी शैक्षिक दर्शन की व्याख्या करते हुए डॉ० शुक्ला ने बताया कि अध्ययन कैसे करें तो उनका प्रत्युत्तर था कि हृदय से समझना चाहिए। अपने सारगर्भित

व्याख्यान में डॉ० शुक्ला ने बताया कि विनोबा जी बताते थे कि हमें कोई भी वस्तु तभी लेनी चाहिए जब पहले हमारा उस वस्तु पर अधिकार हो एवं आवश्यकता हो, तभी हमें कोई भी वस्तु ग्रहण करना चाहिए। शिक्षक एवं विद्यार्थी के सम्बन्धों में विस्तार से चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि आचार्य वही है जिसका आचरण प्रभावी हो।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विनोबा जी के राजनैतिक विचारों की प्रासंगिकता बताते हुए डॉ० शुक्ला ने कहा कि विनोबा जी ने बताया कि स्वयंशास्त्री समाज होना चाहिए अर्थात् स्वयं के द्वारा समाज का पालन/पोषण होना चाहिए। विनोबा जी ने स्वयं शासित समाज की कल्पना की है।

अपने व्याख्यान में बताया कि जो भी व्यक्ति/संस्थान हमारे ऊपर शासन करता है वह सभ्य नहीं हो सकती अर्थात् सरकार एक गैर जरूरी संस्थान है एवं सुशासन एक भ्रम है क्योंकि शासन से भय वृद्धि हो जाती है इसलिए सरकार एक गैर जरूरी संस्था है। सरकार के द्वारा परावलम्बन को बढ़ावा मिलता है जो कि जीवन–यापन में बाधक है और जो व्यवस्थापक है वही अपराध को बढ़ावा देते हैं।

विनोबा जी की दृष्टि में लोकतंत्र एवं व्यक्तिवाद के अलावा और कुछ भी नहीं है इसीलिए उन्होंने बताया कि शासन का जितना अधिक विकेन्द्रीकरण होगा, उतना ज्यादा सुशासन होगा। अपने राजनैतिक उद्‌बोधन में डॉ० शुक्ला ने बताया कि सरकार/शासन का जितना अधिक केन्द्रीकरण होगा शासन उतना ही तानाशाह होगा। डॉ० शुक्ला ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि डॉ० लोहिया एवं विनोबा जी के विचार वर्तमान में समाज में समन्वय की भावना स्थापित करने हेतु आवश्यक एवं प्रभावी बताया। डॉ० शुक्ला ने यह भी बताया कि गाँधी जी दक्षिण यात्रा में किए गए जीवन–यापन की विस्तार से चर्चा करते हुए बताााया कि वर्तमान समाज में गाँधी जी के विचारों की अत्यधिक प्रासंगिकता है इसीलिए गाँधी जी का उत्तराधिकारी होने के कारण आचार्य विनोबा भी वर्तमान समाज के निर्माण आधारभूत भूमिका निभा रहे हैं।

अपने मार्मिक उद्‌बोधन में महिला दिवस पर विस्तार से चर्चा करते हुए डॉ० शुक्ला ने बताया कि सेवाग्राम आश्रम से एक पत्रिका निकलती है। मैत्री जिसका प्रकाशन लगभग 55 वर्षों पूर्व हुआ था, जो वर्तमान में केवल महिलाओं के द्वारा ही चलाया जा रहा है। स्त्री को स्वावलंबी एवं समाज निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अपने व्याख्यान के अंत में बताया कि गाँधी जी एवं विनोबा जी के दर्शन एवं विचारों को प्रासंगिक बताते हुए बताया कि 1 मार्च को दोनों महापुरूषों की याद में शून्य भेदभाव सिद्धान्त दिवस के रूप में मनाया जाता है।

डॉ० भारत वेदालंकार जी का उद्‌बोधन–

अपने उद्‌बोधन की शुरूआत करते हुए। डॉ० भारत जी गीता के श्लोक का वाचन किया एवं तत्पश्चात् मंचासीन सभी अतिथियों का स्वागत किया। अपने उद्‌बोधन में डॉ० भारत वेदालंकार ने आचार्य विनोबा के शिक्षा दर्शन पर विस्तार से चर्चा किया एवं बताया कि किस प्रकार वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था में आचार्य विनोबा के शैक्षिक तत्व

आवश्यक हैं। वर्तमान में आचार्य कुलभ की स्थापना एवं प्राचीन एवं वर्तमान की समन्वय नीति पर चलते हुए विनोबा जी ने अपने शैक्षिक दर्शन की शुरूआत की। अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में डॉ० भारत ने बताया कि हमें आत्मसंतुष्टि के लिए आध्यात्मिक ज्ञान होना आवश्यक है। शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए उन्होंने बताया कि भारत देश प्राचीनकाल से ही शिक्षा एवं धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा का केन्द्र रहा है। इन्होंने अपने उद्‌बोधन में बताया कि भारतीय शिक्षा प्रणाली के प्रमुख प्रयोजनों में चरित्र निर्माण, कर्त्तव्यपरायणता, आत्मानुशासन एवं परिश्रम से युक्त होनी चाहिए। शासन एवं अनुशासन में अंतर्संबंध स्थापित करते हुए उन्होंने शासन को प्राथमिकता प्रदान की।

डॉ० कविता अहलावत राजकीय महाविद्यालय, जखोली का उद्‌बोधन–

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित डॉ० कविता अहलावत ने अपने वक्तव्य को आचाय विनोबा भावे एवं उनके प्रजातांत्रिक मूल्यों पर आधारित करते हुए अपने व्याख्यान की शुरूआत की। डॉ० अहलावत ने अपने विचारों के माध्यम से बताया कि विनोबा भावे के मतानुसार ग्राम सभा के स्तर के सभी कार्य गाँव पंचायत के माध्यम से होने चाहिए। इसमें किसी अन्य बाहरी सत्ता का किसी भी प्रकार का कोई भी हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। डॉ० अहलावत ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए बताया कि आचार्य विनोबा भावे जहाँ इस व्यवस्था के कारण केवल गाँव की विकास की रूपरेखा निर्धारित करते हैं वहीं डॉ० लोहिया इसी प्रकार के विचार एशियाई समाजवाद के लिए व्यक्त किए। डॉ० अहलावत ने कहा कि वर्तमान में भारतीय समाज एवं सामाजिक प्राणियों के मध्य जिस प्रकार विषमता, द्वेष और नफरत का माहौल व्याप्त है उस माहौल को मूलतः समाप्त करने हेतु आचार्य विनोबा भावे के विचारों को आत्मसात् करने की जरूरत है।

डॉ० सुशील कुमार भाटी, असि०प्रो०, राजकीय महाविद्यालय, पोखड़ा का उद्‌बोधन–

दो दिवसीय सेमिनार के द्वितीय दिवस में विशेष वक्ता के रूप में प्रतिभाग करने वाले डॉ० सुशील कुमार भाटी, असि०प्रो० इतिहास ने अपने विचारों के माध्यम से आचार्य विनोबा भावे के ग्राम स्वराज की परिकल्पना को सिद्ध करते हुए वर्तमान स्थिति में गाँवों को कैसे समृद्ध एवं सशक्त कर सकते हैं? इस ओर अपने ध्यान को आकर्षित किया। उन्होंने कहा आचार्य विनोबा भावे ग्राम स्वराज्य के माध्यम से राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के विचार को बढ़ावा देने के पक्षधर थे और यह भी चाहते थे कि प्रत्येक गाँव किसी अन्य पर निर्भर न रहकर स्वशासित इकाई के रूप में कार्य करे, जिसकी वर्तमान समय में अति आवश्यकता है। आचार्य विनोबा यह भी चाहते थे कि ग्राम में विभिन्न श्रोतों से होने वाली आय के संग्रह हेतु एक 'ग्राम कोष' साथ ही ग्राम स्वराज में पुलिस अथवा सेना के स्थान पर 'शांति सेना' की व्यवस्था होगी, जिसमें सर्वोदय समाज में विश्वास रखने वाले 10 लोगों को शामिल किया जाएगा, जो ग्राम में शांति व्यवस्था निर्मित करने का कार्य करेगी, जिसका वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक महत्व एवं योगदान है।

डॉ० सोनिका नागर, असि०प्रो०, राजनीति विज्ञान विभाग, इस्माईल (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ का उद्‌बोधन–

डॉ० सोनिका नागर ने अपने व्याख्यान के माध्यम से विनोबा भावे के उस दर्शन का वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिकता को उजागर किया जो वर्तमान के समय में महिला सशक्तिकरण की नीति को सार्थक बना सकता है। डॉ० नागर ने कहा कि वर्तमान में भारत देश के परिप्रेक्ष्य में भारतीय महिलाओं की जो दुर्दशा हो रही है उसका एक प्रमुख कारण स्वयं महिलाएँ ही हैं। उन्होंने कहा कि आचार्य विनोबा का मानना भी स्त्रियों का उद्धार स्त्रियों के द्वारा ही हो सकता है यह तभी संभव होगा जब स्त्रियाँ जागेंगी और स्त्रियों में शंकराचार्य जैसी कोई प्रखर ज्ञान वैराग्य सम्पन्न, भक्तिमान और निष्ठावान स्त्री होगी। उन्होंने कहा कि जब स्त्रियों का धर्म पर पूर्णरूपेण प्रभाव व्याप्त होगा तभी स्त्रियों का उद्धार होना निश्चित हो सकता है।

डॉ० मोनू सिंह, असि०प्रो० हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, छपरौली (बागपत) का उद्‌बोधन–

डॉ० मोनू सिंह ने अपने व्याख्यान की विधिवत् शुरूआत आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक दर्शन एवं प्रमुख शैक्षिक तत्वों को आधार बनाते हुए की। डॉ० मोनू ने बताया कि अपने शैक्षिक दर्शन का विश्वव्यापी रूप अपनाने के कारण ही आचार्य विनोबा भावे को भारत का राष्ट्रीय अध्यापक और महात्मा गाँधी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी समझा जाता है। उन्होंने बताया कि आचार्य विनोबा भावे को हम ''ज्ञान का अक्षय कोष'' कह सकते हैं क्योंकि भावे जी संत तुकाराम एवं संत ज्ञानेश्वर को अपना आदर्श स्वरूप मानते हैं। डॉ० मोनू ने अपने उद्‌बोधन में इस बात को स्पष्ट तरीके से कहा कि अगर भारत को विश्वगुरू का दर्जा प्राप्त करना है तो वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं प्रमुख शैक्षिक दर्शन के आधारभूत तत्वों जैसे– पाठ्यक्रम, गुरू, शिक्षा व्यवस्था, मूल्यांकन, रोजगारपरक व्यवस्था को भावे के दर्शन के आधार पर लागू करना होगा।

डॉ० धनंजय शर्मा, असि०प्रो०, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय का उद्‌बोधन–

डॉ० धनंजय शर्मा ने अपने व्याख्यान के दौरान आचार्य विनोबा भावे के प्रमुख दार्शनिक विचारों जैसे ट्रस्टीशिप की अवधारणा एवं सर्वोत्तम समाज की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। डॉ० शर्मा ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि विनोबा जी के अनुसार ट्रस्टीशिप सिद्धान्त का अभिप्राय है। शरीर, बुद्धि और सम्पत्ति तीनों में से जो भी प्राप्त हो सके उसको सबके हित में लगाना। वे ट्रस्टीशिप के स्थान पर ''विश्वस्त वृत्ति'' शब्द का प्रयोग करने के समर्थक थे, जिसका अर्थ है– दूसरे पर विश्वास रखते हुए जीवन को जीना।

डॉ० शर्मा ने बताया कि आचार्य विनोबा जी एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जो पूर्ण रूप से प्रेम एवं सत्य और अहिंसा पर आधारित हो। मानव के आंतरिक एवं बाह्य विकास के लिए ऐसे समाज की कल्पना को ही सर्वोदय समाज के नाम से अभिव्यक्त किया गया। उन्होंने बताया कि विनोबा जी व्यक्ति की अच्छाईयों में दृढ़

विश्वास रखते थे, ऐसे व्यक्ति को ज्यादा प्राथमिकता देते थे जो दूसरों के सुख में सुखी एवं दुःख में दुःखी होता था।

डॉ० इमरान, असि०प्रो०, राजनीति विज्ञान विभाग, एम० (पी०जी०), मसूरी का उद्‌बोधन–

अपने विषयिक व्याख्यान का प्रारम्भ करते हुए डॉ० इमरान आचार्य विनोबा भावे के राष्ट्रीय आन्दोलनों में भूमिका को स्पष्ट करते हुए बताया कि भावे की भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनों में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने बताया कि जब महात्मा गाँधी असहयोग आन्दोलन चला रहे थे तभी भावे भारतीयों को विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने पर विशेष बल देने का कार्य कर रहे थे। उन्होंने बताया कि लोगों की सेवा करना विनोबा जी ने अपना धर्म बना लिया था। डॉ० इमरान ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट रूप से कहा कि विनोबा भावे जी को लोगों से इतना लगाव एवं प्रेम था कि वे हर जीव में परमात्मा का दर्शन करते थे। उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक विकास का आधार सत्य, सामाजिक विकास का आधार, अहिंसा एवं आर्थिक विकास का आधार अपरिग्रह है। विनोबा जी सर्वोदय का उद्‌देश्य स्वशासन एवं स्वावलंबन मानते थे।

डॉ० गिरिराज सिहं, असि०प्रो० राजनीति विज्ञान विभाग का उद्‌बोधन–

दो दिवसयी सेमिनार के दूसरे दिन विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित डॉ० गिरिराज सिंह, असि०प्रो० राजनीति विज्ञान विभाग ने अपने प्रेरणाप्रद उद्‌बोधन में आचार्य विनोबा भावे को मूल रूप से एक लेखक, समाज सुधारक, चिन्तक एवं आजादी का नायक बताते हुए कहा कि आचार्य विनोबा भावे का दर्शन, ''सर्वोदय'' का प्रमुख उद्‌देश्य सबका उदय है। सभी प्रकार से उत्थान एवं उदय ही इस दर्शन की विशेषता है। उन्होंने कहा कि सर्वोदय की कल्पना हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मिलती है। साथ ही इस सर्वोदय की भावना में लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के लक्ष्यों का साधन का मूल मंत्र निहित है, जो आचार्य विनोबा भावे एवं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी दोनों महापुरूषों के जीवन दर्शन का आधार है। उन्होंने सर्वोदय की भावना को स्पष्ट करते हुए बताया कि सर्वोदय के विषय में विनोबा जी का अभिमत है कि सर्वोदय सबका हित चाहने वाला है। दुःखी, कमजोर, पीड़ित, शोषित एवं गरीब लोगों की तरफ सबका ज्यादा ध्यान होना चाहिए यही सर्वोदय समाज का नियम है। उन्होंने कहा कि विनोबा जी का स्पष्ट विचार है कि कोई भी क्रांति पहले चिन्तन में आती है फिर वचन में प्रकाशित होती है। इनके विचारों को प्राचीन एवं आजाद भारतीय समाज के कल्याणकारी तत्व के रूप में प्रमाणित किया।

डॉ० तीर्थ प्रकाश, एसो०प्रो० राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, मंगलौर का उद्‌बोधन–

सेमिनार के द्वितीय दिवस विशेष वक्ता के रूप में आमंत्रित डॉ० तीर्थप्रकाश एसो०प्रो० राजनीति विज्ञान विभाग ने आचार्य विनोबा भावे को राष्ट्रीय शिक्षक, सर्वोदय समाज के वास्तविक शिल्पकार, श्रम के पुजारी एवं सच्चे अर्थों में गाँधी के उत्तराधिकारी के रूप में एक अद्वितीय पुरूष के स्वर्णिम हस्ताक्षर के रूप में प्रमाणित किया। उन्होंने ने सर्वजन हिताय की सार्वभौमिक कल्याणकारी नीति से प्रेरित आचार्य विनोबा भावे को

महापुरूष की संज्ञा दी और स्पष्ट किया कि भावे का सर्वोदय, आत्मत्याग की भावना पर ''सबके भले में अपना भला'' आधारित मूल मंत्र को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान करता है। डॉ० प्रकाश ने बताया कि जिस प्रकार बंकिम चन्द्र जी द्वारा वन्देमातरम्, विवेकानन्द जी द्वारा दरिद्रनारायण ठीक उसी प्रकार 'भूदान यज्ञ' शब्दावली की रचना का श्रेय आचार्य विनोबा भावे जी को जाता है। इस प्रकार विनोबा जी का दर्शन मानवीय जीवन के प्रत्येक कालखण्ड में अपनी प्रासंगिकता को बताया गया है।

डॉ० सुनील, असि०प्रो०, जी०डी०सी० रिच्छा, बरेली का उद्बोधन–

अपने व्याख्यान में डॉ० सुनील ने आचार्य विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के दर्शन को स्पष्ट किया। अपने वक्तव्य में डॉ० सुनील ने बताया कि भूदान आन्दोलन के उद्देश्य के विषय में विनोबा जी कहते हैं– ''हमें अपने आन्दोलन के मुख्य उद्देश्य को स्पष्टतः समझना चाहिए। एक ग्राम में भूमि का वितरण केवल प्रथम कदम है, हमारे आन्दोलन का एक लक्ष्य, एक अभिनव मावन की सृष्टि करना है, केवल भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में इसके प्रभाव व्याप्त हैं।''

डॉ० सुनील ने यह भी स्पष्ट रूप से व्यक्त किया कि आचार्य विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन अंतिम लक्ष्य जनगण के टूटे हृदय को जोड़ना तथा प्रत्येक ग्राम के व्यक्तियों में एकता की भावना जागृत करना था, ऐसा तभी सम्भव था जब भूमिपति अपनी स्वेच्छा से तथा प्रेम से और उदारता से कम सौभाग्यशाली व्यक्तियों को दें। इससे धनी का अभिमान कम हो जायेगा और निर्धन के नैराश्य तथा दूसरों पर निर्भरता में कमी आयेगी तथा आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार हो उठेगा।

डॉ० नीरजा चौधरी, एसो०प्रो०, डी०ए०वी० (पी०जी०) कॉलेज, देहरादून का उद्बोधन–

आचार्य विनोबा भावे के दर्शन पर आधारित 2 दिवसीय सेमिनार के दूसरे दिन डी०ए०वी० (पी०जी०) कॉलेज, देहरादून की एसो०प्रो० डॉ० नीरजा चौधरी ने अपने व्याख्यान में आचार्य विनोबा भावे के विचारों में महिला उत्थान विषय को आधार बनाकर अपने विचारों को मंच से साझा किया। उन्होंने बताया कि प्राचीन भारतीय समाज में मनुस्मृति एवं मनु के विचारों के कारण नारी की अवनति एवं दुर्गति हुई है, परन्तु आचार्य विनोबा भावे के दर्शन में नारी उत्थान के संदर्भ में आपने भाषणों, लेखों, व्यवहारों, चिंतन एवं ग्रंथों में बाल विवाह, विधवा पुर्नविवाह, स्त्रियों की सम्पत्ति में हिस्सेदारी, शिक्षा एवं स्वतन्त्रता, उनके प्रतिमान–सम्मान का व्यवहार जैसे मुद्दों को बदला जाए ताकि स्त्री–पुरूष को समान स्तर, अवसर और समान अधिकार प्राप्त हो सके। उन्होंने कहा कि आचार्य विनोबा भावे भारतीय समाज में एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, जिसकी नींव, न्याय, समानता, शांति एवं समरसता पर आधारित हो। उन्होंने बताया कि भावे स्त्री को ईश्वर सर्वोत्कृष्ट रचना एवं अहिंसा का अवतार की प्रतिमा मानते थे।

डॉ० एकता चौहान, असि०प्रो० राजनीति विज्ञान विभाग, ए०के० (पी०जी०) कॉलेज, खुर्जा का उद्बोधन–

दो दिवसीय सेमिनार के दूसरे दिन विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ० एकता चौहान, असि०प्रो० राजनीति विज्ञान ने मंच पर अपनी गरिमामयी उपस्थिति दी। अपने व्याख्यान के माध्यम से डॉ० चौहान ने आचार्य विनोबा भावे जी दार्शनिक एवं वैचारिक पक्षों के राजनैतिक पक्ष को उजागर किया। डॉ० चौहान ने बताया कि आचार्य विनोबा जी का आदर्श एक अहिंसक एवं विकेन्द्रित शासन व्यवस्था के स्थापना के निर्माण का है। जहाँ व्यक्ति दमन एवं शोषण की नीति से मुक्त होगा। उन्होंने बताया कि विनोबा भावे जी राज्यशक्ति और राज्यसत्ता के स्थान पर लोकशक्ति एवं लोकसत्ता चलाना चाहते थे क्योंकि लोकशक्ति की हिंसाशक्ति और दण्डशक्ति से भिन्न स्वतन्त्र जनशक्ति है। डॉ० चौहान ने यह भी कहा कि सामान्य दृष्टि में विनोबा जी ने शासन पद्धतियों को तीन भाग में विभाजित किया है जो कि एकायतन, अनेकायतन एवं सर्वायतन है। विनोबा जी हमेशा सर्वायतन पद्धति से शासन करने एवं कराने के पक्षधर थे क्योंकि उनका मानना था कि सर्वायतन पद्धति के शासन प्रणाली में सभी मिलकर समान उत्तरदायित्व के साथ अपनी व्यवस्था करते हैं जो कि वर्तमान में एक आदर्श लोकतंत्रात्मक प्रणाली हेतु आवश्यक आधार है।

डॉ० दिलीप, असि०प्रो० राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, जखोली का उद्‌बोधन–

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय दिवस में विषय वक्ता के रूप में आमंत्रित डॉ० दिलीप, असि०प्रो० राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, जखोली ने अपने वक्तव्य में आचार्य विनोबा भावे के प्रमुख विचारों/दर्शनों में से एक ''समाजवाद और पूँजीवाद'' को प्रमुखता से शामिल किया है तथा वर्तमान समाज एवं समय में इसी विचारधारा के प्रयोजन हेतु संभावना भी व्यक्त की। डॉ० दिलीप ने बताया कि भारत आज समाजवादी लोकतंत्र के पथ पर प्रतिमान है जो आचार्य विनोबा भावे की वर्तमान प्रासंगिकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उन्होंने कहा कि आचार्य विनोबा भावे ने एक ऐसे समाजवादी लोकतंत्र की जिसमें राज्य की भूमिका को हटाकर उसके स्थान पर व्यक्ति की भूमिका को स्थापित किया जाए।

इसके अलावा डॉ० दिलीप ने अपने व्याख्यान में स्पष्ट किया कि जहाँ तक पूँजीवाद की बात है तो आचार्य विनोबा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता के अनुसार पूँजी अर्जित करने का अधिकार होना चाहिए परन्तु इसकी दशा समाजवादी एवं कल्याणकारी अर्थव्यवस्था की ओर होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के साथ ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त भी जोड़ते हैं, जो प्राचीन एवं वर्तमान भारत एवं भारतीय समाज के विकास के लिए अति आवश्यक है।

डॉ० विपिन कुमार शर्मा, असि०प्रो०, राजकीय महाविद्यालय, लम्बगाँव का उद्‌बोधन–

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय दिवस मंच पर विषम वक्ता के रूप में उपस्थित वक्ता डॉ० विपिन कुमार, असि०प्रो०, राजकीय महाविद्यालय, लम्बगाँव ने अपने व्याख्यान में आचार्य विनोबा के आदर्शों, विशेष रूप से उनके शैक्षिक आदर्शों एवं शिक्षा से

सम्बन्धित दर्शन पर प्रकाश डाला। डॉ० शर्मा ने स्पष्ट कहा कि यदि वर्तमान परिवेश में भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आचार्य विनोबा के दर्शनों का आंशिक प्रयोग मात्र ही कर दिया जाए तो हमारा देश विश्वगुरू की रेश में अग्रसर हो जाएगा। डॉ० शर्मा ने बताया कि विनोबा जी सदैव क्षेत्र कोर्ट भी हो उस क्षेत्र के विस्तार से अधिक महत्व उसकी गुणवत्ता को देते हैं। शिक्षा एवं शिक्षण के संबंध में विनोबा जी इसी तथ्य को प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि हम यह नहीं सोचते है कि यह विचार स्वदेशी है या विदेशी अथवा नया है या पुराना। हम यह सोचते हैं कि वह विचार उचित है या नहीं। उन्होंने बताया कि आचार्य विनोबा जी ने पतंजलि के योगसूत्र को शिक्षणशास्त्र पर सर्वोत्तम ग्रंथ माना है। उन्होंने बताया कि विनोबा जी के शिक्षा दर्शन की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता शिक्षण की स्वतन्त्रता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि विनोबा मानते थे कि भारत में शिक्षा उन दिनों से है जब यूरोप में शिक्षा का आरम्भ भी नहीं हुआ था। यह बात उपनिषदों में भी प्रमाणित है।

डॉ० अजय परमार, असि०प्रो० इतिहास, संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार का उद्‌बोधन–

उत्तराखण्ड के ग्रामीणांचल परिवेश में अवस्थित शिक्षा के केन्द्र के रूप में चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा में ''आचार्य विनोबा भावे के विचारों की वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिकता'' विषय पर आयोजित 2 दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय दिवस में विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित डॉ० अजय परमार, असि०प्रो० इतिहास विभाग, संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने अपने विचारों से युक्त उद्‌बोधन आचार्य विनोबा भावे को मानवता के प्रबल समर्थक के रूप में प्रतिस्थापित किया। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति के प्रतीक आचार्य विनोबा का सम्पूर्ण जीवन तमाम, पारस्परिक प्रेम, सहानुभूति एवं कर्मठता का जीवन–दर्शन है। स्वाभाविक है कि उनका हिंसा. युद्ध, सशक्तिकरण से विरोध हो, उन्होंने अपने आन्दोलनों को अहिंसात्मक ढंग से चलाया, इसीलिए वह शान्ति के पुजारी कहे जाते हैं। डॉ० परमार ने अपने उद्‌बोधन में इस बात को प्रमुखता से शामिल किया कि आचार्य विनोबा एक आध्यात्मिक संत थे, ईश्वर में उनकी अटूट निष्ठा थी इसीलिए वह ईश्वर को भौतिक जगत् से भी अधिक महत्व देते थे। डॉ० परमार ने कहा कि आचार्य विनोबा भावे जी ने अपने कर्मों एवं विचारों के आधार पर स्वयं को जनता का सेवक सिद्ध किया है।

डॉ. देवपाल असिस्टेंट प्रोफेसर , वाणिज्य विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार,उत्तराखण्ड ने अपने शोध पत्र **''गाँधी जी के बाद सर्वोदय आंदोलन में आचार्य विनोबा भावे की भूमिका''** में बताया कि भारत जैसे किसी भी लोकतांत्रिक देश की प्राथमिकता सबका उत्थान है। सर्वोदय आंदोलन का अर्थ है सभी के लिए समानता, न्याय और स्वतंत्रता के साथ एक आदर्श समाज बनाना। सर्वोदय की अवधारणा की पहलसबसे पहले गांधी जी ने की थी 1908 में जॉन रस्किन के ''अनटू दिस लास्ट'' के उनके गुजराती अनुवाद के शीर्षक के रूप मेंकिया गया था।। आज सर्वोदय गांधीवादी विचारधारा का पर्याय बन गया है।सर्वोदय का साहित्यिक अर्थ सबका कल्याण है। सर्वोदय आदर्श होने के साथ–साथ सभी के उत्थान का आंदोलन है। इसे विश्व समस्याओं का भारतीय समाधान, सामाजिक–आर्थिक बुराइयों के लिए गांधीवादी रामबाण

माना जाता है। गांधी के प्रबल अनुयायी के रूप में, विनोबा भावे ने भारत में एक सर्वोदय सोसायटी बनाने के लिए सर्वोदय का अभ्यास करना शुरू कर दिया। भारतीय राष्ट्र को सभी के लिए समानता, न्याय और स्वतंत्रता पर आधारित बनाने के लिए, विनोबा ने भूमिहीन गरीबों की मदद के लिए भूदान आंदोलन शुरू किया। सम्य–योग सर्वोदय का दूसरा नाम है जो विनोबा में गहराई से आया है। वह समाज में प्रगतिशील परिवर्तन लाने के लिए समय–योग की भावना से सांस लेता और जीता है। स्वतंत्रता के बाद के भारत में, विनोबा भावे ने सभी की प्रगति के लिए, विशेष रूप से दलित लोगों के लिए, भारत के पुनर्निर्माण के लिए खुद को सर्वोदय के लिए समर्पित कर दिया। यह अध्ययन गांधी के बाद जन समाजवाद की स्थापना के लिए सर्वोदय आंदोलन के लिए विनोबा के योगदान पर ध्यान केंद्रित करता है।

विनोबा भावे का राजनीतिक चिन्तन विषयक शोध पत्र में डा0 आरती गहरवार, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीगढ़ ने बताया किया कि आचार्य विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 में हुआ। उनका मूल नाम विनायक नरहरि भावे था। विनोबा भावे एक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता तथा प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक थे। वे भारत के राश्ट्रीय अध्यापक तथा महात्मा गांधी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी माने जाते थे। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्श महाराश्ट्र में पवनार के आश्रम में बिताये। बालक विनायक को माता–पिता दोनों के संस्कार मिले थे। गणित की सूझ–बूझ विज्ञान के प्रति गहन अनुराग, परम्परा के प्रति वैज्ञानिक दृश्टिकोण और तमाम तरह के पूर्वाग्रहों से अलग हटकर सोचने की कला उन्हें अपने पिता नरहरि भावे से मिली। उन्हें अपनी मां रूक्मिणी बाई से धर्म और संस्कृति के प्रति गहन अनुराग, प्राणीमात्र के कल्याण की भावना, जीवन के प्रति सकारात्मक दृश्टिकोण, सर्वधर्म समभाव, सह अस्तित्व और सम्मान की कला प्राप्त हुई।

भारत की आजादी की लड़ाई में अहिंसात्मक रूप से इनका बहुत बड़ा योगदान रहा। उन्होंने मानवाधिकार की रक्षा और अहिंसा के लिय सदैव कार्य कियां। उन्होंने राश्ट्र निर्माण के लिये भूदान आंदोलन में योगदान दिया था। ये योगदान देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ था। उन्होंने सदैव महात्मा गांधी के मार्ग का अनुसरण करते हुये अपना जीवन राश्ट्र निर्माण में लगाया।

विनोबा भावे का राजनीतिक दर्शनः– विनोबा भावे 7 जून 1916 को महात्मा गांधी के संपर्क में आये और उसके बाद यह संपर्क बढ़ता चला गया। गांधी जी के साबरमती आश्रम से वर्धा के पवनार आश्रम तक विनोबा भावे का बौद्धिक क्रियाजगत रहा है। हरिजनों द्वारा तेलंगाना में साम्यवादी प्रभाव के विरूद्ध कृशकों की समस्या का निवारण, नई तालीम, राश्ट्रभाशा हिन्दी का प्रचार, भूदान यज्ञ, ग्रामदान, जीवनदान, सर्वसेवा संघ की गतिविधियाँ, डाकुओ की समस्या का समाधान और गौवध निशेध आदि समस्त कार्य विनोबा भावे के अथक प्रयास के ही परिणाम थे।

विनोवा भावे ने अपने राजनीतिक दर्शन में राजनीतिको व्यवस्था सूचक पद बताया है। इन्होंने राजनीति के बारे में सम्पत्ति और सामाजिक सुख दुख के संतुलन की

व्यवस्था की बात कही है। उनके अनुसार राजनीति का मूलभूत और स्वाभाविक अर्थ है कम और अधिक सार्म्थ्यवान व्यक्ति आपस में मिलकर व्यवस्था कैसे करें।

विनोवा 'राज्य शक्ति' और 'राज्य सत्ता' के स्थान पर 'लोकशक्ति' और लोकसत्ता चलाना चाहते थे। उन्होंने ग्राम जनतंत्र और 'लोकसेवक संघ' के विचार के स्थान पर 'लोकशक्ति' और 'लोकनीति' नाम दिया तथा इनके लिए व्यापक आंदोलन चलाये जिसे सर्वोदय आंदोलन कहते है।

युधिष्ठर सिंह सोलंकी, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जे.एस. (पी. जी.) कॉलिज, सिकन्दराबाद, बुलंदशहर ने शोध पत्र 66**आचार्य विनोबा भावे का राजनीतिक चिंतन''** में प्रस्तुत किया कि विनोबा भावे के राजनीतिक दर्शन में 'सर्वोदय' के विचार का अत्यंत महत्व है। इसका मुख्य उद्देश्य समस्त मानव जाति का कल्याण व उत्थान है। इसके लिए विनोबा भावे ने मुख्य रूप से भूदान, ग्राम दान, संपत्ति दान, ग्राम स्वराज, लोकनीति, दल–विहीन लोकतंत्र जैसे विचारों का प्रतिपादन किया। वस्तुतः विनोबा भावे का संपूर्ण जीवन सामाजिक समानता व न्याय के लिए समर्पित था। विनोबा भावे का राजनीतिक चिंतन मानवतावादी विचारधारा पर आधारित है। जिसमें नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का सर्वोच्च स्थान है। उन्हें भारत का महान संत, दार्शनिक, सामाजिक व आर्थिक विचारक और सर्वोदय की अवधारणा के अग्रदूत के रूप में जाना जाता है। विनोबा भावे का जन्म 11 सितंबर 1895 में महाराष्ट्र के कोलोबा जिले में हुआ। वर्ष 1916 में वे गांधीजी के संपर्क में आए और उसके बाद यह संपर्क बढ़ता ही चला गया। गांधीजी के आदर्शों के प्रति उनके समर्पण भाव के कारण ही उनकी मृत्यु के पूर्व तक उन्हें 'वर्तमान का जीवित महात्मा' कहा जाता था। उन्होंने न केवल गांधीजी के सर्वोदय दर्शन को स्वीकार किया, अपितु जीवन पर्यन्त उसे साकार करने में प्रयत्नशील रहे।

अजय कुमार, शोधार्थी, मनेर पटना बिहार ने अपने शोध पत्र जिसका शीर्षक ''आचार्य विनोवा भावे मानवीय संवेदनाओं से भरा दर्शन'' में बताया कि आचार्य विनोवा भावे का जन्म 11 सितम्बर सन् 1895 को गगोड़े महाराष्ट्र मे हुआ था। वे हिंदू धर्म के ब्राह्मण जाती के थे। उनके पिता का नाम नरद्वरी शम्भू एवं माता का नाम रुक्मिणी देवी था। उनका मृत्यु 15 नवम्बर सन् 1982 मे हुआ था। वे मूल रूप से लेखक, समाज सुधारक, चिन्तक, स्वतंत्रता सेनानी थे।आचार्य विनोवा भावे जी का शिक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे हुआ था, यहीं गाँधी जी के भाषण से प्रभावित हो गये। मानव स्वाभाव, सामाजिक रिश्ते और संघर्ष से उत्पन्न अनूभुति एवं अस्तित्व के गर्व से उत्पन्न विचारो के आधार पर गाँधी ने अपने जीवन दर्शन का ताना बाना बुना है। गाँधी ने सत्य अहिंसा आदि शास्वत साधनों के द्वारा मानव समाज के उद्धार के लिए एक नूतन प्रयोग पद्धति का आविष्कार किया जो अध्यात्म और अधिभूत तथा स्वार्थ एवं परार्थ के बीच पैदा करने वाले विरोधी तत्वों को नाश करने व सत्य ही अध्यात्म के साथ योग करके विशुद्ध नैतिक आधार पर समाज का नवनिर्माण करने मे समर्थ है।आचार्य विनोवा भावे जी गाँधी जी के आश्रम मे रहते थे। वे गाँधी जी के दर्शन से काफी प्रभावित थे उनके विलक्ष्ण प्रतिभा के कायल थे, भारतीय राष्ट्रवाद के एक निर्विवाद नेता के रूप में गाँधी के उदय के लिए इस वातावरण मे आज सम्पूर्ण विश्व मे सामान्यतरू और भारत मे विशेषतरू संक्रमित एवं

मूल्यहीनता व्याप्त है। इसके कारण है सतत वैचारिक संघर्ष, जातीय द्वेष, धर्म का नीति एवं अध्यात्म से च्युत होना, हिंसा, ईष्या, घृणा तथा अलगाव का समाज एवं संस्कृति मे बढना आदि आज समाज समृद्धि और गरीबी, स्वतंत्रता शोषण, समाजसम्बंध एवं तनाव, विज्ञान और अध्यातम के विरोधाभाष मे फंसा हुआ है। इस विकट स्थिति मे गाँधी के जीवन दर्शन की प्रासंगिता को आज विश्व समाज, सबसे अधिक महसूस कर रहा है। गाँधी ने विश्व से हिंसा आदि दोषों को हटाने के लिए न केवल अर्जित किया अपितु उसका उपदेश भी दिया। इतना ही नही उन्होने हिंसा का समाज से समूल उन्मूलन के लिए मन और क्रिया मे तादात्मय करके सत्याग्रह नामक अध्यात्मिक चमत्कार को प्रस्तूत किया। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम गाँधी के विचारो पर पुर्नमूल्यांकन करे और समसामयिक समाज मे उसकी प्रासंगिकता पर विचार विमर्श करे, प्रस्तुत विचारों के धारण करने मे सबसे उपर सर्वोदय परम्परा के आचार्य विनोवा भावे के चिंतन मे कर्म का महत्व है। सर्वोदय का अर्थ है सबका उदय और सबके द्वारा उदय। सब लोग जियें और एक दूसरे के साथ जिये। शास्त्रीय परिभाषा मे जीवन का विकास और जीवन का अधिक से अधिक विस्तार। दुनिया मे जीवन का विकास और विस्तार करना है तो इस विषय मे चाहे आस्तिक हो या नास्तिक अर्थवादी हो या भौतिक विज्ञानवादी हो या राजनीतिज्ञ किसी को कोई आपति नही होगी। इसे सभी स्वीकार करेंगे।

डॉ0 फ़ैज़ान अहमद, एसोसिएट प्रोफ़ेसर (राज0वि0) एवं कार्यवाहक प्राचार्य, जी0बी0पन्त (पी0जी0) कालेज ने शोध पत्र **"कछला (बदायूँ) विनोबा भावे के दर्शन की वर्तमान काल में प्रासंगिकता"** में उल्लेख किया कि आधुनिक भारत के महान् सन्त, दार्शनिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारक, भूदान आन्दोलन के प्रणेता और सर्वोदय के अग्रदूत, आचार्य विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 ई0 को महाराश्ट्र के गगोदा नामक ग्राम में एक चितपावन ब्रा🕓मण परिवार में हुआ था। यह गाँव उनके पिता नरसिंह राव भावे को पेशवा से इनाम में मिला था। उनकी माता रुक्मिणी बाई विदुशी महिला थीं। विनोबा भावे को अध्यात्म के संस्कार देने, उन्हें भक्ति–वेदान्त की ओर ले जाने तथा बचपन में ही उनके मन में सन्यास और वैराग्य की प्रेरणा जगाने में उनकी माँ का बड़ा योगदान था। गणित की सूझ–बूझ और तर्क सामर्थ्य, विज्ञान के प्रति गहन अनुराग, परम्परा के प्रति वैज्ञानिक दृश्टिकोण और तमाम तरह के पूर्वाग्रहों से अलग हटकर सोचने की कला उन्हें पिता की ओर से प्राप्त हुई।

विनोबा भावे को 'भारत का राश्ट्रीय अध्यापक' और 'महात्मा गाँधी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी' समझा जाता है। उनका मूल नाम विनायक नरहरी भावे था। विनोबा नाम उन्हें महात्मा गाँधी ने दिया था। अध्ययन में रुचि न होने के कारण उन्होंने स्नातक की डिग्री लेने से पूर्व ही कॉलेज छोड़ दिया। 1916 ई0 में वे गृह त्याग कर सन्यासी हो गए। इस बीच काशी में उन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया। वह एक ऐसे व्यक्ति की खोज में थे, जिसमें राजनीति और अध्यात्म का समन्वय हो। उसी समय वे महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आए तथा उनसे प्रभावित होकर उनके अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम में प्रविश्ट हो गए। आश्रम में परिश्रम व स्वाध्याय से उन्होंने गाँधी जी को बहुत प्रभावित किया। विनोबा भावे से पहली मुलाकात (7 जून 1916 ई0) में ही प्रभावित होकर **महात्मा**

गाँधी ने कहा था कि **"बाक़ी लोग इस आश्रम से कुछ लेने के लिए आते हैं, एक यही है जो हमें कुछ देने के लिए आया है।"**[1] इसके बाद तो विनोबा भावे गाँधी जी के ही होकर रह गए।

1921 ई0 में सेठ जमनालाल बजाज ने वर्धा में एक आश्रम स्थापित किया, तो उन्होंने उसकी व्यवस्था के लिए गाँधी जी से विनोबा भावे को माँगा। विनोबा भावे वहाँ आकर रहने लगे। इस आश्रम में उन्होंने सारी प्रवृत्तियों में योग दिया, लेकिन उनका मुख्य कार्य कताई का था। लगातार कई घण्टे तक चर्ख़ा और तकली के साथ बैठना उनका नित्य कर्तव्य था। 25 वर्श की आयु में महात्मा गाँधी ने उन्हें 'आचार्य' की उपाधि प्रदान की। 1932 ई0 के सत्याग्रह में वह जेल गए। वह धूलिया जेल में रहे। वहीं पर उन्होंने भगवद्गीता का मराठी में अनुवाद किया। गाँधी जी ने इस अनुबाद कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की। 1933 ई0 में वे वर्धा से डेढ़ मील दूर हरिजनों की आबादी वाले गाँव नालवाड़ी चले गए। 1937 ई0 में विनोबा भावे पवनार आश्रम में चले गए। तब से लेकर जीवन पर्यन्त यही आश्रम उनका केन्द्रीय स्थान रहा। द्वितीय विश्व युद्ध के समय जब ग्रेट ब्रिटेन ने भारत को जबरन युद्ध में झोंक दिया तो इस कार्य के विरुद्ध महात्मा गाँधी ने 17 अक्टूबर 1940 ई0 को एक व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया। गाँधी जी द्वारा विनोबा भावे को प्रथम सत्याग्रही बनाया गया। आगामी पाँच वर्शों में उन्हें काफ़ी समय तक जेल में रहना पड़ा। इस अवधि के दौरान उन्होंने बहुत सी भाशाओं तथा कुरआन का अध्ययन किया। वह 18 भाशाएं जानते थे।

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् जब गाँधी जी की हत्या की गई तो विनोबा भावे कुछ वर्शों तक गुमनामी में रहे। 1951 ई0 में उन्होंने तेलंगाना में प्रसिद्ध 'भूदान–आन्दोलन' चलाया। समय–समय पर समाचार पत्रों में उनके लेख प्रकाशित होते रहे। इन लेखों में उन्होंने प्रायः धन की निन्दा की। महात्मा गाँधी की हत्या (30 जनवरी 1948 ई0) के उपरान्त गाँधीवाद को जीवित रखने तथा उसका प्रचार–प्रसार करने में सर्वाधिक योगदान विनोबा भावे का ही है। शान्तिपूर्ण क्रान्ति के रूप में उनका भूदान, ग्रामदान, सम्पत्ति दान आदि आन्दोलन समस्त विश्व को आश्चर्य में डालने वाला है। 15 नवम्बर 1982 ई0 को पवनार आश्रम में उनकी मृत्यु हो गई। 1958 ई0 में उन्हें प्रसिद्ध अन्तर्राश्ट्रीय 'रेमन मेगसेसे पुरस्कार' दिया गया। भारत सरकार द्वारा 1983 ई0 में उन्हें मरणोपरान्त 'भारत रत्न पुरस्कार' प्रदान किया गया। आचार्य विनोबा भावे के प्रमुख विचार निम्नलिखित हैं–

आध्यात्मिक चिन्तन– विनोबा भावे का ईश्वर, भक्ति और मोक्ष में गहन विश्वास था। वे ईश्वर के अस्तित्व को तर्क़ का नहीं वरन् अनुभूति का विशय मानते थे। उनकी दृश्टि में ईश्वर प्राप्ति का सबसे सरल मार्ग यही है कि ईश्वर के लिए अपने चित्त के दरवाज़े सदैव खुले रखे जाएँ तथा ह्रदय में सत्य, प्रेम, करुणा आदि मानवीय आदर्शों को स्थान दिया जाए। विनोबा भावे सच्ची मानवता के विकास के आकांक्षी थे। ईश्वर की भक्ति में वे अहंकार को एक बड़ी बाधा मानते थे। उन्हें सभी धर्मों से प्यार था। उनका मानना था कि मानवता की सेवा ही सबसे ऊँचा और सबसे अच्छा धर्म है। हम उसे धर्म नहीं कह सकते जो साम्प्रदायिक विद्वेश की शिक्षा देता हो। कोई भी धर्म मानव धर्म के

विरुद्ध नहीं हो सकता। मानव धर्म का अर्थ है कि सबके साथ भलाई का व्यवहार किया जाए। सत्य और प्रेम तथा संयम के आदर्श अपनाए जाएँ।

हरिकेश बहादुर यादव, शोधार्थी, कला विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ने शोध पत्र '**आचार्य विनोबा भावे की आर्थिक प्रासंगिकता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'** में बताया कि विनोबा भावे ने समाजवादी लोकतन्त्र की संकल्पना की जिसमें राज्य की भूमिका को हटाकर व्यक्ति की भूमिका स्थापित होती है। ये दो स्थिति में संभव होती है। पहली स्थिति में जब कल्याणकारी राज्य ज्यादा से ज्यादा क्षेत्रों में अपना विकास करता है तो वह अपनी विफलता को आमंत्रित करता है क्योंकि ''कल्याण की एक सीमा होती, अगर उस सीमा से अधिक कल्याण किया जाये तो कल्याण को खुद कल्याण की आवश्यकता पढ जाती है। और दूसरी स्थिति में जब व्यक्ति स्वयं अनुशासित होता है तो उनके हितों में टकराव न्यूनतम होता है। और राज्य को न्यूनतम हस्तक्षेप करने का अवसर प्राप्त होता है और इन्हीं दोनों स्थितियों में समाजवादी लोकतन्त्र प्राप्त होता है। भारत आज समाजवादी लोकतंत्र के पथ पर चल रहा है जो विनोबा भावे की प्रसंगिकता का प्रमाण है।

विनोबा भावे भारी उद्योगो का विरोध नहीं करते हैं परन्तु उनका मानना है कि भारी उद्योगों से पहले स्वदेशी को अपनाना चाहिए। विनोबा भावे कहते हैं, भारत में ग्रामीण उद्योगों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। क्योंकि भारत एक गॉव का देश है और इस प्रकार क्रय शक्ति का विकाश गॉव से होना चाहिए और क्रय शक्ति के अनुपात में उद्योगों का आकार बढाना चाहिए अन्यथा देश ओद्योगिक मंदी का शिकार होता है और भारतीय अर्थ व्यवस्था इसका ज्वलंत उदाहरण है, जिसमें भारी उद्योगों को प्राथमिकता दी गयी।

''आचार्य विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन'' शोध पत्र की लेखिका डॉ. हेमलता जोशी, सहायक आचार्य, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राज.) ने अवगत कराया कि भारत देश प्राचीन काल से ही अध्यात्म योग की स्थली रहा है। इसमें अनेकानेक ऋशि–मुनि, संत, परिव्राजक, महापुरुश, समाज सुधारक हुए हैं जिन्होंने अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर मानव पीढ़ी को सदैव सत्य की ओर प्रेरित किया, सद्मार्ग की ओर प्रेरित किया। इतना ही नहीं इस हेतु पुरुशार्थ किया। इसी का परिणाम है कि प्राचीन काल से लेकर वर्तमान की यात्रा में कई उतार–चढ़ावों के बाद भी ज्ञान विकास की यह गंगा अविरल बह रही है जिससे ज्ञान पिपासु लाभान्वित हो रहे हैं। सत्य उद्घाटन की, ज्ञान विकास की इस परंपरा में कई नाम महत्त्वपूर्ण हैं जिनमें आचार्य बिनोबा का नाम एक है जिन्होंने मानव हित के अनेक आयामों को स्पर्श किया। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि औश्र पैनी दृश्टि से समाज की समस्याओं के समाधान में अपना योगदान दिया जो मानव पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन का कार्य अकरता रहेगा। इसके पीछे उनका दर्शन, उनका ज्ञान, उनका अनुभव, उनकी संवेदना है जो आत्मकल्याण के साथ परकल्याण की भावना से भरा है। इसीलिए वर्तमान आचार्यों में उनका नाम सम्मान ले लिया जाता है। शिक्षा जो कि ज्ञान विकास का सशक्त माध्यम है, उस पर उन्होंने अपने गहन चिंतन–मंथन से जो नवनीत

निकाला है, उसे यदि सुविधानुसार नहीं अपितु आवश्यकतानुसार शिक्षा में स्थान मिले तो उसमें युगीन समस्याओं का समाधान होने का सामर्थ्य निहित है। है। प्रस्तुत शोध पत्र में आचार्य विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन देने में विनम्र प्रयास किया गया है जो सुध्सी पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकेगा, ऐसा विश्वास है।

आचार्य विनोबा भावे का महाराश्ट्र महाराश्ट्र के एक ब्राह्मण परिवार से थे। जीवन की आवश्यक शिक्षा इन्हें अपने माता–पिता से मिली। पिता से इन्हें वैज्ञानिक संस्कार मिले तो माता से अध्यात्म आदि की शिक्षा मिली। उनके जीवन में प्रारंभ से ही प्राकृतिक सौंदर्य तथा घरेलू वातावरण का प्रभाव था। उनके जीवन पर गुरु रामदास और आदि शकराचार्य के आदर्शों का भ्झी गहरा प्रभाव था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा बड़ौदा में हुई। विद्यार्थी जीवन के सभी गुण उनमें निहित थे। इंटरमीडिएट की परीक्षा देने से पहले परीक्षा देने के संबंध में उनका विचार बदल गया। उन्होंने दृढ़ निश्चय किया। और आध्यात्मिक चिंतन में अपना जीवन जीएंगे।[1] तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था से वे संतुश्ट नहीं थे। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मूल्यों में रहकर समाज की सेवा में समर्पित किया। शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन हेतु अपने उर्वर मस्तिश्क से अनेकानेक समाधान दिए जो वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने में भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

शिक्षा का स्वरूप– आचार्य विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन विद्यार्थी के सर्वागींण व्यक्तित्व विकास पर केन्द्रित है। अतः शिक्षा दर्शन में आंतरिक जगत और भैतिक जगत दोनों को समाहित करते हुए शिक्षण की व्यवस्था की है। कहने का तात्पर्य है कि आंतरिक विकास के साथ व्यावहारिक जगत से जुड़ी समस्याओं का समाधान भी शिक्षा में निहित है। उनका कहना है कि शिक्षा से यह अपेक्षा की जाती है कि उससे समग्र विकास की सामग्री मिले।[2] शिक्षण द्वारा हमें मानव का पूर्ण विकास अपेक्षित है। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों का पूर्ण विकास होना चाहिए।[3] जीवन से जुड़ी शिक्षा को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। जीवन को गौण करके शिक्षा देना अपूर्ण है। विद्यार्थी का आंतरिक परिवर्तन होना चाहिए तभी बाह्य परिस्थितियों के साथ ही वह सामंजस्य रख सकेगा। जीवनोपयोगी ज्ञान किसी विद्यालय में हासिल हो सकता है, गलत है। जीवन के लिए उपयोगी ज्ञान तो जीवन से ही हासिल होता है। उस ज्ञान को हासिल कराने की शक्ति जाग्रत करना विद्यालयों का काम है।[4] उनका यह भी मानना है कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। अतः आजीवन सत्य की खोज करती रहनी चाहिए। ज्ञान पाए हुए व्यक्ति को इस बात का पता रहता है कि ज्ञान कितना अनंत है और उसका कितना थोड़ा अंश मिला है। इसलिए सच्चा ज्ञानी जितना विद्या संपन्न और विनय संपन्न होगा, विद्या न पाने वाला कभी उतना नहीं हो सकता है। कारण उसे विद्या का नाप मिला नहीं है। जिसे विद्या के समुद्र का दर्शन कर लिया, उसके ध्यान में यह बात जरूर आ जाएगी कि विद्या का कहीं पार या अंत नहीं है और मुझे जो ज्ञान मिला है, वह उसका अंशमात्र है। इसी लिए मुझे आजीवन ज्ञान की खोज करते रहना चाहिए।[5] इससे स्पश्ट होता है कि आचार्य विनोबा जी का शिक्षा दर्शन यथार्थ को जानने का, उस तक पहुंचने का दर्शन है। यह कोरी कल्पना नहीं अपितु संभव है। यह संभव तब है जब शिक्षा व्यवस्था समुचित हो।

शिक्षा का अर्थ– शिक्षा का सामान्य अर्थ है सीखना, सिखाना, भीतर से बाहर की ओर लाना आदि। इसका तात्पर्य है कि शिक्षा आंतरिक क्षमताओं के, शक्तियों के प्रगटीकरण का माध्यम है। आचार्य विनोबा जी ने भी शिक्षा को इसी संदर्भ में माना है क्योंकि इनका संबंध जीवन से है। उन्होंने जीवन और शिक्षा को एक दूसरे के पूरक माना है। जीवन के बिना शिक्षा निश्प्राण है और शिक्षा के बिना जीवन निश्फल है। जीवन और शिक्षा दोनों एकरूप है। उन्हें अलग कर देने से कोई काम नहीं बनेगा। उनका कहना है कि शरीर के हर अवयव की पूर्ण और व्यवस्थित वृद्धि होना, इंद्रियों का कार्य कुशल बनना, विभिन्न मनोवृत्तियों का सर्वांगीण विकास होना, बौद्धिक शक्तियों का प्रगल्भ और प्रखर बनना–इन नैसर्गिक या प्राकृतिक प्रवृत्तियों का विकास ही शिक्षा है। अर्थात् जीवन प्राप्त कर लेने की कला ही शिक्षा है।[6] यह सत्य है कि जीवन के बिना शिक्षा अधूरी है। जीवन से जुड़ी शिक्षा ही सर्वांगीण विकास में सहायक बनती है। जब तक शरीर, मन, भाव, बुद्धि, इंद्रियां आदि स्वस्थ नहीं होंगे, प्रशिक्षित नहीं होंगे तब तक व्यवहार भी स्वस्थ नहीं हो सकेगा। अतः शिक्षा के द्वारा सर्वांगीण विकास आवश्यक है।

विद्या, अविद्या और आत्मज्ञान– ज्ञान विकास में के क्षेत्र में विद्या का अपना विशेष स्थान तो है ही परंतु अविद्या का भी अपना स्थान है। इसके अतिरिक्त है आत्मज्ञान जो परम साम्य है, दोनों से परे है। इसका अर्थ है कि जो ज्ञान मानव हित में उपयोगी बने वह हितकर है और जो अहितकर बने उसकी अविद्या अर्थात् अज्ञानता भी आवश्यक है। आत्मज्ञान हो जाने पर सारा भेद मिट जाता है। सदैव इसी संदर्भ में विनोबा जी का कहना है कि मनुश्य के लिए विद्या और अविद्या दोनों आवश्यक हैं। दुनिया में हजारों प्रकार के शास्त्र और हजारों प्रकार का ज्ञान है। उन सबकी प्राप्ति आवश्यक नहीं है। जिस ज्ञान की धर्माचरण में कोई आवश्यकता नहीं है, जिससे बुद्धि भेद होता है उस ज्ञान का चित्त पर बोझ नहीं डालना चाहिए। उसकी अविद्या ही रहने दी जाए। इस तरह अविद्या और विद्या दोनों चाहिए। तीसरा है आत्मज्ञान, जो परम साम्य है।[7] यह सत्य है कि आत्मज्ञान हो जाने पर सारे भ्रम टूट जाते हैं। फिर तो वास्तविक सत्य से ही परिचय होता है। तब सारे मनोविकार, सारे कशाय क्षीण हो जाते हैं। करणीय–अकरणीय में स्पश्ट भेदरेखा खिंच जाती है। अतः शिक्षा के द्वारा आत्मज्ञान भी आवश्यक है।

श्री कैलाश, शोध छात्र, इतिहास विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर, ऊधम सिंह नगर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल (उत्तराखण्ड) ने अपने शोध पत्र जिसका शीर्षक **आचार्य विनोबा भावे के 'सर्वोदय' विचारों की वर्तमान प्रासंगिक्ताः** में बताया कि ''गांधी जी के सच्चे अनुयायी एवं सत्य, अहिंसा, सर्वोदय, और भूदान आन्दोलन के प्रर्वतक एवं महान स्वतंत्रता सेनानी, आचार्य विनोबा भावे का जन्म, 11 सितम्बर, 1895 ई0 को महाराश्ट्र के गगोड़े नामक ग्राम में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनका मूल नाम विनायक नरहरि भावे था। भावे के पिता नरहरी शम्भू एक अच्छे बुनकर और उनकी माता रुकमणी देवी एक धार्मिक प्रवृति की महिला थी। विनोबा को अध्यात्मिक संस्कार देने, उन्हे भक्ति वेदांत की ओर ले जाने में, बचपन में उनके मन में सन्यास और वैराग्य की प्रेरणा जगाने में उनकी मॉ रूकमणी का बड़ा योगदान था। भावे जी को माता–पिता दोनों के संस्कार मिले थे। गणित, तर्क, विज्ञान के प्रति गहन अनुराग, परम्परा के प्रति वैज्ञानिक दृश्टिकोण और तमाम तरह के पूर्वाग्रहों से अलग हटकर सोचने

की कला उन्हें पिता की ओर से प्राप्त हुई, जबकि माता की ओर से धर्म और संस्कृति के प्रति गहन अनुराग, प्राणी मात्र के कल्याण की भावना, जीवन के प्रति सकारात्मक दृश्टिकोण, सर्वधर्म सवभाव, सहअस्तित्व की भावना माता के संस्कारो से प्राप्त हुई। आगे चलकर विनोबा को गांधी जी के विचारों ने प्रभावित किया।

जिस कारण भावे जी ने गांधी जी को अपना आध्यात्मिक गुरु मानना स्वीकार किया, और जीवन भर गांधी जी के करकमलों पर चलने का प्रयास किया। इसी कारण आगे चलकर विनोबा को गांधी जी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी माना गया। आज भी कुछ लोग यही कहते है। लेकिन यह विनोबा के चरित्र का एकतरफा विश्लेशण होगा, क्योंकि विनोबा जी तो गांधी जी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी से बहुत आगे स्वतन्त्र सोच के प्राणी थे। मुख्य बात यह है, कि गांधी जी के आगे विनोबा जी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन हो ही नहीं पाया। आजादी से पहले भारत में रंगो का आयात होता था, लेकिन भावे जी को यह बात अच्छी नहीं लगती थी, इसी करण भावे जी कई दिनों तक रंगो की खोज में लगे रहते थे। उनका मकसद भारत को आत्म निर्भर बनाना था। जब विनोबा जी 12वीं की परीक्षा दे रहे थे, उस समय गांधी जी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में जन आन्दोलन को प्रेरित कर रहे थे।

इसी समय विनोबा जी ने गांधी जी के बनारस विश्वविद्यालय में दिये गये भाशण को पढा, और इतने प्रभावित हुए की गांधी जी को एक पत्र लिख डाला। गांधी जी ने भावे जी को जवाबी पत्र भेजकर उन्हें अहमदाबाद मिलने के लिए बुलाया। गांधी जी से विनोबा जी की पहली मुलाकात 7 जून 1916 को अहमदाबाद में हुई, इस मुलाकात का भावे जी पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपनी आगे की पढाई छोड़ दी। और गांधी जी के साथ 1916 से 1948 तक देश की आजादी के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन भारत माता की सेवा और मानवता के उत्थान के लिए न्यौछावर कर दिया।

डा0 ललिता त्यागी, राजनीति विभाग व **डा0 अनिल गुप्ता** अर्थशास्त्र ने संयुक्त रूप से शोध पत्र **आचार्य विनोबा भावे सर्वोदय समाज के विचारों में** की प्रस्तुतिकरण किया जिसमें उन्होंने कहा कि यदि विनोबा के विचारों का सही रूप से विश्लेषण करें तो विनोबा ने अपने विचारों में कहा है कि समाजवाद का वास्तविक अर्थ "सर्वोदय समाजवाद की कल्पना करते है जो न तो मार्क्सवाद से मिलता है ना ही संघवाद से। उनका तो सिर्फ ये कहना था कि सर्वोदय समाज एक सच्चे समाजवाद का रूप होना चाहिए, जिसके पीछे मानव की सर्वोच्च भावनायें हो।

गॉधीवादी समाज बनाम सर्वोदय अवधारणात्मक पक्ष –

विनोबा का सम्पूर्ण समाजवादी दर्शन इनके सर्वोदय में निहित है। सर्वोदय में निहित है। सर्वोदय विचारों को आगे बढ़ाने वाले सन्त विनोबा भावे ने कहा कि सर्वोदय समाज की अवधारणा अनेक समस्याओं का समाधान है। उन्होने अपने विचारोंमें कहा है कि जब लोग मुझसे सर्वोदय समाज के संगठन के स्वरूप के बारे में पूछते है तो मै उन्हें बतलाता हूँ, सर्वोदय एक क्रान्तिकारी विचार है न कि एक संगठन है और आगे सर्वोदय समाज के अर्थ और निहितार्थ को स्पष्ट करते हुए विनोबा ने कहा है कि दूसरों की

आवश्यकताओं का ध्यान रखों और अपनी आवश्यकताओं को इस ढंग से पूरा ना करो जिससे अन्य व्यक्तियों का जीवन कष्ट में हो। विनोबा ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते है जो प्रेम तथा सत्य पर

लोकेन्द्र कुमार, शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, एस0डी0 (पी0जी0) कॉलेज, मुजफ्फरनगर अपने शोध पत्र '**आचार्य विनोबा भावे का भूदान आन्दोलन'** में बताया कि आचार्य विनोबा भावे का भूदान आन्दोलन सर्वाधिक महत्वपूर्ण आन्दोलन रहा है। भूदान आन्दोलन की उत्पत्ति गाँधी जी के ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त में प्राप्त होती है क्योंकि गाँधी जी कहते हैं कि ''सच्चा समाजवाद तो हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ है। जिन्होंने हमें सिखाया हैं कि सर्वेभूमि गोपाल की' इसमें कही भी मेरी और तेरी की सीमायें उत्पन्न नहीं होती हैं। ये सभी सीमायें तो स्वयं मनुष्य ने ही उत्पन्न की हैं। इसलिए इन सीमाओं को तोड़ा भी जा सकता है। आचार्य विनोबा भावे ने भूदान आन्दोलन के द्वारा भूमि के समान वितरण की समस्या का अहिंसक समाधान ढूढ़ निकाला है। इसका पूर्णतः प्रभाव आन्ध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र के नलगुड़ा जिले के पोचमपल्ली ग्राम में हुआ। 1951 में इसी क्षेत्र में भूमि वितरण की समस्या को लेकर हिंसात्मक संघर्ष चल रहा था इस संघर्ष को शान्त करने के लिए विनोबा भावे जी ने इस क्षेत्र में पद–यात्रा की। ये हरिजनों की बस्ती को देखने के लिए वहा पर गये। भूमिहीन हरिजनों ने विनोबा जी से अपने भरण–पोषण के लिए 80 एकड़ भूमि की मांग रखी। और विनोबा जी ने इनकी मांगों को रखने के लिए हरिजनों से एक आवेदन पत्र मांगा। उन्होंने सोचा कि सरकार से भूमिहीन कृषकों के लिए जमीन दिलाने की चेष्टा करेंगे। पर उन्होंने व्यक्तियों से यह भी कहा कि यदि सरकार से जमीन न मिले या मिलने में देरी हो जायें तो क्या कोई ग्राम का सज्जन व्यक्ति गरीबों के लिए कुछ जमीन देगा। इन सभी ग्रामीणों में से एक भाई श्री रामचन्द्र रेड्डी ने कहा कि वह अपनी 100 एकड़ भूमि गरीब भाईयों को देने के लिए तैयार है। अतः कम्यूनिस्टों के आंतकक्षेत्र तेलंगाना के गाँव की इस अनोखी घटना को विनोबा जी ने ईश्वरीय संकेत माना। और इसे भूदान की संज्ञा दी। विनोबा जी ने दान शब्द में त्याग के महत्व को स्वीकार किया। इसलिए सम्यक विभाजन और समान वितरण के रूप में इसको प्रयुक्त किया। विनोबा जी ने कहा है कि ईश्वर ने पृथ्वी, जल, तेजवायु, तथा आकाश जैसे पंचभूतों का निर्माण सभी प्राणियों के लिए किया गया है। अतः विनोबा जी पोचमपल्ली ग्राम की इस घटना के बारे में रात भर सोचते रहे जहाँ पर व्यक्ति तीन कट्ठा जमीन के लिए ही झगड़ा करता है, वहा पर 100 एकड़ जमीन प्राप्त हो गई। अतः विनोबा जी ने सोचा कि भूमिहीन किसानों के लिए कितनी भूमि की आवश्यकता है। उनको विचार आया कि लगभग 5 करोड़ एकड़ भूमि की आवश्यकता है तथा यह विचार उनके मन को विचलित कर रहा था कि उनके पास तो मात्र 100 एकड़ ही जमीन है। इतनी जमीन कैसे लायी जायेगी। इसके लिए विनोबा जी ने अकेले ही कोशिश करने का निश्चय किया और अगले दिन वे दूसरे ग्राम पहुँच गये वहाँ पर उन्होंने जलपान किया और ग्रामवासियों से मिलकर कहा कि यदि आपके चार पुत्र है तो मैं आपका पांचवा पुत्र हूँ तो मुझे आप पंचमांश दीजिए। ग्रामवासियों ने 25 एकड़ भूमि दान में दें दी। तेलंगाना में उन्होंने दो महीने में 12 हजार एकड़ जमीन दान में प्राप्त की। अतः विनोबा भावे जी ने तेलंगाना से भिन्न स्थिति वाले क्षेत्र में जहाँ किसी भी प्रकार के हिंसात्मक आन्दोलन नहीं

चल रहे थे वहाँ पर भूदान आन्दोलन चलाने का निश्चय किया। अतः भूदान का संदेश फैलाते हुए विनोबा जी और उनके साथ कार्यकर्ताओं की पदयात्राओं ने सम्पूर्ण देश में उत्साह तथा आशा का संचार पैदा कर दिया। विनोबा भावे का यह संदेश था कि ''भूदान आन्दोलन अहिंसा का प्रयोग हैं। जीवन परिवर्तन का प्रयोग हैं। मैं तो निमित्त मात्र हूँ, आप भी निमित्त है, परमेश्वर आप लोगों से और मुझसे कार्य कराने का ईच्छुक है, इसलिए मांग कर रहा हूँ। अतः आप लोग दीजिए और दिल खोलकर दीजिए। अतः भूदान आन्दोलन गरीब और अमीर दोनों ने मिलकर प्रारम्भ किया। विनोबा जी के भूदान कार्यक्रम की सभी ने प्रशंसा की। भूदान भूमि वितरण का एक प्रभावशाली कदम है। अतः यह लोगों पर अपना प्रभाव डालता हैं। सभी व्यक्ति वितरण को मन से स्वीकार करें। अतः भूदान आन्दोलन समाज में मालिक और मजदूर दोनों के भेदभाव को समाप्त करने का एक प्रभावशाली कदम है।

''आचार्य विनोबा भावे के दर्शन की शैक्षणिक एवं आर्थिक प्रासंगिकता का अध्ययन'' शोध पत्र के लेखक महेश कुमार, शोधार्थी, इतिहास विभाग एवं डॉ हरीश कुमार, शोध निर्देशक, इतिहास विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ने शोध में उल्लेख किया कि विनोबा भावे ने अपने दार्शनिक विचारों में अहिंसा का अपना आदर्श बनाया। इनका मानना था कि अहिंसा के रास्ते पर चलकर ही आधुनिक भारत का निर्माण संभव है। विनोबा भावे अपने आप को समाजवादी कहते हैं फिर भी राजविहीन समाज की संकल्पना प्रस्तुत करते हैं। जबकि समाजवाद में राज्य ही सब कुछ होता है। परन्तु विनोबा भावे के अनुसार उत्पादन पर सामुहिक नियंत्रण ही समाजवाद है। विनोबा भावे व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकारों का समर्थन करते हैं और दूसरी ओर आर्थिक समानता भी चाहते हैं। लेकिन इनके आलोचक कहते है कि लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विचारों का उपयोग करेंगे तो समाज में अपनी योग्यता के अनुसार दर्जा प्राप्त करेंगे। और जब सामाजिक समानता ही नहीं होगी तो आर्थिक समानता कैसे प्राप्त की जा सकती है। विनोबा भावे कहते हैं कि लोगों के नैतिक विकास से यह संभव है।

अहिंसा और सदभावना को अपने जीवन का मूल मानने वाले आचार्य विनोबा भावे का जन्म 1895 ई0 को नासिक के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनकी माता का झूकाव अध्यात्म और चिंतन की ओर था जिसका प्रभाव आचार्य विनोबा भावे पर पडा। विनोबा भावे को महात्मा गांधी का उत्तराधिकारी माना जाता है क्योंकि विनोबा भावे महात्मा गांधी की विचारधारा से प्राभावित थे। विनोबा भावे का वास्तविक नाम नरहरि भावे था। महात्मा गांधी के सम्पर्क में आने पर इन्होंने रामायण, महाभारत भगवतगीता का अध्यन कर लिया था। माना जाता है कि जब वह दसवीं की परीक्षा देने के लिए मुम्बई जा रहे थे तो इन्होंने महात्मा गांधी का एक लेख पढ़कर अपने समस्त कागजातों में आग लगा दी थी।

विनोबा भावे भारी उद्योगो का विरोध नहीं करते हैं परन्तु उनका मानना है कि भारी उद्योगों से पहले स्वदेशी को अपनाना चाहिए। विनोबा भावे कहते हैं, भारत में ग्रामीण उद्योगों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। क्योंकि भारत एक गॉव का देश है और

इस प्रकार क्रय शक्ति का विकाश गॉव से होना चाहिए और क्रय शक्ति के अनुपात में उद्योगों का आकार बढाना चाहिए अन्यथा देश ओद्योगिक मंदी का शिकार होता है और भारतीय अर्थ व्यवस्था इसका ज्वलंत उदाहरण है, जिसमें भारी उद्योगों को प्राथमिकता दी गयी।

डॉ. निभा राठी, असिस्टैंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, सतीकुण्ड, हरिद्वार ने अपने शोध पत्र **विनोबा भावे के सर्वोदय व भूदान आन्दोलन की वर्तमान समय में असमानता के सन्दर्भ में प्रासंगिकता व उपयोगिता** बताया कि सर्वोदय की विचारधारा को समाज के समक्ष लाने का श्रेय महात्मा गांधी को दिया जाता है। महात्मा गांधी के प्रधान शिष्य होने के कारण श्री विनोबा भवे उनके साम्यवाद के विचार के प्रबल समर्थक हैं। विनोबा भावे के सर्वोदय के विचार यद्यपि गांधी जी के विचारों के अनुसार ही हैं फिर भी उनक बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने गांधीजी के सर्वोदय के सिद्धान्तों को उनके देहावसान के बाद स्वतन्त्र भारत की नवीन परिस्थितियों में लागू करने का प्रयास किया है और कुछ अंशों में अपना नवीन योगदान भी दिया है।

सर्वोदय की योजना से सम्पन्धित भूदान आन्दोलन ने सर्वोदय को वास्तविक स्वरूप में लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इन दोनों योजना के माध्यम से समाज में असमानता को समाप्त करने का प्रयास किया गया। असमानता मुख्यतया आर्थिक प्रारूप में समाज में पुरातन समय से ही विद्यमान रही है जिसके काण सामाजिक स्वरूप में भी असमानता समाज में स्थापित हुई। इसी कारण सामाजिक असमानता को दूर करने से पूर्व आर्थिक असमानता को दूर किया जाना नितान्त आवश्यक था। विनोबा भावे के सर्वोदय व भूदान आन्दोलन ने इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहान किया है।

अगर वर्तमान परिदृश्य की चचार्ज्ञ की जाये तो समाज में आज भी असमानता का सबसे भयावह व विद्रूप प्रारूप विद्यमान है। आज हम सामाजिक समानता के उस दूषित स्वरूप से जो प्राचीन काल में विद्यमान था, के सदृश ही आर्थिक असमानता के सबसे भयावह स्वरूप का सामना कर रहे हैं, इसी कारण विनोबा भावे के सर्वोदय व भूदान आन्दोलन की प्रासंगिकता व उपयोगिता पर विचार विमर्श करने का समय आज आ गया है क्योंकि यह विमर्श समय की आवश्यकता है, इसी कारण इस विषय पर शोध पत्र लिखने की आवश्यकता महसूस की गई। प्रस्तुत शोधपत्र में अग्रलिखित उद्देश्यों पर प्रकाश डाला जाएगा।

पल्लवी नन्दी, शोधार्थी रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर ने अपने शोध पत्र **विनोबा भावेजी का राजनीतिक चिंतन** में बताया कि विनोबा भावेजी का राजनीतिक चिंतन मानवतावाद पर आधारित है। जिसमे नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का सर्वोच्च स्थान है। इन्होनें पश्चिम की सत्तात्मक राजनीति को दोषपूर्ण बतलाकर अहिंसा धर्म और आध्यात्मिकता के आधार पर राज्य और राजनीति की नवीन कल्पना की है। भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ एवं उदात्त आदर्शो के प्रति समर्पित उनके चिंतन में प्रेम,अहिसां,स्वतंत्रता,समानता एवं न्याय को राजनीतिक जीवन में प्रस्थापित करने का

सम्पूर्ण आग्रह है।उनका राजनीतिक चिंतन गांधी जी द्वारा अनुप्राणित सर्वोदय दर्शन का ही विकसित रूप है,जिसमें गांधीवादी मूल्यों की गहरी पैठ है। विनोबाजी ने अहिंसक राजनीतिक व्यवस्था के विचारो को अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थ,स्वराज्य शास्त्र, में प्रस्तुत किया है। एक सैद्धान्तिक व्याख्याकार के रूप में राजनीति, राज्यपद्धति, सर्वोदय (साम्ययोग) लोकतंत्र ग्रामस्वाराज्य लोकनीति एवं लोकशक्ति आदि की इन्होनें जो व्याख्या प्रस्तुत की वह शास्त्रीय एवं तार्किक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। विनोबाजी ने राजनीति की जगह लोकनीति का विचार दिया जो दलगत सत्तात्मक राजनीति के विकल्प के रूप में विनोबा के चिंतन में आती है। वर्तमान शासन की दण्डशक्ति को हिंसाधारित मानते हुये लोकशक्ति का सर्मथन किया जो नागरिको की अहिंसक स्वावलम्बी शक्ति का सूचक है। ग्रामस्वराज्य के रूप में विनोबाजी ने स्थानीय शासन को राजनीति विकेन्द्रीकरण की योजना के अन्तर्गत पुनर्जीवित किया। राज्य के बदले उन्होनें स्वराज्य का विचार दिया जो व्यक्ति के आत्मशासन की अवस्था है। विनोबाजी का राजनीतिक आदर्श शासनमुक्त, विकेन्द्रित ग्रामाधारित अहिंसक समाज व्यवस्था का निमार्ण है। सर्वोदय के लिये शासनमुक्ति अनिवार्य है यह संकल्प उनके राजनीतिक विचारों से स्पष्ट परिलक्षित होता है। क्योंकि उनके चिंतन में राज्य के बदले प्राज्य, शासित के बदले स्वाशासित, हिंसक के बदले अहिंसक शासनमुक्त समाज का आदर्श है। आज के वैज्ञानिक युग में उन्होने संकीर्ण व स्वार्थपूर्ण राजनीति की जगह अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय से पूर्ण सर्वोदय दर्शन की पूर्ण प्रतिष्ठा पर जोर दिया। इस प्रकार विनोबाजी का मत है कि व्यक्ति की समूह में रहने की प्रवृत्ति ओर प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की भौतिक आवश्यकता के साथ–साथ सामाजिक जीवन में पारस्परिक सम्बन्धो की सुव्यवस्था एवं जीवकोपार्जन के साधन प्राप्त करने की लालसा राजनीति अथवा राजनीति संगठन के विचार को जन्म देती है।[1]विनोबाजी के अनुसार प्राचीन काल में महत्वपूर्ण बात यह भी थी कि राज्यो में ऋषियों का अनुशासन था।[2] अर्थात राज्यकार्यो में राजा ऋषियों की सलाह से कार्य करते थे। राज्य के कार्य सीमित थे वह केवल संघर्ष और संकटो को दूर करने में मदद करती थी। लोक जीवन स्वातंत्र था। "व्यपारी, किसान,उत्पादक,और अन्य धंधे में संलग्न लोग स्वेच्छा से कार्य करते थें।राज्य का निजी कार्यो में कोई हस्तक्षेप नहीं था।"[3]विनोबाजी के अनुसार "राज्य अपनी नाभिकीय शक्ति के कारण वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व के विनाश की क्षमता रखते हैं।" यह राज्य की हिंसा की ओर बढ़ती प्रवृत्ति है। उनके मत में "आधुनिक राज्यो की हिंसा शक्ति को सीमित करना, रोकना या अनुशासित करने की आशा रखना एक तरह का भ्रम है। इस सन्दर्भ में मानवता को बचाने का सबसे महत्वपूर्ण विकल्प यही होगा की हम ऐसे समाज के निर्माण का प्रयास करें जहाँ पर राज्य की बाध्यकारी शक्ति का सर्वथा अभाव हो।"[4] राज्य के हमारे आन्तरिक व बाह्य जीवन में पूर्ण एकाधिकार कर लिया है, अतएव दण्ड मुक्त शासनमुक्त सामाज के निमार्ण के लिये राज्य की समाप्ति अनिवार्य है। विनोबाजी ने कहा "हम राज्य नहीं स्वराज्य चाहते है। "स्वराज्य हर एक का अपना राज्य।"[5] उनके मत में "राज्य या सरकार हिंसापूर्ण होती है जबकि स्वराज्य की स्थापना अहिंसा के बिना असंभव है। अतएव हमें राज्य की इच्छा करनी चाहिए।"[6]विनोबाजी राज्यशक्ति और राज्यसत्ता के स्थान पर लोकशक्ति और लोकसत्ता चलाना चाहते है। लोकशक्ति की हिंसाशक्ति,और 'दण्डशक्ति' से भिन्न स्वतंत्र जनशक्ति

है। विनोबाजी राज्य की पूर्ण सार्वभौमिकता का निषेध करते है और व्यवहारिक रूप से संप्रभुता का वितरण जनजीवन में करने का सर्मथन करतें है। विनोबाजी के अनुसार राज्य अपनी बाध्यकारी शक्ति का प्रयोग पुलिस, न्यायालयों और बहुमत के शासन के आधार पर करता है अतः "सर्वोदय के अंतिम आदर्श में हम शासन मुक्त समाज की कल्पना करते है।"[7]विनोबाजी काआदर्श एक अहिंसक एवं विकेन्द्रित शासन व्यवस्था के स्थापना के निर्माण का है। जहॉ व्यक्ति दमन और शोषण से पूर्णतया मुक्त होगा। विनोबाजी ने शास्त्रीय ढंग से सम्पूर्ण शासन पद्धतियों का वर्गीकरण और विशलेषण प्रस्तुत किया। साथ ही उनके गुण–दोषो पर भी प्रकाश डाला है। सामान्य दृष्टि से उन्होने शासन पद्धतियों के तीन भाग किये है –"एकायतन,अनेकायतन,सर्वायतन।"[8]"एकायतन शासन पद्धति में समर्थ व्यक्ति सभी के लिए व्यवस्था करता है। अनेकायतन पद्धति में अनेक समर्थ व्यक्ति मिलकर सभी के लिए व्यवस्था करतें है और सर्वायतन पद्धति में सब मिलकर समान उत्तरदायित्व के साथ अपनी व्यवस्था करतें है।"[9] उनके अनुसार "एकायतन पद्धति अर्थात एक व्यक्ति का शासन प्रारंभ से चला आ रहा है। भारतीय रियासतों एवं अन्य राज्य तंत्रों से इसी प्रकार का शासन रहा है अनेकायतन के दो रूप है– अल्प संख्यातन, बहुसंख्यातन। नाजी, फासिस्ट और सम्राज्यवाद , अल्पसंख्यातन के उदाहरण है। बहुसंख्यातन का उदाहरण रूसी साम्राज्यवादहै। सर्वायतन का दावा प्रचलित प्रजातंत्र में किया जाता है, जो वास्तव में नहीं है।"[10]

डॉ. पंकज अग्रवाल, funs"kd] fo|k efUnj इन्स्टीटयूट, मोदीनगर ने अपने षोध पत्र **मानवता के प्रबल समर्थक : विनोबाजी** में बताया कि ''euq"; funZयी होता है, परन्तु मानव दयालु होता है'' विष्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर का यह कथन एक सारगर्भित विरोधाभास की अभिव्यक्ति करता है। मानव, मनुष्य होता है,परन्तु प्रत्येक मनुष्य, मानव नहीं होता। मानव एक विकसित पषु है जिसकी पाषविक वृत्तियाँ बलवती रहती है। पषुत्व की सीढ़ी पर चढ़कर ही जीव मनुष्य का अभिधान प्राप्त करता है और जब वह पाषविक वृत्तियों पर विजय प्राप्त कर लेता है अथवा जब उसकी पाषविकता कुंठित हो जाती है, तब वह पषुपति होकर षिवत्व को प्राप्त होता है। मनुष्य का षिव रूप ही वस्तुतः मानव है। मनुष्य जब षिव के समान विष्व के हलाहल का पान करके अमृत की वर्षा करने लगता है, तब वह मानव कहे जाने का अधिकारी बन जाता है। समस्त आदर्ष एवं अवतारी पुरुष सच्चे मानव ही तो थे। डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने ठीक ही कहा है कि ''मनुष्य का दानव होना उसकी हार है, महामानव होना चमत्कार है और मानव होना उसकी विजय है'' मानवता की प्राप्ति मनुष्य जीवन की समस्त उपलब्धियों की चरम परिणति है जो केवल भगवत कृपा से ही प्राप्त होती है स्वार्थ–सिद्धि मे परम सामर्थ्य को प्राप्त करके मनुष्य के लिए देवता बन जाना आसान है परन्तु अपने जीवन को परमार्थमय बना देना यदि असम्भव नही है तो दुष्कर अवष्य है

बस कि दुष्वार है हर काम का आसां होना।

आदमी को भी मुअस्सर नही इन्सां होना।।

मीर साहब ने तो यहाँ तक कह दिया है कि आदमी के लिए फरिष्ता हो जाना आसान है, मगर 'इन्सान' होना बहुत दुष्वार है।

मनुष्यता की पहचान वास्तव में सम्बन्ध–भावना है। प्रायः प्रत्येक जागरूक एवं प्रबुद्ध व्यक्ति जानता है कि विष्व के कण–कण में जीवन का स्पन्दन है और वह चेतना द्वारा अनुप्राणित है। परन्तु विष्व के प्रत्येक कण के साथ सम्बन्ध–निर्वाह की अनुभूति बिरलों को ही होती है। जिनका हृदय इतना विकसित एवं उदार होता है कि उसमें विष्व का प्रत्येक कण स्थान पा सकता है, वही मनुष्य विष्वात्मा के साथ एकात्म की अनुभूति प्राप्त करके मानव कहे जाने का अधिकारी होता है।

''मानवता प्रकाश की वह नदी है, जो ससीम से असीम की ओर, शान्त से अनन्त की ओर बहती है'' खलील जिब्रान के इस कथन का तात्पर्य वही समझ सकता है, जिसने विष्व के सुख दुख को अपना सुख–दुख बना लिया है। वैयक्तिक पीड़ा जब समष्टिगत वेदना की भाव–भूमि पर पहुँच जाती है, तब वह 'मानवतावाद' का रूप धारण कर लेती है। यह वस्तुतः आत्मनिष्ठता का उन्नयन एवं उदात्तीकरण है पुराण प्रसिद्ध रंतदेव का यह कथन एक सच्चे मानव की विष्व–वेदना की अनुभूति का उच्चार है

डा0 प्रकाश चन्द्र, अतिथि सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, एम.बी.राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी जिला नैनीताल (उत्तराखण्ड) ने अपने शोध पत्र **आचार्य विनोबा भावे का दर्शन एवं सर्वोदय** में बताया कि सर्वोदय शब्द का प्रयोग गाँधी जी ने सबसे पहले रस्किन की पुस्तक "Unto this last" के हिन्दी रूपान्तर के शीर्षक के लिए किया था जिसने कि उनके जीवन पर गहरा प्रभाव डाला था। यह शीर्षक अत्यन्त सारगर्भित है। यह गाँधीवाद को एक विशिष्ट श्रेणी में रखता है। सर्वोदय का अर्थ सब का उदय, अर्थात् उत्थान और कल्याण।

विनोबा भावे के शब्दों में "कुछ का या बहुतों का या अधिकतम का उत्थान नही चाहता। हम अधिकतम के अधिकतम सुख से संतुष्ट नहीं हैं। हम तो केवल एक ही और सभी की, ऊँचे और नीचे, सबल व निर्बल की, बुद्धिमान व बुद्धिहीन की भलाई से ही संतुष्ट हो सकते हैं, केवल तभी हम सन्तुष्ट हो सकते हैं। सर्वोदय शब्द इस उत्कृष्ठ और सर्वव्यापक भावना को अभिव्यक्त करता है।"

सर्वोदय – विनोबा भावे जी का विचार था कि आज के संसार में प्रत्येक व्यक्ति को उत्थान की आवश्यकता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का पतन हो चुका है। धनिकों का पतन बहुत पहले हो चुका है और निर्धनों का उत्थान नहीं हुआ है। दोनों को उत्थान की आवश्यकता है। इस दृष्टि से सर्वोदय मार्क्सवाद तथा अन्य प्रकार के समाजवाद से श्रेष्ठ है। इसे समाजवाद का सर्वोत्तम तथा उत्कृष्टतम रूप माना जा सकता है। सर्वोदय के अनुसार सामान्य हित के लिए व्यक्ति के हितों का बलिदान किया जा सकता है परन्तु मार्क्सवाद तथा पश्चिम में किसी अन्य प्रकार के समाजवाद के विषय में यह कह नहीं सकते।

यह बात तो बड़ी सुगमता से हमारी समझ में आ सकती है कि जो लोग गरीब हैं, कमजोर हैं, शोषित और दलित हैं, उनका उत्थान करना आवश्यक है किन्तु यह बात समझ में आनी बड़ी कठिन है कि सबल, धनी, बुद्धिमान तथा उच्चासीन व्यक्तियों का उत्थान क्यों और किस प्रकार होना है। विनोबा भावे जी कहते हैं कि हमारे इस अपूर्ण

संसार में प्रत्येक को उत्थान की आवश्यकता है, क्योंकि प्रत्येक का पतन हो गया है। धनी लोग नैतिक और आध्यात्मिक रूप से गिरे हुए हैं उनका धन दूसरों के शोषण पर और इसलिए असत्य और हिंसा पर आधारित है। स्वेच्छापूर्वक अपने फालतू धन का परित्याग करके वे आध्यात्मिक रूप से उठते हैं। निर्धन लेागों को, जीवन की भौतिक आवश्यकतायें सदैव त्रस्त करती रहती हैं। बहुत ही वास्तविक रूप में सर्वोदय सबका उत्थान करता है, गरीबों का भौतिक रूप से और अमीरों का आध्यात्मिक रूप से। यह बात उस उपयोगितावाद से जिसका कि ध्येय अधिकतम का अधिकतम सुख है तथा अन्य विचारधाराओं से जिनका उद्देश्य समाज के किसी वर्ग विशेष का कल्याण करना है सर्वोदय को विशिष्ट बना देती है।

आचार्य विनोवा भावे के दर्शन एवं सर्वोदय शोध पत्र के लेखक प्रो० डॉ श्री भगवान सिंह, विभागाध्यक्ष दर्शन शास्त्र विभाग, राम नगीना सिंह कॉलेज, मनेर, पटना,बिहार ने बताया कि आचार्य विनोवा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 को गगोड़े महाराष्ट्र मे हुआ था । वे हिंदू धर्म के ब्राह्मण जाती के थे । उनके पिता का नाम नरद्वरी शम्भू एवं माता का नाम रुक्मिणी देवी था । उनका मृत्यु 15 नवम्बर 1982 मे हुआ था । वे मूल रूप से लेखक, समाज सुधारक, चिन्तक, स्वतंत्रता सेनानी थे ।आचार्य विनोवा भावे जी का शिक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे हुआ था, यहीं गाँधी जी के भाषण से प्रभावित हो गये । आचार्य विनोवा भावे जी गाँधी जी के आश्रम मे रहते थे । वे गाँधी जी के दर्शन से काफी प्रभावित थे उनके विलक्ष्ण प्रतिभा के कायल थे, भारतीय राष्ट्रवाद के एक निर्विवाद नेता के रूप में गाँधी के उदय के लिए इस वातावरण मे आज सम्पूर्ण विश्व मे सामान्यतरू और भारत मे विशेषतरू संक्रमित एवं मूल्यहीनता व्याप्त है । इसके कारण है सतत वैचारिक संघर्ष, जातीय द्वेष, धर्म का नीति एवं अध्यात्म से च्युत होना, हिंसा, ईष्या, घृणा तथा अलगाव का समाज एवं संस्कृति मे बढना आदि आज समाज समृद्धि और गरीबी, स्वतंत्रता शोषण, समाजसम्बंध एवं तनाव, विज्ञान और अध्यातम के विरोधाभाष मे फंसा हुआ है । इस विकट स्थिति मे गाँधी के जीवन दर्शन की प्रासंगिता को आज विश्व समाज, सबसे अधिक महसूस कर रहा है । मानव स्वाभाव, सामाजिक रिश्ते और संघर्ष से उत्पन्न अनूभुति एवं अस्तित्व के गर्व से उत्पन्न विचारो के आधार पर गाँधी ने अपने जीवन दर्शन का ताना बाना बुना है । गाँधी ने सत्य अहिंसा आदि शास्वत साधनों के द्वारा मानव समाज के उद्धार के लिए एक नूतन प्रयोग पद्धति का आविष्कार किया जो अध्यात्म और अधिभूत तथा स्वार्थ एवं परार्थ के बीच पैदा करने वाले विरोधी तत्वों को नाश करने व सत्य ही अध्यात्म के साथ योग करके विशुद्ध नैतिक आधार पर समाज का नवनिर्माण करने मे समर्थ है । गाँधी ने विश्व से हिंसा आदि दोषों को हटाने के लिए न केवल अर्जित किया अपितु उसका उपदेश भी दिया । इतना ही नही उन्होने हिंसा का समाज से समूल उन्मूलन के लिए मन और क्रिया मे तादात्मय करके सत्याग्रह नामक अध्यात्मिक चमत्कार को प्रस्तूत किया । आज आवश्यकता इस बात की है कि हम गाँधी के विचारो पर पुर्नमूल्यांकन करे और समसामयिक समाज मे उसकी प्रासंगिकता पर विचार विमर्श करे, प्रस्तुत विचारों के धारण करने मे सबसे उपर सर्वोदय परम्परा के आचार्य विनोवा भावे के चिंतन मे कर्म का महत्व है । सर्वोदय का अर्थ है सबका उदय और सबके द्वारा उदय । सब लोग जियें और एक दूसरे के साथ जिये । शास्त्रीय

परिभाषा मे जीवन का विकास और जीवन का अधिक से अधिक विस्तार । दुनिया मे जीवन का विकास और विस्तार करना है तो इस विषय मे चाहे आस्तिक हो या नास्तिक अर्थवादी हो या भौतिक विज्ञानवादी हो या राजनीतिज्ञ किसी को कोई आपति नही होगी । इसे सभी स्वीकार करेंगे ।

डॉ0 राखी सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, सतीकुण्ड, कनखल, हरिद्वार ने अपने शोध पत्र **बिनोवा भावे का स्त्री सशक्तिकरण संबंधित विचार** में बताया कि विनोबा भावे की पहचान समाज सुधारक, आध्यात्मिक गुरु, एक अहिंसावादी स्वतंत्रता सेनानी के अलावा महात्मा गांधी के अनुयायी के रूप में स्थापित है। जो समाज में समानता लाने एवं अहिंसात्मक रूप से सामाजिक परिवर्तन एवं गरीबों एवं पिछड़ों के उत्थान के प्रणेता के रूप में भी स्थापित हैं। विनावा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 ई0 को महाराश्ट्र के कोलाबा जिले में हुआ था। वे बचपन से ही चिन्तनशील एवं गंभीर प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अपनी देशभक्त एवं धर्मपरायण माता के प्रेरणा से आजीवन अविवाहित रहकर गांधी के सम्पर्क में रहते हुए देश सेवा में लगे रहे। इन्होने सारे देश में पदयात्रा कर भूदान, ग्रामदान, सम्पत्ति दान की प्रेरणा देकर देश में सामाजिक आर्थिक क्रांति लाने का प्रयास किया। सर्वोदय विचार, गीता प्रवचन ईशावास्योपनिशद, स्थितप्रज्ञ–दर्शन, स्वराजशास्त्र, तीसरीशक्ति, भूदान यज्ञ, सर्वोदय यात्रा, राजघाट की सन्निधि में, इनकी प्रमुख रचनाएं हैं।

गांधी जी के प्रभाव में विनाबा भावे में भारत की स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। 1940 में गांधी जी ने इनको पहला सत्याग्रही बताया। विनोबा भावे के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में उनका भूदान आंदोलन प्रमुख था। उन्होंने भूमिहीन किसानों को भूमि का छठवां हिस्सा भूमिहीन किसानों को देने के लिए प्रेरित करते रहे।

ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के समय के पहले से ही भारत में महिलाओं की सामाजिक राजनीतिक, सांस्कृतिक स्थिति अत्यन्त दयनीय दशा में थी। इस समय बाल विवाह बहुविवाह, दहेज प्रथा, विधवा–विवाह निषेध एवं सती प्रथा इत्यादि कुरीतियां समाज में और भी अधिक पकड़ बनाए हुए थी। भारत में ब्रिटिशराज के प्रभाव से तथा शिक्षा का माध्यम विदेशी भाशा कर दिये जाने से भारतीय जीवन पद्धति और राश्ट्रीय चरित्र में नये परिवर्तन प्रारम्भ हुए। इस काल में स्वतंत्र रूप से महिलाओं को मांगने और व्यवहारिक नियमों में किसी प्रकार के परिवर्तन करने के अधिकार नहीं थे। पारम्परिक दृष्टि से महिलाओं का कार्य क्षेत्र घर था। घर से बाहर का कार्य पारिवारिक सम्मान के विरूद्ध था। वह परिवार की संचालिका थी लेकिन व्यवहारिक रूप से सारे अधिकार पुरूषों के पास थे। उनके बिना महिला किसी भी प्रकार का कोई भी पारिवारिक या सामाजिक निर्णय नहीं ले सकती थी। इस कारण उसकी पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति में गिरावट आती चली गई। विनाबा भाव सर्वोदयी विचारधारा द्वारा सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्नशील थे क्योंकि सर्वोदयी विचारधारा में समाज के प्रत्येक वर्ग का उत्थान निहित था। इस समय भारतीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति देखते हुए उन्होंने अपने अनेक सम्भाषणों में महिलाओं के उत्थान की बात कहीं और उसको अपने सर्वोदयी समाज की रचना में स्त्रियों को पुरुषों की बराबरी का अधिकार दिया।

डॉ0 रीता प्रताप, भूगोल विभाग, पटना ने अपने शोध पत्र **आचार्य विनोबा भावे– भारतीय परिदृश्य के साम्यवादी** में उल्लेख किया कि नारी शक्ति देवी रूप मे या गृहस्थ नारी के रुप मे पर्यावरण संरक्षिका के प्रतिक के रुप मे है, प्रारम्भिक गुप्तकालिन मृण्मुद्राओ पर मातृदेवों की प्रतिमा लगभग इसी रूप मे मिलता है । नारी की प्रजनन शक्ति की उपासना, दृश्यमान जगत के उत्पति एवं पालन सम्बंधी कार्य मे मातृशक्ति की भुमिका मानव अस्तित्व के लिए समान रुप से महत्वपूर्ण है । वन देवी को ही ऋग्वेद मे आरण्यानी कहा गया है भारतीय संस्कृति मे मातृशक्ति के रुप मे कार्य एवं महत्व की ओर संकेत करने वाली सुविचारित स्त्रिलिंग वाचक संज्ञा है । औषधियों को माताएँ एवं देवियाँ बताया गया है, आधुनिक सभ्यता मे महिलाएं इसकी पूजा करती है ।

आचार्य विनोबा भावे के अनुसार महिलाओं के उत्थान के लिए उनका विचार जो था कि प्राचीन भारतीय समाज मे महिलाओं की सामाजिक स्थिति कुछ भी रही है, किंतु मनु–स्मृति मे जो मनु ने नारियों के संदर्भ मे कहा है उसके पश्चात नारी जो अवनति और दुर्गति हुई है । इसका परिणाम यह रहा है कि आज के स्वतंत्रत भारत मे भी महिलाओं को बराबरी का दर्जा प्राप्त नही हुआ है । नारी उत्थान के संदर्भ मे आचार्य विनोबा भावे ने अपने भाषणों, लेखों, व्यवहारों, चिंतन और ग्रंथों मे बाल–विवाह, विधवा पुर्नविवाह स्त्रियों की संपति मे हिस्सेदारी शिक्षा तथा स्वतंत्रता उनके प्रति मान–सम्मान का व्यवहार जैसे मुद्दों को बदला जाए । ताकि स्त्री–पुरुष को सामान स्तर अवसर और अधिकार सुलभ हो । इन सभी के बावजूद भी यह आवश्यक है कि समाज मे महिलाओं को यह मालूम होना चाहिए कि उसके अपने सामाजिक, आर्थिक, संवैधानिक एवं पारिवारिक अधिकार कौन–कौन से है और उन्हें स्वतरू ही उनके लिए संगठित होकर संघर्ष करना चाहिए । जैसा कि वर्तमान मे विविध नारी मुक्ति आंदोलन के संचालन मे अभिव्यकत हो रहा है । इस प्रकार मानव सभ्यता के विकास का मूल आधार नारी ही रही है । वनस्पति जगत का मानव जीवन प्राचीन काल से अविछिन्न प्रभाव रहा है । वनस्पति जगत एवं मातृ शक्ति मानव जीवन मे पूर्णता लाने वाली शक्तिया है जो अनेक संभावनाओं से परिपूर्ण है । वनस्पति एवं मानव अस्तित्व दोनो सहगामी है, परस्पर आश्रित है, इनमें एक मे चेतना है और दूसरा चेतन व चेतनशील है । आचार्य विनोबा भावे ने भारतीय समाज मे एक ऐसे समाज का निर्माण चाहते थे, जिसकी नींव न्याय, समानताव शांति पर आधारित हो । इस महती उद्देश्य की प्राप्ति हेतु यह परमावश्यक था कि समाज के दो आधारभूत अंगो पुरुष व स्त्री के बीच समानता के सभी तत्व सुनिश्चित व सुनियोजित हो । देश समन्वित व शांतिपूर्ण विकास के लिए यह लंगिक समानता पुर्व निर्धारित शर्त है । आचार्य विनोबा भावे के शब्दों मे स्त्री के गौरांवित करते हुए कहाँ स्त्री–ईश्वर की सर्वोत्कृष्टव्यृति है वह अहिंसा की अवतार है तथा अपने धार्मिक आग्रहों कि परिप्रेक्ष्य मे वह पुरूष जाति से कोसो आगे है । स्त्री के सम्बंध मे भावे जी के समधित सोच व सम्मानपुर्ण भाव का आधार क्या था ? इस पवित्र भाव का पल्वव, पुष्पन व विकास उनमें कब व किन परिस्थितियों मे हुआ था जिनमें विभिन्न स्त्रियों ने विभिन्न रुपों मे उनके जीवन दर्शन को निर्णायक रुप से प्रभावित किया । जिन स्त्रियों ने उन पर गहरी छाप छोड़ी उनमें उनकी माँ व बहन का पहला महत्वपूर्ण स्थान है, इसी तरह आश्रमवासी स्त्रियों मे सजगता व प्रतिबद्धता से वे काफी प्रभावित हुए ।

मानव की यह चिंतनशीलता उसे वनस्पति जगत के पोषण संरक्षण व उसके कल्याणकारी उपयोग का सामर्थ्य प्रदान करती है । जिसमे मातृशक्ति की पूर्णतरू भागीदारी रही है । भारतीय संस्कृति संदर्भ मे वन एवं वनस्पतियाँ महिलाओं के माध्यम से किसी न किसी रुप मे सदैव आश्रित रही है । नारी जीवन पर प्रभाव सैदव सभ्यता मे भी देखने को मिलता है । कुछ मुद्दो पर नारी के गर्भ से निकलता हुआ चित्रित मिला है । वृक्षों मे पीपल पवित्र वृक्ष था । एक अन्य मुद्रा की छाप है जिसमें दो नग्न नारियाँ अंकित है, जो एक–एक हाथ मे ध्वज पकड़े खड़ी है । ध्यजों से पीपल की पतियाँ निकलती हुई दिखाई गई है । वैसे भी ह्डप्पा सभ्यता मे नारी मूर्तियाँ के अवशेह बहुत अधिक प्राप्ति हुए है जो नारी प्रधान समाज का संकेत देता है ।

आचार्य विनोबा भावे की स्त्रीवादी सोच मे दो तत्वों की सर्वाधिक भूमिका है । हर मायने मे स्त्री पुरूष समानता तथा दूसरा दोनो के विशिष्ट लैंगिक मित्रता के मद्देनजर उनके सामाजिक दायित्वों मे भिन्न्ता पुरूषों को पारिवारिक देखभाल की जिम्मेदारी और स्त्रियो को घरेलू प्रबंध मे अपनी भूमिका तय करनी चाहिए और इस तरह दोनो के एक दूसरे के पूरक को भूमिका अदा करनी चाहिए । पुरूष स्त्री की सामाजिक अपेक्षाओं मे विशिष्टता भिन्न्ता परिलक्षित होती है इस लिए उनकी सार्वजनिक व निजी भूमिकाओं मे भी भिन्नता है । एक सहज, स्वाभाविक चीज है । भावे जी का विचार था कि स्त्रियों की सोचनिय दशा ऐतिहासिक परिस्थितियों की वजह से हुई है लेकिन भावे जी ने कहा है कि " महिलाओं के प्रति असामनता व अन्याय का बोध करते हुए यदि मै स्त्री के रुप मे पैदा होता तो मै पुरूषों द्वारा थोपे गये अन्याय का जमकर विरोध करता ।" उन्होने सार्वजनिक क्षेत्र मे स्त्रियों की सक्रिय भूमिका के प्रबल पैरोकार थे । जब 1921 मे महिला मताधिकार का मुद्दा उठा तो उन्होने इसका पुरजोर समर्थन किया क्योंकि सत्याग्रह आंदोलन मोर्चा मे स्त्रियों की उत्साह्पूर्ण व सक्रिय भागीदारी की निर्णायक भूमिका को सराहा था । उनके अनुसार धर्म की मूल भावना की सुरक्षा एक मात्र स्त्रियां की कर सकती है । उन्होने एक चर्च मे कहा था कि समाज की बुनियाद ही घर के अस्तित्व पर टिकी है । वे भारतिय स्त्रियों के वस्त्र चयन व वैचारिक सादगी से काफी प्रभावित थे । देवदासी प्रथा को नैतिक कोढ़ तथा ईश्वर के अवमानना के रूप मे चिहिन्त करते हुए कहा कि उन सड़ी गली समाजिक संस्कृति प्रथाओं को तोड़ना चाह रहे थे, जिन्होने सदियों से स्त्रियों को दोयम दर्जा का नागरिक या वस्तु बना रखा है । आचार्य जी ने दहेज लोभी युवाओं को बहिष्कार की अपील की वह अंतरजातिय व अंतरसामुदायिक विवाह की इस सामाजिक बीमारी की एक कारगर औषधि मानते थे । उन्होने अधिल भारतिय महिला सम्मेलन मे इस आशय का प्रस्ताव पारित किया की म्युनिसिपैलिटी व स्थानिय प्रशासन मे महिलाओं को 50ः आरक्षण 27ः के साथ करें । उन्हें पूरा भरोसा की आर्थिक आजादी महिला के उत्थान मे अहम भूमिका अदा कर सकती है । अतरू ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों मे श्रदेय विनोबा जी ने जो मार्ग दिखाया निश्चित ही वह अपनाने योग्य है जो कि नारी उत्थान मे हमारे देश कि जो समस्या है उसका समाधान यदि हम भौतिक वादी प्रवृतियों की तरफ बढ़ते रहे तो कभी भी नही हो सकेगा । जैसा कि हम मान लेते है कि हमारी प्रमुख समस्या गरीबी है कि हम दीवारों पर अधिक अन्न उपजाओ का जद्रित रात लगा दे तो समस्या का समाधान हो जायेगा । इस समस्या के निवारण

के लिए हमे कर्म करना पड़ेगा । विनोबा जी के अनुसार समाज मे स्त्रियों ने ही सदाचार रखा है । स्त्रियाँ बच्चों को सचरित्र बनायेगी तो देश की अच्छे नागरिक मिलेंगे । आज के परिप्रेक्ष्य मे यह और भी महत्वपुर्ण हो जाता है । जब देश की आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्री समाज मे हर क्षेत्र मे अग्रणी भूमिका निभा रही है । विनोबा जी के अनुसार संस्कृत मे घृति, मेघा, क्षमा, कीर्ति, वाणी, भक्ति, मुक्ति और वृद्धि से सभी स्त्रीलिंग है ।

रेखा नौटियाल ने अपने शोध पत्र **विनोबा भावे का दर्शन और सर्वोदय** में बताया कि आचार्य विनोबा भावे एक महान स्वतंत्रता सेनानी, संत, राजनीतिक चिंतक, दार्शनिक समाज सुधारक थे। विनोबा भावे अहिंसा और सद्भावना को अपना मूल मंत्र मानने वाले थे। आचार्य विनोबा भावे अपने धर्म के प्रति जितने समर्पित थे उतने ही समर्पित वे देश की स्वाधीनता के लिए थे। देश की आजादी की लडाई में अहिंसात्मक मार्ग पर चलने वाले की गिनती महात्मा गाँधी के परम शिश्यों में थी। उन्हौंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज सुधार के कार्यों में समर्पित कर दिया। विनोबा जी ने सर्वोदय समाज की स्थापना की, जिससे निर्बल एवं गरीबों का उत्थान हो सके। सर्वोदय समाज का तात्पर्य प्रत्येक व्यक्ति का उत्थान और नैतिक विकास करना था। यह रचनात्मक कार्यकर्ताओं का अखिल भारतीय संघ था, जिसका उद्देश्य अहिंसात्मक तरीके से देश में सामाजिक परिवर्तन लाना था। इस कार्य के लिए वे पदयात्री की तरह गाँव– गाँव घूमे और भूमि दान करने की याचना की ताकि भूमिहीनों को भमि देकर उनके जीवन में सुधार किया जा सके। वे सदैव देश सेवा में तत्पर रहे और अपने जीवन को सफल किया। विनोबा भावे का जन्म सितम्बर 1895 में महाराश्ट्र के गोगादा गाँव में हुआ था।उनका बचपन का नाम नरहरि विनायक भावे था। उनकी माता का नाम रूक्मिणी बाई एवं पिताजी का नाम नरहरि भावे था। उनके पिताजी की गणित व रसायन विज्ञान मे काफी रूचि थी। उनकी माता जी एक विदुशी महिला थी जिनकी अध्यात्म में विशेश ध्यान था और उसका प्रभाव विनोबा भावे पर पूर्ण रूप से प्रभावी रहा। विनोबा जी का मन अध्यात्म चिंतन एवं समाज सुधार के कार्यों में लगा रहता था। बालक बिनायक को माता – पिता दोनों के संस्कार प्राप्त थे। उनकी वैज्ञानिक सोच तमाम तरह के पूर्वाग्रहों से अलग हटकर सोचने की प्रेरणा अपने पिताजी से प्राप्त हुई जो कि समाल के लिए सकारात्मक दृश्टिकोण जैसे अपने धर्म के प्रति, संस्कृति के प्रति समभाव उदारता एवं प्राणीमात्र के कल्याण लिए अत्यधिक उपयोगी साबित हुई। आचार्य विनोबा भावे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। गणित उनका प्रिय विशय था। बचपन से ही गीता का अध्ययन उनको अध्यात्म की ओर प्रेरित करता रहा और सांसारिक भोगों को व्यर्थ समझतें थे। अध्यात्म की ओर झुकाव हामने के कारण वे एक महान संत भी कहलाए। विनोबा जी की प्रारम्भिक शिक्षा बाद में वे काशी पढने के लिए चले गये। वहाँ पर उन्हौंने संस्कृत विशय का गहन अध्ययन किया। वे एक दिन गाँधी जी का भाशण सुनने चले गये और उनसे प्रभावित होकर उनसे मिलने के लिए उद्धत हो गयें। गाँधी जी ही उनके प्रेरणास्रोत हो गये। विनोबा जी ने गाँधी जी के साथ मिलकर स्वाधीनता संग्राम में बहुत काम किया। उनकी आध्यात्मिक चेतना समाज और व्यक्ति से जुडी थी। इसी कारण संत स्वभाव होने के बावजूद उनमें राजनीतिक सक्रियता भी थी। गाँधी जी द्वारा ही बिनायक को विनोबा नाम दिया गया।

डा0 सचिन रस्तोगी असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग एम.बी. राज0स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी जिला नैनीताल (उत्तराखण्ड) ने अपने शोध पत्र जिसका शीर्षक **आचार्य विनोबा भावे का भूदान आंदोलन है** में बताया कि आचार्य विनोबा जी को प्रारम्भिक अवस्था में भारत के ग्रामों में रहने वाले दरिद्र जनगण की दुर्दशा का अनुभव हो गया था, उनकी दरिद्रता का मुख्य कारण भूमि पर भारी दवाब था। पिछली जनगणना–अनुसार प्रत्येक छः भारतीयों में पांच ग्रामों में रहते थे, और दस में से सात अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर रहते थे। इस प्रकार देश की सबसे गम्भीर समस्या कृषि थी, जो आज भी है। भूमि, सम्पत्ति का सर्वाधिक मूल्यवान रूप है। भूमि के छोटे से टुकड़े के लिए व्यक्ति शस्त्रों से तथा न्यायालयों में लड़ते हैं। ग्रामों में भूमिपति होना सर्वाधिक सम्मान की बात समझा जाता है। भूमि की समस्या को भूमि के अत्यधिक विषम वितरण ने और अधिक जटिल बना दिया है।

भूदान का जन्म तथा प्रगति – कुछ बड़े भूमिपतियों के पास तीस एकड़ से अधिक भूमि है मध्य भूमिपतियों के पास छः एकड़ से अधिक भूमि है और छोटे किसानों के पास वर्गीय तीन एकड़ से कम भूमि है। प्रथम श्रेणी के भूमिपतियों, जिनकी संख्या कुछ कृषकों का 30% है, के पास कुल भूमि का 58% है, दूसरी श्रेणी के भूमिपतियों जिनकी संख्या 40% है के पास 30% से भी कम भूमि है और छोटे किसानों जिनकी संख्या 30% है, के पास भूमि का केवल दसवां भाग ही है।

इसका परिणाम यह है कि छोटे किसान और भूमिहीन श्रमिक भली भांति अपना पेट भी नहीं भर पाते, और वे दिन–प्रतिदिन दरिद्रता के गर्त में गिरते जा रहे हैं। इस समस्या का समाधान विनोबा जी के मन में तब आया जबकि अप्रैल 1951 में पैदल तेलंगाना का दौरा कर रहे थे। उसकी कहानी इस प्रकार है –

धन के वितरण में घोर विषमताओं तथा भूमिहीन व्यक्तियों की दुर्दशा ने तेलंगाना को साम्यवादियों का लीला क्षेत्र बना दिया था उदाहरण के बलापले ग्राम में जिसकी जनसंख्या 3000 थी और जिसमें खेती की भूमि का क्षेत्र 3000 एकड़ था, भूमि का स्वामित्व केवल 90 परिवारों के पास था और 600 परिवार भूमिहीन थे। उस ग्राम में कोई कुटीर उद्योग भी नहीं था। विनोबा जी ने व्यक्तियों को बताया कि साम्यवाद की प्रगति के लिए धनी व्यक्ति उत्तरदायी है उस समस्या का समाधान पुलिस नहीं कर सकती थी, उसका एकमात्र उपाय भूमि के वितरण में घोर विषमता को दूर करना था ऐसा करने का शांतिपूर्ण उपाय उनके मन में उस समय आया जबकि वे 18 अप्रैल 1951 को पांचमपल्ली में ठहरे हुए थे। उस दिन प्रातःकाल में वे व्यक्तियों की स्थिति देखने के लिए ग्राम में गये और उन्होने दलित क्षेत्र देखा वहां वे एक झोपड़ी में गये और उन्होने एक नवजात शिशु देखा उन्होने स्नेह पूर्वक उस शिशु को अपनी गोद में ले लिया और कहा कि यह बालक कितना सुन्दर है इस स्नेह को देखकर बहुत से दलित वहां एकत्रित हो गये और उन्होने अपने कष्टों की करूणाजनक कहानी विनोबा जी को सुनाई। विनोबा जी ने वह कहानी सुनी और दलितों से फिर अपने से मिलने के लिए कहा।

दलित व्यक्ति वहां एकत्रित हो गये, जहां विनोबा जी ठहरे हुए थे, उनके मध्य कुछ अन्य गैर–दलित भी थे दलितों ने विनोबा जी से कहा, कि यदि हमें कुछ भूमि मिल जाये तो हमारा कष्ट कुछ कम हो जायेगा।

पूछे जाने पर उन्होनें यह भी बताया कि उन्हें लगभग 80 एक़ड़ भूमि पर्याप्त होगी। विनोबा जी ने उन्हें आश्वासन दिया कि मैं तुम्हारे लिए भूमि प्राप्त कराने का प्रयास करूंगा। यह देखकर कि उस सभा में कुछ भूमिपति भी बैठे थे, विनोबा जी ने पूछा कि क्या आप व्यक्तियों में से मुझे कुछ भूमि देंगे, जिससे आपके भाई भूखे न मरें। कुछ क्षणों के उपरान्त एक भूमिपति उठा और उसने दलितों के लिए उपहार स्वरूप 100 एकड़ भूमि पेश कर दी। उस भूदानी का नाम था श्री राम चन्द्र रेड्डी। अगले दिन प्रातःकाल उसने अपनी भूमि का दान पत्र विनोबा जी को भेंट कर दिया। इस प्रकार 18 अप्रैल सन 1951 को पांचमपल्ली में भूदान का जन्म हुआ।

संजीव कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद (मा0ज्यो0 फु0रू0, विश्वविद्यालय, बरेली) ने अपने शोध **आधुनिक भारत के शैक्षिक एवं सामाजिक परिदृश्य में आचार्य विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता** की प्रस्तुति करते हुए करते हुए बताया कि किसी व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र के जीवन में उच्चता, श्रेष्ठता, उदारता एवं उत्कृष्टता की प्राप्ति शिक्षा पर निर्भर करती है। यही कारण है कि विश्व के श्रेष्ठ विचारकों, दार्शनिकों एवं समाज सुधारकों ने शिक्षा के महत्त्व एवं स्वरूप के विषय में अपने विचार दिये हैं। राष्ट्र के नवजागरण में ऐसे ही अनेक विचारकों एवं समाज सुधारकों ने शिक्षा के अपने विचारों द्वारा अमूल्य योगदान दिया है। ऐसे ही प्रमुख विचारक एवं समाज सुधारक है आचार्य विनोबा भावे। विनोबा जी को भारत का राष्ट्रीय अध्यापक भी कहा जाता है। विनोबा जी ने शिक्षा के दो रूप बताये हैं– आन्तरिक शिक्षा एवं बाह्य शिक्षा। ये दोनों रूप एक दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने वास्तविक शिक्षा को इन दोनों का सम्मिश्रण माना है। उनके अनुसार समाज निर्माण मूल रूप से एक शिक्षा प्रक्रिया है। वे शोषण मुक्त, वर्ग–भेद रहित एवं वर्ग–विद्वेष से मुक्त समाज का निर्माण करना चाहते थे। इसी लक्ष्य के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया। विनोबा जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि यह सम्भव है कि वर्तमान समय की कई समस्याओं का हल उस विराट व्यक्तित्व के कृतित्त्व में सन्निहित हो।

प्रो. (डॉ.) शशि प्रभा प्रोफेसर एवं अध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, हरिद्वार ने अपने शोध पत्र **विनोबा भावे का दर्शन एवं सर्वोदय** में बताया कि विनोबा भावे गाँधी जी के उन अनन्य अनुयायियों में से थे जिन्होंने गाँधी जी के बाद भी सर्वोदय की विचारधारा को व्यवहारिक रुप में जीवित रखा। गाँधी जी ने विनोबा भावे को व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए पहला सत्याग्रही चुना[1] विनोबा भावे को उनकी मृत्यु से पूर्व तक 'वर्तमान जीवित महात्मा गाँधी' कहा गया। वे अपने जीवन पर्यन्त एक ऐसे नव जीवन का विकास करने के लिए प्रयत्नशील रहे जिसमें मानव का विकास तेजी से हो तथा नई संस्कृति का विकास हो।[2] समाज में उनका सबसे बड़ा योगदान भूमि समस्या को लेकर रहा। गाँधी जी की मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने विनोबा भावे के

परामर्शानुसार 'सर्वोदय समाज' नामक एक 'संगठनहीन संगठन' की स्थापना की और इस प्रकार 'सर्वोदय' शब्द प्रचलित हुआ।[3]

'सर्वोदय' का सीधा सरल अर्थ 'सबका उदय या उन्नति' है। सर्वोदय की विशेषता उनकी समन्वयात्मक प्रवत्ति है। यह सभी विचारों के अच्छे अंश को ग्रहण करता है और दोषों को छोड़ देता है। इसका आधारभूत सिद्धान्त 'अद्वैत' है, अर्थात सर्वोदय विचार सम्पूर्ण सृष्टि की, जिसका मानव एक अंग है, एकता में विश्वास रखता है और इसलिए यह नहीं मानता कि व्यक्तियों, समूहों, वर्गों तथा राष्ट्रों के हित भिन्न–भिन्न और विरोधी हो सकते हैं।[4] 'सर्वोदय' में यह मान्यता निहित है कि मानव आत्मा पवित्र है और स्वतंत्रता, समानता, न्याय तथा बन्धुत्व के आदर्शों को हमें अत्यधिक महत्व देना चाहिए।

'सर्वोदय' भावना और आचरण का एक अच्छा उदाहरण समाज में कुटुम्ब वाला न्याय लागू होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति दूसरो की चिंता रखे और अपनी चिंता ऐसी न करे जिससे दूसरे को तकलीफ हो। यही कुटुम्ब में होता भी है। इसी को 'सर्वोदय' कहते हैं। सर्वोदय का संदेश है कि पूरे समाज में इसी प्रकार की कौटुम्बिक भावना पायी जानी चाहिए।[5]

सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषणविहीन समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास के साधन और अवसर मिलेंगे। यह क्रान्ति सत्य और अहिंसा द्वारा ही सम्भव है। सर्वोदय इसी का प्रतिपादन करता है, सर्वोदय इस बात को स्वीकार नहीं करता कि मानव का आपस में विरोध हो या एक का हित दूसरे के हित के विरुद्ध हो। सर्वोदय में आत्मनिर्भरता का भाव निहित है, इससे यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपनी कमाई का खाना चाहिए, दूसरे की कमाई का नहीं खाना चाहिए। हमें अपना भार दूसरों पर नहीं डालना चाहिए। यदि हम इन नियमों का पालन करें तो सर्वोदय समाज का प्रचार दुनिया में हो सकेगा। सर्वोदय अस्पृश्यता को मानवता के लिए सबसे बड़ा कलंक मानता है। यह एक बड़ी कष्टमय स्थिति है कि हम भंगी को अछूत करार देकर उससे ऐसा काम कराते हैं कि उसे फिर दूसरे धंधों में प्रवेश न मिले। इस गुलामी से तो हमें उन्हें मुक्त करना ही पड़ेगा, इसके लिए हम सबको भंगी बनना चाहिए या उस काम को ऐसा स्वरुप देना चाहिए जिसे हर कोई कर सके।[6]

सोनिका देवी शोध छात्रा इतिहास विभाग मेरठ कॉलेज, मेरठ ने अपने शोध पत्र **'आचार्य विनोबा भावे का दर्शन एवं सर्वोदय'** मे उल्लेख किया कि आचार्य विनोबा भावे को उनकी मृत्यु से पूर्व तक ''वर्तमान के जीवित महात्मा गाँधी'' कहा जाता था। वे भारत वर्ष के **महान सन्त**, **दार्शनिक सामाजिक** एवं **आर्थिक विचार, भूदान आन्दोलन** के प्रणेता और **सर्वोदय के अग्रदूत** के रूप में हमारे सम्मुख प्रस्तुत है। विनोबा जी का उद्देश्य था– **शासन विहीन और शोषण विहीन समाज की स्थापना** उन्होने गांधी जी के सर्वोदय दर्शन को साकार रूप देने का भरसक प्रयत्न किया। उन्होने गांधी जी के क्रांति एवं शान्ति के संदेश को जीवित रखने तथा उसे यथार्थ रूप देने में अपना सम्पूर्ण जीवन

समर्पित कर दिया। भारतीय राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में विनोबा का विशेष दर्जा प्राप्त है। उन्होने हिंसा के सिद्धान्त को मूर्खतापूर्ण बताया।

गाँधी जी के विचारों को आदर्शवादिता के रचनात्मक कार्यक्रम में परिवर्तित कर अपने कथन की पुष्टि की है कि गांधी जी के विचार व्यवस्थित न होते हुए भी सही चिन्तन की शक्ति से युक्त है। सामाजिक समानता एवं न्याय के प्रतीक विनोबा ने भूदान, ग्रामदान आदि के द्वारा सम्यवाद का धार्मिक विकल्प प्रस्तुत किया। विनोबा जी के विचार अत्यधिक स्पष्ट और मानवतावादी है। लेकिन इनका आदर्श अपनी पराकाष्ठा पर नजर आता है क्योंकि वे ग्रामीण स्तर से जिस प्रकार के समाज और वातावरण के निर्माण की बात करते है, वह वस्तुतः ग्राम में ही शून्य के समान है।

विनोबी जी का असली नाम तो **विनायक नरहरि भावे** था परन्तु भारत में वे सन्त विनोबा अथवा 'आचार्य विनोबा भावे' के नाम से प्रसिद्ध हुये। विनोबा भावे ऐसे विद्वान थे जिनको वेद–वेदान्त गीता जैसे अनेक शास्त्र–ग्रन्थों का गहरा अभ्यास था तथा जिसे वे अपने जीवन में चरितार्थ करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे इसलिए सुशिक्षित लोगों के जगत में वे आचार्य नाम से सुसज्जित हुए।

विनोबा भावे का जन्म सितम्बर 1895 में महाराष्ट्र प्रान्त के कोलवा जिले के **गागोदा** नामक गांव के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम **नरहरि शंभुराव भावे** था उनकी माता **रूक्मिणी देवी** कर्नाटक के गोडबोले परिवार की कन्या थी। प्राकृतिक हरियाली से घिरा हुआ **गागोदा** एक **छोटा सा गांव** था। जिसके कारण विनोबा को बचपन से ही प्रकृति से लगाव हुआ उनका यह प्रकृति प्रेम जीवन के अंतिम क्षणों तक बना रहा। महान सत्यनिष्ठा ही सर्वोदय की बुनियाद है।

आचार्य विनोबा भावेः सामाजिक न्यायिता का राजनीतिक विमर्श शोध पत्र के लेखक **डा0 तीर्थ प्रकाशएसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय मंगलौरहरिद्वार (उत्तराखण्ड)** ने स्पष्ट किया कि भारतीय ज्ञान दर्शन एवं चिन्तन के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पटल पर यूं तो अनेक महान आत्माओं की उपस्थिति गौरान्वित करती है। किन्तु एक राश्ट्रीय शिक्षक, सर्वोदय के वास्तविक शिल्पकार, श्रम के पुजारी और सच्चे अर्थो में गांधी के उत्तराधिकारी आचार्य विनोबा भावे अद्वितीय है।हम सभी जानते हैं कि मानव जीवन की सबसे बड़ी दुश्वारी निर्धनता है अर्थात गरीबी एक ऐसा अभिशाप है जो सभी प्रकार के शोशण का कारक है। यह आदमी के आत्म सम्मान को नश्ट कर देती है। उसे बेकारी, बीमारी और अज्ञानता के कुचक में जकड़ कर समाज के अन्तिम पायदान पर रहने को विवश कर देती है। वर्तमान भारतीय समाज भी उक्त सभी दानवों का शिकार है। महाराश्ट्र के एक गाँव गागोदा में 11 सितम्बर 1895 में जन्मे विनोबा भावे अध्ययनशील व्यक्ति थे, उपनिशद, गीता, ब्रह्मसूत्र, भाश्य पांतजलि, योग दर्शन और गणित का रूचि पूर्ण अध्ययन किया। किन्तु आत्मिक स्वभाव में वे मानवतावादी थे, इसीलिए छोटी उम्र में ही गाँधी जी के प्रभाव में आए और सम्पूर्ण जीवन उनके दर्शन को भारत निर्माण और विश्व वन्दना हेतु समर्पित कर दिया। भारत की धर्म–भूमि में उन्होंने साम्यवाद के फलाव को रोकने के लिए उसके भारतीय संस्करण "**सर्वोदय**" कोवैज्ञानिक आधार प्रदान किया।[1] वे सभी अधूरे लक्ष्य जो गांधी जी

अपनी मृत्यु के पीछे छोड़ गए थे, उन सभी रचनात्मक कार्यो जैसे खादी, ग्रामीण उद्योग, नई तालिम (बुनियादी शिक्षा), स्वच्छता और मानव कल्याण को विनोबा भावे जी द्वारा अन्तिम सांस तक जारी रखा गया। 1921 में उन्होनें वृद्धा आश्रम का प्रभार संभाला और सत्याग्रह के चलते वे 1923, 1932, एवं 1940 में जेल भी गये तब गांधी जी द्वारा उन्हें प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही कहा गया यही उनके गांधीवादी उत्तराधिकारी होने के प्रमाण थे। अपने सम्पूर्ण जीवन उन्होंने इसी उत्तराधिकारी से भारतीय जनमानस में अन्तोदय और सर्वोदय के लिए कार्य किया। गांधीवादी तमाम विशेशताओं के बावजूद विनोबाभावे ने जिन व्यवहारिक समस्याओं के निराकरण का प्रयास किया वे उन्हें भारतीय समाज सुधार के इतिहास में अग्रणी बना देती है। वे जानते थे कि निर्धनता' मानवीय समाज की स्थापना के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। इस स्थिति को बदले के लिए उन्होंने अपने समय के प्रचलित बैन्थम जैसे सिद्धान्तकार के **'अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख'** के उपयोगितावाद को **'सर्वभूत–हिताय**' द्वारा प्रतिउत्तर दिया। उनके चिन्तन में बहुसंख्यक के साथ अल्पसंख्यक वर्ग के हितों की चिन्ता परिलक्षित होती है, जो उपयोगितावाद की बड़ी कमजोरी है। भावे का सर्वोदय आत्मत्याग की भावना पर **'सबके भले में अपना भला'** आधारित मूलमन्त्र को आत्मसात करता है।[2]

भारतीय समाज में शोशण और गरीबी का इतिहास पुरानी रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था। इसजकड़न को तोड़कर सामाजिक परिवर्तन की धारा या तो **'लक्ष्य की पवित्रता'** के मार्क्सवादीचिन्तन से लाई जा सकती थी या **'साधनों की पवित्रता'**के गांधीवादी चिन्तन से। विनोबा जीने हिंसा का परित्याग कर अहिंसा को, सामाजिक परिवर्तन का आधार बनाया और साम्यवादकी हिंसक क्रान्ति के स्थान पर सर्वोदय के भारतीय समाजवादी संस्करण को शान्ति, करूणा,त्याग और सत्याग्रह की बुनियाद पर केद्रित किया।

अपनी मूल प्रवृत्ति में सर्वोदय एक आध्यात्मिक क्रिया कलाप है जिसके भीतर अंह प्रकृति को जनकल्याण में बदल देने की शक्ति है। इससे स्वतन्त्र विचारों की अभिव्यञजना उपस्थित है, तो नैतिक उत्थान पर आधारित जनहृदय परिवर्तन, के साथ आर्थिक संसाधनों पर समान स्वामित्व की भावना का निर्देशन मौजूद है।[3]सर्वोदय की इसी भावना एवं लक्ष्य को व्यक्त करते हुए आचार्य भावे कहते हैं– "**सर्वोदय विचारधारा सबके लिए जीवकोपार्जन की व्यवस्था कर सकती है। चरखे के साथ कृषि, गोरक्षा, ग्राम उद्योग, ग्राम सुफाई, नैसर्गोपचार (प्राकृतिक चिकित्सा) और नई तालीम आदि का जोड़ने से तो सर्वोदय कार्यक्रम सर्वापूर्ण हो जाता है। सर्वोदयी व्यवस्था ही जीवनोपार्जन व्यवस्था है और अन्य व्यवस्था तो मरर्णोपार्जन व्यवस्था है।**[4]

विनोबा जी का सम्पूर्ण जीवन यद्यपि गाँधीवादी मूल्यों की पुर्नस्थापना में व्यतीत हुआ किन्तु उनकी प्रतिश्ठा एवं प्रसिद्धी की सबसे महत्वपूर्ण वजह उनका**'भूदान आन्दोलन'** है। इस आन्दोलन द्वारा, भारतीय सामाजिक व्यवस्था में अन्तिम पायदान पर खडे भूमिहीन समाज को स्वावलम्बी और सशक्त बनाकर मानवीय मूल्यों को आत्मसात किया गया था।

विषमताओं पर आधारित, कोई भी समाज मानव कल्याण के अपने उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। मानव उत्थान के सर्वोदय हेतु आचार्य विनोबा भावे द्वारा जीवन – पर्यन्त प्रयास किए गए। वे संसाधनों के असमान वितरण से उपजी भारतीय

समाज में गरीबी, अज्ञानता, बीमारी, बेकारी और शोषण की प्रतिष्ठा का व्यावहारिक समाधान, हृदय परिवर्तन की लोकनीति पर भूदान एवं ग्रामदान को पवित्र संसाधनों से चाहते थे । प्रेम श्रद्धा एवं सहयोग पर वे सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन से, एक ऐसे लोकतान्त्रिक परिवेश का निर्माण चाहते थे। जो सर्वांगीण कल्याण में मानवीय गुणों का समावेशी हो । गांधीवादी मूल्यों के सच्चे वाहक रूप में, विनोबा जी ने नैतिक चरित्र के बल पर दल विहीन लोकतान्त्रिक विकेद्रित समाजवादी समाज का प्रयास किया। ऐसे समाज जहाँ धर्मगत, जातिगत, लैगिंक अमीर–गरीब, कमजोर – ताकतवर, बुद्धि जड का प्रभेद शेष न रहे, अपितु सभी के जीवनोपार्जन की व्यवस्था हो विनोबा भावे का सम्पूर्ण दर्शन भारत के जनमानस की चिन्ताओं एवं चुनौतियों के समाधान का वैज्ञानिक ढंग है, जिसे अहिंसा की बुनियाद पर सामाजिक क्रांति का भारतीय साम्यवादी संस्करण कह सकते हैं।

"21वीं सदी की आधुनिकता पर खड़ा भारतीय समाज निरन्तर द्वन्द्व से गुजर रहा है एक ऐसा द्वन्द्व जिसमें आधुनिक बनने की कल्पनाशीलता तो है, किन्तु पौराणिक रूढ़ियों की सामन्ती सोच सामाजिक परिवर्तन की धारा को रोके है। सड़ी–गली अनुकरणीय प्रथाओं ने न केवल पदसोपानीय विभेदों को बढ़ाया है, बल्कि न्यायिता और मानवीय संवेदनाओं पर आधारित विकास के तमाम सम्भावित मार्गों को अवरूद्ध कर दिया है अथवा उसकी गति को अतिमन्द बना दिया है। परिणामतया समाज में संसाधनों को सकेन्द्रण का विषेषाधिकार वर्ग तैयार हुआ तो दूसरी ओर साधनविहीन, (निर्धनता, भूख, बेकारी, बिमारी) वाला शोषित वर्ग आज भी अपने उदय की बाट जोह रहा है। ऐसे में गांधी के इस देश में सामाजिक परिवर्तन के तीनों आयामों (सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक) के विकास के लिए, उनके सच्चे सत्याग्रही विनोबा भावे के वैज्ञानिक दर्षन पर आधारित समाजवाद के भारतीय संस्करण सर्वोदय कार्यक्रम की नितान्त जरूरत है। जिसे सत्य–अहिंसा के साधनों सिंचित कर तार्किक मानवतावाद और आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि में भू–दान एवं श्रमदान के साथ अन्तोदय किया जा सकें।"विनोबा जी का योगदान भारतीय समाज के उत्थान एवं कल्याण में अविस्मरणीय है। उनका भू–दान आन्दोलन उन्हें अकेले ही विद्वानों की उस श्रेणी में ला खड़ा करता है जो समाज को बदलने में सक्षम रहे। गरीबी और जातीय प्रभेदों को दूर करने के लिए नैतिक साधनों पर आधारित उनका भू–दान यज्ञ वास्तव में सहमतिपूर्ण क्रान्ति बन गयी। ग्राम उत्थान एवं मानवीय कल्याण के लक्ष्य को समेटे उनका साम्य योग सर्वोदय और अत्योदय की बुनियाद को मजबूत करता है। इसमें कतई सन्देह नहीं कि उनका दार्शनिक विचार आज के भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक–आर्थिक विषमताओं का शान्तिपूर्वक समाधान ढूँढ सकता है। वह भारतीय वर्तमान परिस्थितियों में समाजवाद की पुनः स्थापना कर, मानवीय कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इस प्रकार उनका वैचारिक दर्शन मानवीय जीवन के प्रत्येक कालखण्ड में अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखने में सक्षम है।

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
Room No. 003, Old CRS Building,
Jawaharlal Nehru University,
Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi-110067
Ph : 011-26741607, 26741610
E-mail : icssnrc@gmail.com, Website : www.nrc-icssr.org

उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
कमरा नंबर तीन, ओल्ड सी आर एस बिल्डिंग,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-११००६७

Dr. G.S. Saun
Hony. Director

F.No. NRC/SEM-CONF/2022-23

Dated: 31-10-2022

To

The Principal
Govt. Degree College
Manglour
Haridwar-247656
Uttrakhand

SANCTION ORDER

Subject: **Partial Assistance for organizing a seminar entitled** "नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 एवं राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) पर एक राष्ट्रीय विमर्श" **by Dr. Tirth Prakash, Associate Professor, Department of Political science, Govt Degree college Manglour (Haridwar) Uttarakhand to be held on 19th -20th November 2022.**

Dear Sir,

Sanction of the Centre is hereby accorded for partial assistance of **Rs. 1,25,000/- (Rupees One Lakh Twenty-Five Thousand Only)** to **Dr. Tirth Prakash, Associate Professor, Department of Political science, Govt Degree college Manglour (Haridwar) Uttarakhand** to meet the expenditure on the above-mentioned seminar.

The grant should be utilized for the purpose for which it has been sanctioned. No part of the grant is to be utilized for publication of the proceedings of the seminar.

The amount of grant sanctioned herein is to be utilized in the stipulated period. Any amount of the grant remaining unspent shall be refunded to the ICSSR immediately after completion of the Seminar/Conference/Workshop. If the grantee fails to utilize the grant, the grantee will be required to refund the amount of the grant with interest thereon @ 10% per annum from date of its sanction.

In principle, Council reserves the right to send an observer to the conference whose T.A. and D.A. would be borne by the ICSSR and local hospitality by the organizer.

The sanctioned amount will be released in two instalments as follows:

First instalment	:	Rs. 93,750/-
Second instalment	:	Rs. 31,250/-
Total	:	**Rs. 1,25,000/-**

Contd...../-

The first instalment of Rs. 93,750/- will be released on receipt of a grant-in-aid bill (copy enclosed) duly stamped and signed by competent authority of the University/Institute. The second instalment of Rs. 31,250/- will be released on receipt of the following documents:

1. Two complete sets of papers presented in the seminar.
2. An audited statement of accounts for the expenditure incurred together with the utilization certificate of sanctioned amount.
3. A short summary of the proceedings of the conference, highlighting the objectives, findings/recommendations and names of important participants and pictures of the seminar.
4. Two photographs for uploading on website of the Centre.

Yours sincerely,

(G.S. Saun)

Encl: Grant-in-Bill

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
NEW DELHI

GRANT-IN-AID BILL

Received a sum of Rs.____________ (Rupees __________________ Only) by NEFT in favour of ____ drawn on Canara Bank, New Delhi, being the Grant-in-Aid of the seminar entitled " ____" towards the first instalment of the total grant-in-aid Rs.___________ (Rupees _____________________________ Only) sanctioned vide letter No ____________________ dated ____________ of the Hony. Director, ICSSR Northern Regional Centre, New Delhi.

Please Affix
Revenue Stamp

Signature of the Organizer

Certified that the Institute accepts all the terms and conditions governing the above grant and that it lends itself to abide by these.

Countersigned by the Administrative Head of the Institution/ University/College.

Signature of the Head
(Affiliating Institute/University/College)
Designation with Seal

ICSSR NORTHERN REGIONAL CENTRE
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
NEW DELHI-110067

F.No._____ Dated:_____

Dear Sir/Madam,

As per the directives from the Government of India, all the payments above Rs. 5,000/- are to be made by issue of payment advices only. As you are aware, your institution has affiliation of ICSSR-NRC seminar/workshops/projects /study grants and receiving grants thereof for them From NRC. You are, therefore, requested to furnish the following information duly verified by your bankers for RTGS/NEFT payments:

1.	Name & Address of the Account Holder	
	Contact details: (Telephone & Email id)	
2.	Bank Account No.	
3.	Name & Address of Bank	
	Bank contact details (Telephone & Email id)	
4.	IFSC Code	
5.	PAN No.	
6.	TIN No.	
7.	GST No.	

Signature of the Administrative
Head of the Institution/authorized signatory
With stamp

Note: Please treat it as MOST URGENT. It will be appreciated if the scanned copy of this information is also sent through e-mail mentioned in the sanction order for quicker execution.

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
Room No. 003, Old CRS Building,
Jawaharlal Nehru University,
Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi-110067
Ph : 011-26741607, 26741610
E-mail : icssnrc@gmail.com, Website : www.nrc-icssr.org

Dr. G.S. Saun
Hony. Director

उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
कमरा नंबर तीन, ओल्ड सी आर एस बिल्डिंग,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-११००६७

F.No. NRC/SEM-CONF/2022-23

Dated: 31-10-2022

To

The Principal
Govt. Degree College
Manglour
Haridwar-247656
Uttrakhand

SANCTION ORDER

Subject: **Partial Assistance for organizing a seminar entitled** "नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 एवं राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) पर एक राष्ट्रीय विमर्श" **by Dr. Tirth Prakash, Associate Professor, Department of Political science, Govt Degree college Manglour (Haridwar) Uttarakhand to be held on 19th -20th November 2022.**

Dear Sir,

Sanction of the Centre is hereby accorded for partial assistance of **Rs. 1,25,000/- (Rupees One Lakh Twenty-Five Thousand Only)** to **Dr. Tirth Prakash, Associate Professor, Department of Political science, Govt Degree college Manglour (Haridwar) Uttarakhand** to meet the expenditure on the above-mentioned seminar.

The grant should be utilized for the purpose for which it has been sanctioned. No part of the grant is to be utilized for publication of the proceedings of the seminar.

The amount of grant sanctioned herein is to be utilized in the stipulated period. Any amount of the grant remaining unspent shall be refunded to the ICSSR immediately after completion of the Seminar/Conference/Workshop. If the grantee fails to utilize the grant, the grantee will be required to refund the amount of the grant with interest thereon @ 10% per annum from date of its sanction.

In principle, Council reserves the right to send an observer to the conference whose T.A. and D.A. would be borne by the ICSSR and local hospitality by the organizer.

The sanctioned amount will be released in two instalments as follows:

First instalment	:	Rs. 93,750/-
Second instalment	:	Rs. 31,250/-
Total	:	**Rs. 1,25,000/-**

Contd...../-

The first instalment of Rs. 93,750/- will be released on receipt of a grant-in-aid bill (copy enclosed) duly stamped and signed by competent authority of the University/Institute. The second instalment of Rs. 31,250/- will be released on receipt of the following documents:

1. Two complete sets of papers presented in the seminar.
2. An audited statement of accounts for the expenditure incurred together with the utilization certificate of sanctioned amount.
3. A short summary of the proceedings of the conference, highlighting the objectives, findings/recommendations and names of important participants and pictures of the seminar.
4. Two photographs for uploading on website of the Centre.

Yours sincerely,

(G.S. Saun)

Encl: Grant-in-Bill

CC: Dr. Tirth Prakash, Associate Professor, Department of Political science, Govt Degree college Manglour (Haridwar) Uttarakhand

(G.S. Saun)

नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 एवं राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एन आर सी) पर एक राष्ट्रीय विमर्श

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की प्रगति रिपोर्ट

डॉ. तीर्थ प्रकाश

एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग

राजकीय महाविद्यालय मंगलौर हरिद्वार

आज दिनांक 19.12.2022 को राजकीय महाविद्यालय, मंगलौर में ''नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 एवं राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एन.आर.सी.) पर एक राष्ट्रीय विमर्श'' पर दो दिवसीय राष्टीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें उद्घाटन सत्र में सर्वप्रथम सरबत करीब अंसारी, विधायक जी द्वारा दीप प्रज्जलन किया गया। इसी बीस छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत (कलिका काल, कु. भारती, मनीषा, अनु एवं राबी जहरा की प्रस्तुत दी गई। तत्पश्चात् प्राचार्य महोदय ने हाजी सरबत करीब अंसारी, विधायक जी का सम्मान करते हुए शॉल एवं पौधा, स्मृति चित्र प्रदान किया गया एवं प्रो. डी.के.पी. चौधरी (मुख्य वक्ता) डॉ. मौ. तारिक अनवर (विशिष्ट वक्ता), पं. श्री राम कुमार (विशिष्ट अतिथि) ने अतिथियों का सम्मान पौधा एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर किया गया। इस अवसर पर डॉ. नीशू कुमार, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार ने अतिथियों का स्वागत किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी.एस. नेगी द्वारा संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए बताया कि महाविद्यालय में निरन्तर छात्र संख्या बढ़ती जा रही है, उन्होंने एन.आर.सी. और सी.ए.ए. पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस मंच के माध्यम से जो विचार उत्पन्न होगे, वह एन.आर.सी. और सी.ए.ए. को समझने एवं समझाने में अपनी अहम् भूमिका निभायेंगे। तत्पश्चात् ''नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019'' नामक पुस्तिका का विमोचन किया गया। इसके पश्चात् डॉ. तीर्थ प्रकाश, वरिष्ठ प्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी की रूपरेखा रखी गई, जिसमें उन्होंने एनआरसी और सीएए पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह संगोष्ठी कई प्रकार की समस्याओं

के समाधान के लिए मील का पत्थर साबित होगी। संगोष्ठी का आगात करते हुए सर्वप्रथम विशिष्ट वक्ता डॉ. तारिक अनवर, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ को मंच संचालक डॉ. दीपा शर्मा ने आमंत्रित किया, उन्होंने बताया कि एनआरसी और सीएए से पूरे विश्व में विरोध की स्थिति उत्पन्न हुई है। उन्होंने बताया कि जो कि पाकिस्तान, बांग्लादेश व अन्य देशों से जो लोग भारत आ चुके हैं, उनको नागरिकता प्रदान करने के लिए बनाया गया न कि विरोध के लिए, दूसरे देश के लोगों को रोजगार मिल रहा है और भारतीयों के पास रोजगार नहीं है। इस पर रोक लगाने के लिए एनआरसी बनाया गया, उन्होंने बताया कि बांग्लोदश को 1971 में भारत ने आजाद कराया, तब वह भारत का एहसान मानता है। उन्होंने बताया कि एनआरसी मुस्लिम के लिए कोई बुरी चीज नहीं है। अपितु यह सबके भले के लिए है। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि डॉ. के.पी. चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग को मंच पर आमंत्रित किया गया। उन्होंने बताया कि विश्व की जनसंख्या लगतार बढ़ती जा रही है। जिसके कारण एनआरसी जरूरी है। उन्होंने बताया कि भारत विश्व गुरू बनने जा रहा है, किन्तु बढ़ती जनसंख्या इसमें बाधक है। उन्होंने बताया कि 1951 के बाद से एनआरसी शुरू हुआ और उसमें लगातार संशोधन हो रहे है, उनका मानना है कि एनआरसी और सीएए एक दूसरे के विरोध में खड़े हैं। इसके पश्चात् विधायक जी ने बताया कि मंगलौर बहुत पिछड़ा इलाका था। पहले 20 और 25 किमी0 के दायरे में कोई महाविद्यालय नहीं था, किन्तु राजकीय महाविद्यालय, मंगलौर के प्राचार्य डॉ. डी.एस. नेगी के प्रयास से इलाके में महाविद्यालय होने के कारण बच्चे पढ़ लिख रहे है और आगे बढ़ रहे हैं। विधायक जी ने बताया कि अब इलाके में बिजली की कमी नहीं होगी, क्योंकि देहरादून में बिजली सब स्टेशन का उद्घाटन हुआ है। उन्होंने माननीय राष्ट्रपति से इलाके में मेडिकल कालेज की माँग की है, इसके साथ ही उन्होंने महाविद्यालय के लिए किताबे और फर्नीचर देने का वादा किया है इसके बाद चमन लाल महाविद्यालय के अध्यक्ष पं0 राम कुमार शर्मा जी द्वारा शिक्षिकों से छात्रों के मन में मानवता का बीज रोपित करने का आह्वाहन किया। इसी के साथ प्रथम सत्र का समापन हुआ।

डॉ0 गुंजन जैन– जी.डी.सी., पावकी, देवी (टी.जी.)- वक्ता ने अपनी चर्चा की शुरूआत में ही स्पष्ट कर दिया कि नागरिकता की लड़ाई हर देश में है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से ही नागरिकता कानूनों में संशोधन, जरूरत मुताबिक शुरू हो गये थे। उन्होंने इसमें प्रचलित भ्रांतियां जैसे तीन देश एवं छः कानूनों के विषय में विस्तारपूर्वक चर्चा की। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि भारतीय संसाधन सिमटते जा रहे है और सीआरआर अवश्य भावी है। इसके साथ ही छात्र/छात्राओं एवं प्रतिभागियों द्वारा डॉ. जैन से अपनी जिज्ञासा का समाधान पाया।

डॉ. अनुराग शर्मा, जी.डी.सी. कंवाघाटी, कोटद्वार, वक्ता ने नागरिकता का अर्थ समझाते हुए बताया कि जो राष्ट्र की सत्ता का निर्माण करता है वहीं उस राष्ट्र की नागरिक है। उनका कहना है, भारत युवाओं का देश है, पूरी दुनिया आज भारत के साथ व्यापार और निवेश करना चाहती है, क्योंकि भारत बढ़ता हुआ बाजार है। उन्होंने छात्रों के बीच भ्रम का निवारण करते हुए बताया कि छात्रों ने अपनी जानकारी को चर्चा के माध्यम से शद्ध करने की आवश्यकता है। उन्होंने छात्रों को प्रेरित करते हुए महात्मा बुद्ध का अंतिम उपदेश का जिक्र करते हुए अप्पो दीपो भवः के जरिये सभी को आत्मा की शक्ति को सकारात्मक चीजों को अपनाने की सलाह दी।

डॉ. कपिल, जी.डी.सी. कंवाघाटी, कोटद्वार, वक्ता ने अपनी ओजपूर्ण वाणी से मौजूद प्रतिभागी एवं छात्र/छात्राओं को चेताया कि छात्र का एकमात्र धर्म उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्य है। लक्ष्य निर्धारण के लिये अपनी क्षमता एवं रूचि का ध्यान रखना आवश्यक है।

आज दिनांक 20 दिसम्बर 2022 के संगोष्ठी के द्वितीय दिवस का आरम्भ दीप प्रज्जलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ, जिसमें डॉ. सोनिका नागर, सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, कनोहर लाल स्नाकोत्तर महिला महाविद्यालय, मेरठ, डॉ. सुरजीत सिंह, वरिष्ठ असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, बी.एस.एम. (पी.जी) कालेज, देहरादून, डॉ. राकेश राणा एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, एम.एम.एच. कालेज, गाजियाबाद, अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थिति रहे। सर्वप्रथम कार्यक्रम में अतिथियों को शॉल एवं पौधे द्वारा अब अतिथियों एवं प्रतिभागियों का

परिचय प्रेषित किया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए मंच संचालिका डॉ. दीपा शर्मा द्वारा डॉ. सोनिका नागर को मंच पर आमंत्रित किया, जिसमें डॉ. नागर ने बताया कि नागरिकता को लेकर विवाद क्यों होता है? सबसे पहले एनआरसी एक्ट 1951 में लागू हुआ, फिर उसमें संशोधन होते गये, उन्होंने असम आन्दोलन के ऊपर पूर्ण रूप से चर्चा की, उन्होंने बताया कि किन्तु एनआरसी ने असम के मुददे् की समस्या को काफी हद तक सुलझा दिया है। सीएए द्वारा नागरिकता दी जा रही है, उन्होंने कहा कि एनआरसी से किसी को समस्या नहीं होनी चाहिए, किन्तु सरकार को यह देखना होगा कि सामाजिक सौहार्द्र बना रहे और यह बात सभी को समझनी होगी। तत्पश्चात् कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ. अपूर्व मावी को मंच पर आमंत्रित किया गया। डॉ. मावी ने बताया कि असम में एनआरसी अपडेट हो गया है, जबकि पूरे भारत में अभी तक लागू नहीं हुई है, यदि किसी देश के नागरिक है, तो उसे दश की तरफ से पूर्ण संरक्षण मिलेगा, लेकिन अगर नागरिकता प्राप्त नहीं है, तो उसे जीवन का अधिकार व कुछ अन्य अधिकार ही मिलेगे, उन्होंने बताया कि NPR (National Population Register) का धर्म से कुछ लेना देना नही है यह केवल आधार कार्ड से मिलता जुलता हैं, कारगिल युद्ध के बाद एनपीआर का आईडिया सरकार को आया प्रश्नोत्तर काल में छात्र श्रवण द्वारा पूछे गये सवाल पर डॉ. मावी ने यथासंभव उत्तर देकर छात्र की जिज्ञासा को शान्त किया।

कार्यक्रम में आगे विशिष्ट वक्ता डॉ. सुरजीत सिंह ने बताया कि बांग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका से लोग भारत आना चाहते है, बांग्लोदश से 1 करोड़ 70 लाख लोग भारत आये है, जिनमें से 40 लाख लोगों को नागरिकता मिल चुकी है, उन्होंने बताया कि दूसरे देश के लोग भारत के विकास से प्रभावित होकर एक सुखमय जीवन की कल्पना लिये भारत में अवैध रूप से प्रवेश कर जाते हैं। एनआरसी में 6 धर्म और 3 देश की चर्चा की जाती है, क्योंकि इन धार्मिक रूप से पीड़ित लोगों को नागरिकता देने का प्रावधान है। डॉ. सिंह ने वैध नागरिकता और अवैध नागरिकता के बीच के अन्तर पर पूर्ण प्रकाश डाला, उन्होंने कि भारतीय नागरिक अगर धार्मिक रूप से प्रताड़ित होकर दूसरे देश में शरण लेना चाहे, तो शायद कोई देश शरीण न दे, लेकिन भारत धर्मशाला की शांति सब को शरण देता है। उन्होंने बताया कि एनआरसी

हमारे विकास व अर्थव्यवस्था से जुड़ी है। प्रश्नोत्तर काल में छात्रा भारती और छात्र सौरभ कुमार ने अपने प्रश्नों के उत्तर डॉ. सुरजीत सिंह से पाये। इसके पश्चात् कार्यक्रम के अंतिम वक्ता डॉ. राकेश राणा ने मंच पर आमंत्रित हुए उन्होंने बताया कि हमारे देश या किसी अन्य देश में काननू की क्या जरूरत है? ये क्यों बनते हैं और उनमें बदलाव की आवश्यकता क्यों है? वर्तमान समय में रिफ्यूजी बहुत बड़ा संकट है। 4400 लोग प्रतिदिन रिफ्यूजी के रूप में प्रतिदिन कहीं न कहीं किसी भी देश में मिल जाते हैं। उन्होंने बताया कि मानक प्रतिदिन बदल रहे हैं, आज हमारा देश जो करने की सोच रहा है, अन्य देश विकसित सोच के साथ उसको 10 साल पहले ही कर चुके है और आज हम नहीं संभले, तो हमारा देश तकनीकी रूप से बहुत पिछड़ जायेगा। उन्होंने बताया कि किस तरह कोरोना काल में तकनीकी सहायता द्वारा विभिन्न देश इस महामारी से उबरे है। उन्होंने बताया कि अब केवल धर्म से काम नहीं चलता है, तकनीकी रूप से विकसित होना अति आवश्यक है। अपनी देश की बढ़ती जनसंख्या को एक एसेट के रूप में लेना चाहिए, परन्तु उनके स्किल पर ध्यान केन्द्रित होना चाहिए। डॉ. राकेश राणा ने क्षेत्रीय मॉडल की बात कहीं और इसकी आवश्यकता को समझाया। अंत में प्रश्नोत्तर काल में छात्र/छात्राओं ने डॉ. राणा से अपने प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर प्राप्त किये।

कार्यक्रम के अंतिम पड़ाव में प्राचार्य महोदय ने सभी अतिथिगण, प्रतिभागियों एवं संगोष्ठी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी साथियों का धन्यवाद किया और कहा कि इस दो दिवसीय संगोष्ठी से निकले विचारों को अगर हम आम लोगों तक पहुंचाए, तो यह हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी और यह संगोष्ठी पूर्णतया व्यवहारिक थी जिससे छात्र/छात्राओं को गहराई से सब बातें समझ में आई और इसी के साथ प्राचार्य महोदय ने सत्र के समाप्ति की घोषणा की।

डॉ. गुजन जैन का व्याख्यान– सेमिनार के द्वितीय सत्र में जलपान/मध्यान्ह भोजन के पश्चात् शुरू हुआ, जिसमें संगोष्ठी के विषय को आधार बनाकर विषय पर आधारित व्याख्यान की शुरूआत डॉ. गुंजन जैन, असिस्टेंट प्रोफेसर के द्वारा की गई। अपने प्रभावी एवं प्रेरणाप्रद व्याख्यान में डॉ. जेन ने बताया कि किस प्रकार भारतीय संविधान में नागरिकता अधिनियम का आधार निर्मित किया गया। साथ ही डॉ. गुंजन जैन ने नागरिकता अधिनियम की स्थापना से लेकर विद्यमान नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 के विषय पर विस्तार से चर्चा की। अपने व्याख्यान के दौरान डॉ. जैन से संगोष्ठी विषय की प्रासंगिकता का प्रमाणित करते हुए संगोष्ठी भवन में उपस्थित विद्वानों, श्रोताओं एवं छात्र/छात्राओं के द्वारा उठाये गये विचारों एवं प्रश्नोत्तरों के माध्यमों से संगोष्ठी का माहौल सजीव बनाये रखने का सफल प्रयास किया गया।

डॉ. कपिल कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, कोटद्वार, भावर, का व्याख्यान– डॉ. कपिल कुमार ने अपने व्याख्यान की शुरूआत नागरिकता संशोधन अधिनियम की वर्तमान में प्रासंगिकता व आवश्यकता पर विशेष बल दिया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 के प्रावधानों के पश्चात् किस प्रकार देश का आंतरिक माहौल प्रभावित हुआ तथा उसके कुछ दुष्परिणाम भी देश को देखने पड़े। उस पर विस्तार से चर्चा की।

डॉ. अनुराग शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, राजकीय महाविद्यालय, कोटद्वार, भावर ने अपने व्याख्या में नागरिकता अर्थ एवं उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उसके नींव पर प्रकाश डाला। डॉ. शर्मा ने अपने व्याख्यान में यह स्पष्ट किया कि किस प्रकार एवं किन–किन दस्तावेजों के आधार पर भारत की नागरिकता को प्राप्त किया जा सकता है। अपने व्याख्यान में डॉ. शर्मा ने शोध पत्रों में विषयों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए नागरिकता अधिनियम एवं एनपीआर पर विस्तार से विचार विमर्श करने की आवश्यकता पर अत्यधिक बल दिया।

अपने इस व्याख्यान में डॉ. शर्मा ने ये बताया कि किस प्रकार हमें किसी भी अधिनियम की वास्तविकता को जाने व समझे बगैर केवल अफवाहों एवं समूह की भेड़चाल में पड़कर गलत धारणा नहीं बनाती चाहिए, बल्कि उसके सभी संबंधित पक्षों पर सकारात्मकतापूर्वक एवं गहन विचार–विमर्श करने की अत्यधिक आवश्यकता पर विशेष रूप से बल दिया।

डॉ. आशुतोष विक्रम, असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, चुडियाल ने अपना ऊर्जा से ओत प्रोत से व्याख्यान किया। अपने व्याख्यान के प्रारंभ में डॉ. आशुतोष ने अपने पूर्व परिचित चिर अंदाज में संगोष्ठी के विषय में अपने विचारों से हम सभी को ओत–प्रोत किया। डॉ. विक्रम ने अपने व्याख्यान में एनईपी एवं संयुक्त राष्ट्र किस प्रकार से हमारे संविधान में आधारभूत भूमिका निभा रहे है एवं किस प्रकार हम उन नियमों एवं प्रावधानों में सहयोगी रहेंगे। इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। शरणार्थियों के अस्तित्व एवं उनकी व्यवस्था अवस्था एवं दयनीयता तथा भारत में शरण लेने के कारणों पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. विक्रम ने अपने व्याख्यान में इस बात पर विशेष बल दिया कि भारत देश के सभी प्राकृतिक एवं आर्थिक संसाधानों पर प्रथम अधिकार सबसे पहले मूल रूप से भारत में रहने वाले भारतीयों का है। नागरिकता संशोधन अधिनियम कोई एक दिन का विषय नहीं है, बल्कि इसकी रूपरेखा आज से लगभग 50 वर्ष पहले निर्मित की जा चुकी थी। बस केवल धरातल पर आज उसको पूर्ण निश्चय से लागू करने का प्रयास किया जा रहा है। अपने विस्तारपूर्वक व्याख्यान में भारत के विभाजन, पूर्वोत्तर सीमांत प्रदेशों में अन्य देशों से आये शरणार्थियों के द्वारा भारत में उत्पन्न समस्याओं का विस्तार से वर्णन किया। डॉ. विक्रम ने बताया कि भारत जब ब्रिटेन के अधीन था तब भी संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य था। आजादी के वक्त शरणार्थियों की समस्याएं मुंह बॉये खड़ी थी। बढ़ती हुई जनसंख्या हर राष्ट्र के लिये मुसीबत है। ऐसे में सीएए और एनआरसी तकरीबन 40 वर्ष से प्रस्तावित है। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश से इसको लागू किया गया। उन्होंने बताया कि किसी देश में नियम कानूनों के साथ रहना चाहिए और जनगणना एवं विदेशी नागरिक रजिस्टर पूर्व से ढाई हजार साल पहले से है, यह कोई नई परम्परा नहीं है। अतिथियों का सम्मान करने के बाद प्राचार्य महोदय ने सत्र की समाप्ति की घोषणा की।

महाविद्यालय के प्राचार्य धन्यवाद का ज्ञापन भाषण– प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय, मंगलौर डॉ. डी.एस. नलेगी के द्वारा मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों को शाल एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करके एवं धन्यवाद करके आज के द्वितीय सत्र का समापन किया एवं कल के समापन सत्र हेतु सभी को आने का आमंत्रण दिया।

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
Room No. 003, Old CRS Building,
Jawaharlal Nehru University,
Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi-110067
Ph : 011-26741607, 26741610
E-mail : icssnrc@gmail.com, Website : www.nrc-icssr.org

उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
कमरा नंबर तीन, ओल्ड सी आर एस बिल्डिंग,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-११००६७

Dr. G.S. Saun
Hony. Director

F.No. NRC/SEM-CONF/2022-23 Dated: 18-10-2022

To

The Principal
Chaman Lal Mahavidhyalya
Landaura, Roorkee
Haridwar- 247664
Uttarakhand

SANCTION ORDER

Subject: Partial Assistance for organizing a Seminar entitled "योग: एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में" by Dr. Ankit Kumar, Assistant Professor, Department of Yogic Science, Chaman Lal Mahavidhyalya Landaura, Roorkee, haridwar on 27th -29th October 2022.

Dear Sir,

Sanction of the Centre is hereby accorded for partial assistance of **Rs. 1,10,000/- (Rupees One Lakh Ten Thousand Only)** to **Dr. Ankit Kumar, Assistant Professor, Department of Yogic Science, Chaman Lal Mahavidhyalya Landaura, Roorkee, haridwar** to meet the expenditure on the above-mentioned seminar.

The grant should be utilized for the purpose for which it has been sanctioned. No part of the grant is to be utilized for publication of the proceedings of the seminar.

The amount of grant sanctioned herein is to be utilized in the stipulated period. Any amount of the grant remaining unspent shall be refunded to the ICSSR immediately after completion of the Seminar/Conference/Workshop. If the grantee fails to utilize the grant, the grantee will be required to refund the amount of the grant with interest thereon @ 10% per annum from date of its sanction.

In principle, Council reserves the right to send an observer to the seminar whose T.A. and D.A. would be borne by the ICSSR and local hospitality by the organizer.

The sanctioned amount will be released in two instalments as follows:

First instalment	:	Rs. 82,500/-
Second instalment	:	Rs. 27,500/-
Total	:	**Rs. 1,10,000/-**

Contd...../2

The first instalment of Rs. 82,500/- will be released on receipt of a grant-in-aid bill (copy enclosed) duly stamped and signed by competent authority of the University/Institute. The second instalment of Rs. 27,500/- will be released on receipt of the following documents:

1. Two complete sets of papers presented in the seminar.
2. An audited statement of accounts for the expenditure incurred together with the utilization certificate of sanctioned amount.
3. A short summary of the proceedings of the seminar, highlighting the objectives, findings/recommendations and names of important participants and pictures of the seminar.
4. Two photographs for uploading on website of the Centre.

Yours sincerely,

(G.S. Saun)

Encl: Grant-in-Bill

CC: Dr. Ankit Kumar, Assistant Professor, Department of Yogic Science, Chaman Lal Mahavidhyalya Landaura, Roorkee, haridwar

(G.S. Saun)

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
NEW DELHI

GRANT-IN-AID BILL

Received a sum of Rs._____ (Rupees _____ Only) by NEFT in favour of _____ drawn on Canara Bank, New Delhi, being the Grant-in-Aid of the seminar entitled "_____ _____" towards the first instalment of the total grant-in-aid Rs._____ (Rupees _____ Only) sanctioned vide letter No _____ dated _____ of the Hony. Director, ICSSR Northern Regional Centre, New Delhi.

Please Affix.
Revenue Stamp

Signature of the Organizer

Certified that the Institute accepts all the terms and conditions governing the above grant and that it lends itself to abide by these.

Countersigned by the Administrative Head of the Institution/ University/College.

Signature of the Head
(Affiliating Institute/University/College)
Designation with Seal

ICSSR NORTHERN REGIONAL CENTRE
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
NEW DELHI-110067

F.No._____ Dated:_____

Dear Sir/Madam,

As per the directives from the Government of India, all the payments above Rs. 5,000/- are to be made by issue of payment advices only. As you are aware, your institution has affiliation of ICSSR-NRC seminar/workshops/projects /study grants and receiving grants thereof for them From NRC. You are, therefore, requested to furnish the following information duly verified by your bankers for RTGS/NEFT payments:

1.	Name & Address of the Account Holder	
	Contact details: (Telephone & Email id)	
2.	Bank Account No.	
3.	Name & Address of Bank	
	Bank contact details (Telephone & Email id)	
4.	IFSC Code	
5.	PAN No.	
6.	TIN No.	
7.	GST No.	

Signature of the Administrative
Head of the Institution/authorized signatory
With stamp

Note: Please treat it as **MOST URGENT. It will be appreciated if the scanned copy of this information is** also sent through **e-mail mentioned in the sanction order for quicker execution.**

GPS Map Camera
Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand, India
RW4H+Q6Q, Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand 247664, India
Lat 29.807048°
Long 77.927636°
02/01/23 12:25 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand, India
RW4H+Q6Q, Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand 247664, India
Lat 29.806952°
Long 77.927528°
02/01/23 12:25 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand, India
RW4H+Q6Q, Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand 247664, India
Lat 29.807048°
Long 77.927636°
02/01/23 12:25 PM GMT +05:30
Google

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में

GPS Map Camera
Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand, India
RW4H+Q6Q, Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand 247664, India
Lat 29.807006°
Long 77.92756°
02/01/23 12:25 PM GMT +05:30
Google

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में
राष्ट्रीय संगोष्ठी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में
23rd January 2023

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में
राष्ट्रीय संगोष्ठी

योग :

दो दिवसीय राष्ट्रीय
योग :

दो दिवसीय

दो दिव
योग : एक बेहत

दो दिवसीय राष्ट्रीय
योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के लि
2-3 January 2023

दो दिवसीय राष्ट्रीय
योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के
2-3rd January 2023
प्रो. राम कुमार शर्मा

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में
2-3rd January 2023
योग विज्ञान विभाग एवं राजनीति विज्ञान विभाग

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
योग : एक बेहतर
य राष्ट्रीय संगोष्ठी

Report
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
"योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में"

आज दिनांक 02.01.2023 को चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा के स्वच्छ हरित एवं शैक्षिक प्रागंण में आई.सी.एस.एस.आर. संस्था द्वारा सम्पोषित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र की आगज सभी अतिथियों के स्वागत एवं संगोष्ठी से हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में योग गुरु स्वामी कर्मवीर जी महाराज ने आज की इस दो दिवसीय संगोष्ठी के प्रथम दिन एवं प्रथम सत्र में मंत्र की गरिमा बढ़ायी। मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अजेय जी, संगठन महामंत्री (भाजपा) उत्तराखण्ड ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज करायी। संगोष्ठी के प्रथम दिन एवं प्रथम उद्घाटन सत्र मे विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद दयाल, असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विज्ञान विभाग, श्री गुरू राम राय विश्वविद्यालय, देहरादून, डॉ0 शिव कुमार चौहान, एसोसिएट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग, गुरूकुल कांगणी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो0 सुरेन्द्र कुमार, योग एवं खेल विभाग, गुरूकुल कांगणी विश्वविद्यालय, हरिद्वार आदि ने मंच पर उपस्थित होकर अपनी विद्ववता वं आभामण्डल से आज के सेमिनार का प्रथम दिन को द्विगुणित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 नवीन कुमार, भूगोल विभाग, चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा के द्वारा किया गया। संचालक महोदय ने कार्यक्रम की रूपरेखा व्यस्थिवत क्रम में संचालित करते हुए कार्यक्रम की मॉ सरस्वती के चरणों में द्वीप प्रज्ज्वलित करके एवं सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके किया। तत्पश्चात् संचालक महोदय के द्वारा सभी अतिथियों को पुष्प गुच्छ एवं पौधा भेट कराकर स्वागत किया गया। चमनलाल महाविद्यालय के प्रबंध रामकुमार शर्मा एवं कोषाध्यक्ष अतुल हरित जी के द्वारा सभी माननीय अतिथियों का स्वागत एवं कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया।

कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए डॉ0 नीशू कुमार भाटी ने सभी गणमान्य अतिथियों का सादर स्वागत किया। रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए डॉ0 नीशू कुमार भाटी ने बताया कि इस संगोष्ठी के विषय के रूप में निर्धारण महाविद्यालय समिति के अध्यक्ष डॉ0 राम कुमार शर्मा एवं महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 दीपा अग्रवाल के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में किया गया। डॉ0 नीशू कुमार ने विस्तार से बताया कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से वर्तमान वैज्ञानिक युग में योग की आवश्यकता एवं मानव जीवन का मूलभूत आधार योग को कैसे स्थापित किया जा सकता है, इस विषय पर विस्तार से चर्चा होगी एवं इसके जरूरी कुछ सार्थक परिणाम प्राप्त होगे, जो आवश्यक निष्कर्ष के रूप में स्थापित होगें।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 दीपा अग्रवाल ने सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत एवं परिचय दिया। अपने प्रारंभिक उद्‌बोधन में बताया कि योग आत्मविश्वास को विकसित करने एवं शारीरिक एवं मानसिक रूप से शक्तिशाली बनाने हेतु आवश्यक है। योग केवल शारीरिक क्रिया नहीं है, बल्कि यह एक साधन है जीवन सफल एवं समृद्ध करने का। प्राचार्या महोदया ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम दिन एवं प्रथम सत्र में संगोष्ठी के सफल होने एवं सकुशल संचालन हेतु सभी सदस्यों एवं प्रबंध समिति के अध्यक्ष महोदय को आभार व्यक्त किया एवं शुभकामनायें दी।

डॉ0 सुरेन्द्र दयाल का उद्‌बोधन–

अपने आध्यात्मिक उद्‌बोधन की शुरूआत में डॉ0 दयाल ने ध्यान की मुद्रा में बैठाकर गायत्री मंत्र का पाठ कराया। मंचासीन अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने उद्‌बोधन की शुरूआत की। डॉ0 दयाल ने बताया कि किस प्रकार कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से मानव जीवन को बचाने के लिए योग एवं आयुर्वेद एक जीवनदायिनी अमृत के रूप में प्रमाणित हो चुका है। उन्होंने बताया कि योग शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों रूपों में मानव जीवन को नया आयाम प्रदान करता है। योग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ0 दयाल ने बताया कि हमें योग को आत्मसात करने की आवश्यकता है साथ ही अपने जीवन को यौगि जीवन बनाने की आवश्यकता है। अपने सार्थक संभाषण के दौरान डॉ0 दयाल ने

बताया कि योग एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प में ना होकर बल्कि योग स्वयं में ही एक आधार है।

प्रो0 सुरेन्द्र कुमार त्यागी जी का उद्‌बोधन–

अपने उद्‌बोधन की शुरुआत सभी मंचासीन गणमान्य का स्वागत करके किया। उन्होंने बताया कि योग केवल निरोगी काया होना ही नहीं मन, इन्द्रियों एवं मानसिक प्रसन्नता का आधार भी योग ही है। प्रो0 अपने प्रभावी व्याख्यान में प्रो0 त्यागी ने स्पष्ट रूप से कहा कि एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में केवल योग ही है, इसके अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है। हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण शरीर है और शरीर से भी महत्वपूर्ण स्वास एवं प्रस्वास है जो परमात्मा के द्वारा प्रदान की गई है। योग के लक्ष्य को प्राप्त करने में योग को सरल रूप में अपनाने की अत्यंत आवश्यकता है। योग का सरल अर्थ योग या जोड़ बताते हुए उन्होंने बताया कि योग आत्मा एवं परमात्मा राममिलन ही नहीं, बल्कि स्वयं से जुड़ने का एक माध्यम है, जहां से योग की यात्रा का उद्‌भव होता है। योग की प्रथम सीढ़ी स्वयं या स्मूल शरीर से जुड़कर व्यवहारिक जीवन को सफल बनाने का मार्ग साधन ही योग है। अपने व्याख्यान में प्रो0 त्यागी ने बताया की योग का आधार सात्विक आधार है और सात्विक आधार से ही ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। श्रीमद् भागवत गीता का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि गीता में कृष्ण ने कहा जिसका आधार ठीक होगा, योग को भी धारण कर सकता है। प्रो0 त्यागी ने आयुर्वेद से योग का संबंधित करते हुए बताया कि किस प्रकार आयुर्वेद में बताया गया कि अपने ऋतुओं के अनुकूल ही आहार ग्रहण करना चाहिए। साथ ही अल्पाहारी होना भी स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है। अपने उद्‌बोान के सार के रूप में प्रो0 त्यागी ने बताया कि योग के प्राथमिक स्तर पर हमें अपने आहार, दूसरे स्तर पर प्राणतत्व एवं तीसरे स्तर पर हमें अपने ध्यान एवं शरीर से जुड़ने की आवश्यकता है। सामान्य अर्थ में आने वाले राष्ट्र आध्सात्य में एक नया अर्थ धारण कर लेते है। ध्यान को योग की एक आवश्यक कड़ी एवं आधार बनाते हुए प्रो0 त्यागी ने बताया कि ध्यान माध्यम से ही योग को साधा जा सकता है, योग को धारण किया जा सकता है।

श्री संजय गिरी गोस्वामी जी का उद्‌बोधन–

उद्‌बोधन के आरंभ में सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने व्याख्यान के प्रारंभ में ही कहा कि योग विकल्प नहीं है, बल्कि योग जरूरी एवं जीवन की आवश्यकता है। अयोग्य को योग्य बनाना ही योग कहा जाता है। अर्थात् शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर या अयोग्य व्यक्ति को योग्य बनाना ही योग है।

डॉ0 शिव कुमार चौहान का उद्‌बोधन

सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत करते हुए डॉ0 शिव कुमार चौहान सर ने अपने उदृबोधन के प्रारंभ में ही डॉ. चौहान सर ने इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि योग हमारे जीवन मे ंकिस प्रकार से आवश्यक है और किस प्रकार उर्जा का संचार करता है। अपने व्याख्यान में चौहान जी ने बताया कि जब सभी प्रकार की औषधियां निष्क्रिय हो जाती है तो योग ही एक ऐसा साधन है जिससे अपने आप को व्यस्थित किया जाता है तो वहीं आयुर्वेद के द्वारा हम अपने जीवन को नियंत्रित कर सकते है। आयुर्वेद एवं योग के संयोग से ही मनुष्य अपने जीवन को मोझ योग्य बना सकता है।

श्री अजेय जी संगठन मंत्री (भाजपा) का उद्‌बोधन–

सभी गणमान्य मंच पर उपस्थिति गणमान्यों का स्वागत करते हुए अपने उद्‌बोधन का प्रारंभ किया। संगोष्ठी के प्रारंभ ही श्री अजेय जी ने बताया कि योग ऐसी संगत है जिसके व्यवहार में आकार ही हम अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि योग एक बेहतर विकल्प के रूप में न होकर बल्कि येाग का कोई दूसरा विकल्प ही नहीं हैं। केवल स्वस्थ, अच्छा एवं चलता फिरता शरीर ही स्वास्थ्य नहीं है, बल्कि शीर के अन्दर विद्यमान मन ही एक स्वास्थ्य है। मन को साधना ही स्वस्थ शरीर है और साधने की क्रिया ही योग है। योग के माध्यम से शारीरिक नियंत्रण एवं इन्द्रियों को वश में कर लेना ही योग कहलाता है। योग केवल क्रिया नहीं बल्कि सृष्टि एवं समष्टि का जोड़ ही योग है। उन्होंने बताया कि अच्छे मन एवं अच्छे शरीर की आवश्यकता सनातन संस्कृति एवं

धर्म को लोकत्महार एवं देश की एकता एवं अखण्डता को परिमार्जित करना भी हमारी जिम्मेदारी है। अच्छे नागरिक के रूप में हमें तय करने की आवश्यकता है कि हमारी भूमिका और योगदान देश के लिए क्या है? देश की आजादी के बाद भी अजाादी का अभिप्राय क्या है? इस विषय पर विशेष रूप से बल दिया। भारत की महान विभूतियों को याद करते हुए युवा पीढ़ी को उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी। देश की एकता, अखण्डता एवं धर्म निरपनेक्षता को अति सशक्त एवं समृद्ध बनाते हुए वर्तमान पीढ़ी को एक भारत श्रेष्ठ भारत की कल्पना को योग के माध्यम से ही साकार किया जा सकता है। योग के माध्यम से भारत को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने का कार्य अत्यधिक तीव्र गति से करने की आवश्यकता है। अजेय जी ने अपने उद्‌बोधन के माध्यम से स्पष्ट किया कि भारत को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से समृद्धि करने हेतु स्वस्थ शरीर एवं स्वस्थ मन की आवश्यकता है जिसका एकमेव भाग केवल योग ही है।

स्वामी कर्मवीर जी महाराज का उद्‌बोधन–

आज की संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण की शुरूआत महाराज ने ध्यान की अवस्था में होकर गायत्री मंत्र का जाप किया और अतिथियों का स्वागत करके किया। योग स्वयं में पूर्ण एवं आधुनिक विज्ञान है। तीन प्रकार के दोषों वात, पित्त एवं कफ का सम होना आवश्यक है। मानव शरीर में 13 प्रकार की अग्नि है जिसका स्तर समान होना अति आवश्यक है। सात प्रकार की धातुए है मानवों शरीर में जिसका स्तर समान एवं सीमित होना ही अच्छे शरीर का आधार है। इसके अलावा मल विसर्जन की क्रिया सामान्य हो एवं मन और इन्द्रियां प्रसन्न हो, ये सभी क्रियाएं यदि किसी मनुष्य में सामान्रू एवं नियमित है तो विश्व में वही व्यक्ति अच्छी स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकता है जो कि केवल योग के माध्यम से ही संभव है। स्वामी जी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में विस्तार से मनुष्य के आहार, भोजन और शरीर की संरचना एवं प्रक्रिया पर विस्तार से प्रकाश डाला और स्पष्ट किया क्या आहार में शामिल करना चाहिए और क्या अपने आहार में शामिल नहीं किया जाना चाहिए। अपने मार्मिक एवं ओजप्रद उद्‌बोधन में महाराज जी ने आयुर्वेद एवं आयुर्वेद के माध्यम से अपनी जीवन प्रणाली को स्वास्थ्य एवं संयमित

करने की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन किया। अच्छे स्वास्थ्य के लिए अच्छा एवं शुद्ध आहार का दैनिक जीवन में अत्यधिक महत्व है। परिश्रम के आधार पर जीवनमापन करने वाला व्यक्ति ही स्वस्थ हो सकता है। योग क्रिया को प्राप्त करने से पहले शुद्ध आहार एवं शुद्ध विचार एवं बेहतर स्वास्थ्य का होना ही प्राथमिक आधार है। यम, नियम, आसन, योग, आहार, ध्यान, समाधि आदि आष्टांणिक भागों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने स्पष्ट बताया कि योग को प्राप्त करने के लिए समाधि में होना अति आवश्यक है। योग महर्षि पंजतजि के द्वारा प्रधान की गयी एक विधा है। अध्यापको के आचरण पर प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने बताया है कि यदि योग्य एवं कुशल, सदाचारी एवं संयमित अध्यापक हो जाये, तो आने वाली पीढ़ी संस्कारवान एवं विकसित हो सकती है। वेदों को ईश्वर की वाणी बताया। योग को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने के लिए 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम को स्थापित किया गया है। आसन एवं उसके विभिन्न प्रकारों को योग का एवं समाधि तक पहुंचने का महत्वपूर्ण आधार बताया। ईश्वर को सर्वव्यापक मानकर समाज में सामंजस्य स्थापित करने पर बल दिया। प्रायश्चित के पकार से परिभाषित किया। स्वामी जी ने बताया कि योग हमें सबसे मित्रता का व्यवहार सिखाता है। परमात्मा को प्राप्त करने के लिए आत्मा से योगसाधना को घर्षण करने की आवश्यकता है। योगयसाधना हेतु आसन का निर्धारण होना अति आवश्यक है। योग केवल आसन ही नहीं बल्कि मन एवं मस्तिष्क को शक्तिशाली बनाने का महत्वपूर्ण आधार है। अपने ओजस्वी एवं प्रभावशाली उद्‌बोधन के दौरान ही स्वामी कर्मवीर जी महाराज के द्वारा सेमिनार में उपस्थित छात्र/छात्राओं, शिक्षिकाओं एवं आमंत्रित वक्ताओं एवं अतिथियों के विभिन्न समस्याओं एवं शारीरिक तथा मानसिक रोगों, उनके बचाव के उपचारों आदि के द्वारा यथासंभव समाधान को प्रस्तुत किया गया।

पुस्तक विमोचन–

सेमिनार के प्रथम दिवस में मंत्र पर आसीन सभी गणमान्य व्यक्तियों के द्वारा 'योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में'' इस शीर्षक के द्वारा सम्पादित पुस्तक का विमोचन कार्यक्रम का भी आगाज किया गया। चमनलाल महाविद्यालय

के राजनीति विभाग के प्राध्यापक डॉ0 नीशू कुमार एवं योग विज्ञान विभाग के डॉ0 अंकित कुमार के सहभागी सम्पादकत्व में लिखी गयी इस पुस्तक में इस संगोष्ठी को सफल बनाने में सभी प्रकार के आमंत्रित शोध पत्रों को शामिल किया गया है।

प्रथम सत्र के समापन के समय चमनलाल महाविद्यालय प्रबंध समिति के कोषाध्यक्ष श्री अतुल हरित जी महोदय ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। अपने धन्यवाद उद्‌बोधन में हरित जी ने आमंत्रित मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि,, सभी मंचासीन अतिथियों के साथ–साथ सभी आमंत्रित सदस्यों, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से इस दो दिवसीय संगोष्ठी के प्रथम दिन में योगदान देने वाले सभी सदस्यों, पत्रकार बन्धुओं एवं महाविद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को सहृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया।

अध्यक्ष महोदय के द्वारा विशिष्ट वक्ता के रूप में दयाल, वक्ता के रूप में प्रो0 त्यागी सर, विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ0 चौहान सर, पूर्व जिलाध्यक्ष श्री शोभाराम प्रजापति जी, कवीन्द्र चौधरी, ब्लाक प्रमुख नारमन का, श्री संजय गिरी गोस्वामी जी का, विशिष्ट अतिथि श्री अजेय जी, संगठन महामंत्री का, तथा मुख्य अतिथि सोमगुरू स्वामी कर्मवीर जी महाराज का शाल एवं स्मृति चिन्ह भेंट करके स्वागत किया। साथ सभी सम्मानित एवं आदरणीयों का धन्यवाद भी दिया कि उन सभी ने अपना बहुमूल्य समय इस कार्यक्रम हेतु प्रदान किया।

संगोष्ठी के प्रथम दिवस के द्वितीय सत्र का प्रारम्भ मध्यान्ह भोजन के पश्चात् प्रारम्भ हुआ। मध्यान्ह भोजन के पश्चात् सेमिनार के तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र में विभिन्न प्रोध्यापकों शोधार्थियों, विद्यार्थियों आदि के द्वारा संबंधित विषय एवं मुख्य विषय से संबंधित उपविषयों पर लिये गये शोध पत्रों को प्रस्तुत किया गया। तकनीकी सत्र में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यमों से शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया गया। सेमिनार के प्रथम दिवस के द्वितीय/तकनीकी सत्र में लगभग दोनों माध्यमों से कुल 115 प्रतिभागियों के द्वारा शोध पत्रों का वाचन किया गया। अपने शोध पत्रों के माध्यम से शोधार्थियों ने योग का विभिन्न क्षेत्रों में योगदान तथा योग का विभिन्न क्षेत्रों एवं परिस्थितियों से संबधं एवं प्रभावों पर विस्तार से चर्चा की गयी।

तकनीकी सत्र की शुरूआत में मंच पर पं0 रामकुमार शर्मा, अध्यक्ष चमनलाल महाविद्यालय प्रबंध समिति, डॉ0 दीपा अग्रवाल, प्राचार्या, चमनलाल महाविद्यालय, डॉ0 शिव कुमान चौहान, एसोसिएट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग, गुरूकुल कांगणी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, डॉ0 सुरेन्द्र प्रसाद दयाल, असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विभाग, एस0जी0आर0आर0 विश्वविद्यालय, देहरादून एवं डॉ0 प्रवेश कुमार त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, मंगलौर ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दी। सेमिनार के प्रथम दिवस मे द्वितीय/तकनीकी सत्र में ऑनलाइन/ऑफलाइन माध्यम से राज्य एवं देश के अन्य राज्यों से प्राध्यापकों/शोधार्थियों तथा योग अध्येताओं ने इस विषय एवं संगोष्ठी के प्रमुख अन्य उपविषयों पर आधारित अपने शोध पत्रों का वाचन किया तथा योग के भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने का सफल प्रयास भी किया।

डॉ0 प्रवेश कुमार त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय मंगलौर का उद्बोधन

चमनलाल महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय दिवस में समापन पत्र का प्रारंभ प्रातः 11:00 बजे से शुरू हुआ। मंच पर उपस्थित सभी वक्ताओं से प्रारंभ करने के क्रम में डॉ0 त्रिपाठी जी के द्वारा योग विषय पर व्याख्यान दिया गया। अपने उद्बोधन के दौरान डॉ0 त्रिपाठी ने संगोष्ठी के शीर्षक की सार्थकता को प्रमाणित करते हुए बताया कि योग केवल शरीर को स्वस्थ एवं निरोगी रखने के लिए की जाने वाली एक शारीरिक क्रिया नहीं है बल्कि योग के द्वारा मन की चंचलता एवं मानसिक चित्तवृत्तियों को नियंत्रित करके योग साधक आत्मा के द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है। योग मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जीवन के साथ चलने वाली जीवनधारा है।

डॉ0 रविन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, व्याकरण विभाग, श्री भगवातदास संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार–

स्वाध्याय की परम्परा पर विशेष बल दिया। वामपंथी लेखकों और उनके इतिहास ग्रंथों को संस्कार के विपरीत बताया। उन्होंने कहा कि वर्तमान का इतिहास

भारतीय युवा पीढ़ी को हमारी प्राचीन एवं सनातन संस्कृत से अलग एवं दूर करने मार्ग बताया। डॉ0 कुमार ने योग के आधार भूतः अण्टांगिक मार्ग का पालन एवं अनुसरण पर विस्तार से चर्चा की। डॉ0 कुमार ने अजृ नियमों की केवल यम और नियम दोनों नियमों पर विस्तार से चर्चा की। यम और नियम को वैश्विक परिदृश्य की आवश्यकता के रूप में स्थापित करते हुए डॉ0 कुमार ने योग के अष्टांमिक्रभागों के प्रमुख आधारों को स्पष्ट किया। अपने उदृबोधन में डॉ0 कुमार ने योग के आठ नियमों यम, नियम, आसन, प्रणायाम, ध्यान, धारणा, समाि आदि को योग के आधार भूत तत्वों में शामिल किया। योग को केवल वर्तमान या कुछेक वर्षों की देन न मानकर योग भारत के अस्तित्व एवं प्राचीन सनातन संस्कृति से उद्भव माना।

उत्तराखण्ड के ग्रामीा अंचल में उच्च शिक्षा के उन्नयन के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने वाला शैक्षिक संस्थान चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा में भारत की प्रसिद्ध संस्था आई0सी0एस0एस0आर0 द्वारा सम्पोषित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 2 और 3 जनवरी 2023 को महाविद्यालय के अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त सभागार में आयोजित किया गया। महाविद्यालय के योग विज्ञान विभाग एवं राजनीति विज्ञान विभाग के संयुक्त आयोजन में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय समसामयिक एवं ज्वलंत, प्रासंगिक विषय ''योग : स्वास्थ्य के एक बेहतर विकल्प के रूप में'' निर्धारित था। संगोष्ठी के आयोजन में जहां दिनांक 2 जनवरी 2023 को प्रथम दिवस में क्रमशः उद्घाटन सत्र एवं तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया वहीं सेमिनार की दूसरे दिन दिनांक 3 जनवरी 2023 को सेमिनार के समापन सत्र का आयोजन किया गया। सेमिनार के समापन पत्र में मंत्र की गरिमा बढ़ाने हेतु मुख्य अतिथि के रूप में जगतगुरु शंकराचार्य राजराजेश्वर जी महाराज, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात धर्म के विद्वान डॉ0 पुनीत पाठक, मुख्य वक्ता के रूप में डॉ0 अरूण कुमार पाठक, प्रोफेसर, योग एवं आयुर्वेद विभाग, डॉ0 रविन्द्र कुामर, व्याकरण विभाग एवं डॉ0 प्रवेश के0 त्रिपाठी आदि के साथ ही साथ पं0 अरूण हरित, सचिव एवं पं0 रामकुमार शर्मा, अध्यक्ष, चमनलाल महाविद्यालय समिति आदि उपस्थित रहें।

सेमिनार के मंच का सफल एवं प्रभावी संचालन डॉ0 नवीन कुमार, भूगोल विभाग, चमनलाल महाविद्यालय के द्वारा किया गया। अपने ओजस्वी एवं धाराप्रवाह ओजस्वी उद्‌बोधन के द्वारा डॉ0 नवीन कुमार ने प्रातः कार्यक्रम की शुरूआत की। संगोष्ठी की शुरूआत ज्ञानदायिनी माँ सरस्वती की प्रतिमा के सम्मुख द्वीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण कार्यक्रम के द्वारा की गयी। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् महाविद्यालय प्रबंध समिति के सचिव व प्राचार्या एवं महाविद्यालय के प्राध्यापकों के द्वारा मंचासीन सभी अतिथियों को पौधा भेंट करके संगोष्ठी की विधिवत शुरूआत की गयी। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 दीपा अगग्राल ने सर्वप्रथम अपने स्वागत उद्‌बोधन में इस सेमिनार के सफल आयोजन एवं सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने हेतु सभी से सहयोग की अपेक्षा करते हुए सभी के सहयोग की प्रार्थना की। साथ ही सेमिनार के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने हेतु सभी का आभार व्यक्त किया एवं समापन सत्र के सफल होने हेतु शुभकामनाएं दी।

प्राचार्या महोदया के उद्‌घाटन के पश्चात् महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के प्राध्यापक डॉ0 नीशू कुमार के द्वारा संगोष्ठी के प्रथम दिवस का सम्पूर्ण कार्यवृत्त प्रस्तुत किया गया। अपने प्रस्तुतीकरण के द्वारा डॉ0 नीशू कुमार ने संगोष्ठी के प्रथम दिवस में योगदान देने वाले सभी गणमान्यों का धन्यवाद एवं आभार भी व्यक्त किया गया। डॉ0 नीशू कुमार ने यह भी बताया कि इस संगोष्ठी को इस प्रकार आयेाजित कर सफल बनाने में महाविद्यालय के प्रबंधक पं0 रामकुमार शर्मा एवं महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 दीपा अग्रवाल एवं महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों का अतुल्यनीय योगदान है।

डॉ0 अरूण कुमार सिंह, प्रोफेसर, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, पोखरा, उत्तराखण्ड का उद्‌बोधन–

योग मंत्र एवं मंचासीन अतिथियों के साथ ही अपने उद्‌बोधन का प्रारंभ करते हुए अपने विचारों के माध्यम से योग को सर्वव्यापी एवं विश्वव्यापी बताकर, योग को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया। डॉ0सिंह ने अपने उद्‌बोधन में प्राणायाम को नई परिभाषा देते हुए बताया गया कि गोबर से निकटता ही योग है और गोबर से दूरी/ कमी ही रोग है। ग्राम और गोबर की महत्व एवं उपयोग का आत्मसंतुष्टि

के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण बताया है। उन्होंने बताया कि आसन योग की प्रथम सीढ़ी है। पूर्वजों के द्वारा किये जाने वाले पारम्परिक कृत्यों एवं ग्रामीण एवं संस्कृति के कर्तव्यों के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने की विधि को वर्तमान में प्रायोगिक बताया है। पूर्वजों के द्वारा प्रयुक्त दोने वाले दीपक, गोबर, दूध, गाय आदि के महत्व एवं उपयोग के साथ ही मानव जीवन को प्रयोगों के आधार पर प्रमाणित करके युवा पीढ़ी के लिए जीवन का एक आधार बताया। वर्तमान की चिकित्सा प्रणाली को पूर्ण रूप से प्राचीन एवं सनातन धर्म की औषधीय एवं आयुर्वेदिक पद्धति पर आधारित बताया है। डॉ0 सिंह ने अपने औषधीय उद्‌बोधन में मर्म चिकित्सा एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति का विस्तार से वर्णन किया। योग और आयुर्वेद, आयुर्वेदिक औषधियों एवं उनके यथोचित प्रयोग और प्रभाव के कारण मनुष्य अपने शरीर को स्वस्थ रख सकता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन एवं मस्तिष्क का निवास होता है। अपने मन की पितृवृत्तियों ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करने एवं जीवन को स्वस्थ प्रसन्न एवं निरोगी बनाने में योग एक महत्वपूर्ण मार्ग है।

डॉ0 पुनीत पाठक जी का उद्‌बोधन–

अपने उद्‌बोधन का प्रारंभ पूर्णता मंत्र के साथ करके सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया और अपने ओजस्वी एवं मार्मिक उद्‌बोधन की शुरूआत करके सभी गणमान्यों का सादर और विनम्र अभिवादन किया। अपने उद्‌बोधन के प्रारंभ में ही डॉ0 पाठ ने बताया कि जीवन में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है समय। डॉ0 पुनीत पाठ ने योग की पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए एक प्रसंग के माध्यम से बताया कि किस प्रकार बिना एकाग्रता ओर तत्परता के आपको योग की प्राप्ति नहीं हो सकती है। योग से संबंधित सभी शोधार्थीयों को सम्बोधित करते हुए बताया कि हरिद्वार के सर्वानन्द घाट के स्वामी सर्वानन्द के व्यक्तित्व एवं इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि चित्त संकल्पों की गति संयुक्त करके जीवन की सभी गतियों मुक्त करके ही आत्मा की साधना करके ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। योग पर विस्तार से चर्चा करते हुए डॉ0 पाठ ने बताया कि शब्द में चार तत्व विद्यमान होते है, अर्थ (Meaning), अभिप्राय, भाव एवं तोल एवं आशय स्पष्ट करके

ही योग को साधा जा सकता है। भारत को योगभूमि के रूप में ही जाना जाता है। अपने धार्मिक और ओजस्वी उद्‌बोधन के दौरान विशिष्ट वक्ता डॉ0 पुनीत कुमार पाठ ने स्पष्ट रूप से इस विचार पर बल दिया कि भारत की संस्कृति एवं सभ्यता का अन्योन्माश्रित संबंध योग से प्राचीनकाल से ही रहा हैं योग और आयुर्वेद के नियमों का यथासंभव एवं उचित पालन ही इस युवा भारत को और भारतीय योग परम्परा को विश्व के स्वर्णिम स्तर पर स्थापित कर सकता है।

इस सत्र के मुख्य अतिथि पूज्य जगतगुरु शंकराचार्य राजराजेश्वर धाम जी महाराज का उद्‌बोधन–

सर्वप्रथम पूज्य महाराज ने ओम् के ध्वनि मंत्र के साथ सारगर्भित उच्चारण के साथ ही सम्पूर्ण प्रांगा में एक नव ऊर्जा का संचार किया। अपने ओजस्वी एवं धार्मिक उच्चारण के साथ–साथ ही सभी आकांक्षी श्रोताओं को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। अपने मुखारवृन्द से पूज्य जगतगुरू आचार्य जी से सेमिनार भवन में उपस्थित सभी श्रोताओं को जय श्रीराम के धार्मिक उद्‌बोधन करवाया और जयघोष भी कराया। आधुनिकता पर कयक्ष करत हुए परमपूज्य ने बताया कि परम सौभाग्य की बात है कि वर्तमान पीढ़ी जो वैज्ञानिक एवं आधुनिकता का पूर्ण प्रभाव है, उस समय में योग पर चर्चा का आधार यह संगोष्ठी अत्यंत प्रासंगिक है। पूज्य जगतगुरु ने बताया कि भारत योग का देश है, भोग का नहीं है। युवा पीढ़ी को लगने वाली नशे की आदत पर चर्चा करते हुए गुरुजी ने बताया कि आदमी नशा तब करता है, जब वह अपने वर्तमान स्थिति से संतुष्ट नहीं होता है। उसी संतुष्टि के लिए ही मनुष्य नशा करता है। योग के द्वारा स्वयं को आनन्द की प्राप्त है, मनुष्य समझता है कि हमें दूसरी वस्तु से आनंद मिल रहा है जबकि ऐसा नहीं है। उन्होंने बताया कि परम आनंद को प्राप्त करने का एक मार्ग और केवल एक मात्र साधन ही योग है। उन्होंने कहा कि हम विदेशी वस्तु को श्रेष्ठ मानते है जबकि स्वदेशी वस्तु को हम हीनतर दृष्टि से देखते है। मन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए परमपूज्म ने बताया कि सूक्ष्म का विराट में मिलने की प्रक्रिया ही योग है और सूक्ष्म का विराट में मिल जाना ही समाधि है। योग नितांत गुरू और शिष्य के बीच की क्रिया को करना ही योग है। आदरणीय गुरु जी ने बताया कि पुस्तकों को पढ़ने से योग नहीं आता,

बल्कि योगी की सत्संगति में रहकर ही योग को सीखा जा सकता है। वर्तमान परिस्थितियों एवं तात्कालिक परिस्थितियों पर आरोप लगाते हुए आदरणीय जगद्गुरु ने बताया कि मन को नियंत्रित कर आहार को शुद्ध करके जीवन यापन करना ही योग की प्रथम सीढ़ी है। योग को पूर्ण रूप से धारण एवं सीखने के लिए किसी योगाचार्य की शरण में जाकर आहार, व्यवहार एवं आचरण की शुद्धि करके ही पाया जाता है। योग को अपने जीवन में धारण करने एवं अपनाने पर बल देते हुए आदरणीय जगतगुरु ने बताया कि जिन तत्वों से अन्तःकरण की शुद्धि नहीं होती, उनका पूर्ण रूप से परित्याग करना चाहिए, क्योंकि यदि आहार शुद्ध एवं सात्विक होगा, तो ही हमारा व्यवहार शुद्ध एवं सात्विक होगा, तभी हमें पतंजलि योग दर्शन को सीखने में मदद मिलेगी।

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम–

सेमिनार के द्वितीय दिवस के समापन सत्र में ''योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में'' विषय पर लिखी गयी पुस्तक का विमोचन सभी मंचासीन अतिथियों एवं जगतगुरु शंकराचार्य के कर कमलों द्वारा किया गया। इस पुस्तक के सम्पादक चमनलाल महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के डॉ0 नीशू कुमार भाटी ने बताया कि इस पुस्तक में सेमिनार के दौरान प्राप्त प्राध्यापकों/अध्येताओं/शोधार्थियों के शोध पत्रों को शामिल किया गया है। यह भी आशा है कि यह पुस्तक इस संगोष्ठी के निष्कर्षों एवं योग के प्रचार–प्रसार में मील का पत्थर साबित होगी।

प्रबंध समिति के कोषाध्यक्ष के द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सर्वप्रथम मंचासीन मुख्य अतिथि परमपूज्य जगतगुरु शंकराचार्य महोदय, विशिष्ट अतिथि डॉ0 पुनीत पाठक जी, प्रमुख वक्ता, डॉ0 अरूण कुमार सिंह एवं वक्ता डॉ0 रविन्द्र कुमार जी, प्रवेश कुमार त्रिपाठी के साथ–साथ प्रबंध समिति के अध्यक्ष, पं0 रामकुमार शर्मा, सचिव, पं0 अरूण हरित, श्री संजय गिरि गोस्वामी के साथ ही मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों, गणमान्य आमंत्रित वक्ताओं, छात्र/छात्राओं/शोधार्थियों, पत्रकार बन्धुओं एवं अन्य सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी सम्मानित महानुभावों तथा महाविद्यालय के सभी सम्मानित प्राध्यापकों के साथ ही

साथ महाविद्यालय के सभी छात्र/छात्राओं का हृदय से आभार व्यक्त किया एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
Room No. 003, Old CRS Building
Jawaharlal Nehru University,
Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi-110067
Ph : 011-26741607, 26741610
E-mail : icssrnrc@gmail.com, www.nrc-icssr.org

उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
कमरा नंबर तीन, ओल्ड सी आर एस बिल्डिंग,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-११००६७

Dr. G.S. Saun
Hony. Director

F.No. NRC/SEM-CONF/2022-23 Dated: 17-03-2022

To

The Principal
Chamanlal Mahavidhayalya
Landhaura-Roorkee
Haridwar
(Uttarakhand)

SANCTION ORDER

Subject: Partial Assistance for organizing a Seminar entitled "भारतीय अर्थव्यवस्था में वस्तु एवं सेवा करः एक विश्लेषण" by Dr. Devpal, Assistant Professor, Department of Commerce, Chamanlal Mahavidhayalya, Landhaura, Haridwar to be held on 25th -26th March 2022.

Dear Sir,

Sanction of the Centre is hereby accorded for partial assistance of **Rs. 1,20,000/- (Rupees One Lakh Twenty Thousand Only)** to **Dr Devpal, Assistant Professor, Department of Commerce, Chamanlal Mahavidhayalya, Landhaura, Haridwar** to meet the expenditure on the above-mentioned seminar.

The grant should be utilized for the purpose for which it has been sanctioned. No part of the grant is to be utilized for publication of the proceedings of the seminar.

The amount of grant sanctioned herein is to be utilized in the stipulated period. Any amount of the grant remaining unspent shall be refunded to the ICSSR immediately after completion of the Seminar/Conference/Workshop. If the grantee fails to utilize the grant, the grantee will be required to refund the amount of the grant with interest thereon @ 10% per annum from date of its sanction.

In principle, Council reserves the right to send an observer to the seminar whose T.A. and D.A. would be borne by the ICSSR and local hospitality by the organizer.

The sanctioned amount will be released in two instalments as follows:

First instalment	:	Rs. 90,000/-
Second instalment	:	Rs. 30,000/-
Total	:	**Rs. 1,20,000/-**

The first instalment of Rs. 90,000/- will be released on receipt of a grant-in-aid bill (copy enclosed) duly stamped and signed by competent authority of the University/Institute. The second instalment of Rs. 30,000/- will be released on receipt of the following documents:

1. Two complete sets of papers presented in the seminar.
2. An audited statement of accounts for the expenditure incurred together with the utilization certificate of sanctioned amount.
3. A short summary of the proceedings of the seminar, highlighting the objectives, findings/recommendations and names of important participants and pictures of the seminar.
4. Two photographs for uploading on website of the Centre.

Yours sincerely,

(G.S. Saun)

Encl: Grant-in-Bill

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
Room No. 003, Old CRS Building,
Jawaharlal Nehru University,
Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi-110067
Ph : 011-26741607, 26741610
E-mail : icssrnrc@gmail.com, www.nrc-icssr.org

उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
कमरा नंबर तीन, ओल्ड सी आर एस बिल्डिंग,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, अरूणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-११००६७

Dr. G.S. Saun
Hony. Director

F.No. NRC/SEM-CONF/2022-23 Dated: 17-03-2022

To

The Principal
Chamanlal Mahavidhayalya
Landhaura-Roorkee
Haridwar
(Uttarakhand)

SANCTION ORDER

Subject: Partial Assistance for organizing a Seminar entitled "भारतीय अर्थव्यवस्था में वस्तु एवं सेवा करः एक विश्लेषण" by Dr. Devpal, Assistant Professor, Department of Commerce, Chamanlal Mahavidhayalya, Landhaura, Haridwar to be held on 25th -26th March 2022.

Dear Sir,

Sanction of the Centre is hereby accorded for partial assistance of **Rs. 1,20,000/- (Rupees One Lakh Twenty Thousand Only)** to **Dr Devpal, Assistant Professor, Department of Commerce, Chamanlal Mahavidhayalya, Landhaura, Haridwar** to meet the expenditure on the above-mentioned seminar.

The grant should be utilized for the purpose for which it has been sanctioned. No part of the grant is to be utilized for publication of the proceedings of the seminar.

The amount of grant sanctioned herein is to be utilized in the stipulated period. Any amount of the grant remaining unspent shall be refunded to the ICSSR immediately after completion of the Seminar/Conference/Workshop. If the grantee fails to utilize the grant, the grantee will be required to refund the amount of the grant with interest thereon @ 10% per annum from date of its sanction.

In principle, Council reserves the right to send an observer to the seminar whose T.A. and D.A. would be borne by the ICSSR and local hospitality by the organizer.

The sanctioned amount will be released in two instalments as follows:

First instalment	:	Rs. 90,000/-
Second instalment	:	Rs. 30,000/-
Total	:	**Rs. 1,20,000/-**

The first instalment of Rs. 90,000/- will be released on receipt of a grant-in-aid bill (copy enclosed) duly stamped and signed by competent authority of the University/Institute. The second instalment of Rs. 30,000/- will be released on receipt of the following documents:

1. Two complete sets of papers presented in the seminar.
2. An audited statement of accounts for the expenditure incurred together with the utilization certificate of sanctioned amount.
3. A short summary of the proceedings of the seminar, highlighting the objectives, findings/recommendations and names of important participants and pictures of the seminar.
4. Two photographs for uploading on website of the Centre.

Yours sincerely,

(G.S. Saun)

Encl: Grant-in-Bill

CC: Dr Devpal, Assistant Professor, Department of Commerce, Chamanlal Mahavidhayalya, Landhaura, Haridwar

(G.S. Saun)

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
NEW DELHI

GRANT-IN-AID BILL

Received a sum of Rs._____ (**Rupees** _____ **only**)

by NEFT/RTGs in favour of_____drawn

on Canara Bank, New Delhi, being the Grant-in-Aid for a Seminar on "_____

_____

towards the first instalment of the total grant-in-aid of Rs._____

(**Rupees** _____) sanctioned vide letter No.

_____dated _____ the Hony. Director, ICSSR

Northern Regional Centre, New Delhi

Please Affix.
Revenue Stamp

Signature of the Project Director

Certified that the Institute accepts all the terms and conditions governing the above grant and that it lends itself to abide by these.

Countersigned by the Administrative Head of the Institute.

Signature of the Head
(Affiliating Institute/University/College)
Designation with Seal

ICSSR NORTHERN REGIONAL CENTRE
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
NEW DELHI-110067

F.No._____ Dated:_____

Dear Sir/Madam,

As per the directives from the Government of India, all the payments above Rs. 5,000/- are to be made by issue of payment advices only. As you are aware, your institution has affiliation of ICSSR-NRC seminar/workshops/projects /study grants and receiving grants thereof for them From NRC. You are, therefore, requested to furnish the following information duly verified by your bankers for RTGS/NEFT payments:

1.	Name & Address of the Account Holder	
	Contact details: (Telephone & Email id)	
2.	Bank Account No.	
3.	Name & Address of Bank	
	Bank contact details (Telephone & Email id)	
4.	IFSC Code	
5.	PAN No.	
6.	TIN No.	
7.	GST No.	

Signature of the Administrative
Head of the Institution/authorized signatory
With stamp

Note: Please treat it as MOST URGENT. It will be appreciated if the scanned copy of this information is also sent through e-mail mentioned in the sanction order for quicker execution.

रिपोर्ट
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
''भारतीय अर्थव्यवस्था में माल और सेवा कर एक विश्लेषण''

डॉ0 देवपाल
संयोजक राष्ट्रीय
संगोष्ठी
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

आज दिनांक 7.09 2022 को चमन लाल महाविद्यालय में वाणिज्य विभाग व राजनीति विभाग द्वारा ''भारतीय अर्थव्यवस्था में वस्तु एवं सेवा करःएक विश्लेषण'' मे दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ प्रबंध समिति के अध्यक्ष पंडित राम कुमार शर्मा,प्राचार्य डॉ. सुशील उपाध्याय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रो०अतवीर सिंह यादव विशिष्ट वक्ता डॉ सुरजीत सिंह मुख्य वक्ता डॉ अनुराग शर्मा व संगोष्ठी के आयोजन सचिव डा नीशू भाटी, समन्वयक डॉ. देव पाल द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। दीप प्रज्वलन के साथ मां सरस्वती वंदना का गायन आकाश के सुमधुर आवाज में प्रस्तुत कर किया गया।तत्पश्चात् ''भारतीय अर्थव्यवस्था में वस्तु एवं सेवा करः एक विश्लेषण'' पुस्तक का विमोचन पं० ईश्वर चंद शर्मा,डा अनुराग शर्मा, प्रो अतवीर सिंह यादव, डा सुरजीत सिंह के कर कमलों से किया गया। सभी वक्ताओं ने बारी –बारी से संगोष्ठी के शीर्षक भारतीय अर्थव्यवस्था में वस्तु एवं सेवा कर एक विश्लेषण पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत कर सभी को विषय से सम्बंधित जानकारी देकर छात्र–छात्राओं को एक नयी दिशा प्रदान की। प्रबंधन समिति के अध्यक्ष पंडित राम कुमार शर्मा ने सभी वक्ताओ व संगोष्ठी के संचालक मंडल का आभार व्यक्त किया व भविष्य में भी ऐसे ज्वलंत मुद्दों पर संगोष्ठी कराने का आश्वासन भी दिया।ताकि भविष्य में आने वाली चुनौतियों के लिए समाज तैयार हो सके। प्राचार्य डॉ. सुशील कुमार ने अपने उद्बोधन में वस्तु एवं सेवा कर पर अपने वक्तव्य दिए और सभी आगंतुकों का स्वागत व आभार प्रकट किया। द्वितीय टेक्नीकल सत्र में डा अनुराग शर्मा व डा वीरेन्द्र कुमार गुप्ता ने जी०एस०टी० पर अपने विचार रख छात्र–छात्राओं के प्रश्नों के सरल से सरल शब्दों में जवाब दिये ।तत्पश्चात् विद्यार्थियों द्वारा अपने रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए गए। टेक्निकल सत्र के दौरान डा नीशू भाटी,डॉ देवपाल ,डॉ किरण डॉ अनुराग शर्मा डॉ० श्वेता डा मीरा चौरसिया इत्यादि सभी

शिक्षक व छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहे। मंच का संचालन डॉ तरूण ण गुप्ता व डॉ नवीन त्यागी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।वस्तु एवं सेवा कर/गुड्स एंड सर्विस टैक्स (जी0एस0टी0) के लागू होने से पहले, भारतीय कराधान प्रणाली केन्द्रीय, राज्य और स्थानीय क्षेत्र के करों का मिश्रण थी। जी0एस0टी0 के तहत एक से अधिक करों को समाहित करके अप्रत्यक्ष कर की एक सामंजस्यपूर्ण प्रणाली के लिए मार्ग प्रशस्त किया गया है जिससे भारत एक आर्थिक संघ बन गया है।

2003 में केन्द्र सरकार ने राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन पर एक कार्यबल का गठन किया जिसने 2004 में केन्द्रीय स्तर के वैट और राज्य स्तर की जगह सभी वस्तुओं और सेवाओं पर एक व्यापक कर शुरू करके मौजूदा कर व्यवस्था को बदलने के लिए माल और सेवा कर (जी0एस0टी0) की सिफारिश की। इसने सभी वस्तुओं और सेवाओं पर मूल्य वर्धित कर के साथ सीमा शुल्क को छोड़कर सभी अप्रत्यक्ष करों को बदलने की सिफारिश की।

कराधान की शक्ति संविधान की अनुसूची–VII के तहत विषय–वार संघ या राज्यों को सौंपी गई है। जबकि केन्द्र को उत्पादन या निर्माण चरण तक माल पर कर लगाने का अधिकार है, राज्यों के पास वितरण स्तर पर माल पर कर लगाने की शक्ति है। संघ अवशिष्ट शक्तियों का उपयोग करके सेवाओं पर कर लगा सकता है लेकिन राज्य ऐसा नहीं कर सकते। एक एकीकृत वस्तु और सेवा कर योजना के तहत दोनों के पास उत्पादन से वितरण तक और वस्तुओं और सेवाओं दोनों की पूरी आपूर्ति श्रृंखला पर कर लगाने की शक्ति होनी चाहिए। संविधान की योजना ने संघ के साथ–साथ राज्यों को किसी भी समवर्ती कर शक्तियों के लिए प्रदान नहीं किया और संविधान के माल और सेवा कर संशोधन को पेश करने के उद्देश्य से संसद के साथ–साथ राज्य विधानसभाओं को कानून बनाने के लिए एक साथ शक्ति प्रदान की। वस्तुओं या सेवाओं की आपूर्ति के प्रत्येक लेन–देन पर वस्तु एवं सेवा कर लगाना आवश्यक था।

जी0एस0टी0 माल या सेवाओं की आपूर्ति पर लागू होगा जबकि माल के निर्माण या माल की बिक्री या सेवाओं के प्रावधान पर कर की वर्तमान अवधारणा के विपरीत। इसमें निर्माण, बिक्री, वस्तु विनिमय, विनिमय, हस्तांतरण आदि जैसी सभी प्रकार की गतिविधियाँ शामिल हैं। इसमें बिना किसी प्रतिफल के की गई आपूर्ति भी शामिल है जब ऐसी आपूर्ति कुछ निर्दिष्ट स्थितियों में की जाती है।

भारत ने अपनी अनूठी संघीय प्रकृति के कारण दोहरे जी0एस0टी0 मॉडल को अपनाया है। इस मॉडल के तहत, केन्द्र के साथ–साथ राज्यों द्वारा समान आधार पर कर

लगाया जाता है, अर्थात वस्तुओं या सेवाओं की आपूर्ति या दोनों। केन्द्र द्वारा लगाए जाने वाले जी0एस0टी0 को केन्द्रीय जी0एस0टी0 (केन्द्रीय कर/ सी0जी0एस0टी0) कहा जाएगा और राज्यों द्वारा लगाए जाने वाले जी0एस0टी0 को राज्य जी0एस0टी0 (राज्य–कर/ एस0जी0एस0टी0) कहा जाएगा। राज्य जी0एस0टी0 (राज्य कर/एस0जी0एस0टी0) को विधायिका के बिना केन्द्र शासित प्रदेशों में यू0टी0जी0एस0टी0 (केन्द्र शासित प्रदेश कर) कहा जाएगा। सी0जी0एस0टी0 और एस0जी0एस0टी0/यू0टी0जी0एस0टी0 सभी कर योग्य इंट्रा–स्टेट आपूर्ति पर लगाया जाएगा।

वस्तुओं या सेवाओं की अंतर्राज्यीय आपूर्ति एकीकृत जी0एस0टी0 (एकीकृत कर/ आई0जी0एस0टी0) के अधीन होगी। IGST मॉडल वैट के क्षेत्र में भारत का

एक अनूठा योगदान है। IGST मॉडल की परिकल्पना है कि केन्द्र IGST (एकीकृ त माल और सेवा कर) लगाएगा जो कि माल या सेवाओं या दोनों की सभी अंतर–राज्यीय आपूर्ति पर CGST + + SGST होगा। अंतर–राज्यीय आपूर्तिकर्ता अपनी खरीद पर IGST, CGST और SGST के उपलब्ध क्रेडिट को समायोजित करने के बाद मूल्यवर्धन पर प्लैज का भुगतान करेगा। निर्यातक राज्य आई0जी0एस0टी0 के भुगतान में प्रयुक्त एसजीएसटी का क्रेडिट केन्द्र को हस्तांतरित करेगा। गंतव्य राज्य में स्थित व्यक्ति अपने राज्य में अपनी आउटपुट कर देयता का निर्वहन करते हुए IGST के क्रेडिट का दावा करेगा। केन्द्र एस0जी0एस0टी0 के भुगतान में प्रयुक्त आई0जी0एस0टी0 का क्रेडिट आयात करने वाले राज्य को हस्तांतरित करेगा।

माल और सेवा कर (राज्यों को मुआवजा) अधिनियम, 2017 में माल और सेवा कर के कार्यान्वयन के कारण होने वाले राजस्व के नुकसान के लिए राज्यों को मुआवजे का प्रावधान है। राज्य को एस0जी0एस0टी0 अधिनियम लागू होने की तारीख से पांच साल की अवधि के लिए मुआवजा प्रदान किया जाएगा। किसी भी वित्तीय वर्ष में मुआवजे की राशि की गणना के उद्देश्य से, वर्ष 2015–16 को संरक्षित होने वाले राजस्व की गणना के लिए आधार वर्ष माना जाएगा। पांच साल की अवधि के दौरान किसी राज्य के लिए राजस्व की वृद्धि दर 14% प्रति वर्ष मानी जाती है।

ई–वे (इलेक्ट्रॉनिक वे) बिल की शुरूआत पहले के विभागीय पुलिसिंग मॉडल से स्व–घोषणा मॉडल में एक महत्वपूर्ण बदलाव है। यह पूरे देश में माल की आवाजाही के लिए एक ई–वे बिल की परिकल्पना करता है, जिससे पूरे देश में ट्रांसपोर्टरों के लिए परेशानी मुक्त आवाजाही सुनिश्चित होती है। 01.04.2018 से माल की सभी अंतर–राज्यीय

आवाजाही के लिए ई–वे बिल प्रणाली राष्ट्रव्यापी शुरू की गई है। अंतर–राज्य आपूर्ति के संबंध में, राज्यों को 03.06.2018 को या उससे पहले किसी भी तारीख को चुनने का विकल्प दिया गया था। सभी राज्यों ने इंट्रा–स्टेट आपूर्ति के लिए ई–वे बिल नियमों को अधिसूचित किया है, जो अंतिम बार दिल्ली के एनसीटी थे, जहां इसे 01.04.2015 से पेश किया गया था। 16.06.2018। ई–वे बिल प्रणाली में नई विशेषताएं पेश की गई हैं जैसे ई–वे बिल के निर्माण के लिए पिन कोड के आधार पर दूरी की ऑटोमेटिक गणना और एक चालान के खिलाफ कई ई–वे बिलों के निर्माण को रोकना।

माल के आपूर्तिकर्ताओं के लिए पंजीकरण और जी0एस0टी0 के भुगतान से छूट के लिए कुल कारोबार की सीमा सीमा रुपये होगी। 40 लाख और 01.04. 2019 से 20 लाख (अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, पुडुचेरी, सिक्किम, तेलंगाना, त्रिपुरा और उत्तराखंड राज्यों के मामले में)। एक सामान्य सीमा छूट सी0जी0एस0टी0 और एस0जी0एस0टी0 दोनों पर लागू होती है। हालांकि, माल की अंतर–राज्य आपूर्ति में सीमा छूट का लाभ उपलब्ध नहीं वस्तु एवं सेवा कर नेटवर्क (जी0एस0टी0एन0) सरकार द्वारा कंपनी अधिनियम, 1956 की पूर्ववर्ती धारा 25 के तहत एक निजी कंपनी के रूप में स्थापित किया गया है। जी0एस0टी0एन0 करदाताओं को पंजीकरण, भुगतान और वापसी के लिए तीन फ्रंट एंड सेवाएं प्रदान करेगा। करदाताओं को ये सेवाएं प्रदान करने के अलावा, जी0एस0टी0एन0 27 राज्यों के लिए बैक–एंड आई0टी0 मॉड्यूल विकसित करेगा, जिन्होंने इसका विकल्प चुना है। इंफोसिस को मैनेज्ड सर्विस प्रोवाइडर

(MSP) के रूप में नियुक्त किया गया है। जी0एस0टी0एन0 ने 73 आईटी, आई0टी0ई0एस0 और वित्तीय प्रौद्योगिकी कंपनियों और वाणिज्यिक कर आयुक्त (सी0सी0टी0, कर्नाटक) का चयन किया है, जिन्हें जी0एस0टी0 सुविधा प्रदाता (जी0एस0पी0) कहा जाएगा।

विभिन्न क्षेत्रों को होने वाले लाभों के साथ जी0एस0टी0 का अर्थव्यवस्था पर गुणक प्रभाव पड़ेगा। कोई भी नया परिवर्तन शुरुआत में कठिनाइयों और समस्याओं के साथ होता है। जी0एस0टी0 जितना व्यापक बदलाव न केवल सरकार के लिए बल्कि व्यापारिक समुदाय, कर प्रशासन और यहां तक कि देश के आम नागरिकों के लिए भी कुछ चुनौतियां पेश करेगा। इनमें से कुछ चुनौतियाँ नई व्यवस्था और आईटी प्रणालियों के साथ अपरिचितता, कानूनी चुनौतियों, और सुलह, हस्तांतरण क्रेडिट को पारित करने से संबंधित हैं। मजबूत आईटी संरचना की कमी और सिस्टम में देरी से करदाताओं के

लिए अनुपालन मुश्किल हो जाता है।

संगोष्ठी में विमोचित पुस्तक चमन लाल डिग्री कॉलेज, लंढौरा, रुड़की (हरिद्वार) उत्तराखंड द्वारा आयोजित ''भारतीय अर्थव्यवस्था में माल और सेवा कर एक विश्लेषण'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुतकर्ताओं से प्राप्त पत्रों का परिणाम है। यह भारत में वस्तु एवं सेवा कर के विभिन्न पहलुओं पर गुणवत्तापूर्ण शोध पत्रों का एक बहुत अच्छा संग्रह है। विभिन्न आयामों– जी0एस0टी0 के कार्यान्वयन से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों पर एक सुसंगत और व्यापक तरीके से अनुभवजन्य साक्ष्य और साहित्य की मदद से गहन चर्चा की गई है। पुस्तक के रूप में संपादित शोध पत्रों का यह संग्रह उन शोधार्थियों और शिक्षकों के लिए बहुत उपयोगी होगा जो भारतीय अर्थव्यवस्था में वस्तु एवं सेवा कर के बारे में अपनी समझ को बढ़ाना चाहते हैं। शोध पत्रों के लेखकों ने जी0एस0टी0 से केन्द्र और राज्य सरकारों के राजस्व अनुपालन के रुझानों और पैटर्न को प्रभावी ढंग से और सक्षम रूप से सामान्यीकृत किया है। तार्किक निष्कर्ष और तर्कसंगत निष्कर्ष लेखकों द्वारा प्रभावी और कुशलता से पेश किए गए हैं।

सुनीता निरंकारी ने अपने शोध पत्र ''जी.एस.टी. का संक्षिप्त परिचय–एक अध्ययन" को प्रस्तुत करते हुए बताया कि जी०एस0टी0 व्यवस्था के अन्तर्गत केन्द्र एवं राज्यों के अनेक करों के एकीकरण तथा पूर्व में किए गए कर भुगतान की आई०टी०सी० मिलने के कारण यह जहां एक ओर करों के अध्यारोही (inflationary) प्रभाव को कम करेगी, वही दूसरी ओर इससे एकीकृत राष्ट्रीय बाजार (national uniform market) की भी स्थापना होगी। उपभोक्ताओं के लिए इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाभ करो के बोझ में कमी होगी, जो वर्तमान में लगभग 25–30 प्रतिशत संभावित है। इससे हमारे उत्पादों के राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धी होने की नी संभावना है तथा इससे आर्थिक वृद्धि होगी एवं कर आधार बढ़ने, व्यापार होगा कड बढ़ने व कर व्यवस्था के सरलीकृत होने के कारण केन्द्र एवं राज्यों के राजस्व में भी वृद्धि की संभावना है। पारदर्शिता के कारण इस कर प्रणाली को प्रशासित करना भी सरल होगा।

अरिवन्द कुमार सिंह द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र ''जी0एस0टी0कालीन उपबन्धो का एक ऐतिहासिक अध्ययन'' में बताया गया कि वर्तमान व्यवस्था से जी०एस०टी० में अन्तरित होने हेतु सरल प्रावधान बनाए गए हैं। वर्तमान में पंजीकृत व्यापारियों को छः माह के लिए वैध पंजीयन अली प्रमाण–पत्र प्रारम्भ में जारी किया जाएगा तथा अपेक्षित सूचनाएं प्राप्त करा देने पर इसे स्थायी कर दिया जाएगा। सेनवैट अथवा बैट से रिटर्न में लाई गई प्ज्ब का लाभ कुछ शर्तों के साथ अनुमन्य होगा। कैपिटल गुड्स पर सेनवेट क्रेडिट

जिसे रिटर्न में अग्रसारित न किया गया हो का लाभ भी कुछ शर्तों के अधीन लिया जा सकेगा।स्टाक के उपलब्ध इनपुट पर दी गई ड्यूटीज तथा करो का लाभ प्ज्ब् के रूप में कुछ शर्तो के अधीन दिया जाएगा। यह सुविधा समाधान से सामान्य के रूप में परिवर्तित हो रहे व्यापारी को भी उपलब्ध होगी।जी०एस०टी० लगने से पूर्व भेजा गया माल यदि जी०एस०टी० लगने के छ माह के अन्दर वापस आता है तो उस पर कोई करदेयता नही होगी। यही प्रक्रिया जाबवर्क अथवा अन्य संवर्धन प्रक्रिया हेतु भेजे गए माल हेतु भी होगी।पूर्व की विधि में अनिस्तारित रिफन्ड के आवेदन उसी विधि के अनुसार निस्तारित होगे तथा वापसी नगद में कुछ शर्तों के अधीन होगी। यही प्रक्रिया सेनवैट क्रेडिट/ITC क्रेडिट हेतु भी होगी।यदि किसी संव्यवहार पर कर का पूर्ण भुगतान जी०एस०टी० आने के पूर्व की विधि के अर्न्तगत हो चुका हो, तथा उस संव्यवहार का एक हिस्सा जी०एस०टी० लागू होने के बाद व्यवहरित किया जा रहा हो तो उस पर कोई करदेयता नहीं होगी।यदि जी०एस०टी० लगने से पूर्व स्वीकार करने हेतु भेजा गया कोई माल जी०एस०टी० लगने के बाद अस्वीकार कर छः माह के अन्दर जी. एस. टी. कई राज इतना वापस किया जाए तो उस पर कोई करदेयता नहीं होगी।

अलीगढ़ के दिवाकर मिश्रा ने ''जी.एस.टी. कांउसिल की परिस्थिति का एक मूल्यांकन'' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत करते हुये कहा कि ऐसे उपकर, कर एवं अधिभार जो जी०एस०टी० में सम्मिलित किए जाएगें। ऐसी वस्तुएं/सेवाएं जिन्हें जी०एस०टी० के अन्तर्गत अथवा करमुक्त रखा जाएगा।पेट्रोलियम एवं उसके उत्पादों पर जी०एस०टी० लागू किए जाने कीतिथि। मॉडल जी०एस०टी लॉ करारोपण के सिद्धांत तथा IGST कावितरण एवं आपूर्ति के स्थान के विनियमन सम्बन्धी सिद्धान्तः थ्रेशहोल्ड– वह सीमा जहाँ तक के जिसके नीचे के व्यापारियों को जी०एस०टी० से मुक्त रखा जाएगा। जी०एस०टी० में कर की दरे फलोर रेट एवं कर पद्धति, बैण्ड आदि। प्राकृतिक आपदाओं या दैवीय आपदाओं की स्थिति में अतिरिक्त संसाधन जुटाने हेतु कर की विशिष्ट दरों का निर्धारण। उत्तर पूर्वी राज्यो जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के लिए विशेष प्रावधान। जी०एस०टी० कांउसिल की स्थापना के द्वारा जी०एस०टी के विभिन्नआयामों में केन्द्र एवं राज्यों तथा राज्यों के बीच समरूपता सुनिश्चित हो सकेगी

डॉ0 देवपाल, असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ने शोध पत्र ''भारतीय अर्थव्यवस्था परवस्तु एवं सेवा कर के प्रभाव का अध्ययन'' का मूल्यांकन करते हुये अवगत कराया कि किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की मजबूती और कमजोरी उस देश की कर व्यवस्था पर निर्भर करती है, क्योंकि कराधान किसी भी देश के विकास का एक महत्त्वपूर्ण घटक होता है। कराधान से

प्राप्त राजस्व का उपयोग सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं, जैसे कि, बुनियादी ढाँचा, स्वच्छता, परिवहन एवं अन्य सामाजिक कल्याण के कार्यों, आदि में व्यय किया जाता है। भारत में तीन स्तरीय कर व्यवस्था है, अर्थात् कर केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों और स्थानीय प्रशासन, जैसे नगर–निगम, नगर पालिका, नगर क्षेत्र आदि द्वारा लगाये जाते हैं। भारत में बिना कानून के कोई कर नहीं लगाया जा सकता है। भारत का संविधान भारत में सभी कानून बनाने के अधिकारों का आधार एवं स्रोत है। अतः भारत में कर लगाने का अधिकार भी संविधान से ही प्राप्त हुआ है। संविधान ही केन्द्र और राज्यों के मध्य विभिन्न प्रकार के कर लगाने के अधिकार का आबण्टन करता है। इसके पश्चात् राज्य अपने अधिकार को स्थानीय प्रशासन को छोटे–छोटे कर लगाने के लिए भारार्पित करता है। इस प्रकार, करारोपण सभी सरकारों के लिए एक अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण कार्य हो जाता है।

भारत में करारोपण और करों की वसूली का कार्य विश्व के सभी देशों की तुलना में सबसे जटिल कार्य माना जाता है। भारत में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के कर लगाये तथा वसूल किये जाते हैं। करों के मामले में भारत में प्रत्येक राज्य, प्रत्येक स्थानीय प्रशासन स्वयं को स्वतन्त्र महसूस करता है और राजस्व के लिए मनमाना कर वसूल करती है।

भारत में एकीकरण की प्रवृत्ति में वस्तु और सेवा कर का महत्व

वस्तु एवं सेवा कर का इतिहास

सन् 2000 में तत्कालीन भा0ज0पा0 सरकार ने वस्तु एवं सेवा कर पर विचार हेतु असीमदास गुप्ता की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया। जिसमें केलकर समिति ने वैट सिद्धान्त पर आधारित वस्तु एवं सेवा कर का सुझाव 2003 में दिया था। वर्ष 2006–2007 के बजट में श्री पी0 चिदम्बरम ने वर्ष 2010 में वस्तु एवं सेवा कर लागू करने का प्रस्ताव रखा। अगस्त 2016 के आरम्भ में संविधान संशोधन (101वां संशोधन, अनुच्छेद 268क) विधेयक को संसद की मंजूरी मिली। सितम्बर 2016 के आखिर में सरकार द्वारा वस्तु एवं सेवा कर परिषद् का गठन हुआ और 01 जुलाई 2017 को 17 वर्षों के बाद भारत के ऐतिहासिक संघीय प्रत्यक्ष कर वस्तु एवं सेवा कर को सरकार द्वारा लागू किया गया। इसमें तत्कालीन वित्तमंत्री स्वर्गीय अरूण जेटली की भूमिका महत्वपूर्ण रही। वस्तु एवं सेवा कर को 01 जुलाई 2017 की मध्यरात्रि में (30 जून–01 जुलाई) महामहिम राष्ट्रपति स्वर्गीय प्रणव मुखर्जी और भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

द्वारा उठाया गया एक साहसिक कदम था। इसका अनुमोदन सदन के दोनों सदनों द्वारा सहर्ष स्वीकार किया गया था।

जी0एस0टी0 काउंसिल के सदस्य

अनुच्छेद 279क के तहत जी0एस0टी0 काउंसिल में कुल 33 सदस्य जिसमें 2 केन्द्र सरकार के मंत्री एवं 31 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के सदस्य होते हैं। इसमें भारत के वित्त मंत्री, वित्त राज्य मंत्री, राज्यों के मुख्यमंत्री/उप मुख्यमंत्री/राज्यों के वित्तमंत्री, केन्द्र शासित प्रदेशों के उप राज्यपालों के प्रतिनिधि इसके सदस्य होते हैं, जो समय–समय पर वस्तुओं पर लगने वाले करों की समीक्षा करते हैं। जिससे देश में महंगाई भी न बढ़ सके तथा राज्यों और केन्द्र को अधिक से अधिक आय भी प्राप्त हो, और विकास के लक्ष्यों का मार्ग प्रशस्त हो। जी0एस0टी0 परिषद् एक सर्वोच्च शासी निकाय है जो वस्तु और सेवा कर से सम्बन्धित किसी भी कानून को संशोधित कर सामाजस्य स्थापित करने और पूरा करने की उस पर जिम्मेदारी होती है।

वैट/मोडवैट समाप्त होने का कारण

मूल्य वर्धित कर (VAT) एक ऐसी कर प्रणाली थी जिसके अनुसार कर केवल उत्पादन प्रक्रिया में की गयी मूल्य वृद्धि पर ही नहीं लगाया जाता था। यह मूल्य वृद्धि उत्पादक व विक्रेता द्वारा की जाती थी। वैट कर प्रणाली के कई दोष होने के कारण जैसे लागू करने में कठिनाइयां, गणना सम्बन्धी कठिनाइयां, स्फीतिकारी प्रकृति, अधिक खर्चीला, मितव्ययी नहीं, करदाताओं के सहयोग के बिना लागू करना असम्भव, अविकसित देशों में क्रियान्वयन में कठिनाई आदि। वैट कर प्रणाली में राज्य और केन्द्र दोनों में असन्तोष था। इसका मुख्य कारण यदि किसी वस्तु पर 20% की कर की दर है तो उसमें केन्द्र की हिस्सेदारी 12% और राज्यों की हिस्सेदारी मात्र 8% थी। वैट की कमियें को दूर करने के लिए संशोधित मूल्य वर्धित कर (MODVAT) को अपनाया। यह कर प्रणाली मध्यवर्ती वस्तुओं पर कर समाप्त कर केवल निर्मित अन्तिम वस्तुओं पर लगाया। जिससे दौहरी करारोपण की सम्भावना समाप्त हो गयी और करो में अधिक पारदर्शिता और समय से कर जमा करने तथा कर चोरी रोकने, कर की गणना को सरल बनाने के लिए विजय केलकर समिति ने वस्तु एवं सेवा कर का सुझाव दिया और असम सरकार ने इसकी महत्वता को समझते हुए देश में सबसे पहले लागू किया।

डॉ0 शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग (चमोली) के सहायक आचार्य भरत लाल बैरवॉण ने अपने शोध पत्र ''भारतीय अर्थव्यवस्था पर वस्तु एंव सेवा कर (जीएसटी) का प्रभाव'' की प्रस्तुति करते हुए बताया कि वस्तु एंव सेवा कर

(जीएसटी) भारतीय अर्थव्यवस्था में एक बहुत बडा कर सुधार है। जीएसटी को अर्थव्यवस्था के प्रोत्साहन करने तथा भारत को एक साझा बाजार बनाने के उद्देश्य हेतु, 1 जुलाई 2017 को सम्पूर्ण भारत वर्श में लागु किया गया। वस्तु एंव सेवा कर सभी प्रकार के अप्रत्यक्ष करों को मिलाकर एक कर है, जिसका उद्देश्य देश में "एक कर एक बाजार और एक राष्ट्र' का निर्माण करना है।

केन्द्र सरकार द्वारा अलग–अलग सेवाओं के बदले अलग–अलग कर लगाये जाते थे, जैसे– केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अतिरिक्त उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क, सेवा कर आदि। इस प्रकार की जटिल कर संरचना होने से उत्पादकों के साथ–साथ उपभोक्ताओं के लिए भी समस्याऐं पैदा होती थी। जीएसटी काफी हद तक विभिन्न राज्यों में प्रशासनिक तंत्र और कर दरों की असमानता को समाप्त कर के उत्पादकों का बोझ कम कर देगा, जिससे उत्पादन कों बडावा मिलेगा और आर्थिक विकास की गति में तेजी देखने को मिलेगी।

जीएसटी से अर्थव्यस्था के विनिर्माण तथा सेवा क्षेत्र पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा, और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक इंजन के समान कार्य करेगा। अर्थव्यस्था में न्यूनतम छूटों और अधिकतम अनुपालन से एक सामान्य बाजार के निर्माण में लाभदायक सिद्ध होगा तथा राजस्व में वृद्धि के साथ–साथ सकल घरेलु उत्पाद में वृद्धि होगी।

कर किसी भी देश के आर्थिक विकास का एक प्रमुख घटक है। भारत में अप्रत्यक्ष कर केन्द्र सरकार राज्य सरकार और कुछ स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा वसुल किये जाते है। जिससे प्राप्त राजस्व को सार्वजनिक कार्यो में व्यय किया जाता है। वर्तमान में भारतीय अप्रत्यक्ष करों को एक साथ मिलाकर उसे वस्तु एंव सेवा कर (जीएसटी) का नाम दिया।

जीएसटी से आम उपभोग की अधिकांश आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में कमी आयी है। भारत सरकार ने जीएसटी को एक जुलाई 2017 से सम्पूर्ण देश में लागू कर। जीएसटी अप्रत्यक्ष करों का थैला है, जिसमें निम्न प्रमुख अप्रत्यक्ष करों को सम्मिलित किया गया है– बिक्री कर, वैट, मनोरंजन कर, सेवा कर कुछ आदि। जीएसटी का मुख्य उद्देश एक समान भारतीय बाजार निर्मित करके वस्तु एंव सेवाओं के मूल्यों पर कर के व्यापक प्रभाव को कम करके सभी राज्यों में वस्तुओं के मूल्यों में एक रूपता लाना है। जीएसटी ने पुरानी बाझिल कर प्रणाली को सुगम बनाकर सभी राज्यों की सीमाओ पर निर्बाध रूप से वस्तुओं के आगमन में सहायता देने कर अपवर्चन पर नियंत्रण रखने अनुपालन में सुधार करने राजस्व बढ़ाने आर्थिक विकास को प्रेरित करने तथा निवेश को बडावा देने जैसे को प्रोतसाहित किया।

प्रवीन, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, कमांद, टिहरी गढ़वाल ने अपने शोध पत्र ''वस्तु एंव सेवा कर का संवैधानिक व वैधानिक महत्व'' में बताया कि भारत में वस्तु सेवा कर जीएसटी को लागू किया जाना अप्रत्यक्ष कर सुधारों के क्षेत्र में एक अत्यन्त महत्वपुर्ण उपलब्धि मानी जा रही है। बडी संख्या में केन्द्रीय एंव राज्यों के अप्रत्यक्ष करों को मिलाकर उन्हे एकल कर अर्थात वस्तु एंव सेवा कर जीएसटी का रूप देने से करों की बहुतायत अथवा दोहरे कराधान की समस्या का समाधान बडे पैमाने पर हो जाएगा और इसके साथ ही ''एक समान राष्ट्रीय बाजार'' का मार्ग प्रशस्त हो गया है। वस्तु एंव सेवा कर का संवैधानिक व वैधानिक महत्व यह कि इसमे संघीय ढांचे को बनाए रखने के लिए जीएसटी दो स्तरो पर लगाने का प्रावधान किया गया है– सीजीएसटी (केन्द्रीय वस्तु एंव सेवा कर) और एसजीएसटी (राज्य वस्तु एंव सेवा कर)।

जीएसटी की अवधारणा का उद्भव– जीएसटी की अवधारणा सव्रप्रथम तत्कालीन केन्द्रीय वित मन्त्री पी. चिदम्बरम द्वारा 2007–08 के आम बजट में प्रस्तुत की गई और यह आशा की गई कि जीउसटी को 1अप्रैल 2010 से लागू किया जा सकेगा राज्यों मे वैट का स्वरूप तैयार करने वाले राज्यों के वित मन्त्रियों की उच्चधिकार प्राप्त समिति ईसी से आग्रह किया गया कि वह जीउसटी खाका (रोडमैप) और संरचना तैयार करे जीएसटी के विभिन्न पहुलओं का अध्ययन करने और विशेशकर रियायतों एंव न्यूनतम सीमा, सेवाओं के कराधान तथा अन्तर–राज्य आपूर्ति के कराधान तथा अन्तर–राज्य आपूर्ति के कराधान पर रिपोर्ट तैयार करने के उद्देश्य से राज्यों के साथ–साथ केन्द्र के भी प्रतिनिधियों वाले अधिकारियों के संयुक्त कार्यदलों का गठन किया गया था।

101वां संविधान संशोधन अधिनियम, 2016

कर राजस्व का वितरण 80 वे संशोधन अधिनियम 2000 तथा 101वां संशोधन अधिनियम 2016 द्वारा केन्द्र राज्य के बीच कर राजस्व बंटवारों की योजना पर व्यापक परिवर्तन किया गया।

101 वें संविधान संशोधन ने देश में करारोपण एंव कर प्रशासन की एक नई व्यवस्था शुरू की है वस्तु ऐव संशोधन द्वारा संसद एंव राज्य विधायिकाओं की वस्तु, सेवा अथवा दोनो की आपूर्ति के प्रत्येक लेनदेन मे जीएसटी लगाने सम्बन्धी कानून बनाने की शक्ति प्रदान की गई।

इन सभी के साथ–साथ अन्य मसलों का भी सुलढाने के उद्देश्य से संविधान संशोधन विधेयक 19 दिसम्बर, 2014 को 16वीं लोक सभा में पेश किया गया था इस विधेयक मे मालव के उपभोग वाली शाराब को छोड समस्त वस्तुओं अथवा सेवाओं की

आपूर्ति पर जीएसटी लगाने का प्रावधान किया गया है। यह कर अलग–अलग दोहरे जीएसटी रूप में लगाया जाएगा,लेकिन समवर्ती रूप में से केन्द्र (केन्द्रीय कर– सीजीएसटी) और राज्यों (विधायिका वाले केन्द्रशासित प्रदेशो दिल्ली और पुदुचेरी सहित) (राज्य–कर एसजीएसटी) विधायिका बगैर केन्द्रशासित प्रदेश (अंडमान एंव निकोबार द्वीप समूह, चंडीगढ, दमन एंव दीव, दादरा नागर हवेली, लक्ष्यदीप) केन्द्रशासित प्रदेश कर यूटीजीएसटी द्वारा लगाया जाएगा संसंद के पास वस्तुओं अथवा सेवाओं के अन्तर राज्य व्यापार या वाणिज्य आयात सहित पर जीएसटी एकीकृत कर आईजीएसटी लगाने करा विशिष्ट अधिकार होगा।

केन्द्र सरकार के पास तम्बाकू और तम्बाकू उत्पादों पर जीएसटी के अलावा उत्पाद शुल्क लगाने का अधिकार होगा जीएसटी परिषद् की सिॅारिश पर पांच विशिष्ट पेट्रोलियम उत्पादों अर्थात कच्चे तेल,हाई स्पीड डीजल,पेट्रोल एटीएफ और प्राकृतिक गैस की आपूर्ति पर टैक्स बाद की किसी तिथि से लगाया जाएगा।

वस्तु एंव सेवा कर परिषद्– जीएसटीसी को 12 सितम्बर 2016 से अधिसूचित किया गया है। जीएसटीसी को सचिवालय की और से सहायता सुनिश्चित की जा रही है।

परिषद् की स्थापना– 101 वें संशोधन अधिनियम 2016 ने देश मे एक नई कर प्रणाली का मार्ग प्रशस्त किया अर्थात वस्तु एंव सेवा कर जीएसटी इस प्रकार को सुगमता तथा कुशलता से प्रशाासित करने के लिए केन्द्र और राज्यों के बीच समन्वय एंव सहयोग की जरूरत है।

संशोधन द्वारा सविधान में एक नया अनुच्छेद 279ए जोडा गया हे यह अनुच्छेद राष्ट्रपति को एक आदेश के द्वारा जीएसटी बाउंसिल की स्थापना क लिए शक्तिमत करता है। इसी के अनुसार राट्रपति ने 2016 मे अपने आदेश द्वारा कांउसिल की स्थापना की।

जीएसटीसी की अब तक 13 बैठके हो चुकी है, जीएसटीसी द्वार लिए गए प्रमुख निर्णय निम्नलिखित है–

- न्यूनतम छूट सीमा : 20 लाख होगी, संविधान के अनुच्छेद 279ए मे वर्णित विशेश श्रेणी के राज्यों (असम, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश, नगालैंड त्रिपुरा, सिक्किम, जम्मू एंव कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, उत्तराखण्ड़) के लिए न्यूनतम छूट सीमा 10 लाख तय की गई है।

- क्र की चार दरें तथा 5 प्रतिशत, 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत और 28 प्रतिशत निर्धारित की गई है।
- केन्द्र अथवा राज्य सरकारों की मौजुदा कर प्रोत्साहन योजनाओं के सम्बन्धित सरकारें बजट के जरिए प्रतिपूर्ति करते हुए जारी रख सकती है।
- पांच कानूनो यथ सीजीएसटी कानून यूटीजीएसटी कानून, आईजीएसटी कानून एसजीएसटी और एसजीएसटी मुआवजा कानून की सिफारिश की गई है।

जीएसटी और केन्द्र राज्य वित्तीय सम्बन्ध– संविधान के भाग XII मे अनु0 268 से 293 तक केन्द्र–राज्य वित्तीय संबधो का प्रावधान किया गया है।

केन्द्र और राज्यों के राजकोशीय अधिकारों का स्पश्ट उल्लेख किया गया है और इस लिहाज से दोनों के क्षेत्राधिकार एक दूसरे से लगभग पूरी तरह भिन्न है भारतीय संविधान की सांतवी अनुसूची के अनुसार केन्द्र सरकार के पास वस्तुओं के उत्पादन (मानव के उपभोग वाली शराब, अफीम, मादक द्रव्य इत्यादि को छोडकर)पर टैक्स लगाने का अधिकार है जबकि राज्यों के पास वस्तुओं कह ब्रिकी परा टैक्स लगाने का अधिकार है अन्तर राज्य ब्रिकी की स्थिति में केन्द्र के पास केन्द्रीय ब्रिकी कर लगाने का अधिकार है लेकिन कर को मूल राज्य द्वारा वसूल किया जाता है।

वस्तु एंव सेवा कर पर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णयः केन्द्र और राज्यों के बीच विवादों का एक नया मुद्दा–

सर्वोच्च न्यायलय द्वारा भारत संघ बनाम मोहित मिनरल्स मामले मे वस्तु एंव सेवा कर के क्षेत्र में वस्तु एंव सेवा कर के क्षेत्र मे वस्तु कर के क्षेत्र में वस्तु एंव सेवा कर परिषद् की भूमिका के सन्दर्भ में दिए गए एक निर्णय से केन्द्र और राज्यों के बीच विवाद फिर से एक नए मोड पर पहुंच गय। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि केन्द्र और राज्यों को वस्तु एंव सेवा कर परिषद् की भूमिका के सन्दर्भ में दिए गए एक निर्णय से केन्द्र ओर राज्यों के बीच विवाद फिर से एक नए मोड पर पहुच गया। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि केन्द्र और राज्यों को वस्तु एंव सेवा कर परिषद् के सुझाव मानने के लिए बाध्य नहीं है। उच्चतम न्यायलय का यह आदेश तब लागू हुए 5 वर्ष पूरे होने जा रहे है, यह व्यवस्था जुलाई 2017 में लागू हुई थी। केन्द्र और राज्य सरकारों दोनों ने अपनी शक्तियां वस्तुओं और सेवकों पर कर लगाने की जा सकें। वस्तु एंव सेवा कर परिषद् की स्थिति पर कि राज्य शायद परिषद् के निर्णयों को लागु न करं बौर न्यायालय ने संवैधानिक स्थिति को ही दोहराया है अनु0 279ए में कहा गया कि वस्तु एंव सेवा कर

परिषद् केन्द्र ओर राज्यों को कर के विभिन्न पहुलओं के बारे मे अनुशंसाए कर सकती है।

पवनेश कुमार, शोधार्थी, इतिहास विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय ने अपने शोध–पत्र ''जी0एस0टी0 का संक्रमणकालीन उपबन्धो का एक अध्ययन'' का मूल्यांकन करते हुए कहा कि वर्तमान व्यवस्था से जी०एस०टी० में अन्तरित होने हेतु सरल प्रावधान बनाए गए हैं। वर्तमान में पंजीकृत व्यापारियों को छः माह के लिए वैध पंजीयन अली प्रमाण–पत्र प्रारम्भ में जारी किया जाएगा तथा अपेक्षित सूचनाएं प्राप्त करा देने पर इसे स्थायी कर दिया जाएगा।सेनवैट अथवा बैट से रिटर्न में लाई गई ITC का लाभ कुछ शर्तों के साथ अनुमन्य होगा। कैपिटल गुड्स पर सेनवेट क्रेडिट जिसे रिटर्न में अग्रसारित न किया गया हो का लाभ भी कुछ शर्तों के अधीन लिया जा सकेगा।स्टाक के उपलब्ध इनपुट पर दी गई ड्यूटीज तथा करो का लाभ प्ज्ब् के रूप में कुछ शर्तो के अधीन दिया जाएगा। यह सुविधा समाधान से सामान्य के रूप में परिवर्तित हो रहे व्यापारी को भी उपलब्ध होगी। जी०एस०टी० लगने से पूर्व भेजा गया माल यदि जी०एस०टी० लगने के छः माह के अन्दर वापस आता है तो उस पर कोई करदेयता नही होगी। यही प्रक्रिया जाबवर्क अथवा अन्य संवर्धन प्रक्रिया हेतु भेजे गए माल हेतु भी होगी।पूर्व की विधि में अनिस्तारित रिफन्ड के आवेदन उसी विधि के अनुसार निस्तारित होगे तथा वापसी नगद में कुछ शर्तों के अधीन होगी। यही प्रक्रिया सेनवैट क्रेडिट/ITC क्रेडिट हेतु भी होगी। यदि किसी संव्यवहार पर कर का पूर्ण भुगतान जी०एस०टी० आने के पूर्व की विधि के अन्तर्गत हो चुका हो, तथा उस संव्यवहार का एक हिस्सा जी०एस०टी० लागू होने के बाद व्यवहरित किया जा रहा हो तो उस पर कोई करदेयता नहीं होगी। यदि जी०एस०टी० लगने से पूर्व स्वीकार करने हेतु भेजा गया कोई माल जी०एस०टी० लगने के बाद अस्वीकार कर छः माह के अन्दर जी.एस.टी. कई राज इतना वापस किया जाए तो उस पर कोई करदेयता नहीं होगी।

''भारतीय अर्थव्यवस्था पर वस्तु एंव सेवा कर (जीएसटी)का प्रभाव'' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए भरत लाल बैरवॉण, सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग डॉ0 शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग (चमोली) ने कहा कि वस्तु एंव सेवा कर (जीएसटी) भारतीय अर्थव्यवस्था में एक बहुत बडा कर सुधार है। जीएसटी को अर्थव्यवस्था के प्रोत्साहन करने तथा भारत को एक साझा बाजार बनाने के उद्देश्य हेतु 1 जुलाई 2017 को सम्पूर्ण भारत वर्श में लागु किया गया। वस्तु एंव सेवा

कर सभी प्रकार के अप्रत्यक्ष करों को मिलाकर एक कर है, जिसका उद्देश्य देश में "एक कर एक बाजार और एक राष्ट्र' का निर्माण करना है।

केन्द्र सरकार द्वारा अलग–अलग सेवाओं के बदले अलग–अलग कर लगाये जाते थे, जैसे– केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अतिरिक्त उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क, सेवा कर आदि। इस प्रकार की जटिल कर संरचना होने से उत्पादकों के साथ–साथ उपभोक्ताओं के लिए भी समस्याऐ पैदा होती थी। जीएसटी काफी हद तक विभिन्न राज्यों में प्रशासनिक तंत्र और कर दरों की असमानता को समाप्त कर के उत्पादकों का बोझ कम कर देगा, जिससे उत्पादन कों बडावा मिलेगा और आर्थिक विकास की गति में तेजी देखने को मिलेगी।

जीएसटी से अर्थव्यस्था के विनिर्माण तथा सेवा क्षेत्र पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा, और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक इंजन के समान कार्य करेगा। अर्थव्यस्था में न्यूनतम छूटों और अधिकतम अनुपालन से एक सामान्य बाजार के निर्माण में लाभदायक सिद्ध होगा तथा राजस्व में वृद्धि के साथ–साथ सकल घरेलु उत्पाद में वृद्धि होगी।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
सितम्बर 2022
अर्थव्यवस्था में
IN INDIAN EC

दो दिवसीय राष्ट्रीय
7–8 सितम्बर
भारतीय अर्थव्य
ICE TAX

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
AN ANALYSIS

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
AN ANALYSIS

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
AN ANALYSIS

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
AN ANALYSIS

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
AND SERVICE TAX IN INDIAN ECONOMY:
AN ANALYSIS

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
7–8 सितम्बर 2022
भारतीय अर्थव्यवस्था में
वस्तु एवं सेवा कर : एक विश्लेषण
AN ANALYSIS

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
Room No. 003, Old CRS Building,
Jawaharlal Nehru University
Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi-110067
Ph : 011-26741607, 26741610
E-mail : icssrnrc@gmail.com, www.nrc-icssr.org

उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
कमरा नंबर तीन, ओल्ड सी आर एस बिल्डिंग,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, अरूणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-११००६७

Dr. G.S. Saun
Honorary Director

F. No.NRC-ICSSR/RP/NK/2021-22 Dated: 17-12-2021

Dr. Nishu Kumar
Assistant Professor
Department of political science
Charnan Lal Mahavidhyalya Landaura
Roorkee, Haridwar.

Subject: Award Letter

Dear Sir,

This has reference to your letter dated 20.07.2021 submitting a research project for financial assistance.

We are happy to inform you that NRC-ICSSR has considered the research project proposal entitled "'**विकलांग महिलाओं में मानसिक व शारीरिक रूप से बढती हुई सामाजिक उपेक्षा एवं असुरक्षा की भावना का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन उत्तराखंड राजय के विशेष संदर्भ में**" and approved a grant-in-aid of Rs. **1.00** Lakh with duration of **10 Months.**

Before formal sanction letter is issued, you are requested to submit required papers and communicate the probable date of commencement of the project.

First instalment i.e. 40% of total budget may be released through NEFT/RTGs after receiving the grant-in-aid dully filled in, stamped by the Project Director as well as the affiliating Institute/Organization.

Thanking you,

Yours sincerely,

(**G.S. Saun**)

ICSSR NORTHERN REGIONAL CENTRE
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
NEW DELHI-110067

F.No._____ Dated:_____

Dear Sir/Madam,

As per the directives from the Government of India, all the payments above Rs. 5,000/- are to be made by issue of payment advices only. As you are aware, your institution has affiliation of ICSSR-NRC seminar/workshops/projects /study grants and receiving grants thereof for them From NRC. You are, therefore, requested to furnish the following information duly verified by your bankers for RTGS/NEFT payments:

1.	Name & Address of the Account Holder	
	Contact details: (Telephone & Email Id)	
2.	Bank Account No.	
3.	Name & Address of Bank	
	Bank contact details (Telephone & Email id)	
4.	IFSC Code	
5.	PAN No.	
6.	TIN No.	
7.	GST No.	

Signature of the Administrative
Head of the Institution/authorized signatory
With stamp

Note: Please treat it as MOST URGENT. It will be appreciated if the scanned copy of this information is also sent through e-mail mentioned in the sanction order for quicker execution.

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
NEW DELHI

GRANT-IN-AID BILL

Received a sum of Rs._____ _____ (**Rupees** _____ **only**)

by NEFT/RTGs in favour of_____ drawn on

Canara Bank, New Delhi, being the Grant-in-Aid for a research project on

"_____

_____

towards the first instalment of the total grant-in-aid of Rs._____

(**Rupees** _____) sanctioned vide letter No.

_____ _____dated _____ the Hony. Director, ICSSR

Northern Regional Centre, New Delhi

Please Affix.
Revenue Stamp

Signature of the Project Director

Certified that the Institute accepts all the terms and conditions governing the above grant and that it lends itself to abide by these.

Countersigned by the Administrative Head of the Institute.

Signature of the Head
(Affiliating Institute/University/College)
Designation with Seal

NORTHERN REGIONAL CENTRE
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH
Room No. 005, Old CRS Building,
Jawaharlal Nehru University,
Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi-110067
Ph : 011-26741007, 26741510
E-mail : icssrnrc@gmail.com www.nrc.icssr.org

उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
कमरा नंबर तीन, ओल्ड सी आर एस बिल्डिंग,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-११००६७

Dr. G.S. Saun
Honorary Director

F. No.NRC-ICSSR/RP/NK/2021-22 Dated: 17-12-2021

Dr. Nishu Kumar
Assistant Professor
Department of political science
Charman Lal Mahavidhyalya Landaura
Roorkee, Haridwar.

Subject: Award Letter

Dear Sir,

This has reference to your letter dated 20.07.2021 submitting a research project for financial assistance.

We are happy to inform you that NRC-ICSSR has considered the research project proposal entitled "**"विकलांग महिलाओं में मानसिक व शारीरिक रूप से बढती हुई सामाजिक उपेक्षा एवं असुरक्षा की भावना का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन उत्तराखंड राजय के विशेष संदर्भ में"** and approved a grant-in-aid of Rs. **1.00 Lakh** with duration of **10 Months.**

Before formal sanction letter is issued, you are requested to submit required papers and communicate the probable date of commencement of the project.

First instalment i.e. 40% of total budget may be released through NEFT/RTGs after receiving the grant-in-aid dully filled in, stamped by the Project Director as well as the affiliating Institute/Organization.

Thanking you,

Yours sincerely,

(G.S. Saun)

CC: The Principal, Chaman Lal Mahavidhyalya Landaura, Roorkee, Haridwar

(G.S. Saun)

TWO DAYS
NATIONAL SEMINAR
On
INCREASING POPULATION IN INDIA:
PROBLEMS & CHALLENGES - A DISCUSSION
09-10 September, 2022

TWO DAYS
NATIONAL SEMINAR
On
INCREASING POPULATION IN INDIA:
PROBLEMS & CHALLENGES - A DISCUSSION
09-10 September, 2022

On
CHALLENGES - A DISCUSSIO
09-20 September, 2022

TWO DAYS
On
IN INDIA:

TWO DAYS
NATIONAL SEMINAR
On
INCREASING POPULATION IN INDIA:
PROBLEMS & CHALLENGES - A DISCUSSION
09-10 September, 2022
Sponsored by: Indian Council of Social Science Research, New Delhi
Organised by: Dept. of Economics & Dept. of Political Science
CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA
Landhaura, Roorkee, Haridwar (Uttarakhand)

TWO DAYS
NATIONAL SEMINAR
INCREASING POPULATION IN INDIA:
PROBLEMS & CHALLENGES - A DISCUSSION
09-10 September, 2022
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

TWO DAYS
NATIONAL SEMINAR
On
INCREASING POPULATION IN INDIA:
PROBLEMS & CHALLENGES - A DISCUSSION
भारत में जनसंख्या वृद्धि: समस्या एवं चुनौतियों पर एक विमर्श
09-10 September, 2022
Sponsored by: Indian Council of Social Science Research, New Delhi
Organized by: Dept. of Economics & Dept. of Political Science
CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA
Landhaura, Roorkee, Haridwar (Uttarakhand)

TWO DAYS
NATIONAL SEMINAR
On
INCREASING POPULATION IN INDIA:
PROBLEMS & CHALLENGES - A DISCUSSION
भारत में जनसंख्या वृद्धि: समस्या एवं चुनौतियों पर एक विमर्श
09-10 September, 2022
Sponsored by: Indian Council of Social Science Research, New Delhi
Organized by: Dept. of Economics & Dept. of Political Science
CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA
Landhaura, Roorkee, Haridwar (Uttarakhand)

IN INDIA:
DISCUSSION
एक विमर्श

TWO DAYS
NATIONAL SEMINAR
On
INCREASING POPULATION IN INDIA:
PROBLEMS & CHALLENGES - A DISCUSSION
भारत में जनसंख्या वृद्धि समस्या एवं चुनौतियों पर एक विमर्श
09-10 September, 2022
Sponsored by: Indian Council of Social Science Research, New Delhi
Organised by: Dept. of Economics & Dept. of Political Science
CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA
Landhaura, Roorkee, Haridwar (Uttarakhand)

TWO DAYS
NATIONAL SEMINAR
On
INCREASING POPULATION IN INDIA:
PROBLEMS & CHALLENGES - A DISCUSSION
09-10 September, 2022
Sponsored by: Indian Council of Social Science Research, New Delhi
Organized by: Dept. of Economics & Dept. of Political Science
CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA
Landhaura, Roorkee, Haridwar (Uttarakhand)

रिपोर्ट
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
"भारत में जनसंख्या वृद्धिः समस्या एवं चुनौतियों पर एक विमर्श"

डॉ0 विमल कांत
संयोजक राष्ट्रीय संगोष्ठी
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

चमन लाल महाविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा संयुक्त रुप से **''भारत में जनसंख्या वृद्धि समस्या एवं चुनौतियां एक विमर्श''** विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के प्रथम दिन वक्ताओं ने जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों एवं निराकरण के विषय में विचार विमर्श किये।

मुख्य वक्ता डॉ विजय रावत ने कहा कि जनसंख्या वृद्धि से अधिक बड़ी समस्या संसाधनों का प्रबंधन न कर पाना है। जनसंख्या वृद्धि इस बात की ओर संकेत करती है कि हम मृत्यु दर कम करने में सफल रहे हैं जो किसी भी देश के लिए एक अच्छा संकेत है। जनसंख्या नियंत्रण के लिए बहुत कड़े नियम भविष्य में वृद्ध जनसंख्या जैसी समस्याओं को जन्म देती है। इसीलिए जनसंख्या नियंत्रण के साथ हमें संसाधन प्रबंधन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

विशिष्ट अतिथि डॉ अमिता श्रीवास्तव ने जनसंख्या वृद्धि के कृषि और खाद्यान्न उपलब्धता पर प्रभाव पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि जनसंख्या वृद्धि के साथ कृषि भूमि की उपलब्धता निरंतर कम हो रही है जिसके कारण खाद्यान्न आवंटन प्रभावित हो रहा है। उन्होंने कहा कि जनसंख्या वृद्धि के सापेक्ष हमें भोजन की उपलब्धता बनाए रखने के लिए परिवहन लागत आदि का प्रबंधन करना होगा।

विशिष्ट वक्ता डॉ अनीता मोरल ने कहा कि जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि मानव सभ्यता के हर पक्ष को प्रभावित करती है। पर्यावरण असंतुलन आर्थिक समस्याएं और सामाजिक समस्याएं जनसंख्या वृद्धि की देन है। उन्होंने पर्यावरण पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव पर विस्तार से चर्चा की और बताया कि बढ़ती जनसंख्या पर्यावरण असंतुलन की स्थिति पैदा कर रही है जो किसी भी प्रकार हमारे लिए उचित नहीं है अतः हमें जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

महाविद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्ष राम कुमार शर्मा ने कहा कि वर्तमान स्थिति जनसंख्या वृद्धि की रोकथाम किया जाना बहुत आवश्यक है और इसके लिए सबसे

उपयुक्त उपाय शिक्षा को बढ़ावा देना है। शिक्षित व्यक्ति निश्चित रूप से जनसंख्या विस्फोट के दुष्परिणामों को जाने का और जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए मानसिक रूप से तैयार होगा।

प्राचार्य डॉक्टर सुशील उपाध्याय ने कहा कि जनसंख्या वृद्धि को केवल समस्या के रूप में देखना उचित नहीं है बल्कि यह है वैश्विक स्तर पर एक बड़ा बाजार दुनिया को प्रधान करती है। जिससे विश्व के अनेकों देश निवेश करने को बाध्य हो जाते हैं और विकास के नए रास्ते खुलते हैं।

इस संगोष्ठी में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं और मुद्दों पर सूक्ष्म और गहन विचार विमर्श होगा।

- भारत में जनसंख्या अपने विकराल रूप में तमाम संसाधनों को निगलती जा रही है किन्तु हम और हमारी सरकारें आज भी हाथ पर हाथ रखी बैठी है।
- हमारे संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा इतनी विशाल जनसंख्या की बुनियादी जरूरतें पूरी करने में ही स्वाहा हो जाती है।
- कैसे हम एक विकसित राष्ट्र बनने के सपने को मूर्त रूप दे सकेंगे।
- बढ़ती जनसंख्या पर्यावरण, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती नैतिक अवमूल्यन के लिए भी एक चुनौती है।
- जनसंख्या वृद्धि से उपजी समस्याएँ एवं भविष्यगत चिन्ताएँ।
- भारत में जनसंख्या वृद्धि एवं सामाजिक–सांस्कृतिक बदलाव।
- भारत में नगरीय एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि एवं जनसंख्या वृद्धि के कारक।
- जनसंख्या नियंत्रण के सरकारी प्रयास (नीतियां, समितियां आदि)

ऐसे तमाम पक्षों से सम्बन्धित वैचारिक एवं व्यवहारिक दृष्टिकोणों से भारत में जनसंख्या वृद्धि के तमाम स्वरूपों की समस्याओं एवं चुनौतियों का अवलोकन किया जाएगा। मुझे विश्वास है कि शोध एवं जिज्ञासा के इस मंच की समग्रता के मंथन से प्राप्त विमर्शीय निष्कर्ष भारत में जनसंख्या नियंत्रण एवं संतुलन के नए नीतिगत आयाम गढ़ेगा जिससे भारत में मानव जीवन को और अधिक बेहतर बनाने की परिस्थितियों का निर्माण सम्भव हो सकेगा। एक बार पुनः मैं सभी अतिथियों का महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत करता हूँ।

इस संबंध में हास्य कवि का हाथरसी की कुछ पक्तियाँ याद आती है–

यदि यही क्रम रहा बच्चों के उत्पादन का आगे चलकर कुछ सवाल आएंगे
बड़े–बड़े किंचित जगह मिले धरा पर नहीं मजबूरन हम तुम सोएगे खड़े–खड़े।

गहरा व्यंग्य

यह हमारे समय की विडम्बना को दिखाता है।

दो दिवसीय अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठी **''भारत में जनसंख्या वृद्विः समस्या एवं चुनौतियों पर एक विमर्श''** विषय पर अगले दो दिन गहन मंथन होगा।

पटना विश्वविद्यालय के अजय कुमार ने अपने शोध पत्र ''जनसंख्या गतिशील, विकास और पर्यावण'' में बताया कि जनसंख्या घनत्व किसी क्षेत्र के पर्यावरण को प्रभावित कर सकती है, ये पर्यावरण रूपांतरण, बदले मे क्षेत्र के जनसंख्या घनत्व को भी प्रभावित कर करते है। उदाहरण के तौर पर जहाँ मानव के क्रियाकलापों से भूमि ज्यादा क्षतिग्रस्त हुई है, सम्पूर्ण या कुछ लोगो को वह क्षेत्र छोड़ना पड़ सकता है। कुछ खोजों और प्रभावों के आधार पर यह बात स्पष्ट होती है रोमन–काल में सहारा मरूस्थल का विस्तार अधिक तीव्र गति से होता है। चूंकि मरूस्थल की सीमा पर स्थित छोटी–छोटी घासों वाली स्टेपी क्षेत्रो को पालतू भेड़ तथा बकरियों ने चर लिया। इसी तरह कुनियोजित सिंचाई के परिणामस्वरूप कुछ मरूस्थली प्रदेशों मे धरातल तत्वों की कठोर पपड़ी विकसित हो गई है। इससे भी मरुस्थलीय सीमाओं पर जनसंख्या मे ह्रास दृष्टिगत होता है। गत दो तीन दशकों से नगरीय क्षेत्रों में मोटरगाड़ियों से पैदा शोर मलिन बस्तियों तथा जातिगत–संघर्षों, सावर्जनिक शिक्षा मे ह्रास और रूप मानवीय कारकों के कारण बड़ी संख्या मे नगर निवासियों को उपनगरीय क्षेत्रों मे स्थानांतरित होने के लिए बाध्य होना पड़ा है। थोड़े मे नगरांतिक क्षेत्र मे परिवर्तित पारिस्थितिकी के कारण जनसंख्या घनत्व तथा जनसंख्या का प्रकार के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित कर दिया है।

सघन जनसंख्या के कारण पर्यावरण में काफी बदलाव होते है। यह सही है कि जब एक प्रदेश में अधिक संख्या मे लोग निवास करते है तो वहाँ का वातावरण पहले के समान नही रह सकता है। वास्तव मे इसीलिए मनुष्य जिस मात्रा मे अपने पर्यावरण मे परिवर्तन करता है, वही उसके जनसंख्या घनत्व को दर्शाता है। उदाहरणस्वरुप उद्योग प्रधान राष्ट्रों के वृहद् महानगरीय क्षेत्रों मे जहाँ पंजीभूत मानव–निवास पाया जाता है,उस नगरीय संस्कृति का प्रत्यक्ष एवं प्रतिकात्मक अवशिष्ट उसके चतुर्दिक क्षेत्र मे प्रवाहित होता रहता है।

अरविन्द कुमार सिंह, इतिहास विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ने अपने शोध पत्र ''बढ़ती जनसंख्या का भारत पर प्रभावों का एक ऐंतिहासिक अध्ययन'' को प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत में बढ़ती जनसंख्या की परेसानी आाज कितनी भयाभव है यह बात इन आंकड़ों से अच्छे से समझ में आएंगी कि 1951 से 2001 तक के मृत्यु दर को देखें तो पता चलता है कि जो पहले मृत्यु दर 28 प्रति हजार थी यानि कि हर साल हर एक हजार व्यक्तियों में से 28 की मृत्यु हो जाती थी वही धीरे धीरे घटकर 9 प्रति हजार हो गयी इससे हुआ यह कि 1961 में जो लोग औसतन 46 वर्ष ही जीते थे 1981 आतेआते लोग औसतन 54 वर्ष जीने लगे जो कि 2001 में 65 वर्ष हो गयी और 2011 की बात करें तो अब लोग औसतन 69 साल जी रहे है। अब पहले ही इतने बच्चे पैदा हो रहे हैं और ऊपर से जो जिंदा है वो भी जल्दी मरने को तैयार नहीं है तो ऐसे में जनसंख्या कैसे नहीं बढ़ेगा। अशिक्षा, निम्न आय एवं निम्न जीवन स्तर Illiteracy low income and low standard of living जो लोग अशिक्षित है उसे भला क्या पता कि परिवार नियोजन क्या होता है। वह अक्सर रूढ़िवादी विचारधाराओं को मानते है। वृद्धि करने में अपना अमूल्य योगदान देते है। तो यह वो कुछ वजहै जिसके कि हमारे देश की जनसंख्या इतनी बढ़ी है। अब हम इस शोध पत्र में जानने कि कोशिश करेंगे कि जनसंख्या वृद्धि से होता क्या है।

प्रो० डॉ श्री भगवान सिंह, विभागाध्यक्ष दर्शन शास्त्र विभाग, राम नगीना सिंह कॉलेज, मनेर, पटना ने अपने शोध पत्र के मूल्यांकन करते हुए अवगत कराया कि भारत में जनसंख्या पर्यावरण का प्रारम्भ काफी देर से यानि बीसवीं सदी के छठे दशक के प्रारम्भिक वर्षों मे हुआ। फिर भी यदि इसमे हुए शोधकार्य की गुणवता व मात्र को ध्यान में रखा जाए तो ऐसा कहना गलत नही होगा। 40 वर्षों की अल्प अवस्था मे इसने महत्वपूर्ण प्रगति की है। भारत मे जनसंख्या की समस्या होते हुए भी जनसंख्या पर्यावरण का प्रारंभ नही हो पाया। यहाँ पर जनसंख्या पर्यावरण का ढाँचा सर्वप्रथम मालथस ने अपने डॉक्टरेट थीसिस में दिया, जिसे उन्होंने द्रिवाथां के मार्गदर्शन मे पूर्ण किया था। इस प्रकार भारत में जनसंख्या पर्यावरण के विकास पर भी दिवार्थी की छाप समझ मे आती है।

भारत में जनसंख्या पर्यावरण का दर्शन पर्यावरण के समान्य दर्शन के अनुरूप हो रहा है। जैसा कि सभी जानते है कि भौगोलिक विश्लेषण मे क्षेत्रीय प्रारूप पर बल दिया जाता है। इसी प्रकार भारत मे जनसंख्या पर्यावरण को अध्ययन मे भी क्षेत्रिय प्रारूप पर अधिक बल दिया गया है। मुख्यतरू यहाँ जनसांख्यिकीय कारकों के विश्लेषण मे क्षेत्रीय वितरण, क्षेत्रीय सम्बंध व क्षेत्रीय अंतरू क्रियाओं का बाहुल्य रहा है, इस प्रकार भारत मे

जनसंख्या के अध्ययन मे क्रमबद्ध उपगमन विधा के मुख्य आधार माना गया है। पर यदि भारतीय जनसंख्या पर्यावरणवेताओं के शोध कार्य पर एक नजर डाली जाये तो यह स्पष्ट है कि जनसंख्या विश्लेषण को भी किसी क्षेत्र के सम्यक तथ्यों से जोड़ने की दिशा मे अभी बहुत कार्य करना बाकी है। भारत मे जनसंख्या पर्यावरण के विकास के लिए पर्यावरण की इस शाखा को अपनी सैद्धांतिक रूपरेखा तथा क्रिया–पद्धति को विकसित करना होगा। यघपि विगत 40 वर्षों मे यहाँ के पर्यावरणविदो ने जो प्रशंसनीय कार्य किया है फिर भी विधिगत व संकल्पनात्मक क्षेत्र मे विकास की अत्यंत आवश्यकता है। यह संतोषजनक है कि ऐसे सैद्धांतिक विकास के लिए आवश्यक अर्थतल का प्रसार भारत मे हो चुका है। भारत मे आमतौर पर जनसंख्या के विभिन्न लक्षणों के वितरण को दर्शाने के लिए उनके मानचित्र बनाये गये और उनके क्षेत्रीय प्रारूप का विश्लेषण किया गया। ऐसे मानचित्रों ने प्रतिरूपों की व्याख्या क्षेत्र के भौतिक व सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य मे की गयी। इस प्रकार विभिन्न विद्वानो ने अपने अपने ढंग से भौतिक या सांस्कृतिक रूप से जनसंख्या और पर्यावरण की घटको पर बल दिया जिसके कारण कभी तो ऐसा प्रतित हुआ कि जनसंख्या के विश्लेषण मे भौतिक घटको का कोई महत्व नही तो कभी ऐसा कि सांस्कृतिक घटक इतने महत्वपूर्ण नहीं।

अलीगढ़ से आए दिवाकर मिश्रा ने अपने शोध पत्र ''भारत में बढ़ती जनसंख्या की समस्या का एक ऐतिहासिक अध्ययन'' में कहा कि भारत में जनसंख्या वृद्धि का सामान्य क्रम यह है कि हर पीढ़ी में वह दुगुनी होती रहती है इस क्रम में सन् 1930–32 में भारत की आबादी 60 करोड़ थी, आज यह 140 करोड से अधिक हो गई हैआज का समाज भौतिक क्षेत्र में विकास कर रहा है जीवनक्रम द्रुतगति से बदलता जा रहा है प्राकृतिक साधनों का भी अधिकाधिक उपयोग हो रहा है, फिर भी जनसंख्या का संतुलन और उस पर नियंत्रण नहीं हो पा रहा है। अर्थशास्त्र के नियमानुसार, जीवनस्तर के निम्न होने पर जनसंख्या बढ़ती है। भारत शायद इसी दरिद्रता का शिकार बना हुआ हैजनसंख्या की वृद्धि की समस्या अन्य अनेक समस्याओं को पैदा करती है। प्रतिवर्ष उत्पादित खाद्यान्न अपर्याप्त हो जाता है और जो है, वह महँगा हो जाता है। इसी हिसाब से अन्य उपयोगी वस्तुओं के दाम भी बढ़ते हैं। सरकार के पास काम की कमी हो जाती है, अतः बेकारी भी बढ़ती जाती हैवैज्ञानिक प्रगति के कारण पूँजीवादी अथवा साम्राज्यवादी आधिपत्य मानव–श्रम को दिन–प्रतिदिन उपेक्षित करता जा रहा है। ऐसी स्थिति में की स्थिरता आज की अनिवार्य माँग बन गई है। इसके लिए पाश्चात्य देशों में परिवार–नियोजन के अनेक तरीके अपनाए जाते हैं:

डॉ0 चन्द्रप्रभा कण्डवाल, असिस्टेंट प्रोफेसर (भूगोल विभाग), रा0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल ने शोध पत्र ''बढ़ती जनसंख्या और पर्यावरण'' में बताया कि मानव जनसंख्या एवं पर्यावरण के मध्य जटिल अन्तर सम्बन्ध पाये जाते है। मानव पर्यावरण को न केवल आवास के रूप में उपयोग करती है। बल्कि अपने विभिन्न क्रियाकलापों से प्राकृतिक भू–दृश्यों को भी परिवर्तित करती है। प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण के घटक तत्व परस्पर अन्तः क्रिया द्वारा विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में जनांकिकीस प्रतिरूपों का निर्माण करते हैं, और पर्यावरण की क्रियात्मकता एवं गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। अतः जनसंख्या दबाव पर्यावरण को प्रभावित करती है, जिससे पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो जाता है। बिगड़ते पर्यावरण का प्रमुख कारण द्रुतगति से बढ़ती जनसंख्या है।

अतः पर्यावरण एवं मानव जनसंख्या के बेहतर तालमेल की आवश्यकता है, जिसके द्वारा प्रौद्योगिक विकास राज्य विषमताओं का निराकरण किया जाय।

उद्देश्य–

जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण का मुख्य उद्देश्य–पर्यावरण एवं जनसंख्या के अन्तर सम्बन्ध को स्पष्ट करना, जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण पर विश्लेषण प्रस्तुत करना।

आज आवश्यकता है कि बढ़ती जनसंख्या पर कारगर रोक लगायी जाए ताकि वर्तमान एवं भविष्य में आने वाली मानव पीढ़ियों को स्वस्थ पर्यावरण में जीवन व्यतीत करने का अवसर मिल सकें।

बढ़ती जनसंख्या के कारण पर्यावरण पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। इसके कारण जंगल पर आबादी का अधिक बोझ बढ़ा है। जैव विविधता को बनाए रखने के लिए जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण जरूरी है। वन अधिकार अधिनियम की समीक्षा होनी चाहिए, यह पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जरूरी है। लोगों की जरूरत पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधन का दोहन कम से कम हो। इसके साथ ही सरकार को चाहिए कि जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर कितना कुप्रभाव पड़ रहा है या पड़ने वाला है। इस पर भारत सरकार समय–समय पर समीक्षा करें।

जनसंख्या पर नियंत्रण जरूरी हैं लेकिन प्राकृतिक तरीके से नियंत्रण होने चाहिए ताकि कोई दुष्टप्रभाव न हो। बढ़ती जनसंख्या से कई समस्या आ रही है। प्राकृतिक संससाधन का दोहन हो रहा है। सरकार को चाहिए इसके लिए योजना बनना चाहिए। इसके साथ ही बेरोजगारों के लिए भी योजना बनाकर उसे रोजगार चाहिए।

डॉ0 देवपाल असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ने अपने शोध जिसका शीर्षक ''भारत केआर्थिक विकासपर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव'' का मूल्यांकन करते हुए बताया कि जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास सहसंबद्ध कारक हैं, पिछले 30 वर्षों में दुनिया की जनसंख्या प्रति व्यक्ति आय, लोगों के जीवन स्तर और शहरीकरण के समान तरीके से दोगुनी हो गई है, और प्रौद्योगिकी की प्रगति भी उसी गति से बढ़ी है। किसी देश के आर्थिक विकास पर जनसंख्या का सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, यह पूरी तरह से देश पर आधारित है कि वे उस जनसंख्या को लाभप्रद या गैर–लाभकारी कारक के रूप में कैसे उपयोग करते हैं। पूरी दुनिया में चीन की आबादी सबसे ज्यादा है लेकिन इसकी आर्थिक विकास दर भी अच्छी तरह से संतुलित है क्योंकि वे मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या का उपयोग करते हैं जो उनके लिए बहुत उपयोगी हैभारत की जनसंख्या विश्व की कुल जनसंख्या का 18 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करती है, जिसका अर्थ है कि पृथ्वी पर प्रत्येक 6 व्यक्तियों में से एक व्यक्ति भारत का निवासी है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है और माना जाता है कि आने वाले वर्षों में चीन की आबादी को पार कर जाएगा। भारत की जनसंख्या वृद्धि दर 2021 में 0.99 प्रतिशत के साथ दुनिया में 112 वें स्थान पर थी। भारत की 50प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 25 वर्ष से कम और 65प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष की आयु से नीचे है। जनसंख्या आर्थिक विकास के साधन के साथ–साथ साध्य भी हैं। यदि पर्याप्त शक्ति में हैं तो वे एक परिसंपत्ति हैं और अधिक शक्ति होने पर एक दायित्व साबित होते हैं। भारत में जनसंख्या सन्तुलित सीमा (व्चजपउनउ सपउपज) को पार कर गई है और एक दायित्व बन गई है। अतः भारत में जनसंख्या विस्फोट की समस्या आर्थिक नियोजन एवं विकास की सफलता में एक बड़ी बाधा सिद्ध हो रही है। 2001 की जनगणना के अनुसार, उत्तर प्रदेश भारत में सबसे अधिक आबादी वाला राज्य है, जिसमें कुल 166 मिलियन लोग रहते हैं। जबकि दूसरी ओर, सिक्किम में सबसे कम आबादी 0.5 मिलियन है और लक्षद्वीप में केवल 60000 लोग निवास करते हैं। इसके अलावा, भारत की लगभग आधी आबादी पांच प्रमुख राज्यों– उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश में निवास करती है। हालांकि राजस्थान आकार में सबसे बड़ा राज्य है, लेकिन इसकी जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या का केवल 5.5 प्रतिशत है। हालांकि अधिक जनसंख्या ने जीडीपी को प्रभावित नहीं किया है और पिछले दो दशकों से भारत की जीडीपी बहुत तेजी से बढ़ी है। भारत अब सकल घरेलू उत्पाद (ळक्च्) 2.94 ट्रिलियनडॉलर के साथ छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, लेकिन जनसंख्या विस्फोट के कारण यह अभी भी प्रति व्यक्ति आय के मामले में 128 वें और एचडीआई के

मामले में 131 वें स्थान पर है। जनसंख्या विस्फोट जीवन स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। अधिक जनसंख्या बेरोजगारी, भोजन की कमी, निम्न प्रति व्यक्ति आय, पूंजी निर्माण की समस्या, उच्च दबाव, सामाजिक समस्याएं, आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक असुरक्षा, भूमि पर दबाव और पर्यावरण क्षरण जैसी समस्याएं पैदा करती है। भारत की आर्थिक विकास योजना और जनसंख्या में परिवर्तन से बहुत अधिक प्रभावित है। भारत अपने बढ़ते मानव संसाधन और प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधनों के साथ अभी भी एक विकासशील देश माना जाता है। भारत अभी भी बढ़ती हुई जनसंख्या के कल्याण के लिए अपने प्राकृतिक संसाधनों का पर्याप्त रूप से उपयोग करने की स्थिति में नहीं है। अपर्याप्त आवास, खराब चिकित्सा देखभाल और कुपोषण के कारण भारत में गरीबी काफी हद तक व्याप्त है। भारत में आज भी कई गांवों में बिजली की कमी, आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए अपर्याप्त भोजन और बहुत कम स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा सुविधाओं की कमी हैं।

राजकीय महाविद्यालय भूपतवाला, हरिद्वार के डॉ0 भगवती प्रसाद पुरोहित ने अपने शोध पत्र ''भारत में जनसंख्या विस्फोट और बहुमत की राजनीति'' में कहा कि भारत में जनसंख्या विस्फोट का मूल भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में अन्तर्निहित है। भारत की वर्तमान संवैधानिक और राजनीतिक व्यवस्था का निर्धारण ब्रिटिश पार्लियामेन्ट द्वारा 18 जुलाई 1947 को 'इण्डियन इंडिपेंडेंस एक्ट 1947' के द्वारा हुआ। इस एक्ट द्वारा 1935 के भारत सरकार अधिनियम को संविधान मानकर देश को प्रशासनिक और संवैधानिक स्वरूप दिया गया जो आज तक विद्यमान है। वास्तव में ब्रिटिसर्स द्वारा भारत में जिस प्रशासनिक तंत्र को स्थापित किया गया था, उसका लक्ष्य था– औपनिवेशिक लूट को वैधता प्रदान कर कानूनी संरक्षण प्रदान करना, ताकि लूट बरकरार रह सके।

इस तंत्र को 1947 के इंडिया इंडिपेंडेंट एक्ट द्वारा 1935 के अधिनियम को संविधान मानने के लिए उपबन्धित किया गया। इससे भारत में लोकतंत्र की जगह लूटतंत्र और प्रशासनिक एवं संवैधानिक विवेक की जगह भीड़तंत्र हावी हो गया। बड़ी होशियारी से औपनिवेशिक लूटतंत्र को लोकतंत्र का नाम दिया गया और औपनिवेशिक तंत्र समर्थक भारतीयों को सत्ता हस्तान्तरित कर दी गयी। इस लूट के मुखौटे को लोकतंत्र के रूप में प्रस्तुत करने के लिए चुनावों को वैधता प्राप्त करने का माध्यम बनाया गया। चुनाव जीतने के लिए बहुमत की जरूरत होती है और बहुमत के लिए भीड़ आपके पक्ष में हो, यह जरूरी है। यही कारण है कि भीड़ को जुटाना और अपने पक्ष में करना आज राजनीतिक दलों की सत्ता प्राप्ति का मुख्य लक्ष्य बन गया है, जो कि भारत में जनसंख्या विस्फोट का मुख्य कारण है।

विद्यमान राजनीतिक व्यवस्था में सत्ता को वैधता प्राप्त करने के लिए जन समर्थन की आवश्यकता होती है और यह जनसमर्थन उसे गुणात्मक नहीं चाहिए, बल्कि मात्रात्मक चाहिए। मात्रात्मक जन समर्थन हमेशा भीड़ पर आधारित होता है। भीड़ का अपना कोई विवेक नहीं होता। भीड़तंत्र से आप राजनीतिक विवेक की अपेक्षा नहीं कर सकते और ऐसी भीड़ का प्रयोग भारत में सत्ता, वैधता प्राप्त करने के लिए करती है। भीड़ ने आपको वैधता दे दी तब आप सर्व शक्तिमान हो जाते हैं, जिसके हाथ में भीड़ सत्ता सौंप देती है, वह प्रायः निरंकुश हो जाता है। भीड़ द्वारा प्रदत्त राजनीतिक वैधता लूटतंत्र में परिवर्तित हो जाती है। यह लूटतंत्र प्रकारन्त से सर्वाधिकारवादी शासन तंत्र की स्थापना करता है। इसीलिए भारत में जो सरकारें 5 साल के लिए सत्ता में आती हैं, वे सब मनमर्जी या गैर लोकतांत्रिक तरीके से काम करती हैं और जब जनता के बीच उन जनविरोधी कामों को स्वीकृत नहीं मिलती, उनका विरोध होता है, तब सरकारें प्रायः इस बात की दुहाई देती हैं कि वह तो पांच साल के लिए चुन कर आये हैं, जनता ने उन्हें मैन्डेट दिया है। यही लूट और बेईमानी हो छुपाने का असली नकाब है, जिसको भारत में लोकतंत्र का नाम दिया गया है। वास्तव में यह औपनिवेशिक लूटतंत्र है, जिसको भीड़तंत्र के द्वारा वैधता प्राप्त हो रही है।

अब असली सवाल भीड़ तंत्र पर कब्जा करने का है। सवाल यह है की भीड़ तंत्र पर कौन, कब, और कैसे कब्जा करता है? यही भारत में सत्ता प्राप्त करने की कला है। वरना सैद्धान्तिक रूप से यहां राजनीतिक दलों में विचारधारा या कार्यक्रम के स्तर पर कोई अन्तर नहीं है, जो व्यक्ति आज एक पार्टी में है, वह चुनाव जीतकर या चुनाव जीतने से पहले रातों–रात कब दल– बदल ले, कोई नहीं जानता। यही लोकतंत्र का सत्य है। बस सत्ता प्राप्त करना एकमात्र लक्ष्य है। सत्ता कैसे प्राप्त हो यही एकमात्र रणनीति है। योग्यता इस बात की चाहिए कि वह भीड़ कैसे इकट्ठा कर सकता है, कैसे ताली बजवा सकता है, कैसे वाहवाही प्राप्त कर सकता है, कैसे भीड़ को उत्तेजित कर अपने इशारों पर नचा सकता है, कैसे वह भीड़ में विपक्षी के विरुद्ध उन्माद पैदा कर सकता है। इसके लिए जाति, धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र, भाषा, की कोई मर्यादा नहीं, यहां तक कि नेता देश और सामाजिक मर्यादा को भी तार–तार कर दे रहे हैं, देश और समाज को तोड़ने का काम जितना भारतीय राजनेताओं ने किया है, उतना किसी दूसरे देश ने नहीं, इसकी अन्य कोई मिसाल नहीं है।

क्योंकि लक्ष्य है– भीड़ को अपने पक्ष में करना, जो भीड़ को बरगला कर अपने पक्ष में कर दे वह उतना बड़ा जनप्रतिनिधि बन जाता है। यहां जनप्रतिनिधि और कोई दूसरी योग्यता नहीं होती, यही लोकतंत्र कि भारत में वास्तविकता है। इसीलिए प्रायः

देखा जाता है– अनपढ़, अपराधी, भ्रष्ट, झूठे, बेईमान और बदमाश लोग भी चुनाव जीतकर माननीय जनप्रतिनिधि बन जाते हैं। इनको जनप्रतिनिधि बनाती है– विवेकहीन भीड़, इसीलिए नेताओं को भारत में सत्ता प्राप्त करने की गारंटी भीड़ है। जब तक भीड़ आपके कब्जे में है, आप शहंशाह हैं। यदि आप बहुत विवेकवान भी हैं और भीड़ आपके साथ नहीं है तो आपकी योग्यता एकदम शून्य है।

दुर्गेश राय ने अपने शोध पत्र ''तहसील सिकन्दरपुर, जनपद बलिया (उ0प्र0) में जनसंख्या और सीमित संसाधनः एक भौगोलिक अध्ययन'' में बताया कि आज अध्ययन क्षेत्र ही नहीं पूरे विश्व के विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि एवं सीमित संसाधन एक प्रमुख समस्या है। संसाधन सीमित है जनसंख्या वृद्धि असीमित। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर अत्याधिक दबाव के रूप में चिन्ताजनक स्थिति है। वर्तमान में धरती के पास जो संसाधन है हम उनका तेजी से उपभोग कर रहे हैं। मनुष्य अपना विकास करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचा रहा है जिस कारण जनसंख्या और संसाधन के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। संसाधनों को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने तथा उन्हें लंबे समय तक टिकाऊ रूप से बनाए रखने के लिए जनसंख्या की बेतहासा अंकुश और संसाधनों के अंधाधुन दोहन पर अंकुश लगाना ही होगा। भारी जनसंख्या के कारण गरीबी है, अभाव है, जीवन की गुणवता घटी है, सीमित संसाधनों का अत्याधिक दोहन हो रहा है। इस गंभीर विषय पर सकारात्मक लोक मत बनाये जाने की आवश्यकता है। जनसंख्या वृद्धि अध्ययन क्षेत्र के लिए हानिकारक है। इस पर सरकारी नीतियों के साथ समाजसेवी संस्थाओं को भी आगे आना होगा।

आजादी के समय भारत की जनसंख्या 33 करोड़ थी जो अब करीब 135 करोड़ हो चुकी है। भारत का क्षेत्रफल सीमित है। भारत में आज जन्म दर प्रति हजार चालीस के उपर है। वृद्धि के कारण जनघनत्व जो 1901 से प्रति वर्ग कि0मी0 165 था, वह बढ़कर 2001 में 689 हो गया। चीन में वृद्धि दर 1.0 प्रतिशत है, तो भारत में दोगुनी 1. 93 प्रतिशत है। इस दर से आबादी का बढ़ता देश के हित में नहीं है। जनसंख्या की यह वृद्धि प्रगति के सारे प्रलयों को निरर्थक व निष्फल कर रही है। प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951–56) में स्वीकार किया गया था कि जनसंख्या वृद्धि व सीमित संसाधनों पर पड़ते दबाव को देखते हुए परिवार नियोजन तथा जनसंख्या नियंत्रण की गंभीर आवश्यकता है, जन्म दर को कम कर संसाधन के अनुरूप लाना होगा। जनसंख्या का नियंत्रण नहीं होना कई क्षेत्रों में चुनौती पैदा कर रहा है। सबसे बड़ी चुनौती संसाधन संरक्षण में है। जनसंख्या के बेतहाशा बढ़ने से भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पेयजल आदि क्षेत्रों में संकट पैदा हो गया है। नदी तथा भूमिगत जल दूषित हो रहा है, प्रदूषण

बढ़ रहा है। प्राकृतिक असंतुलन बढ़ रहा है। इसलिए जरूरी है जनसंख्या व संसाधन के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए प्रत्येक धार्मिक समुदायों का राष्ट्रीय कर्तव्य घोषित किया जाय जिस पर अमल करने की बाध्यता भी आवश्यक हो। धार्मिक हानि–लाभ तथा चुनावी आकड़ों से इसको अलग रखना चाहिए। समाज में असमानता भी जनसंख्या वृद्धि का कारण है।

डॉ0 हर्षी खण्डूडी, असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल,पी0जी0 कालेज गोपेश्वर चमोली, उत्तराखण्ड ने अपने पेपर ''बढ़ती जनसंख्या के पर्यावरणीय प्रभाव'' में बताया कि वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि ही एक अपने आप में मूलभूत समस्या बनी हुई है, भारत राष्ट्र के लिए तो बहुजन, बहुधर्म, शरणार्थियों और प्रवासियों की अधिकता से यह समस्या उभर कर आ रही है, जिसका सीधा सा प्रभाव सम्पूर्ण पर्यावरण जगत को झेलना पड़ रहा है।

जनसंख्या और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक हैं, इनकी पूरकता सदैव बनी रहनी चाहिए, तभी सकारात्मकता दिखायी देगी, लेकिन यहाँ पर एक प्रश्न उठता है कि जनसंख्या और पर्यावरण में संतुलन की स्थिति कितनी है, वनस्पति संसाधन जल संसाधन, भूमि संसाधन, मानव संसाधन, पशु संसाधन का आपसी सन्तुलन कैसा है, इसके विकास की तस्वीर में कितनी वास्तविकता है।

हिना एस. राठोड, ने अपने शोध पत्र ''महिला शिक्षा का जनसंख्या पर प्रभाव'' में कहा कि परिवार को स्त्री और पुरूष मिलकर बनाते हैं और चलाते है। स्त्री प्रमुख रूप से केन्द्र में होती है। जनसंख्या वृद्धि हमारे देश के लिए एक समस्या है। इसका समाधान ग्रामीण एवं शहरी विस्तार में स्त्री और पुरूष में जागरूकता लाकर ही किया जा सकता है। इसके लिए भारत सरकार ने भी जनसंख्या नियंत्रण को लेकर कई उपाय किए है, कई योजनाएं भी बनाई है, परन्तु जनसंख्या में कोई कमी नही दिखाई दे रही है। राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विकास में महिलाओं का योगदान रहा है। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, रीति–रिवाज, परम्पराएं महिलाओं से ही दृष्टिगोंचर होती है। महिलाएं समाज, परिवार और देश के लिए सृजनात्मक उन्नति में सहाय करने वाली एवं रचनात्मक शक्ति है। उनके जीवन का मुख्य आधार परिवार होता है। यदि परिवार की सोच में मानसिक रूप से परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाये तो परिवार को एक सीमित रेखा के दायरे मे नियंत्रित किया जा सकता है। इसीलिए जनसंख्या पर नियंत्रण लाने के लिए महिलाओं को शिक्षा देना, उन्हें जागरूक करना ही समस्या का समाधान है। शिक्षा का बड़े पैमाने पर प्रयास–प्रचार करना, महिलाओं, बालिकाओं की स्थिति में सुधार लाना, परिवार नियोजन एवं गर्भ–निरोधक के इस्तेमाल के तरीके,महिला सशक्तिकरण को

बढ़ावा देना, गरीब और अशिक्षित लोगों मे जागृति फैलाना आदि कारणों से आबादी को सीमित करके जनसंख्या नियंत्रण में बड़ी भूमिका अदा कर सकते है।

लेखराज सिंह ने अपने शोध पत्र ''भारत में बढ़ती जनसंख्या की समस्या का एक ऐतिहासिक अध्ययन'' में बताया कि गरीबी क्या है? इस प्रश्न का उत्तर गरीबी की परिभाषा और अर्थ से ही प्राप्त हो सकेगा। गरीबी (निर्धनता) की परिभाषा विभिन्न देशों अथवा समाजों में विभिन्न प्रकार से दी गई है। गरीबी का सामान्य अर्थ ऐसी स्थिति जिसमें समाज का एक भाग अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा कर पाने में असमर्थ रहता है। विकासशील देशों की हालात जो भी हो विकसित कहे जाने वाले यूरोप एवं अमेरिका के देश भी इससे अछुता नहीं है। वास्तव में गरीबी का आधार न्यूनतम जीवन स्तर की संकल्पना है, कोई व्यक्ति अपनी आय से जीने के लिए आवश्यक कैलोरी भी जुटा नहीं पाता तो वह व्यक्ति गरीब कहा जाएगा। वैसे गरीबी के दो स्वरूप है : (क) सापेक्ष गरीबी (ख) निरपेक्ष गरीबी। विकसित देशों में एक गरीब व्यक्ति विकासशील देशों की तुलना में उच्च जीवन स्तर व्यतीत कर रहा होता है। अतः यह सापेक्ष गरीबी आय–असमानताओं में प्रतिबिम्बित होती है जैसे अमेरिका का गरीब व्यक्ति भारत के लिए गरीब नही होगा। जबकि निरपेक्ष गरीबी का संबंध जीवन के लिए बुनियादी आवश्यकताओं को पूर्ति न कर पाने से है। मानवीय गरीबी में आय के अतिरिक्त आयु एवं शिक्षा पहलुओं को भी शामिल किया गया है। अतः गरीब कौन ? के प्रत्युत्तर में हमें न्यूनतम आवश्यक कैलोरी पर ही ध्यान न देकर इससे आगे अन्य बातों– आयु, शिक्षा, कपड़ा, मकान पर भी ध्यान देनी होगी। जो व्यक्ति अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं कर पाता वह गरीबी रेखा के नीचे माना जाता है। जिन लोगों को भोजन से न्यूनतम आवश्यक कैलोरी भी नहीं मिल पाता वह गरीबी रेखा के नीचे माना जाता है।

पवनेश कुमार ने अपने शोध पत्र ''भारत में बढ़ती जनसंख्या का भारत के विकास पर प्रभावो का एक अध्ययन'' की प्रस्तुति करते हुए कहा कि भारत में बढ़ती जनसंख्या की परेसानी आाज कितनी भयाभव है यह बात इन आंकड़ों से अच्छे से समझ में आएंगी कि 1951 से 2001 तक के मृत्यु दर को देखें तो पता चलता है कि जो पहले मृत्यु दर 28 प्रति हजार थी यानि कि हर साल हर एक हजार व्यक्तियों में से 28 की मृत्यु हो जाती थी वही धीरे धीरे घटकर 9 प्रति हजार हो गयी इससे हुआ यह कि 1961 में जो लोग औसतन 46 वर्ष ही जीते थे 1981 आतेआते लोग औसतन 54 वर्ष जीने लगे जो कि 2001 में 65 वर्ष हो गयी और 2011 की बात करें तो अब लोग औसतन 69 साल जी रहे है। अब पहले ही इतने बच्चे पैदा हो रहे हैं और ऊपर से जो जिंदा है वो भी जल्दी मरने को तैयार नहीं है तो ऐसे में जनसंख्या कैसे नहीं बढ़ेगा। अशिक्षा, निम्न आय एवं

निम्न जीवन स्तर Illiteracylow income and low standard of livingvc जो लोग अशिक्षित है उसे भला क्या पता कि परिवार नियोजन क्या होता है। वह अक्सर रूढ़िवादी विचारधाराओं को मानते है। वृद्धि करने में अपना अमूल्य योगदान देते है। तो यह वो कुछ वजहै जिसके कि हमारे देश की जनसंख्या इतनी बढ़ी है। अब हम इस शोध पत्र में जानने कि कोशिश करेंगे कि जनसंख्या वृद्धि से होता क्या है।

डॉ. पंकज अग्रवाल, निदेशक, विद्या मन्दिर इन्स्टी्टयूट, मोदीनगर ने अपने शोध पत्र ''समस्या जनसंख्या वृद्धि नहीं, इसका नियंत्रण हैं'' में उल्लेख किया है कि आदिम भारतीय समझ में कभी ज्यादा आबादी को बोझ नहीं माना गया। यह धारणा मुखर रहीं की बच्चा एक मुंह और दो हाथ के साथ पैदा होता हैं। कहीं न कहीं इस समझ ने देश की आबादी को महाकाय बनाने में भी अपनी भूमिका निभाई। कुछ दशक पहले तक जो लोग आबादी को समस्या मानते रहे हैं आज वे अपनी सोच बदलने को बेबस हुए हैं। हमारी ब़ड़ी आबादी हमारा बड़ा संसाधन बन चुकी हैं। दुनिया की आबादी में हमारे करीब 18 फीसद हिस्सेदारी हैं। वह अगर बड़ी उत्पादक हैं तो बड़े उपभोक्ता के रूप में भी घरेलू खपत को बढ़ा रही हैं। इसी आबादी के बूते अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था कुलांचे भर रही है। यहां 91 फीसद आबादी 59 साल से कम उम्र की हैं। जहां दुनिया के अधिकांश देश बीमार और अपेक्षाकृत अधिक बुजुर्ग आबादी के बोझ से दबे हैं वहीं हमारे पास इस युवा और कार्यशील मानव संसाधन का जखीरा हैं। यही मानव संसाधन भारत क ो विश्व शक्ति की ओर बढ़ा रहा हैं। इस पर हमे फख्र हैं। चुनौती सिर्फ हर हाथ को हुनर और हर दिमाग को कौशल युक्त बनाकर रोजगार से जोड़ने यानी जनसंख्या नियोजन की हैं।

कु0. प्रवीन, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय कमांद, टिहरी गढ़वाल ने अपने शोध 'जनसंख्या की वृद्धि एवं संरचना' में कहा कि जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व का दूसरा देश है और क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां। सामान्यतः पश्चिमी देशों की जनसंख्या घट रही है। वहां के राजनीतिज्ञ उस बात से चिन्तित है। वहां जनसंख्या वृद्धि के लिए प्रलोभन दिए जा रहे है। वहां जनसख्या घटने के प्रमुख कारण है– विवाह की आकार मे वृद्धि, जन्म निरोध, विवाहों की संख्या में कमी आदि।दुसरी और भारत सहित एशिया और पिछडे व अविकिसित राष्ट्रों मे जनसंख्या बढी है। जिसने वहां की आर्थिक प्रगति को प्रभावित किया है।

''जनसंख्या वृद्विः महिला शिक्षा एंव स्वास्थ्य पर प्रभाव'' विषयक शोध पत्र की लेखक डॉ0 पूजा पालीवाल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर गृह विज्ञान, वी0श0के0च0रा0स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डाकपत्थर देहरादून उत्तराखण्ड़ ने कहा कि किसी भी देश में जब जनसंख्या विस्फोटक स्थिति में पहुँच जाती है तो संसाधनों के साथ उसकी गैर–अनुपातित वृद्धि होने लगती है, इसलिये इसमें स्थिरता लाना जरूरी होता है। संसाधन एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटक है। भारत में विकास की गति की अपेक्षा जनसंख्या वृद्धि दर अधिक है। संसाधनों के साथ क्षेत्रीय असंतुलन भी तेजी से बढ़ रहा है। दक्षिण भारत कुल प्रजनन क्षमता दर यानी प्रजनन अवस्था में एक महिला कितने बच्चों को जन्म दे सकती है में यह दर करीब 2–1 है जिसे स्थिरता दर माना जाता है। लेकिन इसके विपरीत उत्तर भारत और पूर्वी भारत, जिसमें बिहार, उत्तर प्रदेश, ओडिशा जैसे राज्य हैं, इनमें कुल प्रजनन क्षमता दर चार से ज्यादा है। यह भारत के भीतर एक क्षेत्रीय असंतुलन पैदा करता है। जब किसी भाग में विकास कम हो और जनसंख्या अधिक हो, तो ऐसे स्थान से लोग रोजगार तथा आजीविका की तलाश में अन्य स्थानों पर प्रवास करते हैं। किंतु संसाधनों की सीमितता तथा जनसंख्या की अधिकता तनाव उत्पन्न करती है, विभिन्न क्षेत्रों में उपजा क्षेत्रवाद कहीं न कहीं संसाधनों के लिये संघर्ष से जुड़ा हुआ है।भारत में जनसंख्या वृद्धि दर 1–2% है, जो विश्व औसत 1–3% से कम है। भारत की जनसंख्या 2027 तक 1–5 बिलियन और 2035 तक 1–7 बिलियन तक पहुंचने का अनुमान है।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में द्वितीय स्थान है एवं जनघनत्व के मामले में भी भारत काफी ऊपर है। भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण भूमि एवं अन्य संसाधनों पर काफी दवाब महसूस किया जाता रहा है। किसी भी देश की जनसंख्या को घटाने या बढ़ाने में मुख्यतः तीन कारक प्रमुख होते हैं– जन्म दर, मृत्यु दर तथा आवास–प्रवास। जन्म दर अधिक एवं मृत्यु दर कम होने पर जनसंख्या में वृद्धि होती है एवं जन्म दर कम हो तथा मृत्यु दर अधिक हो तो जनसंख्या में कमी आती है। इसी प्रकार यदि दूसरे देशों से आने वालों की संख्या विदेश जाने वाले लोगों की संख्या से अधिक होगी तो जनसंख्या में वृद्धि होगी एवं विपरीत स्थिति में जनसंख्या में कमी आएगी।

''भारत में बढ़ती जनसंख्या का पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव विशेष रूप से जल के संदर्भ में'' शोध पत्र की लेखिका प्रीती रावत शोधार्थी, विधि अध्ययन विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ ने उक्त शोध पत्र में बताया कि भारत में बढ़ती जनसंख्या का पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव विशेष रूप से जल के संदर्भ में का अध्ययन किया गया

है अध्ययन से पता चलता है कि अधिक जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण पर विशेष रूप से जल पर नकारात्मक प्रभाव डाल रही। मानव के अस्तित्व में आने के बाद उसकी संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में द्वितीय स्थान है एवं जनघनत्व के मामले में भी भारत काफी ऊपर है। बढ़ती जनसंख्या ने मनुष्य और प्रकृति के बीच असंतुलन की स्थिति पैदा कर दी है। जल एक अमूल्य और सीमित संसाधन है और जनसंख्या वृद्धि के कारण जल शक्ति मंत्रालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार इसकी उपलब्धता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 और माननीय उच्चतम न्यायालय के द्वारा दिए गए निर्णयों के अनुसार सभी व्यक्तियों को स्वच्छ पर्यावरणव स्वच्छ जल का मौलिक अधिकार प्राप्त है और यह अधिकार न्यायालय के द्वारा प्रवर्तनीय भी कराई जा सकते हैं परंतु जिस हिसाब से भारत की जनसंख्या बढ़ती जा रही है व जल का स्तर घटता जा रहा है उस प्रकार से इन अधिकारों की प्राप्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस लेख के माध्यम से लेखक ने यह सुझाव देने का प्रयास किया है कि वर्तमान एवं भविष्य में आने वाली मानव पीढ़ियों को स्वस्थ पर्यावरण और स्वच्छ जल के साथ जीवन व्यतीत करना है तो उन्हें जनसंख्या नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना होगा।

डॉ0 प्रियंका कुमारी, असिस्टेंट प्रोफेसर,(गेस्ट फैकेल्टी), गृह विज्ञान विभाग, एस. डी.एम. पी.जी कॉलेज, डोईवाला देहरादून ने अपने लेख जिसका शीर्षक ''महिला शिक्षा का जनसंख्या वृद्धि पर प्रभाव : देहरादून के भानियावाला शहर के महिला कामगारों का एक अध्ययन'' है, में उल्लेख किया है कि किसी भी देश के संसाधन की एक सीमा होती है तथा इसके जरिए एक निश्चित जनसंख्या का ही भरण–पोषण संभव है। अगर इस पर आवश्यकता से ज्यादा दबाव पड़ता है तो इसके कई दुष्परिणाम सामने आते हैं। भारत ने 1952 से इस समस्या को समझ कर अपने जनसंख्या को नियंत्रित करने के प्रयास शुरू कर दिए थे। 70 वर्ष बीत जाने के बादभी स्थिति दयनीय है। सन् 2001 से 2011 के दौरान 1.64 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर को दर्ज किया गया है। लगभग 121 करोड़की जनसंख्या के साथ कुल विश्व की जनसंख्या के 17.5प्रतिशत के बराबर है।

जिस पैमाने पर भारत की जनसंख्या बढ़ रही है वह सहज रूप से दिल को दहलाने वाला है। 2030 तक भारत केचीन से आगे निकल जाने की पूरी संभावना है।एक अनुमान के अनुसार 2035 तक भारत जनसंख्या के लिहाज से चीन को पछाड़कर विश्व का सबसे बड़ा देश हो जाएगा। भारत में जनसंख्या वृद्धि की वार्षिक दर 1.9प्रतिशत है, जबकि चीन में यह 1.2 प्रतिशत है। इस लिहाज से चीन की जनसंख्या 60 साल में दोगनी होगी जबकि भारत की जनसंख्या केवल 34 साल में ही दुगनी हो जाएगी।

राम अजोर तिवारी, कुमायूँ विश्वविद्यालय नैनीताल उत्तराखण्ड ने अपने लेख ''भारत में जनसंख्या वृद्धि प्रभाव नीति व परिणाम'' में कहा कि भारत एक विकासशील देश है तथा आज की तारीख में एक उभरती हुई अर्थ व्यवस्था का देश। भारत दुनिया का सातवाँ बड़ा देश है जहाँ दुनिया की 17.7 प्रतिशत आबादी निवास करती है। जबकि उसके पास विश्व का 2.7 प्रतिशत जमीन है। दलेसेट की रिपोर्ट के अनुसार 161 करोड़ के साथ 2048 में भारत की जनसंख्या शीर्ष पर पहुँच जायेगी। अर्थात् चीन को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का सबसे जनसंख्या वाला देश बन जायेगा।

एक अनुमान के अनुसार 2100 ई0 तक भारत की जनसंख्या घटकर 109 करोड़ होने का अनुमान लगाया गया है। दूसरे अनुमान के अनुसार स्वतन्त्रता के 100 वें वर्ष के बाद नयी सदी आने के बाद इसमें 32 प्रतिशत की गिरावट हो सकती है। इन आँकड़ो को देखने के बाद इसकी भयावहता और समस्या की ओर बरबस ध्यान आकर्षित हो रहा है। क्योंकि इतनी बड़ी आबादी के लिए अन्य वस्त्र स्वास्थ्य एवं आवास की व्यवस्था करने में सरकारों को पसीना छूटना लाजिमी है जो विश्व की सबसे तेजी से बढती अर्थव्यवस्था पर असह्य बोझ के रूप में सारे संसाधनों पर भारी दबाव के रूप में स्पष्ट हो रही है। इतनी बड़ी आबादी विकास की हर नीतियों के लिए समस्याएं खड़ी करती है। जिससे समाज में अनेकों समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। भारत की जनसंख्या जोसन् 1951 में 361. 08 मिलियन थी वह बढ़कर 1210.57 मिलियन हो गयी है।

राम जी राय, बयालसी डिग्री कॉलेज जलालपुर, जौनपुर (उ0प्र0) ने अपने शोध पत्र ''जनसंख्या गत्यात्मकता : एक भौगोलिक विश्लेषण'' में कहा कि किसी भी क्षेत्र विशेष का विकास सम्बन्धित क्षेत्र में उपलब्ध संसाधन व जनसंख्या गुणवक्ता पर निर्भर करती है।सदि जनसंख्या उपलब्ध संसाधन के अनुकूल नहीं है तो क्षेत्र विशेष का विकास असंभव है। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र के विकास का सटीक अनुमान लगाने मे जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन महतवपूर्ण है।जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं के अन्तर्गत जनसंख्या परिवर्तन के महत्वपूर्ण पहलु है।जनसंख्या परिवर्तन का सामान्य अर्थ किसी क्षेत्र विशेष में निश्चित समय के साथ जनसंख्या में परिवर्तन को प्रकट करता है। जनसंख्या वृद्धि की गणना प्रायः दस वर्षों में की जाती है जो दो जनगणना के बीच की अवधी है। यह वृद्धि या परिवर्तन धनात्मक व ऋणात्मक दोनों हो सकती है। भारत के सन्दर्भ में जनसंख्या वृद्धि का अर्थ धनात्मक ही है। सिकन्दरपुर तहसील उ0प्र0 के सुदूर पूर्वी

जनपद बलिया के उत्तर में स्थित है। सिकन्दरपुर तहसील की 2001 तथा 2011 के जनगणनानुसार क्रमशः 3,77,297 तथा 3,92,802 है। इस प्रकार जनसंख्या में परिवर्तन (निरपेक्ष जनसंख्या परिवर्तन) में 15,505 है। सिकन्दरपुर तहसील का लिंगानुपात 2001 तथा 2011 में क्रमशः 998 तथा 960 है। इस प्रकार लिंगानुपात में 38 की कमी आयी है। सिकन्दरपुर की साक्षरता दर 2001 तथा 2011 में क्रमशः 56.3% तथा 71.12% रही।

डॉ0 रेखा नौटियाल, सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, एसडीएम राजकीय स्नातकोत्तर कॉलिज, डोईवाला, देहरादून ने अपने शोध ''जनसंख्या वृद्धि एवं समाजिक समस्याएं'' में कहा कि आज जनसँख्या वृद्धि एक अन्तराष्ट्रीय समस्या बन चुकी है। सही अर्थों में आज जनसँख्या वृद्धि विस्फोट के स्तर तक पहुँच चुकी है। जिस पैमाने पर भारत की जनसँख्या बढ रही है, वह दिल को दहलाने वाला है। इस समस्या से अनेकों समस्याओं की उत्पत्ति हुई है। जनसँख्या वृद्धि हमारे देश के समक्ष बेरोजगारी, खाद्य समस्या, कुपोषण, प्रति व्यक्ति आय, गरीबी, मंहगाई, कृषि विकास में बाधा, पूंजी में कमी, शहरी क्षेत्रों में घनत्व जैसी ढेर सारी समस्याओं को उत्पन्न कर चुका है। किसी भी देश की वर्तमान स्थिति का आकलन आर्थिक विकास और जनसँख्या के हिसाब से ही तय किया जाता है। ये दोनों ही एक राष्ट्र के विकास के कारक माने जाते हैं। भारत आर्थिक एवं मानवीय विकास की दौड में मुख्य रूप से इसलिए पिछड रहा है, क्योंकि यह अपनी जनसँख्या की वृद्धि को सीमित कर पाने में बहुत अधिक प्रगति का प्रदर्शन नहीं कर पाया। आज जनसँख्या वृद्धि एक अन्तराष्ट्रीय समस्या बन चुकी है, जिसका निराकरण अगर समय रहते नहीं किया गया तो मानव जीवन का अस्तित्व निश्चित रूप खतरे में है। अतः समय रहते जनसँख्या वृद्धि को नियन्त्रित करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

जनसँख्या वृद्धि

अनियन्त्रित जनसँख्या वृद्धि देश की आर्थिक वृद्धि दर और सामाजिक संतुलन दोनों को नकारात्मक ढंग से प्रभावित करती है। लगभग 121 करोड (सन् 2011 में) की जनसँख्या के साथ भारत विश्व की कुल जनसँख्या के लगभग 17.5 प्रतिशत के बराबर है। यह सम्पूर्ण विश्व में 134.1 करोड (2010 में) की जनसँख्या वाले देश चीन के बाद मात्र भारत दूसरा सबसे बडा देश है। भारत की जनसँख्या जिस तरह से तीव्र गति से बढ रही है, वह चौंकाने वाला है। भारत की मौजूदा आबादी के 1 अरब 21 करोड है। 2001 से 2011 में भारत की जनसँख्या 17.6 प्रतिशत की दर से 18 करोड बढी है।

रितेश कुमार सिंह ने अपने लेख ''भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारणो का एक अध्ययन'' में बताया कि भारत जैसे विकासशील देश में बढती जनसंख्या पर नियन्त्रण

पाना अत्यन्त ही आवश्यक है अन्यथा इसके परिणामस्वरूप देश में अशिक्षा, गरीबी, बीमारी, भूख, बेरोजगारी, आवासहीनता जैसी केई समस्याएँ उत्पन्न होगी और देश का विकास अवरुद्ध हो जाएगा। अतः जनसंख्या को नियन्त्रित करने के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकारों के साथसाथ देश के प्रत्येक नागरिक को इस विकट समस्या से लड़ना होगा समाजसेवी संस्थाओं की भी इस समस्या के समाधान हेतु महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। आज अन्ध परम्पराओं पर प्रतिबन्ध लगाने की आवश्यकता हैबालविवाह एवं बहुबिवाह पर कानूनन प्रतिबन्ध तो लगाया जा चुका है, परन्तु आम नागरिकों द्वारा भी इन कुरीतियों को किसी कीमत पर बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए।जनसंख्या वृद्धि रोकने हेतु शिक्षा का व्यापक स्तर पर प्रचारप्रसार अति आवश्यक है। महिलाओं के शिक्षित होने से विवाह की आयु बढ़ाई जा सकती है, प्रजनन आयु वाले दम्पतियों को गर्भ निरोधक स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जा सकता हैउन्हें छोटा परिवार सुखी परिवार की बात समझाई जा सकती है।

सुनील कुमार पाण्डेय, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ0प्र0) ने अपने शोध पत्र ''वैदिक चिंतन में जनसंख्या और पर्यावरण'' में कहा कि भारतीय समाज को सांस्कृति तथा समाज का आधार अत्यधिक प्राचीन है। अनेकोनेक भारतीय सामाजिक संस्थाओं का विकास वैदिक युग में हो गया था। वैदिक युग में वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, विवाह, धर्म, कर्म आदि का उद्‌भव एवं विकास हुआ, अपितु भारतीय समाज को आधार प्रदान किया। समाज में श्रम विभाजन हेतु चार वर्णों– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र की रचना की गई। इसी प्रकार पुरूषार्थों की प्राप्ति हेतु मनुष्य की आयु सौ वर्ष मानकर चार आश्रमों– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास में विभाजित किया गया। धर्म और कर्म को भी भारतीय संस्कृति में प्रमुख स्थान दिया गया है। धर्म और कर्म के अनुसार कार्य करने पर ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है, जो मानव जीवन का प्रमुख उद्‌देश्य है। इस प्रकार आश्रम व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, धर्म और पुरूषार्थ भारतीय समाज को न केवल आधार प्रदान करते हैं अपितु दिशा–निर्देशित भी करते हैं।

भारत संसाधनों की दृष्टि से परम्परागत रूप से धनी देश रहा है लेकिन विडम्बना यही है कि जब भारत आजाद हुआ तो निर्धनता उसे विरासत में मिली। जबकि भौतिक संसाधनों के रूप में अनेको नदियां, पहाड, जंगल, मैदान, समुद्र एवं भिन्न–भिन्न प्रकार की जलवायु जिसमें भारतीय जनमानस के उपयोग हेतु अधिकांशतया सभी अनाजों के उत्पादन की भरपूर क्षमता है। जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि खाद्यान्न

उत्पादन में भारत आत्मनिर्भर देश रहा है जिस कारण भारत को कृषि प्रधान देश माना जाता है। इसके अलावा भिन्न–भिन्न प्रकार की खद्‌ानें (लोहा, अभ्रक, कोयला, हीरा आदि), भारत का तीन और से समुद्र से घिरा होना जो भारत को विश्व के अन्य देशों से व्यापार एवं अन्य उददे्श्य से जोडनें के मार्ग खोलता है में मदद् करता है। ऊर्जा के स्रोंत के रूप में कोयला के साथ–साथ समुद्र में कच्चे तेल के स्रोतों की सम्भावनाऐंव कच्चे माल की भरपूर मात्रा में उपलब्धता होने के कारण उद्योंगो एवं लघु उद्योंगो के विकास के लिए वातावरण व इन उद्योंगो के माल की बिक्री के लिए बाजार के रूप में उपलब्ध जनसंख्या, इतना ही नहीं सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी परम्परागत रूप से भारत एक सम्पन्न राष्ट्र रहा है।सम्पन्नता को पैमाना मनुष्य की मानसिक दशा पर निर्भर करता है। वर्तमान समय की अपेक्षा पहले भारत के लोग तनाव मुक्त जीवन जीने व उनके जीवन में प्रसन्नता ज्यादा थी। इसी का प्रमाण है कि भारत की सम्पन्नता को क्षति पहुंचाने के लिए विदेशियों ने बारी–बारी से आक्रमण कर अपना आधिपत्य एवं शासन स्थापित कर यहां की जनता पर अपनी विचारधारा थोंपी। जिस कारण भारत की आत्मनिर्भरता, सम्पन्नता एवं श्रेष्ठता को समय–समय पर खंण्डित किया गया, व भारत को शासक से शासित बनाकर उसके संशाधनों का अपने हितों के लिए भरपूर मात्रा में उपभोग किया।

विदेशी शासन एवं लूट–356 ईसा पूर्व भारत पर आक्रण करने वाला ग्रीक शासक बैक्ट्रिया था। फिर उसके बाद यूनानी, शक, कुषाण, हूण, अरब–ईरानी शासक जिसमें मोहम्मद बिन कासिम, तुर्क जिसमें महमूद गजनवी व मोहम्मद गौरी, गुलाम वंश जिसका शासक कुतबुददीन ऐबक, खिलजी वंश, लोदी वंश, पुर्तगालियों का शासन, डच, फ्रांसिसी आदि के बाद ब्रिट्रिश शासन ने 200 वर्षों तक शासन किया। 15 अगस्त 1947 में आजाद होने के बाद भारत में व्याप्त भारी गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी देश की आजादी का उपहास उड़ा रही थी। एक तरफ भारत देश के अन्दर व्याप्त इन समस्याओं से जूझ रहा था तो दूसरी और भारत विभाजन के कारण भारत–पाकिस्तान युद्ध होना व युद्ध की स्थिति बनी रहना था। जिसका फायदा पडोंसी देश चीन ने भी उठाना शुरू कर दिया, ओर 1962 में भारत को चीन से हार का सामना करना पडा। हालांकि देश में बढती गरीबी और बेरोजगारी की समस्या को कम करने के प्रयास प्रधानमंत्री नेहरू द्वारा शुरू कर दिये गये लेकिन चीन से युद्व के बाद भारत सरकार को गरीबी हटाओं एवं हर हाथ को काम देना प्राथमिकता पर रहा। जिसके अन्तर्गत बडे ओर लघु उद्योगों को स्थापित किया गया व उस समय के उद्योगपतियों को भी उद्योग धन्धें लगाने के लिए प्रेरित किया गया, जिससे देश की अधिकांश जनता को काम दिया जा सके। भारत के इन उद्योगों के

सामने समस्या यह थी कि एक तरफ देश की ज्यादा से ज्यादा जनता को रोजगार देना व दूसरी तरफ बाजार में व्याप्त प्रतियोगिता। भारत को अपनी जनता की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विश्व के दूसरे देशों पर निर्भर होना पडा, साथ ही भारतीय उद्योंगो द्वारा निर्मित माल का खर्च बिट्रेन आदि देश द्वारा तैयार माल से सस्ता पडता था क्योकि उसके पास नई तकनीकि युक्त मशीनें होने के कारण कम खर्च पर अधिक उत्पादन करता था। अतः भारतीय उद्योंगो द्वारा तैयार माल की लागत अधिक आती थी। एक महत्वपूर्ण कारण यह भी रहा कि भारत विदेशी ताकतों से कई सदियों बाद आजाद हुआ लेकिन आजाद होने के बाद भी भारतीयों का विदेशी वस्तुओं के प्रति आकर्षण बना रहा जो समाज में प्रतिष्ठा, भव्यताएवं विशिष्टता था।भारत राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टि से तो आजाद हो गया लेकिन आर्थिक, तकनीकि, सैन्य संसाधनों की दृष्टि से साम्राज्यवादी देशों के प्रभाव से प्रभावित रहा। क्योंकि विश्व के शक्तिशाली देशों ने यहां की जनसंख्या के कारण भारत को बाजार के रूप में प्रयोग किया।

कु० ऊषा अपने शोध पत्र ''जनसंख्या वृद्धि का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययन'' में बताया कि किसी भी देशकी अर्थव्यवस्था पर उस देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन का महत्वपूर्ण प्रभाव रहता है। जिस देश में प्राकृतिक संसाधन जितनी अधिक मात्रा में उपलब्ध होते हैं वह देश उतना ही अधिक सम्पन्न होता है। अनुकूलत्म जनसंख्या वह होती है जहाँ जनसंख्या उस देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के बराबर होती है लेकिन भारत के सन्दर्भ में कहा जाता है कि'भारत प्राकृतिक दृष्टि से एक धनी देश है लेकिन यहाँ के निवासी निर्धन है'भारत में प्राकृतिक संसाधन जैसे– भौगोलिक स्थिति, मानव पूँजी, जल संसाधन, वन सम्पदा, जलवायु, खाद्य–पदार्थ, खनिज आदि की दृष्टि से सम्पन्न देश है परन्तु जनसंख्या की अधिकता के कारण आश्रितों की अधिक संख्या, निम्न प्रति व्यक्ति आय, निम्न राष्ट्रीय आय, शिक्षा का निम्न स्तर, स्वास्थ्य का निम्न स्तर आदि हैं।

भारत में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन,जनसंख्या की अधिकता के कारण "ऊँट के मुँह में जिरा" के समान प्रतित होता है।

डॉ० विद्या वर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की द्वारा प्रस्तुत अपने शोध पत्र ''पर्यावरण एवं जनसंख्या'' में बताया गया कि यह सर्व विदित है कि पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा ग्रह है जहां जीवन संभव है। इस धरा पर न जाने कितने प्रकार के जीव–जंतु, पेड़–पौधे, कीट–पतंग आदि निवास करते हैं और अपना भरण–पोषण करते हैं। विकास

के प्रारंभिक चरण से ही सभी जीव ने जिसमें मनुष्य भी है सर्वप्रथम प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने तथा उसके साथ अनुकूल होने का प्रयास किया। इसके बाद अपने स्वार्थ और अपने इच्छा की पूर्ति के लिए प्रकृति में परिवर्तन लाने की कोशिश की। मनुष्य का आदिकाल से ही प्रकृति एवं प्राकृतिक पर्यावरण के साथ अटूट संबंध रहा है, लेकिन यही मनुष्य अपनी बढ़ती हुई जरूरत की पूर्ति के लिए क्रूरता पूर्वक पेड़ पौधे जंगलों को काट रहा है। दिन प्रतिदिन विकास के नाम पर कल कारखाने, सड़क, भवन, बहुमंजिला इमारतें आदि बना रहा है जिससे प्रकृति में असंतुलन उत्पन्न होने लगा है। मानव की प्रकृति ऐसी हो गई है कि वह हर चीज पर अपना नियंत्रण यानि की अपना स्वामित्व रखना चाहता है, चाहे वह हमारा पर्यावरण ही क्यों ना हो। आधुनिकता के नाम पर वह प्रकृति का शोषण कर रहा है। मनुष्य ने अपने ही हाथों से अपनी महत्ता को समाप्त कर दिया है। जबकि विकास निरंतर तभी हो सकता है जब हम पर्यावरण के साथ अनुकूलन बनाए रखें जिस तरह से मनुष्य को जीवित रहने के लिए भूमि यानी पृथ्वी की आवश्यकता है उसी प्रकार इस पृथ्वी के सभी जीव–जंतु पेड़–पौधे प्रकृति के महत्वपूर्ण अंग है। इसमें से एक की भी कमी हो जाए तो उसका प्रभाव अन्य जीव–जंतु, पेड़–पौधे पर पड़ेगा जिससे प्रकृति असंतुलित हो जाएगी यानी कि हमारा पारितंत्र प्रभावित होगा। किसी भी देश का विकास वहां के प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है अगर देश की आबादी अधिक होगी तो लोगों का जीवन स्तर निम्न हो जाएगा जिससे बेकारी बेरोजगारी उत्पन्न होगी, औद्योगिक उत्पादन में कमी होने लगेगी एवं लोगों को संतुलित या पर्याप्त भोजन ना मिलने पर उसकी मानवीय शक्ति क्षीण होगी और फिर इससे राष्ट्रीय शक्ति क्षीण होगी। महात्मा गांधी ने कहां था प्रकृति हमारी जरूरतों को पूरा करती है, किंतु हमारे लालच को नहीं। आज हमारे लालच के आगे प्रकृति विवश है और यही कारण है कि हमें इतनी सारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

संपूर्ण विश्व में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति है। प्रति वर्ष 86 मिलियन की दर से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। विगत 35 वर्षों में देखा गया है कि जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। प्रति 30 सेकंड में दुनिया में 117 शिशुओं का जन्म होता है तथा लगभग 46 व्यक्तियों की मृत्यु होती है यानी की वास्तविक वृद्धि 71 की है। दूसरे शब्दों में कहे तो प्रतिदिन 200000 व्यक्तियों की अथवा प्रतिवर्ष 7.5 करोड़ जनसंख्या की वृद्धि हो रही है यही क्रम यदि चलता रहा तो आने वाले समय में न खाने को पर्याप्त भोजन मिलेगा और न रहने को आवास। जो पूरे विश्व को झकझोर देगा और पारिस्थितिक तंत्र को नष्ट कर देगा।

डॉ0 विक्रम सिंह, असि0 प्रोफसर–समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, चिन्यालीसौड़ (उत्तरकाशी) ने अपने शोध पत्र ''जनसंख्या वृद्धि, स्वस्थ और स्वास्थ्य'' को प्रस्तुत करते हुए कहा कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति का हर सम्भव प्रयास रहता है कि वह अपने को स्वस्थ रखें। अतः सदैव स्वस्थ एवं निरोग रहने की प्रवृति ही मनुष्य को सुखी तथा प्रभावकारी जीवन व्यतीत करने में सहायक होती है। मनुष्य उत्तम स्वास्थ्य पाकर ही अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र के कल्याण, उत्थान एवं आर्थिक उन्नति में अपना योगदान दे सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार उस व्यक्ति में अच्छा स्वास्थ्य विद्यामान है जिसमें सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक कुशलता पाई जाती है। इस संगठन का यह भी कहना है कि वह व्यक्ति जो अपने परम्परागत प्राप्त आनुवांशिक सम्पत्ति के छिपे हुए गुणों को यथासम्भव पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है। यह तभी सम्भव हो पाता है जब व्यक्ति के लिए ऐसा वातावरण उपस्थित हो जिसकी सहायता से अपने आनुवाशिक सदगुणों को बदल सकें तथा उनको मूर्त रूप दे सकें। उत्तम सफल तथा सन्तोषप्रद जीवन जीने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अच्छा स्वास्थ्य पाने के लिए अथक प्रयास करें। यह न केवल किसी एक व्यक्ति का उत्तरदायित्व नहीं हैं बल्कि राष्ट्र के सभी व्यक्तियों का उत्तरदायित्व है। स्वास्थ्य बहुत ही अहम विषय है। किसी भी देश या राष्ट्र की मजबूती वहां के लोगों के स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। स्वास्थ्य मानव का बुनियादी अधिकार है तथा उसकी तरफ ध्यान भी इसी प्रकार दिया जाय जैसे जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए अच्छा नागरिक होना अत्यन्त आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार राष्ट्र की खुशहाली तभी सम्भव हो सकती है जब देश के नागरिक स्वस्थ होंगे। मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक तथा बौद्धिक क्षेत्र की सुखी अवस्था को स्वास्थ्य कहते हैं। स्वास्थ्य जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। व्यक्ति को स्वस्थ तब कहा जाता है, जब उसे कोई रोग नहीं होता है अर्थात रोग न होने की अवस्था स्वस्थ है। अतः व्यक्ति के शरीर का निरोगी होना स्वास्थ्य समझा जाता है स्वास्थ्य हीन व्यक्ति अविवेकी, विचार शून्य, आलसी, अकर्मण्य, क्रोधी, जगड़ालू तथा दुर्गुणों का भण्डार होता है। इसके विपरीत शरीर की स्वस्थता से मुख मण्डल दमकता है। पूरे शरीर से चारूता चमकती है और शरीर में आत्मबल में वृद्धि होती है।

चमन लाल महा विद्यालय के अर्थशास्त्र व राजनीति विभाग द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आज समापन किया गया।प्रबंधन समिति के अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने कहा कि कोई भी विचार अपने स्वयं से प्रारंभ करना चाहिए ।हम सुधरेंगें तो जग सुधरेगा।प्राचार्य डा सुशील उपाध्याय ने कहा कि जनसंख्या वृद्धि हो तो रही है लेकिन यह प्रवृत्ति सभी क्षेत्रों में एक जैसी नहीं है ।कहीं यह बढ़ रही है तो कहीं स्थिर भी हो

रही है। दूसरे दिन मुख्य वक्ता डा सुरजीत सिंह ने कहा कि असंगठित क्षेत्र में लगभग और संगठित क्षेत्र लोग काम करते हैं किन्तु राष्ट्रीय आय में दोनों का बराबर–बराबर अंश दान है।सरकार इस जनसंख्या को सुविधाएं प्रदान करने के लिए करोड़ों रूपये खर्च कर रही है ।डा तीर्थ प्रकाश ने कहा कि जनसंख्या को रोकने के लिए जागरूकता और अनुशासन आवश्यक है।जनसंख्या नीति बनाना आवश्यक है लेकिन इसे जबरदस्ती थोपा नहीं जाना चाहिए ।डा कविता अहलावत ने कहा कि जनसंख्या बढ़ने के कारण प्रकृति को भी नुकसान पहुंच रहा है ।जहां हमें भी ध्यान देना होगा ।कार्यक्रम में डा विमल कान्त तिवा री व डा नीशू भाटी की पुस्तक का विमोचन किया गया व आयोजक मंडल डा नीशू भाटी व डा विमल कान्त तिवारी द्वारा अतिथि गणों का स्वागत किया गया ।कार्यक्रम का संचालन डा नवीन त्यागी द्वारा किया गया।जिसमें कई शोधाथियो के शोध पत्र प्रस्तुत किये गये ।डा किरन शर्मा द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
(Ministry of Education, Government of India)

F. No. 3-54/2021-2022/P&R/ICPR

Dated 28.03.2022

Award Letter

To,
Dr. Richa Chauhan,
Assistant Professor,
Chaman Lal Mahavidyalya,
Landhura, Haridwar.

Email: richachauhanclm@gmail.com

Subject: Award of **Rs. 3,00,000/-** as grant for organizing a National Workshop on "**Revisiting Indian Knowledge System in the Light of Modern Science**".

Dear Madam,

The Council conveys its approval for the award of Rs. 3,00,000/- (Rupees three lakh only) as grant to Chaman Lal Mahavidyalya, Landhura, Haridwar to meet the expenditure related to organizing a National Workshop on "**Revisiting Indian Knowledge System in the Light of Modern Science**" to be organized from 27th - 29th October, 2022 or 17th to 19th November, 2022.
The sanctioned amount will be released in installments as follows:

First Installment	As grant in advance	Rs. 2,40,000/-

The final installment of Rs 60,000/- i.e. 20% of the grant shall be released on receipt of the following documents within a month after the programme is over:

1. List of Actual Participants
2. Feedback from the participants may be obtained and sent to the Council.
3. Detailed report, of all the sessions in the event in a bound form along with the Rapporteur's report / brief report and some photographs.
4. Program report and photographs must be submitted via email to seminar.icpr@gmail.com within a week after the program is over.
5. The head- wise statement of accounts with certified photocopies of original bills/vouchers of the entire expenditure incurred from the sanctioned amount to be submitted along with utilization certificate.
6. The organizer is to ensure that due approval from Ministry of External Affairs and Ministry of Home Affairs are taken for the visit of any participant resource person from abroad and ICPR will not be answerable for non-compliance of any such norms.

The above documents are mandatory requirements to settle the account. Other important Terms and Conditions are:

1. No excess expenditure shall be reimbursed in case of over expenditure.
2. Travel: Standard T.A form of the institution may be used for settlement of expenses on travel. **In view of the decision of Government of India for disinvestment of Air India, it has been decided that in all cases of Air travel where the Government of India bears the cost of air passage, air tickets shall be purchased from any of these three authorized Travel Agents:**

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
(Ministry of Education, Government of India)

F. No. 12-6/2021/P&R/ICPR/2nd List/8
January 10, 2023

SANCTION ORDER

Sanction of the Indian Council of Philosophical Research is hereby accorded for payment of a grant of Rs. 20,000/- (Rupees twenty thousand only) to the **Principal**, Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura, Roorkee, Haridwar- 247 664 for disbursement to Dr. Aprana Sharma, Assistant Professor, Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura, Roorkee, Haridwar- 247 664 for organizing the **Azadi Ka Amrit Mahotsav, 2022-23.**

The grant is subject to the following terms and conditions.

1. Brief Programme Report alongwith 2-3 photos should be sent in English and Hindi in MS Word format, to lecture.icpr@gmail.com within 7 days after the programme.
2. The sanctioned amount shall be utilized for the purpose for which it has been sanctioned.
3. The payee shall exercise reasonable economy in spending the sanctioned amount.
4. Regular accounts shall be maintained in respect of expenditure of the sanctioned amount. TDS and GST as applicable may be deducted.
5. Immediately after the programme is over, the payee shall furnish the detailed statement of expenditure duly supported with original vouchers latest by one month after the programme. All documents/papers/vouchers must be self attested, while submitting the account details.
6. The payee shall submit hard copy of all documents i.e. a brief report of the programme as well as 2/3 photographs with the background of banner/back drop etc. with visible logo of ICPR and theme of the event along with a copy of the script of the lectures delivered.
7. Apart from the taxi, an honorarium of **Rs. 3,000/-** for each lecture may be paid to the Resource Person/scholar who deliver the lecture.
8. If the event is not organized before **March 31, 2023 the sanctioned amount may be refunded to the Council forthwith via D.D./cheque in favour of INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH, NEW DELHI.**
9. The organizing departments should invite the staff and students of the department of Philosophy of nearby Universities/Colleges and also those who are interested in Philosophy for the Azadi Ka Amrit Mahotsav, 2022-23 celebration.

The sanctioned amount shall be paid in favour of **Seminar Account Chaman Lal Mahavidyalaya** through Bank Transfer to A/c. **No. 37209471051 at State Bank of India, Landhaura Branch, (IFS Code: SBIN0012850), MICR Code: 247002112.**

The expenditure will be met from the budget of the Council for the financial year 2022-23 and debited to the head of account **Group D, D-VII (A)-Gen. 2202.80.004.11.00.31- Lecture National.**

(Authority: Member Secretary approval on main file note page- 41 dated 3.1.2023).

10/01/2023
(Dr. Pooja Vyas)
Director (P&R)/I/c.

Director (A&F), ICPR, New Delhi.
Copy to:

1. Principal, Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura, Roorkee, Haridwar- 247 664.
2. Dr. Aprana Sharma, Assistant Professor, Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura, Roorkee, Haridwar- 247 664.

ID: aprana.angrish@gmail.com , Mb: 8860355780

रिपोर्ट

विशेष व्याख्यान कार्यक्रम

आजादी का अमृत महोत्सव पर

"भारतीय संविधान में गांधीजी के विचारो की प्रासंगिकता"

दिनांक 26 मार्च 2023

द्वारा प्रायोजित

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली

द्वारा संगठित

अंग्रेजी और संस्कृत विभाग

चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा रुड़की हरिद्वार

लंढौरा चमन लाल महाविद्यालय में अंग्रेजी विभाग और संस्कृत विभाग द्वारा भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के सहयोग से आयोजित विशेष व्याख्यान श्रृंखला के दिन विद्वानों ने भारतीय संविधान में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता । विशेष वक्ता श्री रोहिताश जी पूर्व प्राचार्य जी ने विभिन्न देशभक्ति गीतों से छात्र-छात्राओं का उच्चारण करवाया जैसे देश के वीरों ने अपना अर्पित देश के नाम समर्पित कर दिया चाहे कांटों पर सुबह चाहे गोली मारो सीने पर जैसे गीतों से उन्होंने छात्र-छात्राओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। उपस्थित सभी श्रोता गणों में एक उमंग की लहर सी दौड़ गई और सभी जोरों शोरों से देशभक्ति के गीतों को उनके साथ गुनगुनाते रहे।

छात्राओं को उन्होंने संबोधित किया कि वे देश भक्त देश के लिए कुछ करें अपने आप को देश के लिए समर्पित करें उन्होंने देश के लिए जो देश के लिए समर्पित रहो पर बहुत जोर दिया। शुरुआत से ही संबंधों की बात पर करते हुए सभी का स्वागत किया कैसे 1957 में भारत आजाद हुआ। उन्होंने आगे अपने व्याख्यान में तलाक प्रथा समाज की कुप्रथा को जड़ बताया। उन्होंने किसी समाज के निर्माण के लिए कहा कि शिक्षा में अपनी शिक्षा पर

ध्यान केंद्रित करना होगा शिक्षा को ऑर्गेनाइज्ड बनाना होगा ज्ञान पर सबका अधिकार है। अंत में उन्होंने शहीदों की चिताओं पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपनी वाणी को विराम दिया।आगे मुख्य अतिथि शरद वेदांत वेदालंकार ने ने कार्यक्रम की शुरुआत अपने पुत्र एवं पुत्री से कराई उन्होंने बहुत ही सुंदर कविता शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सुनाई। आगे

शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भारत का इतिहास बहुत मजबूत है और निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है मानव का विकास चलता रहेगा वर्तमान अपको अतीत की गलतियों को सुधारने का मौका देता है उन्होंने विभिन्न आंदोलनों की आशाएं आजादी के लिए लड़े गए विभिन्न आंदोलनों की याद याद दिलाएं प्रधानमंत्री जी ने छुपे हुए क्रांतिकारियों को सामने लाने का प्रयास किया इसलिए यह आजादी का अमृत महोत्सव स्वराज शब्द वेदों से पहले आया हुआ है इस में शोषण ना हो समान अधिकारों को यह भी बताया जाता है स्वराज शब्द से अवगत कराया शरीर पर आत्मा का ही नियंत्रण है वह भी हम सबकी माता है हम सब जिनके पुत्र हैं प्रकाश जी ने जीवन की महत्वपूर्ण बातों के बारे में हमें बताया किसी समाज को देखना यह समझना है तो उस समय के टेक्स्ट सप्लायर के बारे में जानना होगा।

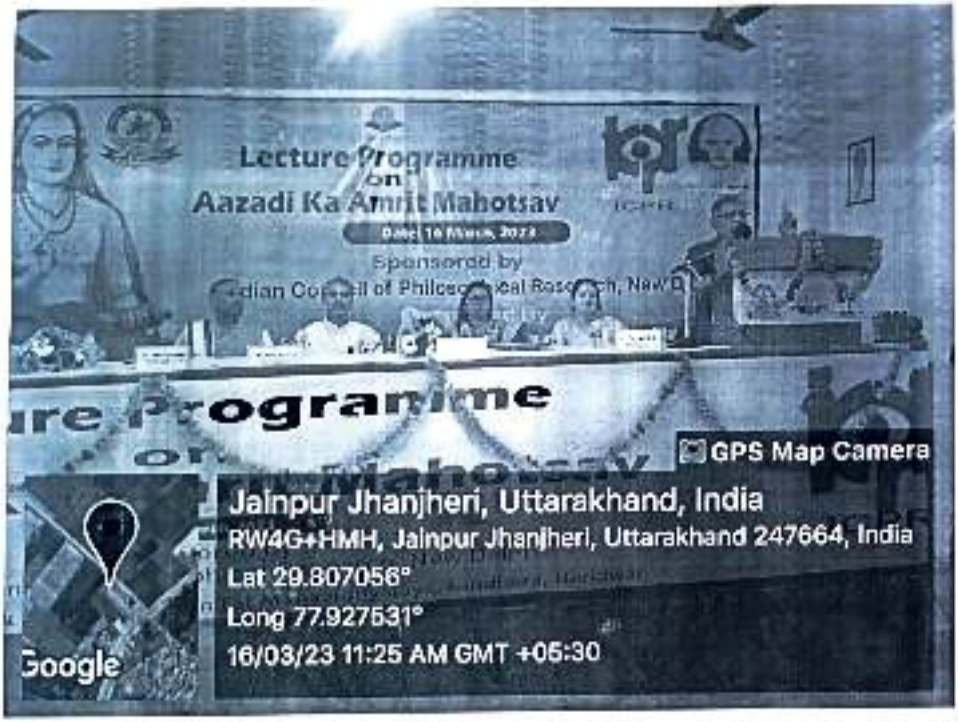

अंत में अगर उन्होंने कहा अगर समाज को बदलना है तो हमें महिलाओं को मुख्यधारा में लाना होगा महिलाओं की शिक्षा पर जोर देना होगा महिलाओं को समाज में एक पद प्रदान करना होगा तभी कोई समाज ऊपर उठ सकता है। डॉक्टर बबलू कुमार से इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आजादी के अमृत महोत्सव में मनाए जा रहे संगोष्ठी के बारे में उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किए उन्होंने बताया कि आजादी क्या है और गुलामी क्या है वह क्या है इन सब में भय की सबसे बड़ी गुलामी बताया गया क्योंकि वह के आगे सारी गुलामियां पीछे छूट जाते हैं यह जो हम सबको डर किसी का गुलाम बनाने में सबसे बड़ा मील का पत्थर साबित होता है मौलिक आर्थिक और वैचारिक गुलामी के उदाहरण द्वारा समझाया स्वदेशी पर जोर दिया। आगे उन्होंने कहा कि हमें आर्थिक आजादी की ओर बढ़ना चाहिए

...नारी गुलामी के पीछे अंतरिक्ष मुक्त होता है संविधान हमें कुछ स्वर क्त देता है जिन्हें हम अधिकार कहते है ...ह कुछ कर्तव्य देता है गांधीजी सिद्धांतों के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। सभी श्रोताओं बताया कि किस प्रकार ...और किन कठिनाइयों से हमें आजादी मिली है कई छुपे एवं अनछुए पहलुओं पर उन्होंने चर्चा करें की आजादी ...क लड़ाई नहीं परन्तु विचारों की क्रांति थी। विद्यालय के प्रबंध समिति अध्यक्ष राम जी राम कुमार शर्मा जी ने ने ...शहीदों को श्रद्धांजलि दे उनकी वीरता का विवरण दिया तथा अपने छात्र छात्राओं को प्रोत्साहित किया कि ...ह नागरिक की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहें।

बनारी गुलामी के पीछे अंतरिक्ष पुष्ट होता है संविधान हमें कुछ स्वतंत्र बना देता है जिन्हें हम अधिकार कहते हैं वह कुछ कर्तव्य देता है गांधीजी सिद्धांतों के बारे में विस्तार पूर्वक बताया सभी श्रोताओं बताया कि किस प्रकार न जाने कितनी कठिनाइयों से हमें आजादी मिली है कई छुपे एवं अनछुए पहलुओं पर उन्होंने चर्चा की। की आजादी एक लड़ाई नहीं परंतु विचारों की क्रांति थी। विद्यालय के प्रबंध समिति अध्यक्ष राम जी राम कुमार शर्मा जी ने भी शहीदों को श्रद्धांजलि दे उनकी वीरता का बखान किया तथा अपने छात्र छात्राओं को प्रोत्साहित किया कि वह समाज की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहें।

इस कार्यक्रम की संयोजिका संयोजिका एवं हमारे कॉलेज की प्रधानाचार्य उन्होंने सभी
दिल से स्वागत किया एवं उन्हें शॉल व बुके दीए। कार्यक्रम की रूपरेखा डॉक्टर अनिता शर्मा
तुत की एवं कार्यक्रम के अंत में डॉ अपर्णा शर्मा जो इस कार्यक्रम की आयोजन सचिव थी
थी उन्होंने विराजमान सभी विद्वानों को धन्यवाद ज्ञापित किया। छात्र-छात्राओं को भी
पर उपस्थित सभी शिक्षक श्रोताओं को धन्यवाद दिया। मंच का संचालन डॉक्टर नवीन
क्रम में तमन्ना जिया शहनाज को पुरस्कार प्रदान किए

Report

Special lecture program

On

Aazadi ka Amrit Mahotsav

"Relevance of Gandhiji's Thoughts in Indian Constitution"

Date: 16th March 2023

Sponsored by

Indian Council of Philosophical Research New Delhi

Organized by

डॉक्टर दीपा अग्रवाल इस कार्यक्रम की संयोजिका संयोजिका एवं हमारे कॉलेज की प्रधानाचार्य उन्होंने सभी अतिथि गण का तहे दिल से स्वागत किया एवं उन्हें शॉल व बुके दीए। कार्यक्रम की रूपरेखा डॉक्टर अनिता शर्मा ने सभी के समक्ष प्रस्तुत की एवं कार्यक्रम के अंत में डॉ अपर्णा शर्मा जो इस कार्यक्रम की आयोजन सचिव की भूमिका निभा रही है थी उन्होंने विराजमान सभी विद्वानों को धन्यवाद ज्ञापित किया। छात्र-छात्राओं को भी धन्यवाद कहा वहां पर उपस्थित सभी शिक्षक श्रोताओं को धन्यवाद दिया। मंच का संचालन डॉक्टर नवीन त्यागी ने किया। कार्यक्रम में तसव्वर शिवा शहनाज को पुरस्कार प्रदान किए

Report
Special lecture program
On
Aazadi ka Amrit Mahotsav
"Relevance of Gandhiji's Thoughts in Indian Constitution"
Date: 16th March 2023
Sponsored by
Indian Council of Philosophical Research New Delhi
Organized by

दैनिक
saralexpress333@gmail.com
रल एक्सप्रेस

RNI-UTTHIN/2012/46386
कहते नहीं, लिखते हैं
अंक:169 हिन्दी दैनिक कोटद्वार शुक्रवार 17 मार्च 2023 मूल्य:2 रु पृष्ठ: 8

रतीय संविधान में गांधी दर्शन की ासंगिकता पर कार्यक्रम आयोजित

क्सप्रेस

। चमन लाल लय में आजादी के अमृत के उपलक्ष में भारतीय अनुसंधान परिषद रा एक व्याख्यान किया गया जिसका रतीय संविधान में गांधी प्रासंगिकता थी। का शुभारंभ महाविद्यालय मेति के अध्यक्ष राम र्मा ने मां सरस्वती के प्रज्वलित कर किया। द कार्यक्रम समन्वयक शर्मा व डॉ. अनिता तिथियों को बुके देकर ौर अभिनंदन किया। में मुख्य वक्ता में डॉ. अलंकार दर्शनशास्त्र गुरुकुल कांगड़ी

अलंकार एवं रोहिताश गवर्नमेंट इंटर कॉलेज ज्वालापुर से

उपस्थित रहे। डॉ.भारत ने बताया कि किस प्रकार विभिन्न आंदोलन के माध्यम से हमने अपनी आजादी को प्राप्त किया। उन्होंने स्वराज शब्द की व्याख्या की और बताया कि किस प्रकार 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक क्रांतिकारियों ने अपना बलिदान समर्पित किया तथा इसी क्रम में

प्रकाश पर भी उन्होंने प्रकाश डाला किस प्रकार उन्होंने आजादी की लड़ाई में अपना योगदान दिया। डॉ. बबलू कुमार ने आजादी के अमृत महोत्सव में गांधी जी के विचारों पर प्रकाश डाला उन्होंने बताया कि गुलामी का भय किस प्रकार हमारे जीवन में पनप रहा था। आर्थिक और वैचारिक गुलामी ने देश को जकड़ रखा था। स्वालंबन पर

आर्थिक आजादी के लिए नारे दिए संविधान हमें कुछ स्वतंत्रता देता है इस विषय पर भी उन्होंने बताते हुए कहा कि किस प्रकार हम अपनी संकल्प बल से अपने आप को वैचारिक गुलामी से मुक्त कर सकते हैं। रोहिताश ने देशभक्ति गीतों से छात्र–छात्राओं को उच्चारित कराया और किस प्रकार देश के अमर वीर शहीदों ने अपना बलिदान देकर देश की आजादी दिलाई उन्होंने शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले मरने वालों का नामो निशान होगा, वंदे मातरम जैसे गीतों से क्रांतिकारी उद्घोषणा के स्वर भी उन्होंने अपने व्याख्यान में सम्मिलित किए। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. दीपा अग्रवाल ने बाहर से आए हुए सभी अतिथियों का

halaapp.com

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
(Ministry of Education, Government of India)

F. No. 12-6/2021/P&R/ICPR/2nd List/13
January 10, 2023

SANCTION ORDER

Sanction of the Indian Council of Philosophical Research is hereby accorded for payment to the extent of Rs. 20,000/- (Rupees twenty thousand only) to the **Principal**, Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura, Roorkee, Haridwar-247 664 for disbursement to Dr. Deepa Agarwal, Assistant Professor, Department of English, Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura, Roorkee (Haridwar)-247 664 for organizing the **Azadi Ka Amrit Mahotsav, 2022-23.**

The grant is subject to the following terms and conditions:

1. Brief Programme Report alongwith 2-3 photos should be sent in English and Hindi in MS Word format to lecture.icpr@gmail.com within 7 days after the programme.
2. The sanctioned amount shall be utilized for the purpose for which it has been sanctioned.
3. The payee shall exercise reasonable economy in spending the sanctioned amount.
4. Regular accounts shall be maintained in respect of expenditure of the sanctioned amount. TDS and GST as applicable may be deducted.
5. Immediately after the programme is over, the payee shall furnish the detailed statement of expenditure duly supported with original vouchers latest by one month after the programme. All documents/papers/vouchers must be self attested, while submitting the account details.
6. The payee shall submit hard copy of all documents i.e. a brief report of the programme as well as 2/3 photographs with the background of banner/back drop etc. with visible logo of ICPR and theme of the event along with a copy of the script of the lectures delivered.
7. Apart from the TA/DA, an honorarium of **Rs. 3,000/-** for each lecture may be paid to the Resource Person/scholar who deliver the lecture.
8. If the event is not organized before **March 31, 2023 the sanctioned amount may be refunded to the Council forthwith via D.D./cheque in favour of INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH, NEW DELHI.**
9. The organizing departments should invite the staff and students of the department of Philosophy of nearby Universities/Colleges and also those who are interested in Philosophy for the **Azadi Ka Amrit Mahotsav, 2022-23** celebration.

The sanctioned amount shall be paid in favour of **Seminar Account Chaman Lal Mahavidyalaya** through Bank Transfer to **A/c. No. 37209471051 at State Bank of India, Landhaura Branch, (IFS Code: SBIN0012850), MICR Code: 247002112.**

The expenditure will be met from the budget of the Council for the financial year 2022-23 and debited to the head of account **Group 3, D-VII (A)-Gen. 2202.80.004.11.00.31- Lecture National.**

Authority: Member Secretary approval on main file note page-41 dated 3.1.2023).

(Dr. Pooja Vyas)
Director (P&R) I/c.

Director (A&F), ICPR, New Delhi.

Copy to

1. **Principal**, Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura, Roorkee, Haridwar-247 664
2. Dr. Deepa Agarwal, Assistant Professor, Department of English, Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura, Roorkee (Haridwar)-247 664.

Dr. ...@gmail.com, Mb. 8755330002

Detail Programme Report
of
Offline Lecture Programme
on

"स्वतंत्रता पूर्व भारत का सामाजिक दर्शन "

Sponsored By: INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

17TH MARCH 2023

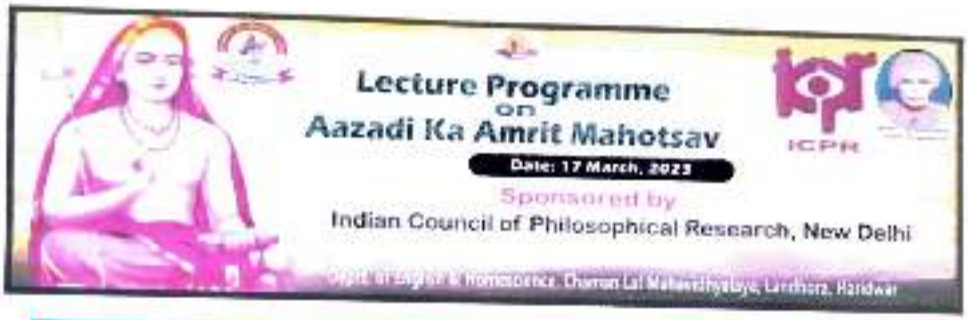

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Roorkee (Haridwar)

Submitted By

Dr. Deepa Agarwal
Convener

Dr. Neetu Gupta
Organizing Secretary

Principal

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar (Uttarakhand)

"स्वतंत्रता पूर्व भारत का सामाजिक दर्शन "

ढौरा चमन लाल महाविद्यालय में अंग्रेजी विभाग और गृह विज्ञान विभाग द्वारा भारतीय र्शनिक अनुसंधान परिषद के सहयोग से आयोजित विशेष व्याख्यान में विद्वानों ने स्वतंत्रता **पूर्व भारत का सामाजिक दर्शन**" पर विचार प्रस्तुत किए । डॉ. दीपा अग्रवाल, कार्यक्रम की संयोजिका एवं कॉलेज की प्राचार्या ने सभी अतिथि गण का तहे दिल से स्वागत किया एवं उन्हें शॉल व बुके सम्मान स्वरूप प्रदान किए । उन्होंने सभी के समक्ष कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

Programme Schedule

Lecture Program on "स्वतंत्रता पूर्व भारत का सामाजिक दर्शन"	17/03/23
Inaugural Function (09:00 AM to 12:30 PM)	**Felicitation of Guests by** Dr. Naveen Tyagi **Welcome Address by** Dr. Deepa Agarwal Principal **Overview of the seminar** Dr. Deepa Agarwal Convener **Keynote address by chief Guest** 1. Prof. Aditya Gautam Principal, Hariom Saraswati PG College, Dhanauri, Distt. Haridwar **Felicitation of special guest by:** Shri Ram Kumar Sharma, Chairman of Chaman Lal Mahavidyalaya
Technical Session I	**Guest Lectures** 1. Dr. Sanjay Kumar Maheshwari Associate Professor and Head, Deptt. of History, SMJN PG College, Haridwar 2. Dr. Krishna Kumar Philosopher, Durdarshan
Technical Session II **(12:30- 1:30PM)**	**Technical Session II** Presentation Summary of the lecture by students Feedback given by the students
Valedictory Session (1:30 PM-02:00 PM)	**Vote of thanks** Dr. Neetu Gupta

Lecture Programme
Mahotsav
2023
Research, New
ICPR
Programme
on
Amrit Mahotsav

Lecture
ogramme
Aazadi
Mahotsav
March, 2023
Sponsored by
ndian
of
Research
ICPR
Program
on
Ka Amrit Mahotsav

विशेष वक्ता - प्रोफेसर आदित्य गौतम, प्राचार्य, हरिओम सरस्वती, धनौरी पी.जी. कॉलेज से उपस्थित रहे शुरुआत से ही स्वतंत्रता की बात करते हुए उन्होंने सभी का स्वागत किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने 1957 में भारत आजाद हुआ एवं अपनी प्राचीन व्यवस्था सिंधु घाटी मोहनजोदड़ो की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि जिन विषयों हम सबसे कठिन समझते हैं जैसे गणित इतिहास भूगोल आदि । इन सबका हमने सबसे पहले ज्ञान प्राप्त करा परंतु जिन विषयों को हमने सबसे आसान समझा जैसे समाजशास्त्र वास्तव में इसे समझना बहुत कठिन है। क्योंकि समाज को सब अपने-अपने नजरिए से देखते हैं। उन्होंने अपने व्याख्यान में आगे बढ़ते हुए कैसे धर्म की उत्पत्ति हुई, कैसे हमें अपने पंच तत्वों को संरक्षण करना चाहिए , जीवन में इनकी क्या उपयोगिता है, इस पर विचार किया। उन्होंने बताया कि समाज में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका है। परिवार में बनने वाली रोटी पर उस समय उपस्थित सभी व्यक्तियों का हक होता है । हमें रोटी मिल बांट कर खानी चाहिए। उन्होंने आगे अपने व्याख्यान में तलाक प्रथा, समाज की कुप्रथा को बताया। उन्होंने किसी समाज के निर्माण के लिए कहा कि शिक्षा में अपनी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना होगा। शिक्षा को ऑर्गेनाइज्ड बनाना होगा। ज्ञान पर सबका अधिकार है । परिवार को बनाने में महिलाओं की अहम भूमिका है उन्होंने कहा कि नारी अगर आपके परिवार में ना खुश है तो वहां देवताओं का निवास नहीं है ।भारत एक अंतर्मुखी समाज है। अहंकार की लड़ाई थी लूटपाट की लड़ाई नहीं थी उन्होंने अपने व्याख्यान में रजिया सुल्तान इंदिरा गांधी, शेख हसीना, भुट्टो जी, की

महानता के बारे में बताया कि किस तरह से मोबाइल के आने से समाज में तीव्र गति से बदलाव हुए हैं। समाज में समय-समय पर महान महापुरुष जन्म लेते हैं और समाज का सुधार करने के लिए कार्य करते हैं। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि जातिवाद किसने पैदा किया और यह एक चिंता का विषय है। समाज स्वच्छंद रूप से जीना चाहता है। भारत ही एक ऐसा देश है जहां पर पति पत्नी को दंपत्ति कहा जाता है। हमें समाज की बुराइयों से डरने की जरूरत नहीं है। क्योंकि समाज के ही बीच में से कोई उठ खड़ा होकर इन सभी बुराइयों को नष्ट करेगा।

आगे मुख्य वक्ता डॉ संजय महेश्वरी, एस.एम.जे.एन पी.जी. कॉलेज ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा हम नजर होंगे हम जुदा होंगे हम मेहरबा होंगे ना जाने कितने चेहरे धुआं धुआं होंगे।

अपने वक्तव्य में शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भारत का इतिहास बहुत मजबूत है और निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। मानव का विकास चलता रहेगा। वर्तमान आपको अतीत की गलतियों को सुधारने का मौका देता है। डॉ. संजय महेश्वरी जी ने महिलाओं की भूमिका के ऊपर बहुत जोर दिया एवं उनकी बदलती स्थिति के बारे में बताया।

अपने व्याख्यान में उन्होंने स्वामी विवेकानंद जी के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि स्वामी विवेकानंद जी ने पूरे विश्व में भारतीय सनातन संस्कृति का परचम फैलाया। विचारों की क्रांति पर जोर देते हुए कहा कि सती प्रथा एवं विधवा विवाह की शुरुआत कराई गई। आत्माराम जी, पांडू राम जी की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताया। जातिवाद को कैसे खत्म किया गया इस पर भी उन्होंने बहुत जोर दिया। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने धार्मिक सुधार के बिना समाज में सुधार संभव नहीं है। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि नेपोलियन जी ने धर्म की समाज निर्माण में अहम भूमिका बताई है। किसी समाज को देखना या समझना है तो उस समय के टैंकर सप्लायर के बारे में जानना होगा। इसी बीच में उन्होंने बच्चों से सवाल जवाब करते हुए उन्हें गिफ्ट प्रदान किए जिस कारण बच्चों में एक नई स्फूर्ति दिखी। अंत में उन्होंने कहा, अगर समाज को बदलना है तो हमें महिलाओं को मुख्यधारा में लाना होगा। महिलाओं की शिक्षा पर जोर देना होगा। महिलाओं को समाज में एक पद प्रदान करना होगा तभी कोई समाज ऊपर उठ सकता है।

कृष्ण कुमार जी फिलोस्फर दूरदर्शन से ऑनलाइन माध्यम से इस कार्यक्रम में आमंत्रित वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने कार्यक्रम में अपने विचार प्रस्तुत किए तथा सभी श्रोताओं को बताया कि किस प्रकार से और किन कठिनाइयों से हमें आजादी मिली है। कई छुपे एवं अनछुए पहलुओं पर उन्होंने चर्चा की। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि आजादी एक लड़ाई नहीं परंतु विचारों की क्रांति थी।

चमन लाल महाविद्यालय के प्रबंध समिति अध्यक्ष, श्री राम कुमार शर्मा जी ने शहीदों को श्रद्धांजलि दे उनकी वीरता का विवरण दिया तथा अपने छात्र छात्राओं को प्रोत्साहित किया कि वह समाज की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहें।

अंत में डॉ नीतू गुप्ता, आयोजन सचिव ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी विद्वानजनों का धन्यवाद ज्ञापित किया । सभी छात्र-छात्राओं को भी धन्यवाद कहा। वहां पर उपस्थित सभी शिक्षक श्रोताओं को धन्यवाद दिया। मंच का संचालन डॉक्टर नवीन त्यागी ने किया।

कार्यक्रम का निष्कर्ष प्रस्तुत करने के लिए गायत्री को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम के अंत में अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए तसव्वर, शीबा परवीन और शहराज को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

सभी के सहयोग से कार्यक्रम का समापन सफलतापूर्वक किया गया।

Dr. Deepa Agarwal
Convener

Dr. Neetu Gupta
Organising Secretary

Principal

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

[illegible] & Research [illegible]

[illegible]

Letter No. [illegible] Date [illegible]

[illegible]

[illegible] eight thousand only) and release [illegible] project [illegible]

[illegible]

Copy [illegible]

1. [illegible]
2. Dr. [illegible]
3. Dr. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]

Date - 23.11.2021

To,

The Principal

Chamanlal Mahavidyalaya,

Landhaura, Haridwar

Uttarakhand

Subject: **Application regarding submission of Workshop proposal....**

Respected Sir,

Dr. Deepika Saini, Assistant Professor, Department of Zoology would like to bring to your kind notice that I am submitting two days workshop proposal on the topic: **Hand on training workshop on water and soil quality analysis to USERC.**Proposed date is 24 and 25 February, 2022. Kindly permit for the same.

Thanking you in anticipation

Dr. Deepika Saini
Assistant Professor,
Chamanlal Mahavidyalaya

Dr. Deepa Agarwal
IQAC CO-ORDINATOR
Chamanlal Mahavidyalaya

Dr. Sushil Upadhyay
Principal
Chamanlal Mahavidyalaya

IQAC/CLM/RES/063-2021

TWO DAY'S HANDS-ON TRAINING WORKSHOP ON WATER AND SOIL QUALITY ANALYSIS

ORGANIZED BY

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA (*Affiliated to SDSUV*)

IN COLLABORATION WITH

UTTARAKHAND SCIENCE EDUCATION AND RESEARCH CENTRE, DEHRADUN

(FILE NUMBER: USERC/2021/-22/294)

DATE OF SEMINAR: 16th-17th August,2022

TITLE OF THE SEMINAR

TWO DAY'S HANDS-ON TRAINING WORKSHOP ON WATER AND SOIL QUALITY ANALYSIS

TWO DAY'S WORKSHOP REPORT

SUBMITTED TO- UTTARAKHAND SCIENCE EDUCATION AND RESEARCH CENTRE (USERC)

CONVENER

Dr. Deepika Saini
Assistant Professor
Department of Zoology
Chaman Lal Mahavidhyalaya,
Haridwar, Uttarakhand

ORGANIZING SECRETARY

Dr. Sanjeev Kumar
Assistant Professor
Department of Chemistry
Chaman Lal Mahavidhyalaya,
Haridwar, Uttarakhand

उत्तराखण्ड शासन

REGISTRATION FORM
HANDS ON
TRAINING WORKSHOP
ON WATER AND SOIL
QUALITY ANALYSIS

LAYOUT OF THE PROGRAMME
ORGANIZING COMMITTEE
ADVISORY COMMITTEE
REGISTRATION FEE

3. **LAYOUT OF THE WORKSHOP:** Two days Hands-on training workshop on water and soil quality analysis was organized on 16th and 17th August, 2022.

DAY-1 : 16th August,2022

The inauguration session began with lightening of the Lamp by Hon'ble Manager Shri Ram Kumar Sharma, Principal Dr. Sushil Upadhyay and respected speakers.

Beautiful Saraswati Vandana was aby Ms. Ekta Bharti (CLM, Law College, Guest faculty). Dr. Arvind Kumar and Dr. Anamika Chauhan was appointed as a Rapporteur for Day-1

The Welcome Speech was delivered by respected Principal Dr. Sushil Upadhyay, Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhora, in which he Welcomed all the dignitories by presenting Tulsi-plant and shawl as a token of love and respect.

Dr. Upadhyay highlighted the topic and said that practical knowledge is very important and long lasting as compared to theoretical gains.

Soil and water are commomly taught topics in zoology, Chemistry and agriculture and other science stream. But to gain Hands-on training especially in the institutions like NIH would be an outstanding experience. He congratulated Dr. Deepika Saini (Convener) and Dr. Sanjeev Chauhan (Organizing secretory) for such an initiative.

In continuation Dr. Deepika Saini, convener of the event, briefly described the layout of day-1 workshop

She warm heartedly welcomed all the dignitories and explained the motive behind choosing this topic of hands-on training

Dr. Deepika threw light on the background of the location and college. She elaborated that in a rural area students need much more focus and attention in studies Hands-on training an any topic (science) is the best way to teach them.She further said that to get the hands-on training in NIH ifrom the experts would definitely be beneficial for students.

DAY-2: 17th AUGUST,2022

Faculties along with 85 students reached National Institute of Hydrology,Roorkee at 10:00 AM.

Instead wasting any time we we directly reached soil and water testing Laboratort,NIH.

30 minutes lecture program on training was delievered by Dr. Gopal Krishna and semnior technician Shri Choubey ji.

Hands-on training was provided in lab and in-field various parameters like PH,turbidity,hardness,alkalinity,hydraulic pressure,nitrate,phosphate,sulphate (waterJetc and parametrs like soil moisture content,water holding capacity,PH etc was explained with training.

Students worked on various machines under the super vision of Dr. Gopal and Shri Choubey ji.

After 6 hours of training lunch was provided to the students in M.P Hall.

Dr. Deepika Saini and Dr. Sanjeev Kumar accompanied the students in training at NIH.

We departed NIH at 4:00 pm for Chaman Lal Mahavidhyalaya,Landhora.

SOIL-WATER LABORATORY

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
JAL VIGYAN BHAWAN, ROORKEE 247 667
Uttarakhand, India

STUDENTS ATTENDANCE :16 AUGUST,2022

16/Aug/2022

Two Days National

HANDS-ON TRAINING WORKSHOP ON

WATER AND SOIL QUALITY ANALYSIS

In collaboration with, Uttarakhand Science Education & Research Centre (USERC)

Organized By: Department of Zoology and Department of Chemistry

Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura (Haridwar) Uttarakhand

16-17th August, 2022

ATTENDANCE SHEET

S.No.	Name	Department	Institution Name	Email	Contact No.	Signature
1	[illegible]	Home Science	Chaman Lal Mahavidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2	[illegible]	Home Science	Chamanlal Mahavidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
3	[illegible]	Home Science	Chaman Lal Mahavidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
4	Mansi Chaturvedi	Home Science	Chaman Lal Mahavidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
5	[illegible]	Home Science	Chaman Lal Mahavidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
6	[illegible]	Home Science	Chaman Lal Mahavidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
7	[illegible]	Home Science	Chamanlal Mahavidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
8	[illegible]	Home Science	Chamanlal Maha Vidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
9	[illegible]	Home Science	Chamanlal Maha Vidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
10	[illegible]	Home Science	Chamanlal Maha Vidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
11	Shivani	Home Science	Chamanlal Maha Vidyalaya	[illegible]	[illegible]	Shivani
12	[illegible]	"	" "	[illegible]	[illegible]	[illegible]
13	[illegible]	"		[illegible]	[illegible]	[illegible]

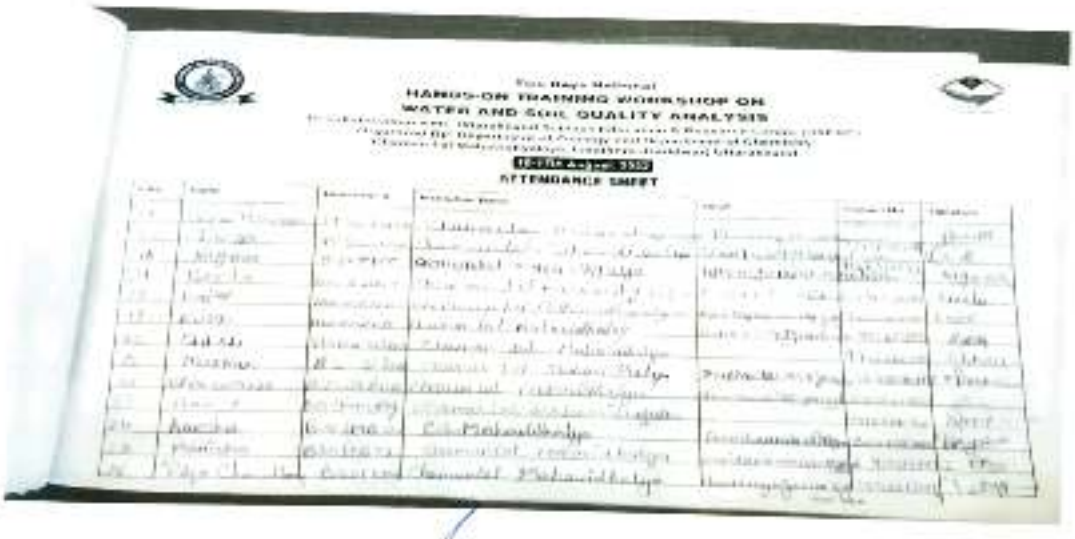

Two Days National

HANDS-ON TRAINING WORKSHOP ON

WATER AND SOIL QUALITY ANALYSIS

16-17th August, 2022

ATTENDANCE SHEET

उत्तराखण्ड शासन

Two Days National

HANDS-ON TRAINING WORKSHOP ON WATER AND SOIL QUALITY ANALYSIS

In collaboration with: Uttarakhand Science Education & Research Centre (USERC)
Organized By: Department of Zoology and Department of Chemistry
Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhora (Haridwar) Uttarakhand

16-17th August, 2022

ATTENDANCE SHEET

S.No.	Name	Department	Institution Name	Email	Contact No.	Signature
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	Chamanlal mahavidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	Chamanlal Mahavidhyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
17	Mayank Kumar	[illegible]	Chamanlal mahavidyalaya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
18	[illegible]	[illegible]	Chamanlal mahavidyalya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
19	[illegible]	[illegible]	Chamanlal mahavidyalya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
20	[illegible]	[illegible]	Chaman Lal Mahavidhyalya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
21	[illegible]	[illegible]	Chaman Lal Mahavidhyalya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
22	[illegible]	[illegible]	Chaman Lal mahavidhyalya	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	"	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	"	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	Chaman lal mahavidyala	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

Two Days National

HANDS-ON TRAINING WORKSHOP ON WATER AND SOIL QUALITY ANALYSIS

In collaboration with: Uttarakhand Science Education & Research Centre (USERC)
Organized By: Department of Zoology and Department of Chemistry
Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhora (Haridwar) Uttarakhand

16-17th August, 2022

ATTENDANCE SHEET

S.No.	Name	Department	Institution Name	Email	Contact No.	Signature
[illegible]	[illegible]	[illegible]	C.L.M.			[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	C.L.M.		[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	C.L.M.			[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	C.L.M.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	C.L.M.			
[illegible]	[illegible]	[illegible]	C.L.M.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	Chaman lal mahavidyalaya	[illegible]	[illegible]	Shahbaz
[illegible]	[illegible]	[illegible]	C.L.M.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
35	[illegible]	[illegible]	C.L.M.		[illegible]	[illegible]
36	[illegible]	"	"		[illegible]	[illegible]
37	[illegible]	[illegible]	C.L.M.		[illegible]	[illegible]
38	[illegible]	[illegible]	C.L.M.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
39	[illegible]	"	"	[illegible]	[illegible]	[illegible]
				[illegible]	[illegible]	[illegible]

PROGRAMME SCHEDULE

16 AUGUST,2022

DAY-1

PROGRAM	TIME(TENTATIVE)
BREAKFAST	8:00-9:15 AM
INAGURAL CEREMONY	9:30 AM ONWARDS
A. SARASWATI VANDNA	9:30-9:45 AM
B. WELCOME ADDRESS	9:45-10:00 AM
C. PRESIDENTIAL ADDRESS	10-10:30 AM
D. CHIEF GUEST	10:30-10:55 AM
E. SPEAKER-1	11:00-11:30 AM
F. SPEAKER-2	11:30 -12:00 AM
G. SPEAKER-3	12:00-12:30 PM
H. SPEAKER-4	12:30-1:00 PM
I. SPEAKER-5	1:00-1:30 PM

17 AUGUST,2022

DAY-2

PROGRAM	TIME(TENTATIVE)
DEPARTURE TO NIH,ROORKEE	9:30 AM
BEGINNING OF HANDS-ON TRAINING LECTURE	10:30-12:30 PM
BEGINNING OF IN-FIELD TRAINING	12:30-3:30 PM
LUNCH	3:30-4:00 PM
BACK TO CLM	4:00 PM ONWARDS

ORGANIZING COMMITTEE

CHIEF PATRON

Shri Ishwar Chandra Sharma (Founder CLM)

Shri Ram Kumar Sharma (Chairman of Management committee)

PATRON

Shri Arun Kumar Harit (Secretary, Management committee)

Shri Atul Harit (Treasurer, Management committee)

PRINCIPAL

Dr. Sushil Upadhyay

CONVENER

Dr. Deepika Saini

Asst. Prof. , Deptt of Zoology, CLM

ORAGANIZING SECERATRY

Dr. Sanjeev Kumar, Asst. Prof, Deptt of Chemistry, CLM

Treasurer

Dr. Prabhat Kumar Singh, Assistant Professor & Deptt. of Home-Science, CLM

ADVISORY BOARD

1. Dr. K K Dube, Retd. Prof., Govt. Auto. Science College, Jabalpur (M.P)
2. Dr. S.K Batra, Principal, SMJN (P.G) College, Haridwar
3. Dr. Kanchan Karki, Scientist-B, UCB, Dehradun.
4. Dr. Bhavtosh Sharma, Scientist, USERC, Dehradun
5. Dr. Vimal Kant Saini, Principal, Gurunanak Mahila Mahavidyalaya, Jabalpur (M.P)
6. Dr. Pushpendra Kumar Sharma, Associate Professor, Deptt. Of Chemistry, DAV (P.G) College, Dehradun
7. Dr. Vijay Sharma, SMJN (P.G) College ,Haridwar.
8. Dr. Radheshyam , Associate Professor, Department of Chemistry, DBS(P.G) College, Dehradun.

VARIOUS COMMITTEES

Welcome Committee:

Dr. Kiran Sharma – convener
Members:
1- Dr. Anamika Chauhan
2- Dr. Anamika Chauhan
3- Vineet Chauhan
4- Dr. Himanshu Kumar

Stage Management Committee

Dr. Nisha Kumar–Convener
Members:

1- Dr. Anita Sharma
2- Dr. Punita Sharma
3- Dr. Deepa Aggarwal
4. Dr. Meera Chaurasiya

Registration Committee:

Dr. Sanjeev Kumar- Convener
Members:
1- Mr. Abhishek

2 .Mr. Gaurav Agarwal
3- Bhuvan Chandra

4 Dr. Madhu Mehra

5 Ms. Mahapara

Food Management Committee:

Dr. Suryakant Sharma-Convener

Members:

1- Dr. Vimal kant
2. Mr. Kuldeep Kumar

3. Dr. Vidhi Tyagi

4. Ridhi Chauhan

Rapporteur: Dr. Arvind Kumar & Dr. Anamika Chauhan

Inauguration Committee:

Dr. Anamika Chauhan - convener
Members:
1- Dr Suuryakant Sharma
2- Dr. Tarun Gupta
3- Dr Naveen Tyagi
4- Dr. Aparna Sharma

Press:

Dr. Tarun Gupta – convener
Members:

1- Dr. Dharmendra Kumar
2- Shri Naveen Kumar

Disciplinary Committee:

Mr. Ashutosh Sharma
Members:
1- Mr. Vipul Sing

2. Dr. Neetu Gupta
3. Dr. Himanshu

PHOTOGRAPHS(DAY-1)

GPS Map Camera
Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand, India
RW4H+Q6Q, Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand 247664, India
Lat 29.806951°
Long 77.927608°
16/08/22 11:07 AM
Jhanjheri
Google

TWO DAYS NATIONAL
Training Workshop On Water And Soil Qualit
16-17th August, 202
GPS Map Camera
Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand, India
RW4H+Q6Q, Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand 247664, India
Lat 29.806951°
Long 77.927601°
16/08/22 11:17 AM
Jhanjheri
Google

TWO DAYS NATION
Hands - on
Workshop On Water And Soil Qu
16-17th August, 2022
Jainpur Jhanjheri, Uttarakhand, India
Lat 29.80678°
16/08/22 01:42 PM

TWO DAYS NAT
Hands - on

उत्तराखण्ड शासन

PHOTOGRAPHS (DAY-2)

This is to certify that 75 Students from Chaman Lal Mahavidyalaya, Landaura visited NIH on 17-09-2022 for hands-on training under a two day national hands-on training workshop on soil and water quality analysis sponsored by Uttarakhand Science, Education and Research Centre, Dehradun. The timing of the training was 10.30 to 1.30 pm and Lunch was arranged for participants and faculty.

(Gopal Krishan)

Dr. Gopal Krishan
Scientist
Groundwater Hydrology Div.
National Institute of Hydrology
Roorkee

MEDIA CLIPPINGS

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

मृदा एवं जल गुणवत्ता परीक्षण विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का च...
देहरादून (nainilive.com) – यूसर्क, देहरादू...
nainilive.com

मृदा एवं जल गुणवत्ता परीक्षण विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का चमन लाल महाविद्यालय, रुड़की, हरिद्वार में हुआ समापन -
https://nainilive.com/two-day-training-workshop-on-soil-and-water-quality-test-subject-concludes-in-chaman-lal-mahavidyalaya-roorkee-haridwar/

व्हाट्सऐप ग्रुप से जुड़ें -
https://chat.whatsapp.com